स्वर्ण जयन्ती ग्रन्थ

(प्रथम खण्ड)

समिति का अर्द्ध-शताब्दी इतिहास एवं परिचय

लेखक

डा० कुंजविहारी लाल गुप्त

एम० ए० (हिन्दी एवं राजनीति विज्ञान) पी-एच० डी

तमसो मा ज्योतिर्गमय



श्री हिन्दी साहित्य समिति, भरतपुर

स्थापित १९१[illegible] ई०

प्रकाशक

मदनलाल बजाज, प्रधान मंत्री

हिन्दी साहित्य समिति, भरतपुर

संवत् २०१७

प्रथम संस्करण १००० प्रतियाँ

दुर्गा प्रिंटिंग वर्क्स आगरा

आभार प्रदर्शन

आज स्वर्ण जयन्ती के इस सुअवसर पर समिति के गत ५० वर्षों के इतिहास का सिंहावलोकन करने में विशेष प्रकार का आनन्द तथा गौरव का अनुभव हो रहा है। अपने स्वल्प साधनों में अनेक कठिनाइयों का सामना करते हुए भी समिति ने जो अपना वर्तमान रूप ग्रहण किया है, वह आज आपके सम्मुख है। प्रारम्भ काल से ही हिन्दी भाषा एवं साहित्य के प्रचार एवं प्रसार का कार्य ही समिति का मुख्य ध्येय रहा है और इस कार्य में समिति ने सफलता भी प्राप्त की है। यह ग्रन्थ भी इसी ध्येय की पूर्ति की एक कड़ी है। समिति के पिछले एवं वर्तमान साहित्य सेवियों के प्रति जिनके अहर्निशि परिश्रम एवं लगन के फलस्वरूप समिति आज इस स्वरूप को प्राप्त कर सकी है आभार प्रदान करते हुए मुझे परम हर्ष हो रहा है।

इस ग्रन्थ के लेखन में समिति के अध्यक्ष डा० कुंजविहारी लाल गुप्त, एम० ए० (हिन्दी एवं राजनीति विज्ञान), पी-एच० डी० ने जो अथक परिश्रम किया है उनका मैं परम आभारी हूँ। इसके अतिरिक्त इस ग्रन्थ के प्रकाशन एवं अन्तिम रूप देने में श्री राम दत्तजी शर्मा एम० ए०, बी० एड० साहित्यरत्न शास्त्री, भूतपूर्व प्रधान मंत्री एवं वर्तमान केन्द्र व्यवस्थापक ने जो मूल्यवान योग देकर इस कार्य को सफल बनाया है, उसके लिये भी मैं उनका अत्यन्त कृतज्ञ हूँ।

मेरे अन्य समस्त सहयोगियों एवं कार्यकर्ताओं का भी मैं आभारी हूँ जिनकी प्रेरणा एवं प्रोत्साहन से यह ग्रन्थ प्रकाशित हो रहा है। इस सहज एवं सामयिक सहायता के लिये समिति उनकी सदैव ऋणी रहेगी।

श्री हिन्दी साहित्य समिति,
भरतपुर
१२ फरवरी १९६१

मदनलाल बजाज
प्रधान मंत्री

श्री हिन्दी साहित्य समिति भरतपुर के जन्मदाता
समिति के सस्थापक (सन् १९१२)



श्री गगाप्रसाद जी शास्त्री



श्री अधिकारी जगन्नाथ दास जी विद्यारत्न (राज्यगुरु)

विषय सूची

श्री हिन्दी साहित्य समिति, भरतपुर

संस्थापक

१—श्री अधिकारी जगन्नाथदास जी विद्यारत्न

—श्री प० गंगाप्रसादजी शास्त्री

— श्री डा० आवारसिंह प्रमार एल एम एम (मेडीकल आफीसर)

४—श्री प० नारायनदास सुपरिन्टेन्डेन्ट पी डब्ल्यू डी

संरक्षक

१—श्री महामहोपाध्याय गिरधर शर्मा नवरत्न राजगुरु, झालरापाटन

२—श्री सेठ मन्नालाल महेश्वरी वाले

३—श्री सेठ हरिचरनलाल सर्राफ

४—श्री सेठ जगन्नाथप्रसाद दीपक गुरु नानक आइरन स्टील क० भरतपुर

वर्तमान पदाधिकारी

१—डा० कुंजबिहारीलाल गुप्त एम ए (हिन्दी एवं राजनीति विज्ञान) पी एच डी अध्यक्ष

२—श्री मोतीलाल जी अग्रवाल (उपाध्यक्ष)

३—श्री मन्नालाल जी बजाज (प्रधान मंत्री)

४—श्री ओमप्रकाश जी दूर (उप-मंत्री)

५—श्री रामदत्त जी शर्मा एम ए बी एड साहित्यरत्न (केन्द्र व्यवस्थापक)

—श्री प्रभुदयाल जी दयालु साहित्यरत्न (पुस्तकालयाध्यक्ष)

—श्री भगवानदास जी गर्ग (कोषाध्यक्ष)

८—श्री रामनारायण जी वकील बी ए एल-एल बी (आय-व्यय निरीक्षक)

सदस्य वर्तमान कार्यकारिणी (१९५८ से १९६१)

(१) डा कुंजबिहारीलाल गुप्ता

(२) श्री मोतीलाल जी अग्रवाल

(३) श्री मन्नालाल जी बजाज

(४) श्री ओमप्रकाश जी दूर

(५) श्री रामदत्त जी शर्मा

(६) श्री प्रभुदयालजी दयालु

(७) श्री भगवानदास जी [illegible]

(८) श्री रामनारायण जी [illegible]

(९) श्री [illegible] जी [illegible]

(१०) श्री भागमल [illegible] जी [illegible]

(११) श्री गिरिजाशंकर जी [illegible]

(१२) श्री डा० हरनाथ जी

(१३) श्री मा० [illegible]

(१४) श्री मा० [illegible] जी शर्मा

(१५) [illegible] शर्मा

(१६) श्री मा० [illegible] जी [illegible]

(१७) श्री [illegible] जी [illegible]

(१८) श्री प० [illegible] जी शर्मा [illegible]

(१९) श्री प० [illegible] जी चतुर्वेदी

(२०) श्री मा० राधेलाल जी शर्मा

(२१) श्री [illegible] रामचरण जी शास्त्री

श्री हिन्दी साहित्य समिति भरतपुर की कार्य-कारिणी (सत्र १९५८-६१)



प्र० प०—श्री मावल प्र० चतु० श्री राम ना० वकील (ग्रा० निरीक्षक) श्री नल्पन लाल शर्मा श्री मदनलाल बजाज (प्र म)
श्री म० मतोपालाल (सरक्षक) ला० कु० विहारीलाल गुप्त (अध्यक्ष) श्री मातीलाल अरोडा (उपाध्यक्ष)
श्री भगवानदास गोठा (कोषाध्यक्ष) श्री प्रभुदयाल (पुस्तकालयाध्यक्ष)
द्वि० प०—श्री प्रभुलाल (ला० वत०) श्री रामदत्त शर्मा (केन्द्र व्यवस्थापक) श्री गिर्राज प्रसाद स० व० रामशरण शास्त्री
श्री ग्रामप्रकाश दूत (उप मंत्री) श्री गणेलाल शर्मा श्री अ० प्रसाद मा० ★ तृ० प० श्री मोहर सिंह श्री नानग राम

वक्तव्य

श्री हिन्दी साहित्य समिति भरतपुर का स्वर्ण जयन्ती ग्रन्थ (प्रथम खण्ड) आपके सम्मुख है। समिति की कार्यकारिणी के नियमानुसार बहुत कुछ प्रयत्न करते हुए भी सम्पूर्ण ग्रन्थ एक बार मुद्रित न होकर दो खण्डों में विभाजित करना पड़ा इसके लिये क्षमा-याचना करता हूँ। जिस समय इस ग्रन्थ के लेखन तथा प्रकाशन की योजना बनाई गई थी उस समय मैंने उन कठिनाइयों की कल्पना भी न की थी जो लेखन-कार्य प्रारम्भ करने के बाद सामने आईं। सोचा यह था कि दो तीन मास में ही यह ग्रन्थ प्रकाशित हो जायेगा किन्तु पीछे ज्ञात हुआ कि स्वर्ण जयन्ती महोत्सव के अति व्यस्त कार्य-क्रम के साथ-साथ लगभग ५०० पृष्ठों का ग्रन्थ लिखकर प्रकाशित करना सरल कार्य नहीं है। पाठकों को यह जानकर सन्तोष होगा कि सम्पूर्ण ग्रन्थ की पाडुलिपि तो बनकर तैयार हो चुकी है किन्तु समयाभाव के कारण मुद्रित न हो सकी है। इस समय केवल प्रथम खण्ड प्रकाशित हो सका है। ग्रन्थ का विभाजन निम्न प्रकार दो खण्डों में किया गया है —

(१) प्रथम खण्ड में समिति के विगत लगभग ५० वर्षों का सिंहावलोकन है।

(२) दूसरे खण्ड में भरतपुर के विगत २५० वर्षों में होने वाले कवियों का संक्षिप्त जीवनवृत्त है।

इस ग्रन्थ को लिखते समय मेरे सामने प्रमुखतः दो उद्देश्य थे — एक तो यह कि ग्रन्थ में हिन्दी साहित्य समिति के विगत जीवन का विस्तृत सर्वेक्षण किया जाये जिससे यहाँ के नागरिकों को समिति के संस्थापकों कर्णधारों एवम् उत्साही कार्यकर्ताओं के साहित्यानुराग से समिति की सेवा करने की प्रेरणा मिले।

स्थापना

भरतपुर ब्रजभाषा का प्रमुख गढ़ है। यह स्थापन-काल से ही ब्रजभाषा के उच्चकोटि के कवियों का निवास-स्थान रहा है। महाकवि सोमनाथ और सूदन आदि ने अपनी काव्य प्रतिभा से इस क्षेत्र की ख्याति को भारत के कोने कोने तक पहुँचा दिया था। अनेक महाकवियों के आश्रयदाता भरतपुर के नरेशों ने ब्रजभाषा के प्रचार और प्रसार में मदद में योग दिया पर काल की गति का राजनीतिक और सामाजिक प्रभाव भाषा पर भी पड़े बिना न रहा। मुगलों और अंग्रेजों से टक्कर लेने वाले फारसी उर्दू और अंग्रेजी से अप्रभावित न रह सके। शासन पर इन दोनों भाषाओं का क्रमशः दबदबा रहने की वजह से नौकरी की भूखी जनता अपनी मातृभाषा के महत्व को भूल सी गई। ऐसा समय भी आया जब ब्रजभाषा (हिन्दी) का प्रभाव केवल घरों की चारदीवारी तक ही सीमित रह गया किन्तु इस स्थिति को जन मानस ने स्वीकार नहीं किया। समय ने करवट बदली। हिन्दी के हितैषी मातृभाषा की हीनावस्था से तिलमिला उठे। २०वीं शताब्दी के आरम्भ काल में उत्तर भारत के नगर नगर में हिन्दी के प्रति स्नेह और आदर उत्पन्न करने के लिये सभा और समितियों की स्थापना होने लगी। राष्ट्रभाषा प्रेम की इस लहर से भरतपुर के नागरिकों का मानस भी प्रभावित हुआ। मातृभाषा के कुछ उत्साही नागरिकों ने समाचार पत्र और पुस्तक पठन पाठन के कार्यक्रम को जारी करने की चेष्टाएँ आरम्भ की। पंडित रामचन्द्र और मुंशी जानकीवल्लभ ने एक स्थान पर समाचार पत्रों और पुस्तकों के पठन की व्यवस्था की। कहा जाता है कि वह प्रयास अपनी तरह का अनूठा था। नये जोश से काय चलने भी लगा परन्तु कुछ कारणों से वह अकाल मृत्यु को प्राप्त हो अपने अस्तित्व को ही खो उठा। पर जागा जन मानस आसानी से

स्थापना

भरतपुर ब्रजभाषा का प्रमुख गढ़ है। यह स्थापन-क्षेत्र में ही ब्रजभाषा के उच्चकोटि के कवियों का निवास-स्थान रहा है। महाकवि सोमनाथ और सूदन आदि ने अपनी काव्य प्रतिभा से इस क्षेत्र की ख्याति को भारत के कोने कोने तक पहुँचा दिया था। अनेक महाकवियों के आश्रयदाता भरतपुर के नरेशों ने ब्रजभाषा के प्रचार और प्रसार में मदद से योग दिया पर काल की गति को राजनीतिक और सामाजिक प्रभाव भाषा पर भी पडे बिना न रहा। मुगलों और अंग्रेजों से टक्कर लेने वाले फारसी उर्दू और अंग्रेजी से अप्रभावित न रह सके। शासन पर इन दोनों भाषाओं का क्रमशः दबदबा रहने की वजह से नौकरी की भूखी जनता अपनी मातृभाषा के महत्व को भूल सी गई। ऐसा समय भी आया जब ब्रजभाषा (हिन्दी) का प्रभाव केवल घरों की चारदीवारी तक ही सीमित रह गया किन्तु इस स्थिति को जन मानस ने स्वीकार नहीं किया। समय ने करवट बदली। हिन्दी के हितैषी मातृभाषा की हीनावस्था से तिलमिला उठे। २०वीं शताब्दी के आरम्भ काल में उत्तर भारत के नगर नगर में हिन्दी के प्रति स्नेह और आदर उत्पन्न करने के लिये सभा और समितियों की स्थापना होने लगी। राष्ट्रभाषा प्रेम की इस लहर से भरतपुर के नागरिकों का मानस भी प्रभावित हुआ। मातृभाषा के कुछ उत्साही नागरिकों ने समाचार पत्र और पुस्तक पठन पाठन के कार्यक्रम को जारी करने की चेष्टाएँ आरम्भ की। पंडित रामचन्द्र और मुंशी जानकीवल्लभ ने एक स्थान पर समाचार पत्रों और पुस्तकों के पठन की व्यवस्था की। कहा जाता है कि वह प्रयास अपनी तरह का अनूठा था। नये जोश से काम चलने भी लगा परन्तु कुछ कारणों से वह अकाल मृत्यु को प्राप्त हो अपने अस्तित्व को ही खो बैठा। पर जागा जन मानस आसानी से

दूसरा यह कि हिन्दी साहित्य समिति भरतपुर के विगत २५० वर्षों में होने वाले सभी कवियों एवं साहित्यिकों का संक्षिप्त जीवन वृत्त प्रकाशित कर उनके प्रति हार्दिक श्रद्धाञ्जलि अर्पित करें, जिन्होंने अपना समस्त जीवन हिन्दी में ज्ञानवर्द्धक वाङमय की सृष्टि में व्यतीत किया। इससे न केवल भावी कवियों को नूतन काव्य सृजन की प्रेरणा ही मिलेगी अपितु समिति अपने उत्तरदायित्व को भी पूरा करेगी।

समिति के इस इतिहास में अधिकतर तथ्यों का ही संग्रह किया गया है। मैंने प्रत्येक विषय को यथास्थान यथावश्यक और यथार्थ रूप में सामने लाने का प्रयास किया है। ग्रन्थ के अन्त में दिये गये परिशिष्टों में यथासाध्य उन सभी हिन्दी प्रेमियों के नाम उद्धृत किये हैं *जिन्होंने आर्थिक सहायता देकर समिति के विशाल भवन के* निर्माण में सहायता दी अथवा अपना अमूल्य समय देकर उसके उद्देश्यों की पूर्ति में योग दिया। ११वें परिशिष्ट में स्वर्ण जयन्ती महोत्सव का जिसका उद्घाटन भारत के उपराष्ट्रपति महामहिम डा० सर्वपल्ली राधाकृष्णन् ने किया कार्यक्रम दिया गया है। इस महोत्सव का विस्तृत वर्णन दूसरे खण्ड में दिया जायगा।

इतिहास के सम्पादन में मेरे पुराने मित्र श्री प्रेमनाथजी चतुर्वेदी बी० ए० स्थानीय सम्पादक नवभारत टाइम्स नई देहली ने मेरा साथ दिया। इसके लिये वे धन्यवाद के पात्र हैं।

अन्त में उन सभी साथियों तथा समिति के लाइब्रेरियन श्री प्रभुदयाल यादव का जो सहयोग प्राप्त हुआ है उसके लिये अपना आभार प्रदर्शित करता हूँ।

वसन्त पंचमी
[illegible]

कुंजबिहारीलाल गुप्ता

स्थापना

भरतपुर ब्रजभाषा का प्रमुख गढ़ है। यह स्थापन-काल से ही ब्रजभाषा के उच्चकोटि के कवियों का निवास-स्थान रहा है। महाकवि सोमनाथ और सूदन आदि ने अपनी काव्य प्रतिभा से इस क्षेत्र की ख्याति को भारत के कोने कोने तक पहुँचा दिया था। अनेक महाकवियों के आश्रयदाता भरतपुर के नरेशों ने ब्रजभाषा के प्रचार और प्रसार में सदैव सहयोग दिया, पर काल की गति को राजनीतिक और सामाजिक प्रभाव भाषा पर भी पड़े बिना न रहा। मुगलों और अंग्रेजों में टक्कर लेने वाले फारसी उर्दू और अंग्रेजी से अप्रभावित न रह सके। शासन पर इन दोनों भाषाओं का क्रमशः दबदबा रहने की वजह से नौकरी की भूखी जनता अपनी मातृभाषा के महत्व को भूल सी गई। ऐसा समय भी आया जब ब्रजभाषा (हिन्दी) का प्रभाव केवल घरों की चारदीवारी तक ही सीमित रह गया किन्तु इस स्थिति को जन मानस ने स्वीकार नहीं किया। समय ने करवट बदली। हिन्दी के हितैषी मातृभाषा की हीनावस्था से तिलमिला उठे। २०वीं शताब्दी के आरम्भ काल में उत्तर भारत के नगर नगर में हिन्दी के प्रति स्नेह और आदर उत्पन्न करने के लिये सभा और समितियों की स्थापना होने लगी। राष्ट्रभाषा प्रेम की इस लहर से भरतपुर के नागरिकों का मानस भी प्रभावित हुआ। मातृभाषा के कुछ उत्साही नागरिकों ने समाचार पत्र और पुस्तक पठन-पाठन के कार्यक्रम को जारी करने की चेष्टाएँ आरम्भ की। पंडित रामचन्द्र और मुन्शी जानकीवल्लभ ने एक स्थान पर समाचार-पत्रों और पुस्तकों के पठन की व्यवस्था की। कहा जाता है कि वह प्रयास अपनी तरह का अनूठा था। नये जोश से कार्य चलने भी लगा परन्तु कुछ कारणों से वह अकाल मृत्यु को प्राप्त हो अपने अस्तित्व को ही खो बैठा। पर जागा जन मानस आसानी से

मान वाला नहीं था अधिक उत्साही और जीवट के हिन्दी प्रेमियों का उदय हुआ। अनेक कठिनाइयों का सामना करते हुए भी कतिपय हिंदी प्रेमियों ने १३ अगस्त १९१२ को श्री हिंदी साहित्य समिति की स्थापना कर दी। नवस्थापित हिंदी संस्था के प्रथम मंत्री पंडित सुन्दरलाल जानी की प्राप्त प्रथम विज्ञप्ति (१३ ८ १९१२) का मूल अंश अविकल रूप में नीचे उद्धृत किया जाता है —

प्रिय हिंदी हितैषीगण

कदाचित् आपको अविदित न होगा कि हमारी मातृभाषा सब गुण आगरी नागरी के प्रचार के लिये प्राय भारतवर्ष के सभी नगर निवासी उन्नति कर रहे हैं परन्तु खेद है कि हमारा भरतपुर व्रजभाषा का केन्द्र होने पर भी इस ओर से सर्वथा पीछे हटा हुआ है। अवश्य ही हम लोगों का कर्त्तव्य है कि इस त्रुटि को दूर करने का प्रयत्न करें। हम सहर्ष आपको सवाद देते हैं कि यहां के कतिपय हिन्दी हितैषी सज्जनों ने यहाँ पर हिन्दी प्रचार के लिये एक हिन्दी साहित्य समिति स्थापित करदी है जिसका स्थान धर्मसभा में है। आप जानते हैं कि समस्त कार्य अर्थमूलक हुआ करते हैं फिर इसके लिये द्रव्य होना अत्यन्त आवश्यक है किन्तु यह बात सत्य है कि इस पौधे को आप द्रव्य जल से सिंचित न करेंगे तो यह कुम्हला ही न जायगा किन्तु नष्ट भ्रष्ट हो हो जायगा। इसमें निश्चित हो चुका है कि हिन्दी प्रचार के विशेष साधन समाचार पत्र मगाये जाय। अत हिन्दी की सहायता के साथ-साथ हम सामाजिक समाचार तथा उत्तम लेख पठन का मिलना इससे हमारे ज्ञान में वृद्धि का होना तो स्वयंसिद्ध है फिर इस स्वार्थ और परमार्थ के साधक कार्य में कौन महानुभाव होंगे जो सहायता न करें। हम आपकी सेवा में सविनय सादर प्रार्थी हैं कि आप भी इसके सभासद बन इस स्वार्थ और परमार्थ में यथा शक्ति बनें।

श्री हिन्दी साहित्य समिति के आधार स्तम्भ

(सर्वप्रथम सभापति सन् १९१२ से १९१९ ई० तक)



श्री रा० श्रारारसिंह जी प्रमार एल० एम० एस०
(चीफ मेडीकल श्राफीसर)
(जिनके राय-काल में समिति की स्थापना हुई)

(सर्वप्रथम उपसभापति सन् १९१२ से १९१९ ई० तक)



श्री नारायन दास जी
सुपरिण्टेण्डेण्ट पी० डब्ल्यू० डी०
(जिनके निरीक्षण में सन् १९१८ में समिति भवन का निर्माण हुआ)

एक स्वर से संस्था की स्थापना का स्वागत किया और नामकरण हुआ श्री हिन्दी साहित्य समिति, भरतपुर।

समिति के जन्मदाताओं में पंडित गंगाप्रसाद शास्त्री और अधिकारी जगन्नाथदास विशारद का नाम विशेष रूप से उल्लेखनीय है। इन्हीं दो व्यक्तियों की कल्पना, भावना और उत्साह के परिणामस्वरूप हिन्दी साहित्य समिति की स्थापना हुई तथा अनेकानेक योग्य और प्रभावशाली व्यक्तियों का आरम्भ से ही संस्था का सहयोग प्राप्त होने लगा। उपरोक्त सभा में संस्था के संचालन के लिये निम्नलिखित महानुभावों को पदाधिकारी निर्वाचित किया गया —

श्री ला० ओंकारसिंह प्रमार एल०एम०एस०, मेडिकल ऑफीसर (प्रधान)

श्री प० नारायनदास सुपरिन्टेंडेंट पी० डब्ल्यू० डी० (उप प्रधान)

श्री अधिकारी जगन्नाथदास विशारद (मन्त्री)

श्री प० गंगाप्रसाद शास्त्री, साहित्याचार्य (सहायक मन्त्री)

श्री प० गुलाबजी मिश्र (पुस्तकालयाध्यक्ष)

श्री माखनलाल पोद्दार आनररी मजिस्ट्रेट (कोषाध्यक्ष)

श्री प० सुन्दरलाल त्रिपाठी एकाउंटेंट पी० डब्ल्यू० डी० (आय व्यय निरीक्षक)

दिनांक १५ सितम्बर १९१२ को पुनः एक सार्वजनिक सभा बुलाई गई जिसमें समिति के उद्देश्य एवं नियम निर्धारित किये गये तथा कार्यकारिणी का संगठन किया गया जिसमें निम्न महानुभावों को निर्वाचित किया गया —

श्री भट्ट मधुसूदन शर्मा सरदार राज्य

श्री प० सीताराम शास्त्री संस्कृत अध्यापक, सदर हाई स्कूल

श्री प० सुन्दरलाल जानी

श्री प० गंगाशंकर पचौरी, हैडमास्टर सदर हाई स्कूल

श्री प० ब्रजविहारीलाल हैडमास्टर नोबिल्स स्कूल

(ख) इस समिति का कार्यक्षेत्र भरतपुर जिला होगा। इस जिले के अतिरिक्त यदि किसी अन्य स्थान की संस्था समिति से सम्बन्धित होना चाहेगी तो उस पर भी विचार किया जा सकेगा।

उद्देश्य

(क) हिन्दी भाषा और देवनागरी लिपि की उन्नति एवं प्रचार करना।

(ख) हिन्दी साहित्य की उन्नति के लिये आवश्यक विषयों के ग्रंथों से उसे अलंकृत करना, प्राचीन ग्रंथों की खोज करना तथा उन्हें संग्रहीत कर सुरक्षित रखना।

अधिकार

१ इस संस्था को अधिकार होगा कि अपने उद्देश्यों की पूर्ति के निमित्त स्थावर एवम् जंगम सम्पत्ति एकत्रित करे तथा स्थायी सम्पत्ति में वृद्धि करने के लिये उसके रूप में परिवर्तन करे। स्थायी सम्पत्ति जैसे दुकानादि क्रय करे, धन सम्बन्धी पत्रकों का लेन-देन करे तथा अन्य ऐसे व्यवहार करे जिनसे आर्थिक उन्नति के साथ साथ इसके उद्देश्यों की पूर्ति में किसी प्रकार की बाधा न पड़े।

२ समिति की समस्त आय और सम्पत्ति इसके उद्देश्यों की पूर्ति में लगाई जायगी। इसकी कोई सम्पत्ति अथवा इसका कोई अंश इसके किसी सभासद अथवा पदाधिकारी के किसी प्रकार के लाभ व आय के लिये न दिया जायगा किन्तु समिति के किसी कर्मचारी अथवा सभासद या किसी अन्य व्यक्ति को जो समिति का कोई कार्य करे वेतन या पुरस्कार देने में यह नियम बाधक न होगा। [illegible] व्यक्ति से समिति के कर्मचारियों को ऋण लिया जा सकेगा।

[illegible] समिति का एक स्थायी कोष होगा जिसमें वर्ष के अन्त में

बचत का वह अंश जिसे समिति की कार्यकारिणी स्वीकार करे प्रति वर्ष जमा हुआ करेगा।

४ स्थायी कोष की धन राशि में से कोई व्यय तथा स्थावर सम्पत्ति का रूपान्तर तब तक नहीं किया जायेगा जब तक समिति की कार्यकारिणी के कम से कम दो तिहाई सदस्यों की स्वीकृति प्राप्त न हो जाये।

५ समिति के आय व्यय का वार्षिक लेखा आय व्यय निरीक्षक के प्रमाण पत्र देने के पश्चात् प्रति वर्ष कार्यकारिणी के समक्ष प्रस्तुत किया जायेगा। तदुपरान्त यह लेखा समिति के सदस्यों के सूचनार्थ प्रकाशित किया जायेगा।

नियम

समिति की पूर्ण नियमावली पृथक् से प्राप्त है।

संगठन

सार्वजनिक संस्था का शरीर उसके सभासद होते हैं। जिस प्रकार मनुष्य के जीवन में अनेक उतार चढ़ाव होते हैं उसी प्रकार संस्था के सदस्यों की संख्या एकसी नहीं रहती उसमें घटा बढ़ी होना स्वाभाविक है। जिस दिन समिति की स्थापना हुई उस समय केवल ४ महानुभाव उपस्थित थे और वही इसके सर्वप्रथम सदस्य थे किन्तु प्रथम मास के अन्त में ही ७० ७८ सदस्य हो गये और वर्ष की समाप्ति तक यह संख्या २०२ पहुँच गई। फिर यह संख्या ८ वर्ष तक निरन्तर बढ़ती ही गई। सन् १९१६ में २२५ सभासद थे किन्तु इसके बाद यह संख्या घटने लगी और १९२६ ई० तक बराबर घटती गई। इसका मुख्य कारण भरतपुर नगर पर प्रथम महायुद्ध की महंगाई इन्फ्लूएन्जा महामारी और पानी की बाढ़ आदि के प्रकोप थे जो क्रमशः एक पर एक इस प्रकार आते रहे जैसे पानी में लहरों का आवेग होता है। दूसरा कारण यह भी था कि १९१८ में मासिक सहायता घटाकर ८ आने करदी गई। सन १९२७ से यह संख्या बढ़ने लगी और १९४१ में २९१ तक पहुँच गई। सन १९४५ के बाद इस संख्या में और भी वृद्धि होने लगी जो बराबर बढ़ रही है।

समिति के सदस्य तीन प्रकार के हैं —

१ साधारण
२ आजीवन और
३ संरक्षक।

अब तक के सभासदों की संख्या आजीवन सदस्यों तथा संरक्षकों की नामावली और पदाधिकारियों की नाम-सूची परिशिष्ट (3) में दी गई है।

पुस्तकालय

हिन्दी साहित्य समिति की स्थापना के पश्चात् पुस्तकालय की आवश्यकता का अनुभव होना स्वाभाविक ही था। स्थापना के १८ दिन बाद श्रावण शुक्ला ८ सवत् १९६६ विक्रम मगलवार (२० अगस्त १९१०) को समिति के तत्वावधान मे पुस्तकालय की स्थापना की गई। प० गगाप्रसाद शास्त्री के यहा से श्री देवकीनन्दन आचार्य ने ११ पुस्तके लाकर श्री सनातन धर्म सभा की १ कोठरी मे रखकर पुस्तकालय का श्रीगणेश किया। इसके तुरन्त बाद ही अधिकारी जगन्नाथदास विद्यारत्न आदि उत्साही व्यक्तियो ने लगभग २५० पुस्तकें एकत्रित कर पुस्तकालय की श्रीवृद्धि का प्रयास आरम्भ कर दिया।

खड्गविलास प्रेस, बाकीपुर के अध्यक्ष कु० रामदीनसिंह ने अपने प्रेस की तथा राजपूत ओरियन्टल प्रेस के स्वामी कु० हनुमन्त सिंह ने अपनी पुस्तकें अर्धमूल्य मे देकर पुस्तकालय को परिपुष्ट किया। प्रथम वर्ष की समाप्ति होते होते पुस्तकालय मे इतिहास जीवन चरित्र, वेद, नाटक चिकित्सा स्त्री शिक्षा, साहित्य वेदान्त, शिल्पकला उपन्यास कहानी, अर्थशास्त्र, विज्ञान कृषि भूगोल धर्म, काव्य आदि आदि सभी प्रमुख विषयो की लगभग १,४०० पुस्तकें सग्रहीत हो गई। इनमे अधिकाश पुस्तकें दानदाताओ द्वारा प्रदत्त थी जिनमे ठाकुर रामशरण की धर्मपत्नी, प० भोलानाथ, प० नारायनदास लाला किशोरीलाल व्यानियाँ प० गगाप्रसाद शास्त्री जगन्नाथदास अधिकारी शकरलाल वर्मा, प० सुन्दरलाल त्रिपाठी बाबू चमनलाल, गोकुलचन्द दीक्षित प० गुलाब मिश्र, प० शान्ताप्रसाद प० द्वारकाप्रसाद, प० बालकृष्ण दुबे रामनारायण शर्मा सचीकान्त भट्ट डा० ओकारसिंह प० नन्दकिशोर ननेमल

गोस्वामी हरिनारायण प्यारेलाल शर्मा गिर्राजप्रसाद शर्मा (कुम्हेर), प० मदनलाल मिश्र ज्योतिषी एवं निरंजन शर्मा अजित आदि के नाम उल्लेखनीय हैं।

इस प्रकार पुस्तकों की संख्या तो उत्तरोत्तर बढ़ने लगी किन्तु समिति के पास उन्हें रखने के लिए उपयुक्त स्थान का अभाव था। पुस्तकालय के साथ ही वाचनालय भी आरम्भ कर दिया गया। यद्यपि स्थान छोटा था किन्तु जनता की साहित्यिक अभिरुचि के कारण प्रथम वर्ष ही ५,००० पुस्तकों का आदान प्रदान हुआ। इसी बीच हिन्दी साहित्य समिति के कर्णधारों और सनातन धर्म सभा के संचालकों में कुछ मनमुटाव हो गया। परिणामस्वरूप समिति का पुस्तकालय २४ नवम्बर १९१३ को सभा में हटाकर निकट के मकान में ले जाया गया। नये स्थान में भी पुस्तकालय पर्याप्त प्रगति करता रहा। दिनांक २७ २८ एवं २९ सितम्बर १९१३ को हिन्दी साहित्य समिति का प्रथम वार्षिकोत्सव बड़ी धूमधाम से मनाया गया। इस समारोह में जनता ने पूर्ण सहयोग दिया।

इस प्रकार समिति का पुस्तकालय उत्तरोत्तर वृद्धि करने लगा। सन् १९ ३ में चतुर्वेदी उमरावसिंह मिश्र ने अपने पूर्वज कविवर सोमनाथ के हस्तलिखित ग्रंथ भेंट किये। सन् १९६२ में हाराशंकर पचौरी ने श्री गंगाशंकर पचौरी की स्मृति में १६१ पुस्तकों का संग्रह पुस्तकालय को भेंट किया। १९५२ में भरतपुर के सुप्रसिद्ध विद्वान् प० रामचन्द्र (महाराज जी) ने १०५ पुस्तकों का संग्रह अपने पूज्य पितामह श्री प० घासीराम के नाम पर समिति को प्रदान किया। यह दोनों संग्रह पृथक पृथक अलमारियों में सजाकर रखे हुए हैं।

कुछ समय बाद जिला भर की जनता की मांग तथा विद्यार्थियों की सुविधा को ध्यान में रखते हुए यह आवश्यक प्रतीत होने लगा कि समिति नवीन उत्कृष्ट पुस्तकों का क्रय करे। गत चार वर्षों से प्रति वर्ष कार्यकारिणी समिति ने १४०० रुपया पुस्तक क्रय के

श्री हिन्दी साहित्य समिति के त्यागी एव कर्मठ सेवी

(जिनके समय में समिति ने आशातीत प्रगति की)



श्री प० रामनिगन जी दुबे एम० डी० ओ०
मंत्री १९२१ से ३८ तक सभापति सन् १९३८ से ४२ तक



श्री प० गुनाय जी मिश्र (पुस्तकालय के कर्णधार)
पुस्तकालयाध्यक्ष सन् १९१२ से १९२६ तक

लिए स्वीकृत किये हैं। सन् १९५१ से १९६० तक ३,१११ पुस्तकें क्रय की गईं, जिनमें शास्त्र सम्बन्धी पुस्तकें पर्याप्त संख्या में हैं। इस समय समिति में लगभग १७,३०० पुस्तकें हैं जिनमें हस्तलिखित भी हैं (देखिए परिशिष्ट ४)। हमें खेद है कि कुछ हस्तलिखित पुस्तकें सन् १९४५ के बाद से जब से जनमुनी श्री कान्तीसागरजी महाराज ने उनका वर्गीकरण किया है समिति में दिखाई नहीं देतीं।

सन् १९४३ में समिति ने एक चलता फिरता पुस्तकालय खोला जिसका उद्देश्य नगर की पर्दानशीन महिलाओं का लाभ पहुँचाना था। इस कार्य के लिये एक महिला को रखा गया जो घर घर जाकर पुस्तकें वितरित करती और पुनः एक सप्ताह बाद उन्हें ले आती थी। यह पुस्तकालय एक वर्ष तक चलता रहा, किन्तु अधिक सफलता न मिलने पर बन्द कर देना पड़ा। इसका समस्त व्यय सेठ मनोहरलाल कलकत्ता वाला ने दिया।

पुस्तकालय का कार्य पुस्तकालयाध्यक्ष की देख रेख में होता है जो समिति की कार्यकारिणी के सदस्य हैं। पुस्तकालय के लिए सर्व श्री गुलाबजी मिश्र तथा प्रभुलाल गोयल एवं पं० प्रभुदयाल दयालु तथा पं० देवकीनन्दन आचार्य (वैतनिक कर्मचारी) की सेवाएँ विशेष रूप से उल्लेखनीय हैं।

सन् १९६० से इस पुस्तकालय में कार्ड प्रणाली आरम्भ की गई जिससे पुस्तकों के आदान प्रदान में सुगमता हो और इस पुस्तकालय की गणना आधुनिक ढंग के पुस्तकालयों में हो सके। यद्यपि इस नवीन (कार्ड) प्रणाली के प्रचलन में अनेक कठिनाइयाँ आईं किन्तु समिति के प्रधान मंत्री श्री मन्नालाल बजाज के धैर्य, योग्यता तथा परिश्रम ने उन पर विजय पाई और इस नवीन प्रणाली का प्रचलन सफल हुआ।

इस वर्ष पुस्तकालय में एक भी पुस्तक ऐसी नहीं जिसकी जिल्द न बँधी हो। पुस्तकों की सूची के मुद्रण का कार्य शेष है जो धनाभाव के कारण पूर्ण नहीं हो सका है। विषय क्रम से सूची की दो हस्तलिखित प्रतियाँ तैयार करा ली गई हैं।

इस पुस्तकालय का प्रयोग प्रति वर्ष बढ़ता ही जा रहा है। शोध-कार्य के लिए समय-समय पर बाहर के विद्वान् समिति में पधार कर लाभ उठाते रहते हैं।

१९५९ में सुधीन्द्र कवि सामनाथ गर खोज और अनुशीलन के लिए दिल्ली में आये और यथेष्ठ लाभ उठाया। समिति अनुसंधान करने वाले एम विद्यार्थियों को यथासम्भव हर प्रकार की सुविधाएँ देती है।

हस्तलिखित एवं मुद्रित पुस्तकों का विशाल भण्डार होने के कारण यह समिति सदैव से हिन्दी के सुप्रसिद्ध विद्वानों को आकर्षित करती रही है। परिशिष्ट (१२) में कुछ सम्मतियाँ उद्धृत की गई हैं।

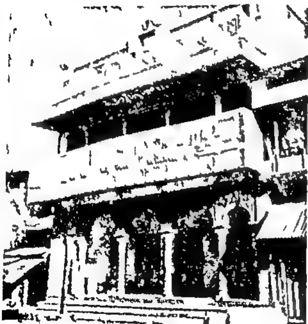
समिति भवन में वाचनालय भी है। पुस्तकालय में प्रथम वर्ष २६ समाचार-पत्र दानस्वरूप आये जिनमें २० मासिक ४ साप्ताहिक, १ अर्ध-साप्ताहिक और १ दैनिक था। इन पत्रों के पढने वालों की संख्या प्रथम वर्ष में ७९०० रही। दूसरे वर्ष समाचार-पत्रों की संख्या ३० हो गई। यह संख्या उत्तरोत्तर बढ़ने लगी। सन् १९६० में आने वाले पत्रों की संख्या ५३ है जिनमें दैनिक ४ साप्ताहिक १४ मासिक २६ पाक्षिक ३ और त्रैमासिक ३ हैं। परिशिष्ट (५) को देखने से ज्ञात होगा कि गत १० वर्षों में कितने पाठक इससे लाभ उठाते रहे हैं?

समिति भवन (प्राचीन)

श्री हिंदी साहित्य समिति की स्थापना श्री सनातन धर्म सभा भवन के एक छोटे से कमरे में की गई थी। यह कमरा इतना छोटा था कि समिति की वृहत् बैठक अधिकारी श्री जगन्नाथदास के स्थान विरक्त मंदिर पर सम्पन्न करनी पड़ती थी। समिति के संचालकों को यह बात बहुत अखरती थी किन्तु धनाभाव के कारण वे कुछ कर सकने में असमर्थ थे। कुछ समय पश्चात् सभा के निश्चयानुसार समिति पुस्तकालय को सभा भवन से हटा लिया गया और सभा भवन के पार्श्ववर्ती मकान में श्री सुदर्शन भंडारी कुम्हेर वाला से २॥।) मासिक किराये पर लेकर मिति भाद्रपद शुक्ला ११ संवत् १९७० वि० दिनांक २४–११–१३ ई० को पुस्तकालय स्थानान्तरित कर दिया गया। जनवरी १९१४ की मकर संक्रान्ति के दिन श्री धाऊ बख्शी रघुवीरसिंह सी० आई० ई० की अध्यक्षता में एक महती सभा का आयोजन किया गया जिसमें समिति के संरक्षक श्री पं० गिरधर शर्मा नवरत्न (झालरापाटन) ने उपस्थित जनता के सामने समिति भवन निर्माण की आवश्यकता को मार्मिक एवं प्रभावोत्पादक शब्दों में प्रतिपादित किया। फलस्वरूप उसी समय ९००) के वचन जनता से प्राप्त हुए। निर्माण कार्य को सम्पादित करने के लिए कुछ उत्साही एवं प्रभावशाली व्यक्तियों की एक समिति का गठन कर लिया गया जिसने उत्साह व लगन से अपना कार्य आरम्भ कर दिया। समिति के पुस्तकालय में पुस्तकों के आदान प्रदान और पाठकों की संख्या दिन प्रतिदिन इतना अधिक बढ़ता जा रहा था कि वर्तमान स्थान भी अपर्याप्त प्रतीत होता था अतः समिति भवन के लिए स्थान की खोज शुरू की और दिनांक -७-१३ को २०८) में यह स्थान तथा कुछ भूमि जहाँ समिति का वर्तमान भवन स्थित है क्रय कर ली गई।

श्री हिन्दी साहित्य समिति भरतपुर के भवन के दोनों रूप

रतनमाल विज्ञान भवन



नव निर्मित सन् १९७० ई

प्राचीन भवन



निर्मित सन् १९१८ ई

समिति भवन बनवाने के लिए चन्दा एकत्रित करने का उद्योग आरम्भ हुआ जिसके लिये दिनांक १८-२-१७ की कार्यकारिणी की बैठक में दो उप समितियां बनाई गई। इन समितियों में निम्न लिखित महानुभाव निर्वाचित हुए—

सर्वश्री सुन्दरलाल त्रिपाठी पं० गुलाबजी मिश्र अधिकारी जगन्नाथदास, पं० रामकृष्ण दुबे माखनलाल पाराशर गंगाप्रसाद शास्त्री पं० द्वारकाप्रसाद एवं वैद्य सदानन्द।

यह समिति सर्वसाधारण में चन्दा एकत्रित करने का कार्य करती रही तथा विशिष्ट जनों से चन्दा प्राप्त करने के लिए सर्वश्री डा० ओंकारसिंह प्रमार नारायणदास कन्हैयालाल वकील जुगल सिंह बाबू शरदवप्रसाद एवं अधिकारी जगन्नाथदास को चुना गया। दोनों समितियों ने अपना कार्य प्रारम्भ कर दिया और थोड़े ही समय में १२००) की धनराशि एकत्रित करली। ज्येष्ठ शुक्ला १० सं० १९७४ को समिति भवन का शिलान्यास श्री गंगाप्रसाद शास्त्री के कर कमलों द्वारा उल्लास सहित सम्पन्न हुआ। भवन का निर्माण कार्य श्री नारायणदास सुपरिन्टेण्डेण्ट पी० डब्ल्यू० डी० तथा शास्त्रीजी की देखरेख में होने लगा। अभी समिति का हाल तथा सामने का भाग ही बन पाया था कि अचानक शास्त्रीजी का असामयिक स्वर्गवास हो गया। समिति को अपने इस कर्मठ कार्य कर्ता और संस्थापक की मृत्यु से अपार क्षति पहुँची। निर्माण-कार्य कुछ समय के लिये अवरुद्ध हो गया। पुस्तकालय एवं वाचनालय का कार्य नवीन भवन में सुचारु रूप से चल सके इस ध्यान में रखते हुए साधारण निर्माण-कार्य पूर्ण करा लिया गया।

यद्यपि समिति भवन का जो नक्शा प्रारम्भ में सोचा गया था वह पूरा न बन पाया था किन्तु समिति का हॉल पुस्तकालय एवं वाचनालय के लिए पर्याप्त था। दिनांक २३-११-१८ को समिति का पुस्तकालय तथा वाचनालय अपने नवीन निजी भवन में आ गया। यह गृह प्रवेशोत्सव बड़ी धूमधाम से मनाया गया। भरतपुर के गण्यमान्य व्यक्तियों के अतिरिक्त सरकारी अधिकारीगण तथा

समिति भवन बनवाने के लिए चन्दा एकत्रित करने का उद्योग आरम्भ हुआ जिसके लिये दिनांक १८-२-१७ को कार्यकारिणी की बैठक में दो उप-समितियाँ बनाई गई। इन समितियों में निम्न लिखित महानुभाव निर्वाचित हुए—

सर्वश्री सुन्दरलाल त्रिपाठी पं० गुलाबजी मिश्र अग्निहोत्री जगन्नाथदास पं० बालकृष्ण दुबे माखनलाल पागार, गंगाप्रसाद शास्त्री पं० द्वारकाप्रसाद एवं वैद्य सन्तानन्द।

यह समिति सर्वसाधारण से चन्दा एकत्रित करने का कार्य करती रही तथा विशिष्ट जनों से चन्दा प्राप्त करने के लिए सर्वश्री डा० ओंकारसिंह परमार, नारायणदास कन्हैयालाल कमल युगलसिंह बाबू नन्दप्रसाद एवं अग्निहोत्री जगन्नाथदास को चुना गया। दोनों समितियों ने अपना कार्य प्रारम्भ कर दिया और थोड़े ही समय में १२००) की धनराशि एकत्रित कर ली। ज्येष्ठ शुक्ला १२ सं० १९७८ को समिति भवन का शिलान्यास श्री गंगाप्रसाद शास्त्री के कर कमलों द्वारा उत्साह सहित सम्पन्न हुआ। भवन का निर्माण कार्य श्री नारायणदास सुपरिन्टेन्डेण्ट पी० डब्ल्यू० डी०, तथा शास्त्रीजी की देखरेख में होने लगा। अभी समिति का हॉल तथा सामने का भाग ही बन पाया था कि अचानक शास्त्रीजी का असामयिक स्वर्गवास हो गया। समिति को अपने एक कर्मठ कार्यकर्ता और संस्थापक की मृत्यु से अपार क्षति पहुँची। निर्माण कार्य कुछ समय के लिये अवरुद्ध हो गया। पुस्तकालय एवं वाचनालय का कार्य नवीन भवन में सुचारु रूप से चल सके इस ध्यान में रखते हुए साधारण निर्माण-कार्य पूरा करा लिया गया।

यद्यपि समिति भवन का जो नक्शा प्रारम्भ में सोचा गया था वह पूरा न बन पाया था किन्तु समिति का हॉल पुस्तकालय एवं वाचनालय के लिए पर्याप्त था। दिनांक २३-११-१८ को समिति का पुस्तकालय तथा वाचनालय अपने नवीन निजी भवन में आ गया। यह गृह प्रवेशोत्सव बड़ा धूमधाम से मनाया गया। नगर के गण्यमान व्यक्तियों के अतिरिक्त सरकारी अधिकारी [illegible]

श्री भारतभूषण भार्गव
श्री भगवानदास गाठी
श्री बाबू गोविन्दप्रसाद ओवरसीयर

निर्माण का आरम्भ हुए कुछ ही दिन व्यतीत हुए होंगे कि विघ्न उपस्थित होने लगे। सर्वप्रथम सनातन धर्म सभा के पदाधिकारियों ने भवन निर्माण की भूमि पर बहुत बड़ी आपत्ति उठाई किन्तु श्री सेठ सत्तीलाल और श्री हरिदत्त वकील की मध्यस्थता से यह झगड़ा शान्त हो गया। दूसरी बाधा समिति के दक्षिणी भाग के जो सेठ चिरंजीलाल मालानी वाला के गृह की तरफ है साधे करने की थी किन्तु यह समस्या भी उक्त सेठ जी की उदारता एवं योग के कारण बड़ी सरलता से हल हो गयी। समिति के हाल में दक्षिणी भाग में श्री राधेलाल सर्राफ के मकान की मोरी समिति भवन के अन्दर आती थी जिससे भवन को भारी क्षति पहुँचती थी और भवन निर्माण में बड़ी बाधक थी। श्री राधेलाल जी ने उसे बन्द कराकर अपनी उदारता का परिचय दिया।

निर्माण कार्य पुनः द्रुतगति से चलने लगा किन्तु रुपया इकट्ठा करने की समस्या पूर्ववत् विघ्न-बाधाओं से कहीं अधिक जटिल मालूम होने लगी। इस गाढ़े समय में समिति के उत्साही कार्यकर्ताओं ने अहर्निशि नगर में भ्रमण करके जो धन राशि इकट्ठी की वह कल्पना से कहीं अधिक थी। इस काम में सर्व श्री डा० बृज बिहारी लाल गुप्ता, मोतीलाल बजाज, मदनलाल बजाज, रामदत्त शर्मा, मन्त्री भगवानदास गाठी, गिरराजप्रसाद सर्राफ, मदनमोहन लाल पोद्दार, भारतभूषण भार्गव, गोपालदास गोयल, प० सुरेश कुमार सूर्यरश्मि, मानाराम खूण्टिया, गोरधनदास स्वामी, लक्ष्मीकान्त शर्मा, कु० रतनसिंह, चम्पालाल ओवरसीयर के नाम विशेष उल्लेखनीय हैं। सबसे अधिक सहायता श्री विष्णुदत्त शर्मा जिलाधीश भरतपुर ने विराम रूप से प्रदान की कर दी।

इस प्रसंग में सर्व श्री विद्याधर शास्त्री और शंकरलाल ठेकेदार के नाम भी विशेष रूप से लिखना उचित है जिन्होंने अपना

श्री हिन्दी साहित्य समिति के वर्तमान विशाल भवन के निर्माणकर्त्ता

(जिनके निरीक्षण एवं अहर्निश परिश्रम से समिति का वर्तमान भवन निर्मित हुआ)



श्री ला० मनमोहन लाल जी पोद्दार
(सभापति नवीन भवन निर्माण समिति सन् १९४७)



श्री राव् गोविन्द प्रसाद जी ओवरसीयर
(नवीन भवन निर्माण योजना के निर्माता)

अमूल्य समय देकर समिति का पत्थर व इंट विभाग कमीशन के साथ दिलाने में सहायता की।

केवल सात आठ महीने के अथक परिश्रम के फलस्वरूप भवन ता बन कर तयार हो गया किन्तु भवन के अनुरूप फर्श नहीं बन पा रहा था जिसको श्री मन्नालाल बजाज उपाध्यक्ष के सत्प्रयत्नों से सेठ श्री मनोहरलाल जी महगाया वाला ने पूरा करा कर समिति भवन में चार चाँद लगा दिये। समिति के ट्रस्टी हिम्मत राम सेठ श्री हरिचरनलाल जी नई मंडी ने अपने स्वर्गीय पिताजी की स्मृति में नवीन रूप देकर रह सहकाय को पूरा करा दिया।

भवन निर्माण में कुल लगभग ७६०००) रु० व्यय हुए जब कि आरम्भ में केवल (२०००) रु० ही व्यय आंका गया था। इस बड़ी राशि को देने वाले दानदाताओं के नाम परिशिष्ट (८) में दिये गये हैं।

इस भवन के नव निर्माण का समस्त कार्य श्री मदनमोहन लाल पारार तथा राव गोविन्दप्रसाद ओवरसीयर को सौंपा गया था जिसको उन्होंने बड़ी योग्यता परिश्रम और लगन के साथ पूरा किया। समिति के समचारी पं० कुन्दनलाल ने भी रात दिन उत्साह व परिश्रम से कार्य किया जिसके लिये समिति ने उन्हें १००) रु० पारितोषिक प्रदान किया।

मुख्य भवन के अतिरिक्त समिति की अचल सम्पत्ति में तीन दुकानें और हैं जो भवन के निकट ही शहर के मुख्य बाजार में स्थित हैं। इन दुकानों को श्री शान्तिस्वरूप जी वालेर (रुई गली) ने अपने पूज्य पिता श्री हीरालालजी बोहरे की पुण्य स्मृति में समिति को भेंट किया। इस कार्य में समिति के तत्कालीन उपाध्यक्ष श्री डा० गोपालदास शर्मा का प्रयत्न उल्लेखनीय है।

को द्विगुणित कर दिया। जब तीन दिन के कार्यक्रम से जनता सन्तुष्ट न हुई तो अधिवेशन एक दिन के लिये और बढ़ा दिया गया। इस अधिवेशन के स्वागताध्यक्ष श्री राजपुरोहित प० कृष्णवल्लभ जी थे। जिन महानुभावों ने सभापति पद ग्रहण किया था उनके नाम निम्न प्रकार हैं —

प्रथम दिन—रायबहादुर श्री बाऊ वर्मा रघुवीरसिंह जी

द्वितीय दिन—प० श्री रघुनाथसहाय जी

तृतीय दिन—गौडेश्वराचार्य गोस्वामी श्री मधुसूदनलाल जी

चतुर्थ दिन—स्वामी सत्यदेव जी परिव्राजक

द्वितीय वार्षिकोत्सव सन् १९१६ में मनाया गया। वह भी अद्वितीय रहा। सम्मिलित होने वाले महानुभावों में से निम्नलिखित के नाम विशेष उल्लेखनीय हैं —

१ श्री प० शालग्राम शास्त्री प्रोफेसर पटियाला
२ श्री प० गौरीशंकर हीराचन्द ओझा अजमेर
३ श्री प० गिरधर शर्मा नवरत्न राजगुरु झालरापाटन
४ श्री प० लक्ष्मीधर वाजपेयी कानपुर
५ श्री प० सत्यनारायण जी कविरत्न धाधूपुरा आगरा
६ श्री प० श्रीरामाजी सामवेदी आगरा।

इस प्रकार वार्षिक उत्सव मनाने की पद्धति चल निकली। अब तक समिति से चवालीस वार्षिक उत्सव मनाये जा चुके हैं। वैसे तो सभी अधिवेशन बड़ी धूमधाम से मनाये गये किन्तु तेतालीसवें और चवालीसवें अधिवेशन के समय विशेष जनोत्साह देखा गया। तेतालीसवाँ वार्षिक उत्सव १९४५ में आगरा के राजा गुलाबराय के सभापतित्व में मनाया गया। इस अवसर पर कवि कौशिक का अभिनय अत्यंत रोचक रहा जिसका श्रेय स्वर्गीय बाबू चन्द जी शर्मा को है। इसके अतिरिक्त रसदरबार हिन्दी उर्दू समानार्थक परीक्षा व कवि सम्मेलन का कार्यक्रम भी अधिक आकर्षक रहा। इस अधिवेशन के सभापति तत्कालीन उपमन्त्री श्री मदनलाल बजाज थे।

समिति के इतिहास में सबसे अधिक आकर्षक ४४वाँ अधिवेशन

श्री हिन्दी साहित्य समिति के कर्णधार

(जिनके भागीरथ प्रयत्न से समिति का विशाल भवन १९५७ मे पुनर्निर्मित हुआ)

वर्तमान अध्यक्ष (सन् १९५५ से १९६२ तक)



श्री डा० दु. ...हारीलाल एम० ए० (हिन्दी तथा राजनीति विभाग) पी एच डी

वर्तमान उपाध्यक्ष (सन् १९५८ से १९६२ तक)



श्री मोतीलालजी बजाज

या जा १६ १७ व १८ सितम्बर १९६६ ई० को डा० रामविलास शर्मा के सभापतित्व में सम्पन्न हुआ। यह अधिवेशन १६ सितम्बर को बालरवि रश्मियों के प्रस्फुटित होते ही शांति एवं उल्लासपूर्ण वातावरण में समिति के घर में प्रारम्भ किया गया। वाद्ययन्त्रों की मनोहारी ध्वनि के बीच हिन्दी साहित्य समिति का पीताम्बरी ध्वज स्वच्छ आकाश में भरतपुराधीश श्री ब्रजेन्द्रसिंह जी के कर कमलों द्वारा फहराया गया। स्वागताध्यक्ष श्री डा० कृष्णबिहारीलाल गुप्ता ने भरतपुर नगर के महत्व का वर्णन करते हुए बताया कि यह स्थान ब्रजभाषा साहित्य एवं संस्कृति का केन्द्र रहा है और इस ब्रज भू-खण्ड को ब्रजभाषा के उच्चकोटि के कवि सोमनाथ और सूदन ने जन्म लेकर गौरवान्वित किया है। अन्त में अधिवेशन में पधारे हुए सभी हिन्दी प्रेमियों का स्वागत करते हुए उन्होंने आशा व्यक्त की कि हिन्दी की बहुमुखी प्रगति जगत की भाषाओं के बीच सर्वोच्च आसन ग्रहण करने में समर्थ होगी।

सायंकाल को डा० कमलेश जी का प्रभावपूर्ण भाषण तथा एक विराट कवि-सम्मेलन हुआ। ब्रजभाषा और खड़ीबोली के कवियों की सरस, सुन्दर एवं प्रभावोत्पादक कविताओं ने जनमानस को मन्त्रमुग्ध कर दिया। इस वृहत् कवि-सम्मेलन के अतिरिक्त दूसरे व तीसरे दिन गोष्ठी प्रवचन अन्त्याक्षरी, वादविवाद गायन आदि का भी आयोजन किया गया। सबसे अधिक आकर्षक सम्पादकीय रूपक था जिसमें समन्वय परम्पराओं पर पूर्ण प्रकाश डाला गया। इस रूपक में राष्ट्रपति का भाषण, प्रश्नोत्तर सरकारी विधेयक गैरसरकारी विधेयक, स्थगन प्रस्ताव सभी आकर्षक ढंग से प्रस्तुत किये गये थे। सरकारी पक्ष और विरोधी पक्ष के उत्तर प्रत्युत्तर एवं अन्य बातें दिल्ली में होने वाली संसद की कार्यवाही से किसी प्रकार कम न थी। इस प्रदर्शन में निम्नलिखित महानुभावों के भाषण विशेष सराहनीय रहे —

सव श्री डा० बृजबिहारीलाल प्रो० हरसहाय प्रो० किशन किशोर महर्षि, मा० उत्तमगोपाल मा० नत्थीलाल मा० अनूपसिंह

प० सुरेन्द्रकुमार मूरध्वज श्री रामस्त शास्त्री श्री मुकुटबिहारीलाल वकील ।

विशेष अधिवेशन

समिति का मुख्य लक्ष्य जनता में हिन्दी का प्रचार करना रहा है। इसके लिये उपयुक्त वार्षिक अधिवेशनों के अतिरिक्त मार्च १६४४ में विक्रम द्विसहस्त्राब्दि समारोह का भी आयोजन किया गया। समिति के इस बृहद् कार्यक्रम को सफल बनाने में समस्त स्थानीय संस्थाओं ने पूर्ण सहयोग दिया। राज्य की ओर से भी राजकीय कार्यालयों में पूरे दिवस का अवकाश रहा।

नगर में एक बृहद् जलूस निकाला गया जिसमें समस्त स्थानीय संस्थाओं के झण्डे थे। यह जुलूस समिति के अहाते में बने विशाल पंडाल में पहुँचकर सभा के रूप में परिवर्तित हो गया। श्री गोकुलचन्द दीक्षित द्वारा आयोजित विक्रम दरबार का रूपक प्रदर्शित किया गया। इस रूपक के कविरत्नों का परिचय दीक्षित जी द्वारा (बन्दीजन स्वरूप में) दिया गया। यह अभिनय इतना सुन्दर बन पड़ा कि उपस्थित जनता मन्त्र मुग्ध सी हो गई।

इस उत्सव में सम्मिलित होने वाले विशिष्ट व्यक्तियों में भरतपुर नरेश श्री बृजेन्द्रसिंह जी का नाम विशेष उल्लेखनीय है।

स्वर्ण जयन्ती महोत्सव

इस वर्ष दिनांक १२ २ ६१ से १४ २ ६१ तक समिति स्वर्ण जयन्ती महोत्सव बड़ी धूमधाम से मना रही है। इसी अवसर पर साहित्य अकादमी उदयपुर द्वारा आयोजित मत्स्य क्षेत्रीय एवं उपनिषद् समिति के तत्वावधान में होगा जिसका विषय है लोक रुचि और साहित्य। इस महोत्सव का उद्घाटन भारत के उप राष्ट्रपति महामहिम डा० सर्वपल्ली राधाकृष्णन् के कर कमलों द्वारा होगा (इसका कार्यक्रम परिशिष्ट में देखिये)।

२ परीक्षा

समिति ने हिन्दी भाषा के प्रचार एवं ज्ञानवृद्धि के हेतु जो

अनेक प्रयत्न किये उनमें सम्मेलन की परीक्षाओं का केन्द्र स्थापित करना भी एक है। दिनांक १९-८-३९ को हिन्दी साहित्य सम्मेलन प्रयाग ने इस समिति को प्रथमा तथा मध्यमा परीक्षाओं का केन्द्र स्वीकार किया। सितम्बर १९२९ में प्रथम बार परीक्षाएँ आरम्भ हुईं जिनमें केवल दो परीक्षार्थी प्रविष्ट हुए और दोनों उत्तीर्ण भी हुए। राजभाषा घोषित होने से पूर्व हिन्दी की इन परीक्षाओं में सफलता प्राप्त करने से कोई राजकीय नौकरी प्राप्त नहीं होती थी अतः परीक्षाओं में सम्मिलित होने वाले परीक्षार्थियों की संख्या बहुत कम थी। ऐसी स्थिति में समिति शुल्क रहित भी विद्यार्थियों को परीक्षाओं में सम्मिलित होने के लिए उत्साहित करती थी। धीरे धीरे विद्यार्थियों की संख्या में वृद्धि होने लगी जो १९४३ के बाद उत्तरोत्तर बढ़ती ही गई। सन् १९४७ में हिन्दी राजभाषा घोषित करदी गई। सन् १९५० में प्रो० कुंजबिहारीलाल गुप्ता केन्द्र व्यवस्थापक नियुक्त हुए और उनके प्रयत्नों से हिन्दी साहित्य सम्मेलन ने १९५१ में समिति को उत्तमा का केन्द्र भी स्वीकार कर लिया। तब से परीक्षार्थियों की संख्या प्रति वर्ष बढ़ती ही गई। सन् १९६० की परीक्षाओं में सम्मिलित होने वाले परीक्षार्थियों की संख्या २२० है जिसका विवरण इस प्रकार है —

उत्तमा ५३ मध्यमा ४२ प्रथमा ६ वैद्य विशारद ८६ कृषि विशारद ८ एवं उपवैद्य २४। यह संख्या पिछले ४ वर्षों में रही संख्या में सबसे अधिक है जिसके लिए समिति केन्द्र के वर्तमान केन्द्र व्यवस्थापक श्री रामदत्तजी शर्मा एम० ए० बी० एड० की व्यवस्था सराहनीय है। परीक्षार्थियों की सुविधा के लिए परीक्षा होने से लगभग २ मास पूर्व रात्रि पाठशाला की व्यवस्था की जाती है जिसका संचालन इस वर्ष वैद्य रामशरण जी शास्त्री तथा श्री रामदत्त जी शास्त्री एम० ए० बी० एड० केन्द्र-व्यवस्थापक ने किया। इस बीच परीक्षार्थियों को पाठ्य-पुस्तकों की विशेष सुविधा भी दी जाती है।

३ प्रौढ़-शिक्षा

अक्तूबर १९४४ में समिति का शिष्ट मण्डल राजकीय सहायता

समिति के कार्यालय में भेजा जायेगा और उसका जमा-खर्च भी समिति के हिसाब में लिया जायेगा।

३ हिन्दी साहित्य समिति नाटय समिति को किसी प्रकार की आर्थिक सहायता नहीं देगी प्रत्युत नाटय समिति का कर्तव्य होगा कि वह अपने प्रत्येक खेल की आय का कम से कम १०वां अंश समिति को दे।

४ आवश्यकता पड़ने पर समिति का कर्तव्य होगा कि वह नाटय समिति को शारीरिक एवं प्राविधिक सहायता दे।

५ नाटय समिति का यह कर्तव्य ठहराया गया कि वह प्रत्येक वर्ष अपने अभिनयों का पूर्ण विवरण समिति को भेजे।

ज्योंही इस समिति की स्थापना हुई इसके उत्साही कार्यकर्त्ता इसके कार्य में जुट गये। जिन नाटकों का अभिनय किया गया वे सब शुद्ध हिन्दी में लिखे हुए थे। अभिनयों को देखने के लिये भरतपुर की जनता इतनी उत्सुक रहती थी कि पंडाल में बैठने को स्थान बड़ा कठिनता से मिलता था। तत्कालीन भरतपुर नरेश श्री कृष्णसिंहजी इस नाटय समिति में विशेष सहानुभूति रखते थे। थोड़े समय में ही इस समिति ने आशातीत सफलता प्राप्त करली और अपने ध्येय के अतिरिक्त सैकड़ों रुपये का आवश्यक सामान भी एकत्रित कर लिया। वार्षिक अधिवेशनों पर तो नाटक होते ही थे किन्तु अन्य अवसरों पर भी शिक्षाप्रद नाटकों के अभिनय की व्यवस्था की जाती। प्रथम विश्व युद्ध में आर्थिक सहायता देने के लिये समिति ने कई नाटक खेले और उनसे प्राप्त आय को युद्ध की सहायता हेतु भेज दिया गया। इन नाटकों को देखने के लिए भरतपुर नरेश बाहर से आने वाले अंग्रेजों एवं भारतीय अतिथियों सहित सम्मिलित होते थे। इन सभी अतिथियों ने नाटय समिति के कार्यों की मुक्तकंठ से प्रशंसा की।

स्व० श्री माजीसाहिबा श्री गिरराज कौर नाटय समिति में पूर्ण सहानुभूति रखती थीं और प्रत्येक अभिनय में पधार कर समिति का उत्साहवर्द्धन करती थीं।

श्री हिन्दी साहित्य समिति भरतपुर के उत्साही एवं कर्मठ पदाधिकारी

वर्तमान प्रधान मन्त्री

जिनकी कार्य प्रणाली के फलस्वरूप समिति ने अभूतपूर्व उन्नति की है।



श्री मन्नालालजी बजाज

उपाध्यक्ष (१९५५ से ५८ तक)

प्रधानमन्त्री (१९५८ से ६२ तक)

(स्वर्णजयन्ती ग्रन्थ के प्रकाशन तथा भवन पुनर्निर्माण के प्रेरक)

भूतपूर्व प्रधान मन्त्री

जिनके मन्त्रित्व काल में समिति का विशाल भवन पुनर्निर्मित हुआ।



श्री रामदत्तजी शर्मा एम ए बी एड साहित्य रत्न, शास्त्री

प्रधान मन्त्री (१९५६ से ५८ तक)

केन्द्र व्यवस्थापक (१९५६ से ६१ तक)

बना रहती थी। अत कुछ उत्साही नवयुवको न समिति की दस रख म एक विधवाश्रम की स्थापना की जिसम स्त्रिया को न्यायालय मे लेकर रखा जाता था। कुछ काल तक यह आश्रम ठीक प्रकार चलता रहा परन्तु महिलाओ के विवाह कर लेन क पश्चात् आश्रम रिक्त हो गया और समिति को धनाभाव क कारण भी इस बद कर देना पडा।

सन् १९२६ म हिन्दी साहित्य समिति क सरक्षण म श्री गिरराज सेवादल नामक एक दल की स्थापना की गई। इस दल का उद्देश्य राज्य और जनता की सेवा करना था जसे पीडित जनता म औषधि वितरण, आग बुझाना, पानी म डूबे व्यक्तियो को निकालना सफाई सप्ताहो का आयोजन, श्रावण मास मे होन वाली स्थानीय मदिरो की रामलीला के अवसरो पर उचित प्रबन्ध एव खोये बिछुडे बालको को उचित स्थानो पर पहुँचाने का प्रबन्ध आदि।

सन् १९२७ म हिन्दी साहित्य सम्मेलन प्रयाग क १७ व अधिवेशन पर भी इस दल न विशेष सेवा की यद्यपि उत्साही युवको क बाहर चले जान के कारण यह दल एक वष की अल्पावधि क पश्चात् ही छिन्न भिन्न हो गया। किन्तु समिति समाज सेवा क लक्ष्य को भुला न सकी और ऐसे दल की स्थापना के लिये निरन्तर प्रयत्न शील रही।

दिनाक १० अप्रल १९४३ को तत्कालीन दीवान कु० श्री हीरासिंह क इगित पर इस दल को पुनर्जीवित किया गया। इस समय इस दल के सभापति स्वय श्री कु० साहब ही निर्वाचित किये गये। स्थापित होते ही यह दल समाज सेवा म तल्लीन हो गया किन्तु किन्ही कारणो स दल का काय अधिक न चल सका।

বার্ষিক সদস্য-সংখ্যা সূচক

ক্রমাঙ্ক	সাল	সদস্য সংখ্যা	ক্রমাঙ্ক	সাল	সদস্য সংখ্যা
১	১৯১১ ১২	[illegible]	২৩	১৯৩৯-৪০	১৪
	১৯১১-১৪	৩২১	২৪	১৯৪০-৪১	৭০
	১৯১৪-১৫	০০	২৫	১৯৪১-৪২	৮৫
৪	১৯১৫-১৬	৪	২৬	১৯৪২-৪৩	৯১
৫	১৯১৬-১৭	১৩০	২৭	১৯৪৩-৪৪	৫৯
	১৯১৭-১৮	১৪২	২৮	১৯৪৪-৪৫	১৯
৭	১৯১৮-১৯	১৫১	২৯	১৯৪৫-৪৬	৩০৭
৮	১৯১৯-২০	১২০	৩০	১৯৪৬-৪৭	৩৯৭
৯	১৯২০-২১	১৭৩	৩১	১৯৪৭-৪৮	৪৮২
১০	১৯২৬-২৭	২২৮	৩২	১৯৪৮-৪৯	২৯০
১১	১৯২৭-২৮	২০৪	৩৩	১৯৪৯-৫০	৬৪
১২	১৯২৮-২৯	১৬৪	৩৪	১৯৫০-৫১	৩৭৫
১৩	১৯২৯-৩০	১০০	৩৫	১৯৫১-৫২	৪৩
১৪	১৯৩০-৩১	১৩৪	৩৬	১৯৫২-৫৩	৩৯৯
১৫	১৯৩১-৩২	১৯৬	৩৭	১৯৫৩-৫৪	২৮৯
১৬	১৯৩২-৩৩	২৩০	৩৮	১৯৫৪-৫৫	২৫৫
১৭	১৯৩৩-৩৪	২১৮	৩৯	১৯৫৫-৫৬	৪০৮
১৮	১৯৩৪-৩৫	২ ৯	৪০	১৯৫৬-৫৭	৮৯৬
১৯	১৯৩৫-৩৬	২৩৪	৪১	১৯৫৭-৫৮	৪৩০
২০	১৯৩৬-৩৭	২৭৮	৪২	১৯৫৮-৫৯	৪৫৬
২১	১৯৩৭-৩৮	[illegible]	৪৩	১৯৫৯-৬০	৫০১
২২	১৯৩৮-৩৯	২০৭	৪৪	১৯৬০-৬১	৫৫০

परिशिष्ट २

आजीवन सदस्य-सूची

१ श्री श्यामलाल घीया
२ श्री गौरीशंकर पचाली
३ श्री चतुर्भुजदास चतुर्वेदी
४ श्री मास्टर प्रभूलाल गायन
५ श्री चिरंजीलाल पाहार
६ श्री जवाहरलाल नाहटा
७ श्री पूनचन्द जैन ठेकेदार ब्याना
८ श्री रायबहादुर सेठ भागचन्द सोनजी अजमेर
९ श्री श्यामलाल गुप्ता सुपुत्र श्री किराडीलाल मुनीम
१० श्री डा० हरिश्चन्द्र श्रीवास्तव
११ श्री नत्थीलाल शर्मा टोडानगर
१२ श्री भम्मनलाल रिटायर्ड स्टेशन मास्टर
१३ श्री हरीराम श्रीराम एजेन्ट बर्मा शेल
१४ श्री रामजीलाल सहाय वाले
१५ श्री मेजर धीरसिंह चौहान
१६ श्री रामस्वरूप माताचाल बजाज
१७ श्री नन्नाराम बद्रीप्रसाद ब्याना
१८ श्री मुरारीलाल चतुर्वेदी
१९ श्री लक्ष्मीदेवी गुप्ता धर्मपत्नी बाबू हरिदत्तजी एडवोकेट
२० श्री रामसहाय सन्तमुरारी स्वर्णकार

परिशिष्ट ३

संरक्षक सूची

१ श्री महामहोपाध्याय गिरधर शर्मा नवरत्न राजगुरु झालरापाटन
२ श्री सेठ मनोहरलाल सहाय वाले
३ श्री सेठ हरिचरनलाल नर्मदा मण्डी
४ श्री सेठ जगन्नाथप्रसाद शीतल गुरु नानक आइरन स्टोर्स क०

परिशिष्ट १

वार्षिक सदस्य-संख्या-सूचक

क्रमांक	सत्र	सदस्य-संख्या	क्रमांक	सत्र	सदस्य संख्या
१	१९१२ १३	२०२	२३	१९३९ ४०	२१४
२	१९१३ १४	३५१	२४	१९४० ४१	२९०
३	१९१४ १५	३००	२५	१९४१ ४२	२८[illegible]
४	१९१५ १६	२२५	२६	१९४२ ४३	२९१
५	१९१६ १७	१७०	२७	१९४३ ४४	२९३
	१९१७ १८	१५३	२८	१९४४ ४५	३१९
७	१९१८ १९	१४५	२९	१९४५ ४६	३३७
८	१९१९ २०	१३०	३०	१९४६ ४७	३९७
९	१९२० २१	१७७	३१	१९४७ ४८	४८२
१०	१९२६ २७	२२८	३२	१९४८ ४९	३९०
११	१९२७ २८	२०४	३३	१९४९ ५०	[illegible]६४
१२	१९२८ २९	१६४	३४	१९५० ५१	३७५
१३	१९२९ ३०	१००	३५	१९५१ ५२	४३३
१४	१९३० ३१	१७४	३६	१९५२ ५३	३९९
१५	१९३१ ३२	१०६	३७	१९५३ ५४	३८९
१[illegible]	१९३२ ३३	१७०	३८	१९५४ ५५	३५५
१७	१९[illegible] ३४	२१८	३९	१९५५ ५[illegible]	४०८
१८	१९३४ [illegible]५	२३५	४०	१९५६ ५७	२९६
१९	१९[illegible]५ [illegible]६	२३४	४१	१९५७ ५८	४३०
[illegible]०	१९[illegible] [illegible]७	२२८	४२	१९५८ ५९	४५[illegible]
२१	१९३७ ३८	–	४३	१९५९ ६०	५०१
	१९[illegible]८ ३९	२०७	४४	१९६० ६१	५५०

परिशिष्ट २

आजीवन सदस्य-सूची

१ श्री श्यामलाल धीया
२ श्री हीराशंकर पचाली
३ श्री चतुर्भुजदास चतुर्वेदी
४ श्री मास्टर प्रभूलाल गायल
५ श्री चिरंजीलाल पा[illegible]र
६ श्री जवाहरलाल नाहटा
७ श्री पूनमचन्द जैन ठेकेदार ब्याना
८ श्री रायबहादुर सेठ भागचन्द सोनीजी अजमेर
९ श्री श्यामलाल गुप्ता सुपुत्र श्री किरोडीलाल मुनीम
१० श्री डा० हरिश्चन्द्र श्रीवास्तव
११ श्री नत्थीलाल शर्मा टाटानगर
१२ श्री मम्मनलाल रिटायर्ड स्टेशन मास्टर
१३ श्री हरीराम श्रीराम एजेन्ट बर्मा शेल
१४ श्री रामजीलाल महगाय वाले
१५ श्री मेजर धीरसिंह चौहान
१६ श्री रामस्वरूप मानालाल बजाज
१७ श्री दल्लाराम बन्शीप्रसाद ब्याना
१८ श्री मुरारीलाल चतुर्वेदी
१९ श्री लक्ष्मीदेवी गुप्ता धर्मपत्नी बाबू श[illegible]तजी एडवोकेट
२० श्री गंगासहाय [illegible] ठेकेदार

परिशिष्ट ३

संरक्षक सूची

१ श्री म० म० [illegible]ाध्याय गिरधर शर्मा नवरत्न राजगुरु झालरापाटन
२ श्री सेठ [illegible] वाले
३ श्री सेठ हरिचरनलाल नई मण्डी
४ श्री सेठ जगन्नाथप्रसाद गोयल गुरु नानक आइरन स्टील क०

आय-व्यय निरीक्षक

(१) ला० मुकुन्दलाल जी तिवारी (१९१)
(२) बा० कन्हैयालाल जी (१९)

सन् १९३६ ३७

श्री बाबू रघुवीरसहाय जी बी० ए० (प्रधान)
बद्री नारायण जी (उप प्रधान)
डा० कालीप्रसाद जी (उप प्रधान)
जगन्नाथप्रसाद जी अरोड़ा (मन्त्री)
रमाकान्त जी शर्मा (बी०) (मन्त्री)
युधिष्ठिरप्रसाद जी चतुर्वेदी (उप मन्त्री)
प० रामस्वरूप जी मिश्र (पुस्तकालयाध्यक्ष)
ला० प्रभुलाल गायन (उप-पुस्तकालयाध्यक्ष)
कोठारी जगन्नाथदास जी (आय व्यय निरीक्षक)

सन् १९३६ ३८

श्री बा० रघुवीरसहाय जी प्रधान
डा० कालीप्रसाद जी उप प्रधान
कन्हैयालाल जी
रमाकान्त जी शर्मा मन्त्री
युधिष्ठिर प्रसाद जी चतुर्वेदी उप मन्त्री
पुरुषोत्तमलाल जी
वैद्य देवीप्रसाद जी अवस्थी पुस्तकालयाध्यक्ष
प० धर्मनिधि जी शास्त्री उप-पुस्तकालयाध्यक्ष
रामस्वरूप जी मिश्र उप-पुस्तकालयाध्यक्ष
कोठारी जगन्नाथदास जी आय-व्यय निरीक्षक

सन् १९३८ ४०

श्री बालकृष्ण जी दुबे प्रधान
सुन्दरलाल जी ज्ञानी उप प्रधान
गिरजालाल जी पाठक
कोठारी जगन्नाथप्रसाद जी आय-व्यय निरीक्षक
मा० चम्पाराम जी मन्त्री
युधिष्ठिरप्रसाद जी चतुर्वेदी उप मन्त्री
प० नन्दकुमार जी

श्री चम्पालाल जी कवीश्वर पुस्तकालयाध्यक्ष
प्रभुलाल गायन उप-पुस्तकालयाध्यक्ष
जयशंकर जी चतुर्वेदी

सन् १९४०-४३

श्री बालकृष्ण जी दुब प्रधान
सुन्दरलाल जी जाना उप प्रधान
चिरंजीलाल जी पाटार
पं० नत्थनलाल जी शर्मा मन्त्री
युधिष्ठिरप्रसाद जी उप मन्त्री
मन्नलाल जी बजाज
प्रेमनिधि जी शास्त्री पुस्तकालयाध्यक्ष
प्रभुदयाल जी उप-पुस्तकालयाध्यक्ष
तुलसीराम जी
कोठारी जगन्नाथप्रसाद जी आय-व्यय निरीक्षक

सन् १९४३-४६

श्री बालकृष्ण जी दुब प्रधान
चिरंजीलाल जी पाटार उप प्रधान
चतुर्भुजलाल जी चतुर्वेदी
पुरुषोत्तमलाल जी मन्त्री
प्रभुदयाल जी दयालु उप मन्त्री
प्रेमनाथ जी चतुर्वेदी पुस्तकालयाध्यक्ष
प्रभुलाल गायन उप-पुस्तकालयाध्यक्ष
कोठारी जगन्नाथप्रसाद जी आय-व्यय निरीक्षक

सन् १९४६-४९

श्री बालकृष्ण जी दुब (प्रधान)
चिरंजीलाल जी पाटार (उप प्रधान)
चन्द्रशेखर जी शर्मा
पुरुषोत्तमलाल जी मन्त्री
प्रो० हरसहाय जी उप मन्त्री
प्रेमलाल गायन पुस्तकालयाध्यक्ष
श्रीचन्द्र जी उप-पुस्तकालयाध्यक्ष
बनवारीलाल जी आय-व्यय निरीक्षक

१६	१६५७ ४८	१५'६?
१७	१९/८ ५६	१६८/७
१८	१९४६ ०	१७८/१
१९	१९ ६?	२१८/७

टिप्पणी—सन् १९६ के पूर्व का विवरण उपलब्ध नहीं है।

परिशिष्ट ८ (ब)

सूची दानदाता—नवीन भवन निर्माण हेतु (सन् १९५७)

१	विकास विभाग राजस्थान	३५००)
२	नगरपालिका भरतपुर	३००)
३	श्री गनतालाभाल जी मेम्बाय वाल	निर्मित भवन का नाम
४	श्री हरिचरनलाल जी नई मण्डी	१५५१)
५	महन्त श्री नारायणदास जी मन्दिर श्री मोहनजी किला	७०१)
६	श्री रामजी जगन्नाथ जी नागर गुड़ नानक स्टोर नई मण्डी	५ १)
७	श्री मुरारीलाल जी चतुर्वेदी	१५२)
८	श्री सोनाराम रामजीलाल जी महगाय वाल	१५१)
९	कोठी हरभानसिंह जी	१५१)
१०	श्री धीरीसिंह जी चौहान	१५१)
११	श्री मुरलीधर महेन्द्रकुमार जी मथुरा	१५१)
१२	श्री भरतपुर आन्दन एण्ड सिन्डीकेट गंगामन्दिर	१५१)
१३	श्री हरीराम नौराम बर्मा नल	१५१)
१४	श्री बल्लीराम बद्रीप्रसाद जी थाना	१५१)
१५	श्री रामस्वरूप मोतीलाल जी अरोरा	१५१)
१६	श्री रामचन्द जी माथुर	१५१)
१७	श्री भगवानदास जी कोठी	१५१)
१८	श्री लक्ष्मीदेवी गुप्ता धर्मपत्नी बा हरिदत्त जी एडवोकेट	१५१)
१९	श्री रामजीलाल बद्रीप्रसाद सर्राफ	१ १)
२	श्री रामशरन गोविन्दशरन जी सर्राफ	१ १)
२१	श्री भजनलाल जी प्रसीडेण्ट नई मण्डी	१ १)
२२	श्री प्राहिन विद्याधर जी	१ १)
२३	श्री मन्नालाल जी वकील	१०१)
२४	श्री सूरजमल प्रभूलाल जी ठाकार	१०१)
२५	श्री साधूराम जी ठेकेदार	५१)

२६	श्री दुर्गाप्रसाद निरंजनलाल बजाज	५१)
२७	श्री रामचन्द्र कृष्णलाल बजाज	५१)
२८	श्री राधेलाल जी गणेशीलाल जी सराफ	५१)
२९	श्री रामनारायन मन्नीरामजी मन्गाय वाले	५१)
३०	श्री नत्थालाल जी नामा टालनगर	५१)
३१	श्री नत्थालाल प्यारेलाल आन्तिया	५१)
३२	श्री कन्हैयालाल बद्रीप्रसाद जी उच्चन	५१)
३३	श्री मिट्ठनलाल जगन्नाथप्रसाद महगाय वाले	५१)
३४	श्री मावलसिंह पन्नालाल जी उच्चन	५१)
३५	श्री मामनियाराम रामचरनलाल जी कमर	५१)
३६	श्री कन्हैयालाल छत्रविहारी जी मौन्गर	५१)
३७	श्री चुन्नीलाल रामप्रसाद जी बजाज	५१)
३८	श्री ठा० मनाराम जी रिटायर्ड अफसर काठा वाले	२१)
३९	श्री गोपालदास जी गायन एम काम०	११)
४०	श्री बजनाथ जी सर्राफ	११)
४१	श्री प्यारेलाल जी सर्राफ	११)
४२	श्री बाबूलाल जी हलवाई	११)
४३	श्री लल्लूलाल जी मार्शल वाले	११)
४४	श्री रूपचन्द जी गुप्ता महल वास	११)
४५	श्री छोटेलाल नारायनलाल जी परचूनिया	११)
४६	श्री मोहनलाल जी सराफ गली नं ६७	११)
४७	श्री कलाचन्द जी गली नं० १८१	११)
४८	श्री चौ० दौलतराम जी चतुर्वेदी	११)
४९	श्री रमनलाल जी बजाज गली नं० १८१	१२)
५०	श्री राधारमन बूरे वाले गली नं० ८२	७)
५१	श्री राधारमन बूरे वाले गली नं ४६०	७)
५२	महन्त श्री गंगादास जी महाराज	७)
५३	श्री स्यामरूप जी पटवारी	५)
५४	प० गौरीशंकर जी रागा	५)
५५	श्री रामसहाय जी नागानी	५)
५६	श्री केलावक्सजी गायलगढ़	५)
५७	श्री रामकिशन जी अनाह गढ़	४)
५८	श्री सूरजभान चन्द्रभान	१)
५९	श्री ब्रजेन्द्रसिंह जी गोपालगढ़	२)
		२)

६०	श्री मा नना । जी ह दार्ड	।)
६१	श्री ना नी राम जी गाना गाह	५)
६२	श्री गुर नगर जी ग जारी	४)
६३	श्री गणपुन्नरा जी गारन्री	।)
६४	श्री मन्थीप्रमान जी	२)
६५	श्री बाद्लार जी नगार	२)
६६	श्री म नसिंह जी गानागाह	१)
६७	श्री पद्मसिंह जी गाणागाह	१)
६८	श्री मा नारायनदास जी	१)
६९	श्री जगदीशप्रसाद जी नानगार	१)
७०	श्री प्रकाशचन्द जी कल्याउन्दर	१)
७१	श्री पद्मसिंहजी दस्ता	१)
७२	श्री बहादुरसिंह जी	१)
७३	श्री उदयभानसिंह जी	१)
७४	श्री फतहसिंह जी	१)

परिशिष्ट ६

आय व्यय श्री हिन्दी साहित्य समिति भरतपुर

क्रम	सन	आय	व्यय
१	सन् १९१२ १३	८ ६ ७२ न० प	६६० ४१ न प
२	१९१३ १४	१०२५ ६	१ २७ ३७
३	१९१४ १५	५५६ ०	५४, १२
४	१९१५ १६	३ ८८	३६१ ००
५	१९१६ १७	३ १ ७	२७६० ७३
६	१९१७ १८	२७७४	३१३६ ५८
७	१९१८ १९	१८४१ ६२	१८७४ ८८
८	१९१९ २	२५५ ८८	२३७ ५९
९	१९२ २१	६६६ ३७	४०४ ८८
१	१९२१ २२	५४४ ६१	३८७ ७१
११	१९२२ २३	५७३ ०२	५६० ८६
१२	१९ २४	४४९ २२	३१९ २७
१३	१९२४ २५	९५१ ८८	३९९ ५३
१४	१९२५ २६	४०७ ६२	८ ८ ७८
१५	१९२६ २७	६१५ ३३	१९३१ ३

१६	१९२७ २८	११०७ ९२	१३९३ ९८
१७	१९२८ २९	६७६ ७४	४५७ १७
१८	१९२९ ३०	३११ २५	३२४ ०५
१९	१९३० ३१	३८३ २४	२८ ५८
२०	१९३१ ३२	४१७ ५०	४३३ २
२१	१९३२ ३३	४२४ ८०	४७४ ९४
२२	१९३३ ३४	६९३ १९	८३ ९१
२३	१९३४ ३५	५४१ ८८	५५२ ९०
२४	१९३५ ३६	६९१ ९०	४८८ ९०
२५	१९३६ ३७	६७१ २७	६९३ ३४
२६	१९३७ ३८	६२० ७४	४४५ ०४
२७	१९३८ ३९	४२४ २५	४ २ ७५
२८	१९३९ ४०	७१६ ४४	५५२ ४२
२९	१९४० ४१	८२४ ३९	७७६ ४६
३०	१९४१ ४२	८८२ १६	७२६ ५०
३१	१९४२ ४३	८६८ ४१	८३५ ३
३२	१९४३ ४४	२०३७ ८१	१४३१ ५६
३३	१९४४ ४५	२२५० ८१	१७८८ ४०
३४	१९४५ ४६	२२७९ १६	१९७३ ७४
३५	१९४६ ४७	२६५५ ६९	२४८२ ९४
३६	१९४७ ४८	३२०८ १७	२४९० ००
३७	१९४८ ४९	३११२ ७८	२२२४ ७८
३८	१९४९ ५०	३६०८ ८७	३१४ ११
३९	१९५ ५१	५९ ३१	३१११ ९८
४०	१९५१ ५२	३०४१ ३१	२५३१ ०४
४१	१९५२ ५३	७५५ ७८	७४४ ७२
४२	१९५३ ५४	५५६८ ९१	३९६२ ७८
४३	१९५४ ५५	४७४१ २८	५९४९ ४८
४४	१९५५ ५६	५०७१ ६२	४९८४ ९४
४५	१९५६ ५७	१० ९९ ९१	८५९७ ८२
४६	१९५७ ५८	४०८२ ४१	२४१ ४ ४६
४७	१९५८ ५९	७४७० ३७	७९०५ ४९
४८	१९५९ ६०	८०५३ ७४	६४१६ ७९
४९	१९६० ६१		

परिशिष्ट १०

परीक्षार्थी विवरण, परीक्षा केन्द्र स्थापित १ सितम्बर १९२६

प्रथमा, मध्यमा, (उत्तमा १९५१)

सन्	प्रथमा	मध्यमा	उत्तमा	[illegible]	[illegible]	उपाधि
१९२६	१	१				
१९२७	१	२				
१९	[illegible]	१				
१९ [illegible]						
१९ ४	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]		[illegible]
१९ ६	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]		[illegible]
१९३७	१		[illegible]	[illegible]	[illegible]	×
१९ ८	×	[illegible]		१		×
१९३९		६				[illegible]
१९४	१	१	×		[illegible]	
१९४१	१	४	×	[illegible]	×	[illegible]
१९४२	१	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	×
१९४	[illegible]	१	×	१	[illegible]	×
१९४४	३	२	[illegible]	×	[illegible]	×
१९४५	[illegible]	१	[illegible]	×	[illegible]	×
१९४	×	१[illegible]	×	×	[illegible]	
१९४७	१०	१[illegible]	×	×	×	[illegible]
१९४८	२७	४		[illegible]		[illegible]
१९४९	२३	[illegible]२	×	१८	[illegible]	[illegible]
१९५	[illegible]	[illegible]	[illegible]	१३	×	[illegible]
१९५१	१८	७१	४३	[illegible]	१	[illegible]
१९५२	[illegible]	६८	६८	१८	३	[illegible]
१९५	[illegible]	५१	५३	२९	२	७
१९५४	३	३	[illegible]२	१९	×	३
१९५५	१[illegible]	३[illegible]	९	१९	६	९
१९५६	९	१९	३५	२८	३	६
१९५७	७	२५	३१	२४		६
१९५८	२	१९	१९	६	१	९
१९५९	×	१०		६४	२	२९
१९	[illegible]	३२	[illegible]३	६८	८	२२

रामचन्द्र शर्मा एम ए बी एड० साहित्यरत्न
केन्द्र-व्यवस्थापक

समिति में समय-समय पर आने वाले विशिष्ट व्यक्तियों की कतिपय

सम्मतियाँ

भरतपुर की हिन्दी साहित्य समिति का अवलोकन किया। चित्त बड़ा प्रसन्न हुआ। इसका पुस्तकालय भी देखा। पुस्तकों का संग्रह भी अच्छा है। इससे हिन्दी का प्रचार ब्रज में हो रहा है। इसके संचालक बड़े उत्साही और कार्यकुशल हैं। भगवान करे इसकी दिन दिन उन्नति हो।

ज्ये० कृष्णा २ सं० १९७२ —जगन्नाथ चतुर्वेदी कलकत्ता

भरतपुर की हिन्दी साहित्य समिति उन उत्साहियों से संचालित संस्था है जिनमें प्राण है जिनके भाव हैं और हृदय है। भारत के इस प्रान्त में इस संस्था का होना आवश्यक है यह बात केवल इस संस्था की सफलता से प्रमाणित होती है। इसकी अधिक सफलता की आशा करना तो हमारा कर्तव्य ही है परन्तु उसमें से प्रधान कर्तव्य यहाँ के उत्साही मित्रों का है जिनके प्रयत्न पर हमारी आशा की पूर्ति है।

श्रावण कृ० १२–८२ वि० —साहित्याचार्य चन्द्रशेखर शास्त्री
शारदा सम्पादक प्रयाग

मैंने स्थानीय हिन्दी साहित्य समिति का निरीक्षण किया और कार्यकर्ताओं के स्वाभाविक उत्साह और कार्यनिष्ठा को देखकर मैं बहुत सन्तुष्ट हुआ हूँ। इस समिति द्वारा हिन्दी देवनागरी जगत को बहुत कुछ आशा उन्नति के लिए रखना हुआ ईश्वर से इसकी दृढ़ता के लिए प्रार्थी हूँ।

दि० २० ६ ३१ —चरणदास शास्त्री

हिन्दी साहित्य-समिति भरतपुर का पुस्तकालय देखने का आज मुझको सौभाग्य प्राप्त हुआ—देख कर बड़ा आनन्द हुआ—सभासदों का उत्साह अत्यन्त प्रशंसनीय एवं अनुकरणीय है। भरतपुर राज्य में अनेक उत्तमोत्तम हिन्दी कवि हुए हैं—उनके हस्तलिखित बहुमूल्य ग्रन्थों की खोज और उनके संग्रह व प्रकाशन से हिन्दी संसार को बहुत लाभ पहुँच सकता है। आशा है कि समिति सदा

शक्ति [illegible] कार्यकर्ताओं के भी हाथ में रहीं — ईश्वर से प्रार्थना है कि समिति की उत्तरोत्तर उन्नति हो और हिन्दी की सेवा में इसका पूरा भाग रहा करे।

दि० [illegible] —श्री[illegible] माथुर
एम० ए० [illegible]

हिन्दी साहित्य समिति भरतपुर से संस्था का पता बड़ा ही प्रशंसनीय है। राजपूताने में यह पहली साहित्य समिति है। इस संस्था ने बड़ी उदारता के साथ अथक-प्रयत्न कर समिति का सुन्दर मकान भी बना लिया है। पुस्तकों की संख्या भी अच्छी है। मासिक, साप्ताहिक और दैनिक पत्रों की संख्या भी अच्छी है। यहाँ के पुस्तकालय से पढ़ने वालों की संख्या बहुत बड़ी है। ऐसी समितियों से जनता का बहुत लाभ पहुँच सकता है। चार वर्ष पहले मैंने इस संस्था को देखा था। उसमें और आज की दशा में बहुत अन्तर है और आशा है कि इसके उत्साही सभासद इसको और भी उन्नति देकर जनता के ज्ञान-सम्पादन में सहायक होंगे। प्रत्येक हिन्दी प्रेमी को इसकी सहायता करनी चाहिए। इस समिति की वर्तमान उन्नत दशा देखकर मुझे बड़ा हर्ष हुआ।

दि० [illegible] २१ — गौरीशंकर हीराचन्द ओझा

हिन्दी साहित्य समिति भरतपुर को देखकर मुझे बड़ी प्रसन्नता हुई और इसके इतिहास को जानकर इसके संचालकों के प्रति मेरे मन में श्रद्धा का आविर्भाव हुआ। उनके हिन्दी प्रेम लगन और सत्साहस के लिए मैं उनके चरणों में श्रद्धाञ्जलि अर्पित करता हूँ।

समिति निस्सन्देह राजपूताने की श्रेष्ठ संस्थाओं में से है। इसके द्वारा जो काम हुआ है वह अभिनन्दनीय है और अब भविष्य में उसके द्वारा जो हिन्दी साहित्य की सेवा होने वाली है आशा है वह हिन्दी संसार के लिए प्रसन्नता और गर्व की चीज होगी।

ईश्वर से यही प्रार्थना है कि समिति उत्तरोत्तर उन्नति करे और इसके संचालकगण अपने सौभाग्य के दिनों में उन दिव्य गुणों को न भूलें जिनके बल पर वह समिति को इस रूप में लाने में समर्थ हुए हैं।

समिति का प्रबन्ध अच्छा है। प्रबन्धक स्वयं विद्यारसिक हैं इसलिये वे वैसे ही प्रेम से काम करते हैं जैसे माली अपने लगाये हुए वृक्षों की ममता के साथ रखवाली करता है।

भरतपुर
४ २७

—क्षमानन्द राहत

भरतपुर हिन्दी साहित्य समिति का निरीक्षण करने पर यह पता चला कि समिति का कार्य ठोस है। पुस्तकालय और वाचनालय का प्रबन्ध जिस उत्तमता से किया जाता है वह एक आदर्श की वस्तु है। यहाँ समिति को शहर के बड़े बड़े धनीमानी सज्जनों का सहयोग प्राप्त है और वे लोग बड़े सेवाभाव से उसके प्रत्येक कार्य में योग देते हैं। मुझे यह जानकर बड़ी प्रसन्नता हुई कि समिति में मासिक सभाएँ होती हैं और उनके द्वारा साहित्य की समस्याओं पर विचार होता है। समिति को अपनी इन सभाओं में कुछ रचनात्मक कार्य भी जोड़ना चाहिए। विभिन्न व्यक्तियों के जिम्मे साहित्य के प्रमुख अंगों का अध्ययन और परिशीलन का कार्य सुपुर्द करके स्थायी कार्य का प्रयत्न भी करना चाहिए। साथ ही आगरा और मथुरा के निकट होने का लाभ भी वहाँ के साहित्यिकों से सम्पर्क रचनात्मक कार्य के लिये आमन्त्रित करके प्राप्त करना चाहिये। भगवान समिति के कार्य को उत्तरोत्तर बढ़ावें यही कामना है।

भरतपुर
१४-८-४१

—पद्मसिंह शर्मा

भरतपुर साहित्य समिति का कार्य देखकर मुझे बड़ी प्रसन्नता हुई। यहाँ के कार्यकर्त्ताओं का सद्भाव स्नेह और सेवा का आदर्श भी वस्तु है। समिति को भी एक सजीव संस्था के रूप में पिछले ३८ वर्षों से कार्य करने का सौभाग्य प्राप्त हुआ है। स्वयं पास अपना भवन है पुस्तकालय है वाचनालय है। २०० से अधिक सदस्य हैं और सबसे अधिक जनता की सहानुभूति प्राप्त है। भरतपुर राज्य में साहित्य सेवा का जो सराहनीय कार्य समिति कर रही है उसकी अधिक प्रशंसा न कर मैं यही कहना चाहूँगा कि वह अपना कार्यक्षेत्र बढ़ावे। राज्य के स्थान-स्थान ग्राम ग्राम में साहित्य के केन्द्र स्थापित करे और अपने सम्पर्क को राज्य के बाहर भी स्थापित रखे। मैं समिति की पूरी सफलता चाहता हूँ।

भरतपुर
१४-८-४१

—जगदीशप्रसाद चतुर्वेदी
व्रज साहित्य मण्डल मथुरा

हिन्दी साहित्य समिति भरतपुर के वार्षिकोत्सव पर मेरा यहाँ आना हुआ। समिति का कार्य देखकर बड़ी प्रसन्नता हुई। समिति की उत्तरोत्तर उन्नति के लिए हृदय से शुभाकांक्षी हूँ। यह जानकर और भी प्रसन्नता हुई कि समिति सम्मेलन की परीक्षाओं को लोकप्रिय बनाने में योग दे रही है। आशा है कि यह समिति हिन्दी भाषा और साहित्य के प्रचार तथा अभिवृद्धि में योग देगी।

१४-८-४१

—गुलाबराय एम० ए०
प्रो० सेंट जान्स कालिज आगरा रिटायर्ड
प्राइवेट सेक्रेटरी भरतपुर दरबार

आज [illegible] हिन्दी साहित्य समिति के वार्षिक समारोह के अवसर पर उपस्थित रह तथा पुस्तकालय को देखने का अवसर मिला। समिति अच्छा उपयोगी काम कर रही है और मुझे पूरा विश्वास है कि उसका भविष्य सुनहला होगा [illegible] है। [illegible] और [illegible] यहाँ ब्रज साहित्य के अच्छे संग्रह का और प्रा [illegible] ब्रज साहित्य के प्रकाशन का भी प्रबन्ध कर। [illegible] भरतपुर बहुत ही उपयुक्त स्थान है [illegible] मथुरा और आगरा के निकट और तथा ब्रजभूमि के मध्य में स्थित है।

—[illegible]

१९ ६ ४१ सम्पा० हिन्दी [illegible]

भरतपुर में स्वर्गीय सभापति जी ग्रन्थि [illegible] प्राचीन पुस्तकों के संग्रह-काय में अच्छा प्रयत्न किया है। समिति उस स्थान में रह कर काय कर तो शुभ है।

गोपालप्रसाद व्यास

मैंने सौभाग्यवश आज भरतपुर हिन्दी साहित्य समिति को देखा। मैं समझता हूँ समस्त प्रान्त में यही एक प्रतिष्ठित हिन्दी का स्थान है राजस्थान (राजपूताना) में तो हिन्दी का यही एक सुन्दर-सुघर मन्दिर है। हिन्दी के इस आश्रम को देखकर किस हिन्दी भक्त की आँखें शीतल न होंगी? राजस्थान के इस हिन्दी निकेत में मैंने एक स्वर्ग प्रेरणा प्राप्त की है प्रत्येक रियासत में हिन्दी के ऐसे भरपूर आश्रम स्थापित होने चाहिये। जहाँ तक राजस्थान हिन्दी साहित्य सम्मेलन का सवाल है उसे हम उस समिति के कायकर्त्ताओं के अथक तथा अविराम उत्साह तथा प्रयत्न से उदाहरण ग्रहण करना चाहिये।

आज जब हिन्दी पर चतुर्मुखी प्रहार हो रहा है समिति के सदस्यों की हिन्दी भक्ति देखकर यह विश्वास होता है कि राजस्थान में तो हिन्दी का बाल बाँका न होगा। समृद्ध पुस्तकालय विस्तृत वाचनालय तथा एक सजीव वातावरण एक सावजनिक संस्था के लिए स्थायी प्राणधाराएँ हैं। मैं समिति के कर्मनिष्ठ अधिकारियों तथा सजीव उत्साही सदस्यों से नम्रतापूर्वक प्राथना करूँगा कि वे समिति के अधीन रात्रि पाठशालाएँ खोलें जहाँ निरक्षर पढ़ाये जायँ। समिति के पास प्राचीन साहित्य का अच्छा संग्रह भी है। क्या अच्छा हो उनकी एक बिब्लिओग्राफी बन जाय।

बाकी तो मैं सीखकर ही जा रहा हूँ। मैं समिति के अतीत और आज के सभी तपस्वी कायकर्त्ताओं को श्रद्धापूवक प्रणाम करता तथा उन सबका अभिनन्दन करता हूँ।

—जनार्दनराय नागर

७ ६ ४१ प्रधान मन्त्री राजस्थान हिन्दी साहित्य सम्मेलन

बहुत दिनों की बात है जब मैं अपने परम सुहृद् श्री अधिकारी जी के यहाँ भरतपुर में अतिथि हुआ था उस समय भरतपुर की हिन्दी साहित्य समिति नवजात शिशु थी। उस घटना के ऊपर से ढाई दशक से भी अधिक वर्षों का प्रवाह प्रवाहित हो चुका है। आज मुझे पुनः इस संस्था के जिसमें अनेक तेजस्वी आत्माओं का सर्वस्व ओत प्रोत है—इस समिति के माननीय मन्त्री पण्डित श्री मत्यरलाल जी शर्मा के साथ अवलोकन करने का सुअवसर प्राप्त हुआ है। समिति के अपने सुन्दर भवन में सुन्दर बृहत् पुस्तकालय को देखकर परमानन्द हुआ। यह पुस्तकालय जो राष्ट्र धर्म समाज के पवित्र और ओजपूर्ण तत्त्वों के साथ खड़ा है अवश्य ही प्रजा के उत्कर्ष के सम्पादक हैं। मैंने देखा कि समिति के इस पुस्तकालय में पुस्तकों का संग्रह विचारपूर्ण उदारता के साथ हुआ है। वैदिक साहित्य का भी संग्रह है लौकिक साहित्य का भी संग्रह है। हिन्दी के प्राचीन और नवीन कवियों के काव्यों का अधिक मात्रा में संग्रह है। पुस्तकालय राष्ट्र की एक बड़ी भारी सम्पत्ति होता है। पुस्तकालय राष्ट्रीय कवियों लेखकों और वक्ताओं का चिरस्थायी स्मारक होता है। अतः इसके प्रति श्रद्धापूर्ण भक्ति का होना स्वाभाविक है। पुस्तकों के अतिरिक्त यहाँ दैनिक साप्ताहिक मासिक पत्रों का भी समावेश है जिससे भरतपुर की जनता को अत्यधिक लाभ उठाने का सुअवसर मिलता है। यहाँ हस्तलिखित प्राचीन पुस्तकों का भी संग्रह है। पुस्तकालय की सुव्यवस्था को देखकर यह निश्चित प्रतीत होता है कि इसके कार्यकर्ता उत्साही और महानुभाव हैं। इनके उत्साह की वृद्धि हो और यह समिति अनेक लोकोपयोगी कार्यों के सम्पादन करने में सफल हो यह मेरी शुभेच्छा है।

फा० शु० १ १९९८ वि०

—स्वामी भगवदाचार्य
चम्पा गुफा माउन्ट आबू

भरतपुर में आज प्रसंगवश आकर जो सबसे अद्भुत वस्तु मुझे मालूम हुई वह स्थानीय हिन्दी साहित्य समिति है। राजस्थान की यह अद्वितीय संस्था राजस्थान के प्रगतिहीन वातावरण को चुनौती सी देती हुई भूत और भविष्य को वर्तमान आशाओं के सूत्र से संयोजित कर रही है और कर्मण्यता का जीवित उदाहरण उपस्थित कर रही है। इस संस्था के संचालकों से भेंट कर मुझे उस अध्यवसायशीलता तथा अदम्य उत्साह का परिचय मिला जिसके होने पर ही महत् कार्यों को सम्पन्नता प्राप्त होती है।

मुझे पूर्ण विश्वास है कि भरतपुर की हिन्दी साहित्य समिति उत्तरोत्तर उन्नति करती हुई राजस्थान के अन्य प्रान्तों में भी जीवन-संचार कर सकेगी।

दि० २ ५ ४

—रामकृष्ण शुक्ल

भरतपुर राज्य में हिन्दी साहित्य की प्रगति है अतः यह समय ... के कारण था इस समय और भी बढ़ गया है। ... भारतवर्ष में हिन्दी साहित्य सम्मेलन का साहित्य अधिवेशन भी हो चुका है—... हिन्दी साहित्य के ... चमत्कार यह था कि —इस की बात है कि ... परम्परागत समिति ... अधिकार में वृद्धि की है। समिति तथा ... पुस्तकों का संग्रह ... है। फिर भी इस संस्था को उत्तरोत्तर वृद्धि होती रहना चाहिये। यहाँ का ... पुस्तक ... सुरक्षित ... है ... अभी ही ... है मुनिमान। वाचनालय में स्वर्गीय ... अधिकारी जी और ... नारायण ... निज भी ... सभी का मुझे याद आ गई क्योंकि ... सभा में मेरा अच्छा परिचय था। समिति का भवन अभी बनना बाकी है—आशा है यहाँ के दानवीर सज्जन शीघ्र ही इसे पूरा करेंगे। अन्त में यही लिखना है कि समिति को देखकर मुझे बड़ा आनन्द प्राप्त हुआ। जगन्नियन्ता इसकी उत्तरोत्तर उन्नति करे यही मेरी शुभकामना है।

६ ४ ४ —राधेश्याम कथावाचक (वानप्रस्थी)

आज अकस्मात् श्री हिन्दी साहित्य समिति के पुस्तकालय व हिन्दी समिति के संस्था को देखकर चित्त प्रसन्न हुआ। समिति के कार्यकर्त्ताओं व सदस्यों में हिन्दी के प्रति अनुराग है समिति का अपना भवन तथा समिति का पुस्तकालय इसका प्रभाव है। मुझे विश्वास है कि यह समिति अवश्य उन्नति करेगी और समस्त भरतपुर राज्य में हिन्दी साहित्य के प्रचार में सफल होगी।

दि० ५ १ ४३ —कृष्णचन्द्र
सम्पादक अर्जुन

भरतपुर हिन्दी साहित्य समिति के पुस्तकालय व वाचनालय देखने का मुझे प्रसंग मिला। मुझे प्रसन्नता है कि इस समिति द्वारा हिन्दी की सेवा की जा रही है। मुझे अनुमान है कि इसके कार्यकर्ता उत्साही और त्यागशील सज्जन हैं। तभी तो इसकी उन्नति इतनी है। परमात्मा इसकी दिनानुदिन उन्नति करे।

२ ५ ४६ —घनश्याम सिंह गुप्त
स्पीकर मध्यप्रान्तीय विधान सभा

आज मुझे श्री हिन्दी साहित्य समिति भरतपुर का दर्शन लाभ हुआ। इस संस्था ने न केवल राजस्थान में परन्तु भारतवर्ष में हिन्दी की जो सेवा की है वह गौरवप्रद बात है। इस संस्था की ओर से एक समृद्ध पुस्तकालय और

सवागीण वाचनालय चल रहा है। भरतपुर की यह एक विशिष्ट सस्था है। सस्कार दान का यह उत्तम साधन है। भरतपुर के नागरिको को ऐसी सस्था चलाने के लिए धन्यवाद दिए बिना नही रहा जाता। आशा है कि इस सस्था की उत्तरोत्तर प्रगति होती रहेगी। सब सचालको का परिश्रम सुफलित हुआ है। भगवान सस्था पर दया बरसाता रहे।

भरतपुर
५ १ ५४

—गोकुलभाई भट्ट

श्री हिन्दी साहित्य समिति भरतपुर का आज मुझे दर्शन का अवसर मिला। यो तो मेरा भरतपुर से बहुत पुराना घनिष्ठता का सम्बन्ध है परन्तु समिति के सचालको ने मुझे पहले यहाँ आने का अवसर नही दिया। आज इस सस्था की विशालता को देखते हुए यह मेरी शिकायत का कारण बन गई ऐसा मै मानता हूँ।

सचमुच ही यह एक गौरव की बात है कि यह सस्था पिछले ४७ वर्ष से काम कर रही है और दिनादिन उन्नति करती जा रही है। यह स्वय मे इस सस्था की लोकप्रियता का एक सबूत है। सचालको ने मुझे बताया कि इस सस्था ने कई प्रकार के उतार चढाव देखे हैं परन्तु अपनी कर्त्त व्यनिष्ठा के कारण अपना प्रगति जारी रखने मे सफल हुए है। आज इस राज्य मे भी ठीक सी सहायता मिलने लगी है इसीलिए सस्था के सचालको को शायद यह उत्साह हुआ है कि इसके लिए सुन्दर भवन बनाये। इसके लिए प्रयास भी शुरू हो गये हैं। मैं ऐसी पुरानी और लोकप्रिय सस्था की उत्तरोत्तर उन्नति की कामना करता हूँ। पूर्व सचालको और इतिहास प्रेमी महानुभावो को इस सस्था को और भी उपयोगी बनाने के कार्य मे सहायता करने के लिए प्रभावित करेगा ऐसी मेरी पूर्ण आशा है ?

भरतपुर
१ ४ ५६

—भोलानाथ तिवारी
शिक्षा मन्त्री राजस्थान

हिन्दी साहित्य समिति भरतपुर की प्रमुख सास्कृतिक सस्था है। यहाँ एक ही हाईस्कूल है एक ही कालेज है एक ही सिनेमा है और एक ही साहित्यिक सस्था है। समिति के पास अच्छा पुस्तकालय है और उत्साही कार्यकर्ता है। यहाँ की जनता का सास्कृतिक स्तर ऊँचा करने के लिये यह सराहनीय प्रयत्न कर रही है। मैं उसकी निरन्तर सफलता चाहता हूँ।

१५ अगस्त १९५४

—रामविलास शर्मा

भरतपुर नगर में हिन्दी साहित्य की वृद्धि है इस में सम्बन्ध रखने के कारण ना यह स्वच्छ और भी बढ़ जाता है। यहाँ तक जान पड़ता है अखिल भारतवर्षीय हिन्दी साहित्य सम्मेलन का वार्षिक अधिवेशन भी ना हो सका है—इस नगर में हिन्दी साहित्य के अ... वाचनालय की बड़ी आवश्यकता थी जो —इस की बात है कि स्थानीय हिन्दी साहित्य समिति ने इसकी अधिकांश में पूर्ति की है। मुद्रित तथा हस्तलिखित पुस्तकों का यहाँ यथेष्ट संग्रह है। फिर भी इस संग्रह की उत्तरोत्तर वृद्धि हो करते रहना चाहिये। जहाँ पाठकों की पुस्तकें पढ़-पढ़ कर ... होता रहता है वहीं तो सरस्वती रहती है मूर्तिमान। वाचनालय में स्वर्गीय नरेश श्रीयुत ... और श्री सत्यनारायण कविरत्न के चित्र भी हैं ... सभा की शुभ याद आ गई क्योंकि इन सभा में मेरा अच्छा परिचय था। समिति का भवन अभी बनना बाकी है—आशा है यहाँ के दानवीर सज्जन शीघ्र ही इसे पूरा करेंगे। अन्त में यही लिखना है कि समिति का निरीक्षण कर मुझे बड़ा आनन्द प्राप्त हुआ। जगन्नियन्ता इसकी उत्तरोत्तर उन्नति करें यही मेरी शुभकामना है।

९ । ८ —राधेश्याम कथावाचक (वानप्रस्थी)

आज अकस्मात् ही हिन्दी साहित्य समिति के पुस्तकालय व हिन्दी समिति के सम्पादकों का स्थान देख चित्त प्रसन्न हुआ। समिति के कार्यकर्ताओं व भरतपुर में हिन्दी के प्रति अनुराग है। समिति का अपना भवन तथा समिति का पुस्तकालय इसका प्रमाण है। मुझे विश्वास है कि यह समिति अवश्य उन्नति करेगी और समस्त भरतपुर राज्य में हिन्दी साहित्य के प्रचार में सफल होगी।

दि० । १० । ८ —इन्द्रचन्द्र
सम्पादक अर्जुन

भरतपुर हिन्दी साहित्य समिति के पुस्तकालय व वाचनालय भवन को देखने का शुभ अवसर मिला। मुझे प्रसन्नता है कि इस समिति द्वारा हिन्दी की सेवा की जा रही है। मुझे अनुमान है कि इसके कार्यकर्ता उत्साही और त्यागशील सज्जन हैं। तभी तो इसकी उन्नति हो रही है। परमात्मा इसकी दिनोदिन उन्नति करे।

। ८ — घनश्याम सिंह गुप्त
स्पीकर मध्यप्रान्तीय विधान सभा

आज मुझे श्री हिन्दी साहित्य समिति भरतपुर का दर्शन-लाभ हुआ। इस संस्था ने न केवल राजस्थान में वरन् भारतवर्ष में हिन्दी की जो सेवा की है वह गौरवपूर्ण बात है। इस संस्था की ओर से एक समृद्ध पुस्तकालय और

सर्वांगीण वाचनालय चल रहा है। भरतपुर की यह एक विशिष्ट संस्था है। संस्कार ज्ञान का यह उत्तम साधन है। भरतपुर के नागरिकों को इस संस्था चलाने के लिए धन्यवाद दिये बिना नहीं रहा जाता। आशा है कि इस संस्था की उत्तरोत्तर प्रगति होती रहेगी। सब संचालकों का परिश्रम सुफलित हुआ है। भगवान संस्था पर दया बरसाता रहे।

भरतपुर
५ १ ५४

—गोकुलभाई भट्ट

श्री हिन्दी साहित्य समिति भरतपुर को आज मुझे देखने का अवसर मिला। यों तो मेरा भरतपुर से बहुत पुराना घनिष्ठता का सम्बन्ध है परन्तु समिति के संचालकों ने मुझे पहले यहां आने का अवसर नहीं दिया। आज इस संस्था की विशालता को देखते हुए यह मेरी शिकायत का कारण बन गई ऐसा मैं मानता हूँ।

सचमुच ही यह एक गौरव की बात है कि यह संस्था पिछले ८० वर्ष से काम कर रही है और दिनोंदिन उन्नति करती जा रही है। यह स्वयं में इस संस्था की लोकप्रियता का एक सबूत है। संचालकों ने मुझे बताया कि इस संस्था ने कई प्रकार के उतार चढ़ाव देखे हैं परन्तु अपनी कर्म निष्ठा के कारण अपनी प्रगति जारी रखने में सफल रहे हैं। आज इस राज्य में भी ठीक सी सराहना मिलने लगी है इसीलिए संस्था के संचालकों को शायद यह उत्साह हुआ है कि इसके लिए सुन्दर भवन बनाये। इसके लिये प्रयास भी शुरू हो गये हैं। मैं ऐसी पुरानी और लोकप्रिय संस्था की उत्तरोत्तर उन्नति की कामना करता हूँ। पूर्व सवाई नरेश और इतिहास दोनों महानुभावों को इस संस्था को और भी उपयोगी बनाने के कार्य में सहायता करने के लिये प्रभावित करेगा ऐसी मेरी पूर्ण आशा है?

भरतपुर
१० ४ ५४

—भोलानाथ तिवारी
नि॰ शि॰ मंत्री राजस्थान

हिन्दी साहित्य समिति भरतपुर की प्रमुख सांस्कृतिक संस्था है। यहां एक ही हाईस्कूल है एक ही कालेज है एक ही सिनेमा है और एक ही साहित्यिक संस्था है। समिति के पास अच्छा पुस्तकालय है और उत्साही कार्यकर्त्ता हैं। यहाँ की जनता का सांस्कृतिक स्तर ऊंचा करने के लिये यह सराहनीय प्रयत्न कर रही है। मैं उसकी निरन्तर सफलता चाहता हूँ।

१५ अगस्त १९५४

—रामविलास शर्मा

मैंने इस पुस्तकालय को देखा। चित्त प्रसन्न हुआ। लगभग ४५ वर्ष से यह संस्था जनता की अनुपम सेवा कर रही है। इस संस्था को राजस्थान की प्राचीनतम संस्थाओं में समझा जा सकता है। पुस्तकालय समाज के बौद्धिक जीवन का प्राण है। इसमें सर्वोपयोगी ग्रन्थ हैं। प्राचीन हस्तलिखित ग्रन्थ देख कर बड़ी प्रसन्नता हुई। इस पुस्तकालय के लिये भवन निर्माण का प्रश्न है। संस्था के कार्यकर्ताओं का उत्साह देखकर यह प्रतीत होता है कि यह कल्पना मूर्तरूप धारण कर लेगी।

—रामचन्द्र वामन कमारे

११ १ ५५ डिप्टी डायरेक्टर शिक्षा विभाग जयपुर

समिति बहुत समय से लगातार साहित्य प्रचार का काम करती रही है। पुस्तकालय और वाचनालय का कार्य उत्तरोत्तर प्रगति पर है। जो भाई इसमें योग दे रहे हैं वे धन्य हैं। कार्य बहुत उत्तरदायित्व का है। किस पाठक को कौनसी चीज पढ़ने को दी जाय और कौनसी सामग्री पुस्तकालय में रखने योग्य है इस विषय में सदैव सतर्क रहने की आवश्यकता है। पुस्तकाध्यक्ष का अध्ययन और मनोवैज्ञानिक ज्ञान बहुत उच्च स्तर का होना ही चाहिए। आशा है राज्य और समाज का इस संस्था को यथेष्ट सहयोग मिलता रहेगा।

भारतीय ग्रन्थमाला —भगवानदास केला

दारागंज (प्रयाग) १६ ६ ५५

मैंने आज इस संस्था को देखा। वास्तव में यह एक ठोस सेवा कर रही है। मैं आशा करता हूं कि थोड़े समय में यह एक विशाल रूप धारण कर लेगी।

—विक्रमप्रसाद सूद

१४ १२ ५५ डिप्टी सेक्रेटरी शिक्षा विभाग

मुझे आज इस पुरानी और प्रतिष्ठित साहित्य संस्था और इसके वाचनालय को देखकर बहुत हर्ष हुआ। कई पुरानी स्मृतियां ताजा हुईं। यहीं खेद रहा कि अधिक समय यहां नहीं दे सका। इसमें नई से नई हिन्दी पुस्तकों का संग्रह है—यह इस बात का सबूत है कि यहां के निवासी समय के साथ हैं। साहित्य केवल मनोरंजन या समय व्यतीत करने का ही अच्छा साधन नहीं है बल्कि समाज की नई चेतना, ज्ञान और निर्माण का भी जबरदस्त प्रेरक साधन है। आशा है भरतपुर के निवासी इससे पूरा लाभ उठाते होंगे। मैं इसकी हर तरह उन्नति चाहता हूं।

—हरिभाऊ उपाध्याय

दि० १ ३ २ । वित्त मन्त्री राजस्थान

आज भरतपुर नगर की श्री हिन्दी साहित्य समिति के वाचनालय और उसके पदाधिकारियों और कर्मचारियों के उत्साह को देखकर मुझे बहुत हर्ष हुआ। किसी भी देश के लिये उसका पुराना इतिहास और संस्कृति एक गौरव की बात होता है। बिना अपने साहित्य का ज्ञान कोई भी व्यक्ति देश भक्त और देश-सेवक होने का अधिकारी नहीं हो सकता। यह जानकर मुझे और अधिक प्रसन्नता हुई कि यह संस्था ४० वर्ष से मातृ भाषा की सेवा कर रही है। मुझे पूरी आशा है कि नगर निवासी और राष्ट्रीय कर्मचारीगण इस संस्था की उचित सहायता करेंगे।

—महावीर त्यागी
रक्षा मन्त्री केन्द्रीय सरकार

दि० १ ५ ५६

आज समिति की मुलाकात ली। मुझे बहुत प्रसन्नता हुई। भारतवासियों की हिन्दी साहित्य द्वारा सेवा करने की समिति के संचालकों तथा सदस्यों की मनोकामना पूरी हो।

—उच्छरंगराय नवलशंकर ढेबर
कांग्रेस अध्यक्ष

२७ २ ५७

आज मुझे हिन्दी साहित्य समिति भरतपुर के देखने का सौभाग्य प्राप्त हुआ। समिति का भवन एक सुन्दर स्थान है पुस्तकों के रखने का ढंग बहुत अच्छा है। पुस्तकालय में पुस्तकों का संग्रह बहुत लाभप्रद है।

समिति एक बहुत ही प्रशंसनीय कार्य कर रही है और उससे भरतपुर के सभी वर्गों में सम्पर्क व सहायता मिल रहा है।

—जे० डी० वैश्य
डिप्टी डायरेक्टर शिक्षा विभाग कोटा

११ ११ ५७

आज मैंने हिन्दी साहित्य समिति भरतपुर के काम को देखा। मुझे यह देखकर अत्यन्त प्रसन्नता हुई कि इस समिति के पास अच्छे कार्यकर्ता हैं और उन्होंने सुन्दर भवन का निर्माण किया है। आशा है शेष कार्य भी सब के सहयोग से सम्पूर्ण हो जायगा और यह स्थान हिन्दी की सेवा का प्रमुख कारण बनेगा।

—मोहनलाल सुखाडिया
मुख्य मन्त्री राजस्थान

१२ ५७

अच्छी संस्था अच्छे कार्यकर्ता और अच्छा काम। हिन्दी की सेवा विशेष रूप से करायेंगी ईश्वर से प्रार्थना कि संस्था के विकास में सहायता करे।

—शम्भूलाल शर्मा
डिप्टी डायरेक्टर

४ १२ ५७

सबसे बड़ी बात जो यहाँ देखी वह है सौजन्य और सद्व्यवहार। भरतपुर हिंदी साहित्य समिति व पुस्तकालय फले फूले।

—शम्भुप्रसाद बहुगुणा

० ११ ५६ हिन्दी अध्यापक आर्० टी कालेज लखनऊ

आज मैंने हिन्दी साहित्य समिति का भवन एवं पुस्तकालय देखा। यह देखकर प्रसन्नता होती है कि ब्रजभूमि के इस साहित्य केन्द्र में आज भी साहित्य साधना के लिये उपयुक्त स्थान विद्यमान है और उनकी दिनोंदिन उन्नति की होती जा रही है। इस केन्द्र द्वारा यदि इस भरतपुर क्षेत्र के विगत साहित्य कारों की खोज एवं उनकी कृतियों के संरक्षण और उद्धार का काम किया जावेगा तो एक बहुत बड़ा महत्वपूर्ण कार्य होगा। मैं हृदय से इस समिति की उन्नति चाहता हूँ और आशा करता हूँ कि साहित्य प्रचार एवं ज्ञान प्रसार के साथ ही प्राचीन साहित्य की खोज तथा संरक्षण की भी ओर समिति पूरा-पूरा ध्यान देती रहेगी।

—रघबीरसिंह

१२ ९ ० सदस्य राज्य-सभा

मैंने आज हिन्दी साहित्य समिति का भवन तथा पुस्तकालय देखा। भरतपुर जैसे स्थान में इतना सुव्यवस्थित पुस्तकालय तथा वाचनालय देखकर अत्यन्त प्रसन्नता हुई। समिति के पास पुस्तकों तथा हस्तलिखित पुस्तकों का एक बहुमूल्य संग्रह है। समिति के कार्यकर्ता इसके लिये बधाई के पात्र हैं। पुस्तकालय तथा वाचनालय के अतिरिक्त समिति सम्मेलन परीक्षाओं का केन्द्र है तथा परीक्षाओं के लिये प्रशिक्षण की सुविधा भी यहाँ है। यह संस्था भरतपुर की साहित्यिक तथा सांस्कृतिक आवश्यकता को पूरा करती है। ऐसी उपयोगी साहित्यिक संस्था को राज्य तथा जनता का आश्रय मिलना ही चाहिये।

—शंकरसहाय सक्सेना

१८ १ ० शिक्षा-संचालक राजस्थान

स्वर्ण जयन्ती महोत्सव

का

संक्षिप्त कार्य विवरण

रविवार दि० १२-२-६१

प्रातः १० बजे—

१ ध्वजारोहण
२ ध्वज वन्दना
३ मंगलाचरण
४ स्वागत गायन
५ स्वागताध्यक्ष का भाषण
६ उद्घाटन भाषण
७ धन्यवाद

रात्रि ७॥ बजे से—

१ गायन
२ कवि सम्मेलन (कविताएं स्वतन्त्र होंगी)

सोमवार दि० १३-२-६१

प्रातः ८ बजे से—

१ उपनिषद्
२ प्रश्नोत्तरी

मध्याह्न ३ बजे से—

१ गायन
२ उपनिषद्

रात्रि ७॥ बजे से—

गीता प्रवचन

मंगलवार दि० १४-२-६१

प्रातः ८ बजे से—

उपनिषद्

मध्याह्न ३ बजे से—

१ उपनिषद्
२ वाद विवाद प्रतियोगिता

रात्रि ७॥ बजे से—

१ वार्षिक रिपोर्ट मंत्री द्वारा
२ संगीत सम्मेलन
३ धन्यवाद

स्वर्ण जयन्ती महोत्सव का संक्षिप्त विवरण

भरतपुर के साहित्यिक जीवन में १२ फरवरी १९६१ का शुभ दिन विशेष उल्लेखनीय है। उस दिन यहां की प्रमुख साहित्यिक संस्था श्री हिन्दी साहित्य समिति ने अपना अर्द्ध शताब्दी स्वर्ण जयन्ती महोत्सव एक उल्लासपूर्ण वातावरण में मनाया था। इस साहित्यिक सत्र के लगभग ६ मास पूर्व इस संस्था की कार्यकारिणी ने दिनांक ३.८.६० की बैठक में यह निश्चय किया था कि राजस्थान साहित्य अकादमी उदयपुर द्वारा आयोजित उपनिषद् तथा समिति का स्वर्ण जयन्ती महोत्सव दोनों एक साथ आगामी नवम्बर सन् १९६० में मनाये जावें किन्तु थोड़े ही दिन पश्चात् अकादमी के निर्देशानुसार फरवरी सन् १९६१ में इस महोत्सव का आयोजन निश्चित कर लिया गया। सन् १९६१ के प्रारम्भ से ही महोत्सव की तैयारी प्रारम्भ करदी गई और समिति के उत्साही कार्यकर्ता पूर्व निश्चित योजना के अनुसार कार्य क्रम स्थिर करने में जुट गए।

धन संग्रह —महोत्सव के कार्य क्रम को समिति के स्तर के अनुरूप सम्पन्न करने के लिए सबसे बड़ी आवश्यकता धन की थी। एतदर्थ महोत्सव के कार्य क्रम की निम्न रूपरेखा घोषित करते हुए जनता से अपील की गई कि इस आयोजन के निमित्त पत्र पुष्प समिति के प्रधान मंत्री के पास शीघ्र भेजें। महोत्सव के प्रमुख आकर्षण इस प्रकार घोषित किये गए —

१—भारत के उप राष्ट्रपति डा० सर्वपल्ली राधाकृष्णन् द्वारा जयन्ती उद्घाटन

२—राजस्थान साहित्य अकादमी द्वारा आयोजित उपनिषद्

३—स्वर्ण जयन्ती ग्रन्थ का प्रकाशन

४—कवि सम्मेलन एवं अन्य रोचक सांस्कृतिक कार्य-क्रम

५—नाना प्रवचन

६—संगीत सम्मेलन

भरतपुर की हिन्दी प्रेमी एवं जागरूक जनता ने समिति की इस अपील का हार्दिक स्वागत करते हुए आर्थिक सहायता भेजना प्रारम्भ कर दिया और थोड़े ही समय में प्रचुर धनराशि एकत्रित हो गई।

मुख्य उत्सव —दिनांक १२ फरवरी सन् १९६१ को प्रातः काल बाल रश्मियों के प्रस्फुटित होते ही समस्त नगर में एक अद्भुत उल्लासपूर्ण वातावरण दृष्टि



समिति के अध्यक्ष श्री डा० कुंजबिहारीलाल गुप्त,
उप राष्ट्रपति को कार्यकारिणी के सदस्यों का परिचय देते हुए

गोचर होने लगा। रेलवे स्टेशन से लेकर 'समिति' भवन तक मुख्य मार्ग रंग बिरंगी सुन्दर पताकाओं से सुसज्जित था और स्थान २ पर भव्य तोरण बने हुए थे, जिनकी संख्या अर्द्ध शताब्दी महोत्सव के उपलक्ष्य में ५० थी। सैकडों नर नारी आबाल वृद्ध 'समिति' भवन में एकत्रित होने लगे।

सब प्रथम १० बजे राष्ट्र गीत की मनोमुग्धकारी ध्वनि के बीच 'समिति' के पुराने सदस्य श्री राजबहादुर केन्द्रीय मंत्री ने 'समिति' का पीताम्बरी ध्वज फहरा कर महोत्सव का कार्य शुभारम्भ किया। विशाल जन समुदाय ने करतल ध्वनि कर ध्वज का अभिनन्दन किया। इसके अनन्तर सध्याह्न ३ बजे स्वर्ण जयन्ती महोत्सव के उद्घाटनार्थ अन्तर्राष्ट्रीय ख्यातिप्राप्त साहित्यकार भारत के उप राष्ट्रपति डा० सर्वपल्ली राधाकृष्णन् नगर के प्रमुख बाजारों में होते हुए समिति भवन पधारे जहां एक सुसज्जित पंडाल बना हुआ था। लाल, पीले नीले तथा हरे रंग की पताकाएं मंडप का आच्छादित कर अद्भुत सौन्दर्य प्रदान कर रही थीं। सुन्दर तथा कलात्मक अक्षरों में लिखे हुए साहित्यकारों के अमृत मय उपदेश जनता को जागरूकता प्रदान कर साहित्य के प्रति अभिरुचि की अभिवृद्धि कर रहे थे। समस्त मंडप नर नारियों से खचाखच भरा हुआ था जिनमें भरतपुर की सभी संस्थाओं के प्रतिनिधि प्रमुख प्रतिनिधि, राजस्थान सरकार के मुख्यमंत्री श्री मोहनलाल सुखाडिया पी० डबल्यू० डी० मंत्री महाराज हरिश्चन्द्र, भरतपुर नरेश श्री सवाई बृजेन्द्रसिंह, राजस्थान साहित्य अकादमी के अध्यक्ष श्री जनार्दनराय नागर तथा डायरेक्टर श्री मोतीलाल मेनारिया और राजस्थान विधान सभा के उपाध्यक्ष श्री निरंजननाथ आचार्य प्रमुख थे।

महोत्सव के मुख्य अतिथि डा० सर्वपल्ली राधाकृष्णन् अपनी कीर्ति के समान ही शुभ्र धवल अचकन श्वेत धोती और शुभ्र पगडी के परिधानों से विभूषित थे। उनके स्थान ग्रहण करते ही नगर के सुप्रसिद्ध पंडित श्री रामस्वरूप मिश्र ने शास्त्र वेद मंत्रों द्वारा मंगलाचरण किया। इसके अनन्तर सुरजीत संगीत विद्यालय की छात्राओं ने सम्माननीय के स्वागत में एक छोटा किन्तु सुमधुर गायन प्रस्तुत किया। इस साहित्यिक भेंट के अवसर पर हिन्दी साहित्य समिति के अध्यक्ष डा० कुंजबिहारीलाल गुप्त ने मुख्य अतिथि का अभिनन्दन करते हुए बताया कि यह समिति लगभग ५० वर्षों से हिन्दी के प्रचार एवं प्रसार में अनवरत रूप से लगी हुई है। इस संस्था के गौरवमय अतीत पर प्रकाश डालते हुए उन्होंने कहा कि भरतपुर के लिये यह एक परम सौभाग्य की बात है कि राधा और कृष्ण की क्रीडास्थली बृज भूमि के इस प्रदेश को अपने चरणों से पवित्र बनाने के लिये स्वयं राधाकृष्ण (राधाकृष्णन्) यहां पधारे हुए हैं। क्या इस बृजवासियों तथा गोपियों की विरह व्यथा क्रन्दन का ही प्रतिफल

समझा जाय? राधाकृष्णन के सुन्दर साहित्यिक प्रयोग पर उपराष्ट्रपति मुस्कराए क्योंकि निकट में बैठे हुए केन्द्रीय मंत्री श्री राजबहादुर ने उसका रहस्योद्घाटन कर दिया। पुनः नन्हीं नन्हीं बालिकाओं ने अपने संगीतमय नृत्य द्वारा उपस्थित जन समुदाय का मनोरंजन किया। इन्हीं बालिकाओं ने मु जात शिल्प कला विद्यालय द्वारा निर्मित एक विशेष प्रकार की गुड़िया मुख्य अतिथि को भेंट की। इसके अनन्तर समिति के उपप्रधान श्री मानालाल अरोड़ा ने भरतपुर की चिर विख्यात शिल्प वस्तु चन्दन की चौकी, पगड़ी तथा स्वर्ण जयन्ती पुस्तिका भेंट की। हजारों नर नारियों से भरे हुए मैदान में जब मुख्य अतिथि भाषण देने के लिये खड़े हुए तब तालियों की गड़गड़ाहट तुमुल ध्वनि में कुछ समय तक निरन्तर चलता रहा। महामहिम उपराष्ट्रपति ने सरल एवं प्रभावोत्पादक अंग्रेजी भाषा में उद्घाटन भाषण दिया जिसका हिन्दी अनुवाद अकादमी के अध्यक्ष श्री जनार्दनराय नागर ने तुरन्त पढ़कर सुनाया। भाषण का सार इस प्रकार है —

साहित्य या तो प्रत्येक रचना सब कृति को कहा जा सकता है परन्तु स्थाई और शाश्वत महत्व रखने वाले साहित्य का अपना विशेष महत्व है। 'साहित्य समाज का दर्पण है' वाली उक्ति का प्रमुख रहस्य यही है कि जो तत्कालीन समाज की गति विधियों, उसके रूप और दृष्टिकोण को अपने समान ही शाश्वत और अमर बना दे वही सत्साहित्य है। सत्साहित्य के निर्माण में योग देना जीवन की परम आवश्यकता है जिसे हमें समझकर हमें अपनाना चाहिये। कहानी कविता आदि लिख देना साहित्य का एक अंग अवश्य है परन्तु पूर्णतः साहित्य के सृजन के लिये हम एक दूसरे को प्रसन्न रखने की भावना परस्पर आदर व सद्भाव का विचार और सन्तुलित व स्वस्थ परामर्श का आदान प्रदान करने वाली त्रिवेणी में अवगाहन करने पर ही साहित्य का सच्चा आनन्द प्राप्त हो सकता है। सत्साहित्य की तरह मानव के सत्कार्य भी सदैव प्रेरणादायक व शाश्वत होते हैं किन्तु सत्कार्यों का शाश्वत रूप तो साहित्य पर आधारित है। यह एक अनुभूति है और मधुर अनुभूति है। साहित्य सृजन आत्म तुष्टि आत्मानन्द और आत्म विकास का साधन तो है ही लेकिन शुद्ध साहित्य में वह अपार शक्ति भी निहित है जो सामाजिक विकारों को दूर करके उससे समाज का रूपान्तर कर सकता है। साहित्य के कार्यों में 'सत्' लग जाने से वे शाश्वत बन जाते। धर्म में भी सनातन शाश्वत प्रतीक है जिसका अर्थ अपरिवर्तनशील नहीं वरन् अक्षुण्ण है। अतः सत् वातावरण के निर्माण के लिये सत्साहित्य रचयिता व सत् धर्म का स्वस्थ समन्वय करना होगा। डा० सर्वपल्ली राधाकृष्णन् ने कहा कि —



महामहिम उप राष्ट्रपति डा० सर्वपल्ली राधाकृष्णन
रमण जयन्ती का उद्घाटन भाषण करते हुए

'विभिन्न संस्कृतियों, भाषाओं, धर्मों, परम्पराओं और विचार धाराओं वाले देश भारत का भविष्य अत्यन्त उज्ज्वल इस कारण लगता है कि इनमें आई हुई विषमताओं में जल्दी ही सामंजस्य स्थापित हो जाएगा और तब भारत ही विश्व क्षितिज पर पथ प्रदर्शक होगा। यह हमें नहीं भूलना चाहिये कि कला, धर्म, विज्ञान व साहित्य मात्र एक ही हैं, जिनके समायोजन से राष्ट्र का वास्तविक विकास संभव है।'

अंत में समिति के प्रधान मंत्री श्री मदनलाल बजाज ने मुख्य अतिथि एवं उपस्थित जनता के प्रति आभार प्रदर्शित किया। उप राष्ट्रपति डा० राधाकृष्णन् ने समिति भवन तथा पुस्तकालय का निरीक्षण किया और समिति की प्रगति के प्रति सन्तोष प्रकट करते हुए प्रस्थान किया।

कवि सम्मेलन —इसी दिन रात्रि को समिति ने एक विराट कवि सम्मेलन का आयोजन किया जिसके अध्यक्ष श्री जनार्दनराय नागर थे। इस अवसर पर अनेक रस भरी तरंगें प्रवाहित की गईं। कहां शृंगार का आकर्षण था तो कहीं वीरता का बिगुल, कहीं करुणा का हृदय विदारक चित्र उपस्थित किया गया तो कहीं हास्य के फव्वारे चल रहे थे, कहां गीतों का माधुर्य था तो कहीं ओजपूर्ण कवित्त पढ़े जा रहे थे, मुक्तकों की मादकता एवं नव प्रयोगों की नई सूझ बूझ आकर्षण बिंदु बन रही थी। अनेक रस धाराओं से युक्त इस सरोवर में अवगाहन करने वाले कविगण ने काव्य सागर की उज्ज्वल तरंगों से काव्य प्रेमी श्रोताओं को सराबोर कर दिया। श्री कुलशेखर की अमृत ध्वनि को सुनते ही समस्त पण्डाल करतल ध्वनि से गूंज उठा। श्री ब्रजबिहारी कौशिक की 'चीन की चुनौती' में युवक हृदय की उमंगों में परिपूर्ण उद्गार थे। 'तुम क्यों दर्पण देख रहे हो तुमको अब क्या आशंका है। दर्पण तो वह देखा करते जिनका रूप ढला करता है", गाकर श्री वीरसक्सेना जयपुर ने आत्म निरीक्षण की बांसुरी बजा दी। मथुरा निवासी प्रो० राकेश के कंठ से निकला गीत "यदि तुम अपने नयनों से नभ के दीप जला दो तो मैं पागल परवाना का प्यार तुम्हें दे दूंगा" सुनकर श्रोताओं के मन मयूर नृत्य कर उठे। जहां एक ओर श्री 'भारत रत्न भारद्वाज' जयपुर तथा प्रो० हरीराम आचार्य "अमिताभ" के मुक्तक हृदय स्पर्शी थे वहां दूसरी ओर श्री राजावत ने राजस्थानी गीतों में प्रदेश की संस्कृति को प्रभावशाली रूप में प्रस्तुत किया। श्री शान्तिप्रकाश भारद्वाज 'राकेश' ने अपने सरस गीतों के अतिरिक्त अन्य कवियों पर सूक्ष्म टिप्पणी प्रस्तुत कर इस सम्मेलन के कार्यक्रम को अधिक रोचक बना दिया। श्री 'मिश्र' तथा श्री कुंजबिहारीलाल पांडेय मञ्च प्रदेश के हास्य रस के फव्वारे कई बार छोड़

गये। स्थानीय तथा बाहर के लगभग २८ कवियों ने अपनी सुन्दर २ रचनाएं सुना कर हजारों श्रोताओं को मन मुग्ध बना दिया। यह सम्मेलन अर्द्ध रात्रि तक शांतिमय वातावरण में चलता रहता।

उपनिषद् —इस त्रिदिवसीय स्वर्ण जयंती महोत्सव पर राजस्थान साहित्य अकादमी द्वारा आयोजित एक उपनिषद् १३ व १४ फरवरी को सम्पन्न हुआ। उपनिषद् का विषय था साहित्य और लोक रुचि। इस कार्यक्रम में सर्व श्री प्रा० हरदत्त शास्त्री प्रो० विजेन्द्रपालसिंह मा० शिवलाल गुप्त मा० गोपालप्रसाद 'मुद्गल' सांवलप्रसाद चतुर्वेदी शक्ति त्रिवेदी कुसुम चतुर्वेदी और रामदत्त शास्त्री के निबंध पुरस्कृत हुए। उपनिषद् की बैठकों की अध्यक्षता सर्व श्री जनार्दनराय नागर, डा० मोतीलाल मनारिया, श्री चन्द्रगुप्त वार्ष्णेय और श्री निरंजननाथ आचार्य ने की।

अन्य साहित्यिक कार्यक्रम —इस अवसर पर अन्त्याक्षरी तथा वाद विवाद प्रतियोगिता का भी सुन्दर आयोजन हुआ जिसमें स्थानीय एम० एस० जे० कालेज तथा अन्य सभी विद्यालयों के छात्र छात्राओं ने भाग लिया। कई दिन तक चलती रहने वाली अन्त्याक्षरी प्रतियोगिता में अन्ततः राजकीय बहु उद्देशीय विद्यालय का दल बाजी मार ले गया। वाद विवाद प्रतियोगिता में श्री प्रमिला भटनागर श्री अचला कुमार श्री गायत्री गुप्त और श्री जगदीशप्रसाद भारद्वाज को पुरस्कृत किया गया।

गीता प्रवचन — गीता प्रवचन का कार्यक्रम महोत्सव का विशेष आकर्षण था। यह आयोजन श्री शांतिस्वरूप बोहरे द्वारा प्रदत्त निधि से प्रतिवर्ष किया जाता है। इस अवसर पर भारतविख्यात् श्री दीनानाथ दिनेश ने गीता के महत्व पर प्रकाश डालते हुए श्रोताओं को अपना जीवन गीतामय बनाने का परामर्श दिया। भरतपुर के प्रतिष्ठित नागरिक श्री युधिष्ठिरप्रसाद चतुर्वेदी ने गीता के १४ वें अध्याय में वर्णित गुणातीत ज्ञान की साधना पर एक सुन्दर प्रवचन किया तथा श्री सांवलप्रसाद चतुर्वेदी ने साधक के स्तर और 'महाप्रकाश' की खोज के विषय में व्यक्ति मन और गीता के मन का सुन्दर स्पष्टीकरण किया।

संगीत सम्मेलन —इस महोत्सव के अंतिम कार्यक्रम 'संगीत सम्मेलन' की जनता ने विशेष सराहना की। इस कार्यक्रम में देहली के अनेक ख्यातिप्राप्त कलाकारों ने भाग लिया जिनमें श्री नसीर अहमद तान कप्तान श्री जहूर अहमद और श्री जफर अहमद के नाम विशेष उल्लेखनीय हैं। भारतीय आकाशवाणी के प्रसिद्ध कलाकार श्री सुरजीतसिंह तथा श्री जसवन्तसिंह के गिटार वादन को



उप राष्ट्रपति डा० सर्वपल्ली राधाकृष्णन् तथा श्री मोहनलाल सुखाडिया
(मुख्य मन्त्री राजस्थान) के साथ समिति के प्रमुख कार्यकर्त्ता

श्रोताओं ने बहुत पसन्द किया। भरतपुर के प्रसिद्ध कलाकार श्री मा० दुरगसिंह श्री बूलचन्द तथा श्री रमननाग का कला प्रदर्शन भी विशेष प्रशंसनीय रहा। श्री मानिकचन्द के शास्त्रीय गायन और श्री सरला कपूर के सरल संगीत ने तो इस सभा को इतना आकर्षित बना दिया कि जाडे की स्थिति में भी रात्रि के दो बजे तक तीन चार हजार व्यक्तियों का विशाल समुदाय मन्त्र मुग्ध होकर संगीत का रसास्वादन करता रहा।

चित्र-प्रदर्शिनी —स्वर्ण जयंती महोत्सव पर एक चित्र प्रदर्शिनी का विशेष आयोजन किया गया जो जनता के आकर्षण का केन्द्र बना रहा। जयपुर के कलाकार श्री हीरालाल सक्सेना ने लगभग २५०० रंगीन चित्र बड़े आकार में बने हुए इसमें प्रदर्शित किये। इन चित्रों में हिन्दी और संस्कृत साहित्य के इतिहास तथा १८५७ ई० से १९४७ ई० तक के भारत के सुविख्यात् सपूतों और सेनानियों के सुन्दर चित्र प्रदर्शित किए गए।

इसी अवसर पर दिल्ली स्थित भरतपुरिया समाज के प्रतिनिधि मंडल ने समिति को ११ नवीन पुस्तकें भेंट की और समिति की प्रगति की सराहना की।

अन्त में श्री मदनलाल बजाज प्रधान मंत्री श्री हिन्दी साहित्य समिति ने उपस्थित समुदाय के बीच अपनी अर्द्ध शताब्दी रिपोर्ट पढ़ कर सुनाई और उन सभी व्यक्तियों के प्रति आभार प्रदर्शित किया जिन्होंने अपना अमूल्य समय और धन देकर शारदा के इस अर्द्ध शताब्दी मेले को सम्पन्न कराने में योग दिया।

स्वागताध्यक्ष

डा० श्री कुंजबिहारीलाल गुप्त

अध्यक्ष

हिन्दी साहित्य समिति

का

स्वागत भाषण

मान्य भवान् उपराष्ट्रपति जी

श्री हिन्दी साहित्य समिति, भरतपुर के स्वर्ण जयन्ती एवं राजस्थान साहित्य अकादमी द्वारा आयोजित उपनिषद् समारोह के उद्घाटन अवसर पर ब्रज भाषा के प्रमुख केन्द्र भरतपुर नगर में आपका स्वागत करते हुए जिस अपार आनन्द एवं गौरव का अनुभव हम हो रहा है उसे शब्दों द्वारा व्यक्त नहीं किया जा सकता। स्वर्ण जयन्ती मनाना समिति के लिए महत्व का विषय हो सकता है परन्तु आप जैसे विश्व विख्यात साहित्यिक एवं महान् दार्शनिक का यहां पधारना उससे कहीं अधिक गौरव की बात है।

यद्यपि साहित्य और संस्कृति की अनन्त और अविस्मरणीय सेवाओं तथा साधना के कारण आपकी गणना भारत के महान् पुरुषों में ही नहीं अपितु विश्व की महान् विभूतियों में की जाती है परन्तु हम ब्रजवासियों के लिए तो आप प्रेम की वही साक्षात् मूर्ति राधाकृष्ण ही हो जिनकी प्रतीक्षा में हम कितने दिनों से पलक पावड़े बिछाये हुए थे।

हमारे अकिंचन नम्र निवेदन पर आपने अपना अमूल्य समय देकर यहां पधारने की जो अनुकम्पा की है वह आपके हिन्दी के प्रति प्रगाढ़ स्नेह और साहित्यानुराग का परिचय देता है।

यह निर्विवाद सत्य है कि आपके उदात्त व्यक्तित्व में हम प्राचीन गौरवमय भारत के धर्म, ज्ञान व संस्कृति की तीन सुन्दर मुन्दर झांकियां एक साथ देखने को मिलता है। जहां आप (श्री राधाकृष्णन्) का नाम भारत के महान् धर्म संस्थापक एवं गीता की अमृतमय वाणी सुनाने वाले कृष्ण का स्मरण दिलाता है, वहां आपकी सरल वेषभूषा एवं शान्त व गम्भीर मुद्रा तथा प्रखर विद्वत्ता हमारी प्राचीन संस्कृति एवं ऋषियों के जीवन की याद दिलाता है।



स्वागताध्यक्ष द्वारा महामहिम उप राष्ट्रपति डा० सर्वपल्ली राधाकृष्णन् को अभिनन्दन पत्र भेंट

हम पूर्ण विश्वास है कि आप जैसे महानुभावों के वरद हस्त की छत्रछाया में राष्ट्रभाषा हिन्दी का गौरव तो बढ़ेगा ही साथ ही हिन्दी का प्रसार करने वाली हिन्दी साहित्य समिति जैसी संस्थाएं भी युग युगों तक पल्लवित एवं पुष्पित होती रहेंगी।

आपका अभिनन्दन करने वाली इस संस्था के स्थापन का निश्चय आज से लगभग पचास वर्ष पूर्व मातृ भाषा हिन्दी के कुछ भक्तों ने श्रावण कृष्णा तृतीया गुरुवार संवत् १९६९ तदनुसार १ अगस्त सन् १९१२ (शक संवत् १८३४) को श्री तुलसी जयन्ती के पुण्य पर्व पर किया था। हिन्दी प्रचार हेतु इस संस्था की स्थापना में स्व० श्री गंगाप्रसाद शास्त्री और जगन्नाथदास अधिकारी का विशेष हाथ था। स्थापना काल में संस्था के अनन्य हितचिन्तकों में डा० ओंकारसिंह पमार, प० मयाशंकर याज्ञिक, प० नारायणदास, प० गुलाब मिश्र भूमि रज और श्री बालकृष्ण दुबे का नाम उल्लेखनीय हैं। इन्हीं महानुभावों के अथक प्रयत्न व परिश्रम के बल पर खड़ी होकर यह संस्था दिन दूनी व रात चौगुनी उन्नति करती हुई वर्तमान स्थिति पर पहुँच सकी है। किराये के एक छोटे से कमरे में जन्म लेने वाली यह संस्था भरतपुर के हिन्दी प्रेमियों के सद् प्रयत्नों से आज निज के भव्य भवन में प्रतिष्ठित है। संस्था के पुस्तक भण्डार में विविध विषयों की १३ हजार से भी अधिक हिन्दी पुस्तकें हैं। इनके अतिरिक्त संस्कृत तथा हिन्दी के हस्त लिखित ग्रन्थ भी हजार से ऊपर ही हैं। इस समिति की ओर से हिन्दी प्रचार के लिये अनेक बार भागीरथ प्रयत्न किये गये। इन्हीं प्रयासों के परिणाम स्वरूप हिन्दी प्रेम की गूंज भोपड़ियों से लेकर महलों तक सुनाई देने लगी। इसी गूंज के फलस्वरूप सन् १९१६ में हिन्दी प्रेमी भरतपुर नरेश महाराजा कृष्णसिंहजी ने सर्व प्रथम हिन्दी को राज्य भाषा घोषित किया तथा उसके प्रचार के लिये अनेक प्रयत्न किये। उसी का यह परिणाम था कि राजस्थान में सबसे पहले भरतपुर में ही हिन्दी साहित्य सम्मेलन का १७ वाँ अधिवेशन १९२७ में हुआ। उस अवसर पर श्री प० मदन मोहन मालवीय श्री रवीन्द्रनाथ ठाकुर महामहोपाध्याय विद्यावाचस्पति डाक्टर गौरीशंकर हीराचन्द ओझा राजर्षि पुरुषोत्तमदास टंडन, श्रीमती लक्ष्मीबाई किबे श्री माखनलाल चतुर्वेदी जैसे दिग्गज विद्वान् तथा अनेक हिन्दी प्रेमी भरतपुर पधारे। इनके अतिरिक्त इस संस्था को अब तक अनेक साहित्यिक और राजनैतिक महानुभावों का आशीर्वाद और परामर्श भी समय समय पर मिलता रहा है।

राजनीति से अलग रहते हुए इस संस्था ने हिन्दी भाषा और देवनागरी लिपि के प्रचार तथा प्रसार के लिये जो अथक और स्मरणीय प्रयत्न किये हैं वे किसी से छिपे नहीं हैं। यह समिति हिन्दी पुस्तकों के पठन पाठन के प्रति रुचि, हिन्दी की परीक्षाओं के प्रति आकर्षण और हिन्दी की प्रतिष्ठा वृद्धि के लिये

प्रकाशक —
मदनलाल बजाज, प्रधान मन्त्री
श्री हिन्दी साहित्य समिति
भरतपुर।

मकर सक्रान्ति स० २०१८ वि०,
प्रथम संस्करण ७५० प्रतियां

मूल्य ४) रुपये

मुद्रक
विद्याव्रत शास्त्री
तथा
देवराज गुप्त
नूतन प्रिंटिंग प्रेस, भरतपुर।

हिन्दी के वयोवृद्ध साहित्यकार

डा० गुलाबराय, एम० ए० डी० लिट्, आगरा

का

आशीर्वचन



"भरतपुर कवि-कुसुमांजलि नाम के पद्य संग्रह को उसके सम्पादक महोदय डाक्टर कुंजबिहारीलाल ने मुझे दिखाने की कृपा की। इस संग्रह में भूतपूर्व भरतपुर राज्य के कवियों की रचनाओं का संकलन है। इन कवियों में कुछ जैसे 'सोमनाथ' और 'सूदन' तो इतिहास प्रसिद्ध हैं और कुछ का नामोल्लेख मात्र मिश्रबंधु विनोद में हुआ है और कुछ स्थानीय ख्याति के ही रहे। इस संग्रह में कवियों का कालक्रमानुकूल परिचय और विवरण है। इस संग्रह की कविताओं का मूलविषय नायिका भेद नखशिख वर्णन शृंगार है इसके साथ वीर और भक्ति रसों का भी समावेश हुआ है। ब्रज भाषा के अमित रत्न भण्डार की जितनी रक्षा की जाय उतना ही अच्छा है। इस संग्रह में सम्पादक महोदय की सुरुचि और संयोजन शक्ति का परिचय मिलता है। स्थानीय साहित्य की रक्षा स्थानीय लोग ही अच्छी तरह कर सकते हैं। मुझे आशा है कि यह संग्रह रसिक जनों का मनोरंजन कर ब्रज भाषा की गौरव वृद्धि में अपना योगदान करेगा।"

सम्मति

डा० मोतीलाल गुप्त,
एम० ए०, बी० टी०, पी एच० डी०, एफ० आर० ए० एस०,
एम० पी एच० एम० (लन्दन)

मत्स्य प्रदेश के हस्तलिखित ग्रन्थों की खोज करते समय भरतपुर के साहित्य से मेरा परिचय बढ़ा। यह साहित्य इतनी प्रचुर मात्रा में उपलब्ध हुआ कि मुझे भरतपुर की साहित्य चेतना की जागरूकता पर आश्चर्य होने लगा। इतनी अशान्ति लड़ाई-झगड़े का समय और भरतपुर के साहित्यकार इतने सृजनशील! साथ ही उन आश्रय दाताओं की भी प्रशंसा करनी पड़ेगी जिनके प्रोत्साहन और विद्या प्रेम से यह सब कुछ संभव हो सका। कवियों को आश्रय देना, राज कवि रखना उस समय की एक प्रचलित परम्परा थी और भरतपुर में भी इस परम्परा का समुचित निर्वाह किया गया। भरतपुर दरबार से सम्बद्ध कवि अनेक वर्ग और जातियों के थे ब्राह्मण, चौबे, वैश्य, जाट, मुसलमान, १ कायस्थ आदि, जिनके द्वारा प्राय सभी विषयों पर लिखा गया। प्राप्त साहित्य का विवरण प्रस्तुत करते समय मैंने उस प्रवृत्तिमूलक वर्गीकरण करने की चेष्टा की थी—रीति और शृंगार, भक्ति और नीति, इतिहास और शिकार, अनुवाद और गद्य सभी प्रकार का साहित्य प्राप्त हुआ और उच्च कोटि का।

क्षेत्र कुछ विस्तृत होने से भरतपुर के कवियों का सम्यक अध्ययन सम्भव नहीं हो सका था और मेरा ध्येय भी व्यक्तिगत मूल्यांकन की अपेक्षा प्रवृत्ति मूलक अधिक था। अब भरतपुर की हिन्दी साहित्य समिति के विद्या प्रेमी उत्साही कार्यकर्ताओं ने भरतपुर कवि कुसुमांजलि का प्रणयन कर प्रारंभिक परिचयात्मक सामग्री यथेष्ट मात्रा में उपलब्ध कर दी है और मेरा अनुमान है कि प्रस्तुत पुस्तक के आधार पर विस्तृत अध्ययन की ओर अग्रसर होने में मूल्यवान सहायता मिलेगी। मेरा विश्वास है कि भरतपुर में कुछ तो ऐसे विशिष्ट प्रतिभा शाली कवि हुए जिन पर स्वतंत्र रूप से काफी काम किया जा सकता है। सोमनाथ, रसानन्द, कलानिधि, उदयराम, शिवराम कुछ ऐसे ही नाम हैं। इन कवियों की जीवन सामग्री के साथ २ इनकी कृतियों की उपलब्धि और उस पर शोध कार्य विशेष उपयोगी हो सकते हैं। मैं तो चाहूँगा कि समिति के तत्वावधान में ही इस कार्य को भी पूरा करने की ओर सक्रिय पग उठाया जाय। कई शोध इच्छुक विद्यार्थी भी इन साहित्य मुक्ताओं का सफलता पूर्वक उपयोग कर सकते हैं।

कवियों की कृतियों का अध्ययन प्राय साहित्यिक दृष्टियों से ही किया जाता रहा है किन्तु इन कृतियों के दो एक पहलू और है। भाषा विषयक और शास्त्रीय अध्ययन भी वैज्ञानिक अनुसंधान के अग हाते हैं। अपनी विदेश यात्रा में मैंने देखा कि साहित्य और भाषा दो अलग अलग दृष्टि कोण है। और आज के युग में भाषा सम्बन्धी अध्ययन अधिक महत्व पूर्ण और आवश्यक माना जाता है। एन्नि बरा के हलिडे का नाम इस प्रसग में आदर के साथ लिया जा सकता है जिन्होंने एक चीनी पुस्तक का भाषा विषयक अध्ययन अभी अभी प्रस्तुत किया है।

हिन्दी में इस प्रकार का अध्ययन अभी आरम्भ नहीं हुआ है सोमनाथ के काव्य का भाषा मूलक अध्ययन करने का किंचित प्रयत्न मैं भी कर रहा हूँ। अलवर के कवि जोधराज का 'प्रताप रासा' मेरे द्वारा की गई भाषा विश्लेषणात्मक टिप्पणी सहित जोधपुर के राजस्थान प्राच्य विद्या प्रतिष्ठान द्वारा शीघ्र ही प्रकाशित होने का है। मैं चाहता हूँ कि साहित्यिक अध्ययन के साथ २ भरतपुर के कवियों की भाषा का भी विधिवत विश्लेषण हो। कवियों द्वारा प्रतिपादित सिद्धान्तों के शास्त्रीय विवेचन पर भी विद्वानों का ध्यान आकर्षित होना चाहिये। मेरी मान्यता है कि भरतपुर के कलाकारों का अन्य क्षेत्रों के कवियों के साथ तुलनात्मक अध्ययन करने पर यहां के कवियों की उत्कृष्टता निश्चय रूप से प्रमाणित होगी।

समिति द्वारा प्रकाशित इस परिचयात्मक पुस्तक का मैं हृदय से स्वागत करता हूँ और आशा करता हूँ कि विविध विद्वानों की सृजनात्मक प्रवृत्ति द्वारा 'समिति' का उत्तरोत्तर बल निरन्तर मिलता रहेगा।



❀ विषय-सूची ❀

प्रकरण ३

राम—काल (पूर्वार्द्ध)

प्रकरण ४

राम—काल (उत्तरार्द्ध)

प्रकरण ५

वर्तमान—काल



आभार

श्री हिन्दी साहित्य समिति, भरतपुर की स्वर्ण जयन्ती की योजना बनाते समय यह सोचा गया था कि इस अवसर पर एक ग्रन्थ दो खण्डों में प्रकाशित किया जावे। प्रथम खण्ड में समिति के गत ५० वर्षों की सेवाओं का सिंहावलोकन हो और दूसरे में भरतपुर राज्य के स्थापन काल से लेकर आज तक के कवियों का संक्षिप्त परिचय। स्वर्ण जयन्ती के अवसर पर प्रथम खण्ड तो मुद्रित हो ही चुका है, दूसरा खण्ड जो किन्हीं कठिनाइयों के कारण न छप सका था, आज प्रकाशित हो रहा है।

प्रस्तुत ग्रन्थ के प्रकाशन में भरतपुर के अनेक विद्वानों का, जिनका उल्लेख 'सम्पादकीय निवेदन' में किया गया है, पर्याप्त सहयोग तथा प्रोत्साहन प्राप्त हुआ। समिति उन सभी के प्रति आभार प्रदर्शित करती है।

समिति के अध्यक्ष डा० कुंजबिहारीलाल गुप्त एम० ए०, पी-एच० डी० ने वर्तमान काल के अधिकांश कवियों के जीवन-वृत्त तथा रचनाएं एकत्रित करने तथा इस ग्रन्थ के प्रकाशन में अपने साहित्य प्रेम और कार्य-कुशलता का प्रशंसनीय परिचय दिया। यथार्थ में यह उन्हीं के अहर्निशि परिश्रम का फल है कि यह ग्रन्थ इस रूप में निकल रहा है। इसके लिए समिति उनके प्रति चिर ऋणी है। मैं श्री चम्पालाल मंजुल के प्रति भी हार्दिक आभार अर्पित करता हूँ जिन्होंने छः मास निरंतर परिश्रम करके वर्तमान पांडुलिपि के पाठान्तर दोषों को दूर करके रचनाओं को शुद्ध रूप दिया। समिति के लायब्रेरियन श्री प्रभुलाल गोयल ने जिस तत्परता से इस ग्रन्थ के लिए दो मास काम किया, वह सराहनीय है।

श्री नारायनलाल प्रधानाध्यापक रा० मा० विद्यालय जघीना और श्रीरमेशचन्द्र चतुर्वेदी अध्यापक रा० मा० विद्यालय अघापुर ने अपना अमूल्य समय देकर इस पुस्तक की पाण्डुलिपि तैयार करने तथा प्रूफ पढ़ने में योग दिया, इस लिए समिति उनकी कृतज्ञ है।

श्री हिन्दी साहित्य समिति,
भरतपुर (राजस्थान)
मकर संक्रांति सं० २०१८ वि०

मदनलाल बजाज
प्रधान मन्त्री

सम्पादकीय निवेदन-

वैसे तो राजस्थान के पूर्वी सिंहद्वार भरतपुर की गणना राजस्थान के अन्तर्गत ही की जाती है और विशेषतया वर्तमान समय में जब कि विलीनीकरण के अनन्तर यह उसका एक प्रमुख जिला बन चुका है, किन्तु वास्तव में यह भू भाग ब्रज प्रदेश का ही अंग है और अति प्राचीन काल से यह ब्रज भाषा, ब्रज साहित्य और ब्रज संस्कृति का एक सुविख्यात गढ़ माना जाता रहा है। एक समय था जब मथुरा, वृन्दावन और गोवर्धन आदि भरतपुर राज्य के अन्तर्गत थे और यहां के नरेशों की विजय पताका समस्त ब्रज प्रान्त पर फहराती थी। यहाँ के नरेश 'ब्रजेन्द्र' कहलाते थे और हिन्दी तथा हिन्दुत्व के रक्षक और उन्नायक माने जाते थे। जहां ये नरेश अद्भुत शौर्य एवम् पराक्रम के लिए प्रसिद्ध थे, वहां कला प्रेमी और साहित्य मर्मज्ञ होने के लिए भी। इनमें से अधिकांश कवि थे और जो कवि न थे, वे काव्य प्रेमी अवश्य थे और कवियों को आश्रय देते थे। ऐसा अनुकूल वातावरण पाकर यहां अनेक जाज्वल्यमान ग्रहों का अभ्युदय हुआ, जिन्होंने न केवल ब्रज साहित्याकाश को अपनी काव्य प्रतिभा से देदीप्यमान ही किया अपितु साहित्य की अभिवृद्धि एवम् विकास में स्पृहणीय योग भी दिया। चन्द्र और सूर्य के समान महाकवि सोमनाथ और सूदन ने क्रमशः शृंगारिक एवम् शौर्य कमल तथा कुमुदवन को विकसित कर अनेक कवियों को काव्य सृजन की प्रेरणा दी। इन कवियों की अमर वाणी ब्रज साहित्य की अमूल्य निधि ही नहीं वरन् अभिन्न अंग भी है, क्योंकि इन काव्य ग्रन्थों से साहित्य की श्रीवृद्धि के साथ २ उसके प्रचार एवम् प्रसार में पर्याप्त योग मिला। अतः यह कहना अनुचित न होगा कि ब्रज साहित्य की उन्नति में भरतपुर वासियों का उतना ही श्रेय है जितना मथुरा वासियों का। भरतपुर जितना ब्रज भाषा पर गर्व करता है उतना ही ब्रज भाषा भरतपुर के कवियों पर भी।

ब्रज भाषा के उत्तरालंकृत काल (१७००—१८८६) के पाँच उप विभागों में से तीन के प्रमुख कवियों—देव, सूदन और पद्माकर का भरतपुर से विशेष सम्बन्ध रहा है। वर्तमान काल में ब्रज भाषा के गौरव सत्यनारायण 'कविरत्न' ने भी अनेक वर्ष भरतपुर में रहकर काव्य सृजन किया।

भरतपुर राज्य को स्थापित हुए तो केवल २३६ वर्ष ही हुए हैं किन्तु इससे बहुत दिन पूर्व यह भू भाग साहित्य सृजन के लिए पर्याप्त उर्वर रहा है। यह भूमि, जहाँ आजकल भरतपुर बसा हुआ है अति प्राचीन काल में कवियों की

जन्म देती रही है। वर्तमान राज्य वंश के पूर्वज भी हिन्दी के शैशव काल में ही कवियों को आश्रय देकर हिन्दी की निरन्तर अक्षुण्ण सेवा करते रहे हैं। विक्रम की ११ वीं शताब्दी में बयाना में वर्तमान राज्य वंश के पूर्वज विजयपाल नामक यदुवंशी नरेश राज्य करते थे। इन्हीं नरेश ने प्रसिद्ध यवन आक्रमणकारी महमूद गजनवी के भांजे सालार मसूद गाजी तथा अबूबक्र कंधारी जैसे आततायियों का हिन्दू धर्म की रक्षा के हेतु, अपूर्व शौर्य एवम् कौशल से सामना किया था। वीर होने के साथ २ ये बड़े रसिक और काव्य प्रेमी भी थे। इनके इस युद्ध का मार्मिक वर्णन विजयपाल रासो नामक ग्रन्थ में प्रसिद्ध कवि नल्लसिंह ने किया है। यह ग्रन्थ प्रारम्भिक हिन्दी काव्य का उत्कृष्ट नमूना माना जाता है।

वर्तमान राज्य के स्थापित होने के बहुत दिन पूर्व १७ वीं शताब्दी में सुकवि प्रसविनी भरतपुर भूमि ने प्रसिद्ध कवि टहकन को जन्म दिया। जिन्होंने संस्कृत महाभारत के जैमिनाश्वमेध अंश का सरल और सरस भाषा में अनुवाद कर जन साधारण को सुलभ बनाया।

औरङ्गजेब की धर्मान्धतापूर्ण नीति के परिणाम स्वरूप सन् १७२२ ई० में महाराज बदनसिंह ने भरतपुर राज्य की स्थापना की और यहां के शासन एवम् राज्य विस्तार का भार रणबांकुरे युवराज सूरजमल (सूदन-कृत सुजान चरित्र के नायक) को सौंपा गया।

भरतपुर के लिये यह बड़े गौरव की बात है कि राज्य के संस्थापक महाराज बदनसिंह सरस कवि थे और कवियों को आश्रय भी देते थे। जिस राज्य का कर्णधार स्वयं काव्य प्रेमी हो वहां कविता का विकास क्यों न हो? बदनसिंह की इस साहित्यिक अभिरुचि का इनकी संतति पर बड़ा गहरा प्रभाव पड़ा। इनके दो पुत्र सूरजमल और प्रतापसिंह जो क्रमशः भरतपुर और वैर के शासक थे बड़े काव्य प्रेमी थे और दोनों ने ही अपने समय में तत्कालीन कलाओं को श्लाघनीय प्रोत्साहन दिया। यदि डीग के भव्य भवन सूरजमल की कलाप्रियता का अक्षय यशोगान करते हैं तो वैर के सुन्दर महल नौलखा बाग और फुलवारी प्रतापसिंह की कीर्ति को। यदि महाकवि सूदन ने अपने आश्रय दाता सुजान के शौर्य वर्णन के लिये सुजान चरित्र की रचना की तो आचार्य सोमनाथ ने प्रतापसिंह की सरस प्रवृत्तियों की तुष्टि के लिये मनोमुग्धकारी "रस पीयूष निधि ग्रन्थ की। इसी दृष्टि से प्रस्तुत ग्रन्थ में सोमनाथ और सूदन को समकालीन होते हुए भी दो विभिन्न कालों के उन्नायकों के रूप में प्रदर्शित किया गया है। शौर्य काव्य की दृष्टि से सूदन तो महाकवि हैं ही किन्तु काव्य प्रतिभा के साथ २ जिस आचार्य के गुण का होना अपेक्षित होता है वह महाकवि सोमनाथ में देखने को मिलता है।

इन दोनों महाकवियों द्वारा शृंगार और शौर्य की जो धाराएं प्रवाहित की गई वे साहित्य प्रेमी मानस को अपनी सरस लहरियों से आप्लावित करती हुई उद्दाम वेग से प्रवाहित होने लगी और इनके युगल सजल तटों पर आसीन कवि विहग रस सीकरों का पान कर अनिर्वचनीय आनन्द का अनुभव करने लगे। कुछ काल के अनन्तर नगर निवासी भागीरथ रूपी राम कवि ने भक्ति रस रूपी सुर सरिता को प्रवाहित किया जिससे भरतपुर की काव्य धारा को नया मोड मिला। शौर्य शृंगार और भक्ति की यह त्रिवेणी इतने वेग से उत्तरोत्तर बढ़ी कि उसका प्रवाह आज तक जन मानस को रसानुभूति करा रहा है।

यह त्रिवेणी बहने भी न पाई थी कि समय परिवर्तित होने लगा। अंग्रेजों के अत्याचारों के परिणाम स्वरूप जनता में राष्ट्रीय भावना का अभ्युदय हुआ। पद्य के साथ २ गद्य का प्रचलन बढ़ा और ब्रज भाषा के स्थान पर धीरे २ खड़ी बोली को प्रोत्साहन मिलने लगा। इसी संक्रमण काल में श्री गोकुलचन्द दीक्षित जैसे बहुमुखी प्रतिभा सम्पन्न साहित्यकार उत्पन्न हुए जिन्होंने कहानी नाटक, इतिहास [illegible] आदि गद्य रचनाओं द्वारा साहित्य की श्रीवृद्धि की। इस प्रकार वर्तमान काल के प्रारम्भ होते ही कवियों ने ब्रज और खड़ी दोनों भाषाओं में काव्य सृजन प्रारम्भ कर दिया। अब जहाँ डा० रांगेय राघव खड़ी बोली में सामयिक रचना कर भरतपुर के साहित्यिक क्षेत्र को गौरवान्वित कर रहे हैं वहां श्री चम्पालाल 'मधुप' और श्री कुलशेखर आदि कवि ब्रज भाषा की सरस रचनाओं द्वारा भगवती वीणापाणि की अर्चना करने में संलग्न हैं। इस प्रकार सरस्वती के इन वरद पुत्रों ने भरतपुर में जन्म लेकर जो अमर काव्य रचना की है वह केवल भरतपुर का ही नहीं वरन् समस्त हिन्दी जगत के लिए एक अमूल्य देन है।

भारती के इन सुपुत्रों की वाणी के अमरत्व को सुरक्षित बनाये रखने की दृष्टि से हिन्दी साहित्य समिति के स्थापन काल से ही अनेक अथक प्रयत्न किए जा रहे हैं। सर्व प्रथम सन् १९११-१२ में यहां के तत्कालीन साहित्यकार श्री मयाशंकर याज्ञिक और विद्यानुरागी अधिकारी श्री जगन्नाथदास विशारद ने भरतपुर के प्राचीन कवियों के ग्रंथों की शोध की और अनेक अमूल्य ग्रंथ ढूंढ निकाले। इन्हीं ग्रंथों में सोमनाथ कृत 'माधव विनोद' नामक ग्रंथ मिला जिसे पढ़कर श्री सत्यनारायण कविरत्न को 'मालती माधव' लिखने की प्रेरणा मिली। खेद का विषय है कि प्रतिकूल परिस्थिति उत्पन्न होने के कारण यह 'शोध' कार्य स्थगित हो गया और आज भी श्री मयाशंकर याज्ञिक के पास ही ये ग्रंथ सुने जाते हैं। इसके अनन्तर सन् १९२७ ई० के प्रारम्भ में श्री बालकृष्ण दुबे ने इस कार्य को नवीन ढंग से करने का स्मरणीय पग उठाया। उनके इस ढंग में सब श्री वैद्य [illegible] कविवर नन्दकुमार प्रेमनाथ चतुर्वेदी, प्रभुदयाल 'दयालु' तथा मा० प्रभुलाल

गोयल ने बड़ी तत्परता से कार्य किया और अथक परिश्रम के पश्चात् भरतपुर कवि स्मारक ग्रंथ प्रकाशित करने के लिए पर्याप्त सामिग्री एकत्रित करली किन्तु दुर्भाग्यवश यह स्मारक ग्रंथ प्रकाशित न हो सका और कुछ सामिग्री स्वर्गीय कविवर नन्दकुमार के पास ही रह गई। स्वर्गीय दुबजी हताश न हुए और वे सब श्री प्रमनाथ चतुर्वेदी प्रभुदयाल दयालु प्रभुलाल गोयल, चम्पालाल मजुल तथा कवि हरीश आदि के सहयोग से प्राचीन कवियों का जीवनवृत्त और उनकी कविताओं के उद्धरण पुनः सकलित करने में जुट गये किन्तु दुबजी की असामयिक मृत्यु हो जाने के कारण स्मारक ग्रंथ की पाण्डुलिपि तयार न हो सकी और न यह ग्रंथ मुद्रित ही हो सका।

सन् १९५५ ई० में समिति के सभापति पद का कार्यभार सम्हालने के अनन्तर मेरी भी यह उत्कट अभिलाषा हुई कि यहां के कवियों के स्मारक ग्रंथ का शीघ्रातिशीघ्र सम्पादित कर स्वर्गीय दुवेजी के स्वप्न को साकार करूं किन्तु समिति के नवीन भवन के निर्माण-कार्य में व्यस्त हो जाने के कारण मैं अपने विचारों को मूर्त रूप न दे सका। दिनांक १८.१०.६० की कार्यकारिणी की बैठक में मेरे साथियों ने मुझे यह कार्य अविलम्ब सम्पादित करने का विचार किया। अतः मित्रों के आग्रह के फलस्वरूप मैंने यह कार्य शीघ्र प्रारम्भ कर दिया परन्तु इसको जितना सरल समझे हुए था उतना न निकला। प्राचीन कवियों की रचनाएं तो थीं किन्तु प्रतिलिपिकों की असावधानी के कारण कार्य सम्बन्धी अनेक त्रुटियां आगईं थीं जिनका निराकरण करना अनिवार्य था दूसरे वर्तमान-काल के बहुत से कवियों के जीवन-वृत्त तथा रचनाएं भी न थीं और प्राचीन कवियों के जीवन वृत्त भी पुनः लिखने थे। इस कार्य में सहयोग देने के लिए मैंने श्री प्रभुदयाल जी दयालु से निवेदन किया। श्री दयालु ने बड़ी तत्परता से काम प्रारम्भ किया किन्तु अन्य कार्यों में व्यस्त हो जाने के कारण वे अधिक समय न दे सके। ऐसी स्थिति में मेरे पुराने मित्र श्री चम्पालालजी मंजुल ने सक्रिय कदम उठाया और छः मास का अथक परिश्रम करके प्राचीन कवियों की रचनाओं को उनकी मूल प्रतियों से (जो समिति के पुस्तकालय में एकत्रित की हुई थीं) मिलाकर शुद्ध किया। यथार्थ में यदि मंजुलजी जैसा काव्य मर्मज्ञ इतना परिश्रम न करते तो यह कार्य असम्भव तो नहीं कठिन अवश्य था। समिति के लाइब्रेरियन श्री प्रभुलाल गोयल का भी पर्याप्त सहयोग मिला।

जैसा पहले कहा जा चुका है यह ग्रंथ बहुत जल्दी में तैयार करना पड़ा है। अतः प्रूफ सम्बन्धी भूलों के अतिरिक्त वर्तमान काल के अनेक प्रतिभा सम्पन्न कवियों के वृत्तान्त जल्दी में रह गए होंगे। आशा है सहृदय पाठक इन त्रुटियों के लिए मुझे क्षमा करेंगे।

यदि इस 'कुसुमांजलि' के अवलोकन से भरतपुर के कवियों को हिन्दी साहित्य का देन और उनका अन्य कवियों के बीच स्थान निर्धारित हो सका तथा हिन्दी जगत के मनीषियों का भरतपुर के कवियों पर शोध-कार्य के लिए कुछ भी प्रेरणा मिल सकी, तो मैं अपने इस प्रयास को पर्याप्त सफल समझूंगा।

श्री हिन्दी साहित्य समिति,
भरतपुर (राजस्थान)
मकर संक्रांति सं० २०१८ वि०

डा० कुंजविहारीलाल गुप्त

प्रकरण १

सोमनाथ–काल

महाकवि सोमनाथ—भरतपुर राज्य वंश के आश्रय में रह कर ब्रज भाषा काव्य को पल्लवित एवम् पुष्पित करने वाले कवियों में महाकवि सोमनाथ प्रमुख हैं। ये 'ससिनाथ' 'सोमनाथ' और 'नाथ' नाम से काव्य रचना किया करते थे।

महाकवि सोमनाथ के जन्म एवम् कविता काल के विषय में विद्वानों में मतभेद है। मिश्रबन्धु विनोद के अनुसार इन्होंने अपना प्रमुख रीति ग्रन्थ "रस पीयूषनिधि" भरतपुर राज्य के संस्थापक महाराजा बदनसिंह के शासन काल में सं० १७९४ की ज्येष्ठ बदी १० को पूर्ण किया परन्तु ठाकुर शिवसिंह सेंगर इनका जन्म सम्वत् १८८० विक्रम बतलाते हैं। हम ठाकुर साहब के मत से सहमत नहीं हैं क्योंकि "रस पीयूषनिधि" निश्चित रूप से महाराजा बदनसिंह के समय में लिखा गया और महाराजा बदनसिंह का शासन काल सं० १७७५ विक्रमी से १८१७ विक्रमी तक ही रहा। इसलिये मिश्रबन्धु विनोद का मत ही उचित ठहरता है। इनके मरणकाल के विषय में भी कुछ नहीं कहा जा सकता।

इनका जन्म मथुरा नगर के चतुर्वेदी (छिरौरा) वंश में हुआ था। इन्होंने अपने वंश के सम्बन्ध में लिखा है कि छिरौरा वंशी नरोत्तम मिश्र के देवकीनन्दन एवं कण्ठ नामक दो पुत्र थे। देवकीनन्दन के नीलकण्ठ, मोहन, महामणि और राजाराम नामक चार पुत्र हुए, जिनमें नीलकण्ठ के उजागर, गंगाधर और सोमनाथ उत्पन्न हुए। नरोत्तम मिश्र जयपुर नरेश महाराजा रामसिंह (राज्यारोहण-काल संवत् १७२४) के मन्त्र-गुरु थे। सोमनाथ जी के पिता नीलकण्ठ मिश्र अपने समय के प्रसिद्ध कवियों व ज्योतिषियों में गिने जाते थे।

बाल्यकाल श्री कृष्ण भूमि मथुरा में व्यतीत कर सोमनाथ जी नवाब आजमखाँ के यहाँ गये और उनके लिए इन्होंने 'नवाबोल्लास' नामक ग्रन्थ की रचना की। तत्पश्चात् ये महाराजा बदनसिंह के कनिष्ठ पुत्र प्रतापसिंह जी के आश्रय में आकर स्थायी रूप से भरतपुर में रहने लगे। यहाँ पर इन्होंने अनेक

इनकी कृतियों में से कुछ उदाहरण लीजिये —

नवाबोल्लास

ईद वर्णन

धन अवनी को गुनवंत गाजी आजमखां,
इन्द्र मान इन्द्र को विलास परसत है ।
बाजत मृदंग बीन मधुर मधुर मंजु,
तानकी तरंगन मो रंग दरसत है ॥
कुंदन लता सी दासी काम कन्या सी बाल
नृत्यत अनंत अंग रूप सरसत है ।
नजर बिलंद सो गयंद बक्सत रीभि
करन सो कंचन को मेह बरसत है ॥

बकरीद वर्णन

पण्डित परम गुन मण्डित विबुध जिमि
उच्चरत विमल कवित्त गुनवन के ।
नृत्यत अनेक नृत्य कारक अनंत गति
गावत सुघर सम किन्नर सुमन के ॥
सोमनाथ कहत मुबारकी चहूँघा चारु
चायन सों चतुर नरेन्द्र देश देश के ।
आजमखां गाजी को विलोक बकरीद आज,
फीके होत सुघर समाज अमरेश के ॥

दशहरा वर्णन

(इस छन्द के प्रथम तीन चरण ही मिले हैं चौथे की पूर्ति सोमनाथ जी को न होकर छन्द पूर्ति मात्र है)

साहि आज सरस सभा में दसहरा मान
आजमखां आय पुरहूत सो प्रवीनो है ।

दान कविदन गयन्न हयदन
जानै सुख सुयस सुनाम वर लीना है ॥
सो छवि अखड महि महल के जोनिवे को
मानहु विरच अवतस यह दीना है ।
सोमनाथ वरनत दसहरा सुप्रसन्न ह्वै कैं
ठाट वाट दखि कै अतीव मन चीना है ॥

दिवाली वर्णन

सरस सरस की दिवारी मान आजमरवा
गाजत मनाज की निकाई निदरत है ।
जगर मगर दिमा दीपन सो घर राखी
तिन पखि दुजन पतग पजरत है ॥
छूटत छबीलो हय फूलन को वृन्द नाम
ताको दुति दखि हिय आनन्द भरत है ।
सो छवि अनद मानो पावक प्रताप-तर
फूल्यो ताक चहुँघा तै फूल ये भरत है ॥

शशिनाथ-विनोद

छप्पय

गगन छटा सी अग पीत गिर जटा-जूट धर ।
ताम्र वसन भुजग तुग गगा-तरग वर ॥
चन्द्र लिलार अमन्द तीन दृग कोटि कष्ट हर ।
भूत पास अट्टास और श्री विधि विलास कर ॥
अरु मुण्डमाल कपाल कर बैठ विमान वैगन गर ।
इहि विधि लख्यो शशिनाथ को जग प्रसिद्ध सर सिद्ध घर ॥

कवित्त

जरद जटान मे निसाल जिमि गगधार
हार सप द्विज त्रिनन रूप न्यार को ।
गरल गरे मे जोर जाहर जलूस वागे
आध अग लख्यो सनद के पयार को ॥
सोमनाथ गरे उर अनर निमगि नव

पारावार तारन हू को कर्ता हुस्यार को ।
भसम सिंगारे को लिलार पर धारे-ज्योति
चंद की कला की या पिनाकी प्रान प्यारे को ॥

रामकला-धर

बड़ी चौपाई

श्री बदनसिंह ब्रजमंडल नायक जग जाको जस छायो ।
ताकौ कुंवर प्रतापसिंह वर आनन्दन अधिकायो ॥
तिहि निमित्त कवि 'सोमनाथ' ने रामचरित्र बनायो ।
रामकला धर नाम ग्रन्थ को प्रथम मयूख लसायो ॥
कर जोडे ठाढ हनुमन्तहि प्रभु राम जो बाल ।
सुनि अब तत्व कहतु हो तो सों मेर भक्त अमाल ॥
एक आतमा अरु अनातमा परमातमा सु तीजो ।
जीवर प्रकृति ब्रह्म क्रम ही तें तीनों उर गुनि लीजो ॥
तीन भेद है जस नभ के डीठि सवन के भाव ।
महाकाम है पहिलौ दूजो घटा काश छवि छाव ॥
अरु प्रतिबिंब तीसरो-भेद सुश्रुति- प्रगट बतायो ।
इही भांति चतन्य तीन विधि सोमनाथ न गायो ॥

सवैया

है रघुनाथ दयाल सुनो अब मैं निहचै तुव पाइ पखारि हों ।
काठ सो पाहन म कहा भेद, मनुष्य करे नहिं और विचारि हौं ॥
ए पग पंकज रावर के, तिनकी सह आन क्या औरज धारि हों ।
या कहि सप्रेम धाइ मनाह न फेरि कह्यो भव पार उतारि हौं ॥

दोहा

अथ अविद्या त प्रगट दृष्टान्त समुदाय ।
निरम चेतन न्ति सो प्रतिबिम्बनि है आय ॥
जीय लोक के मध्य ह्वा जीव कहत सब ताहि ।
विगत अविद्या ब्रह्म हीं भानो लखत उदारि ॥
देहं बुद्धि मन प्रान को, जब लों है अभिमान ।
तब लौं कर्ता भागता सुख दुख को मुनिज्ञान ॥

पर ब्रह्म को नाहिंनें, यह समार विचार ।
तुम स नाहिं अजान को, लेस जगत भरतार ॥
हम अमारो हैं सत्र मने मूढ़ अविवेक ।
तुम अतय सदा अमल, आनंदमय प्रभु एक ॥

रस-पीयूषनिधि

गीतिका छन्द-लक्षणम

सगन जगन जुग भगन पुनि रस गन लघु गुरु होय ।
बीस वरण या गीतिका बरनै कवि सब कोय ॥

उदाहरण

परम सु हालत फूल चन्दन अंग अंग सजन हैं ।
रति रत एक सुभाय सौं नित पथ हरन नैन हैं ॥
'सोमनाथ' प्रीतम सांवरे मद्य माय मोद बढ़ाय हैं ।
सरसाय मैन सनेह की सुखदाय कठ लगाय हैं ॥

सयोगशृंगार-लक्षणम

दम्पति मिलि विहरत जहाँ, स मत कहत प्रवीन ।
ताहि सजोग सिंगार कहि बरनत सुकवि कुलीन ॥

उदाहरण

जगमग जटित जवाहर की सरजाम
पूरे से अनुपम बिछौना सरसान हैं
मेरा तन मन रति काम से सुघर राज
सरगज बसन श्रौ भूषन समान हैं ।
'सोमनाथ' कहै चित चाहन सौं मोद भर
प्रेम रस रगन की बान बखान हैं ।
गलबाही दम्पति परस्पर दे प्रात आजु
रगमगे सोभित निरखि मुसिक्यात हैं ॥

अथ रूपकातिशयोक्ति लक्षणम्

केवल जहं उपमान को कहिवो है सुखदानि।
रूपक अतिशय उक्ति सो रसिक लेहु पहिचानि ॥

उदाहरण

थर हर कुन्दन कदलि अरविन्दन प
गुंजरत भवर समीप मन्दर हैं।
फरकत कोक सुरसरि की तरग मग
भेटनि कलप वलि काम तरुवर हैं ॥
विद्रुम सुरगनि मं हीरा की जगत जोति
'सोमनाथ' कहै सो मधुरता को घर है।
देखो लस दामिनी मे छन्न जल धर माहि
नक्षत्रपनि अंक मे विचित्र निकर है ॥

विभावना लक्षणम्

विना हेतु जहं कारज सिद्धि।
सा विभावना जान प्रसिद्धि ॥

उदाहरण

अलवला रुचि मो रुची उहां वदन की छांह।
विन ही पिय निरख हरषि विहसि पसारं बांह ॥

विट सखा लक्षणम्

काम कलि की बात अरु दूतपन मे ठीक
नरउन यं विट सखा के वरनन है कवि नीक ॥

उदाहरण

काहे को गुमान मानि केसर लगाई अग,
सग मलियागिरि के नक ना मिरायगी।
फूलन की पाखुरी विछाय त न ह्वै है कछु
सुमनि सभीन की डिठोरी अकुलायगी ॥

'मामनाथ' प्यारे सों न कीजै अभिमान प्यारे,
एम उपचार किया और अधिकायगो ।
वद ब्रजचन्द की सम्प रस चाखौ चनि,
अनग न जुग की जरन घटजायगो ॥

ध्रुव विनोद

छप्पय

उज्वल मृदु अंग अंग, जगमग कमल बदन अति ।
हरि रस मत्त विशाल, बाल बालन चपल गति ।
सीस लटूरी कुटिल, अलकें तुलसी माला ।
तिलक भाल करवीन वसन कटि तट मृग-छाला ।
कहि 'सोमनाथ' उदार अति, होनहार को बाल गुनि ।
वर बुद्धि विशारद सिद्धि-निधि दरस नारद दिन मुनि ॥

पद्धरि छन्द

तुम चरन भजत जे प्रभु दयाल ।
तिनको न और आशिष विशाल ॥
याते तुम हमसे नीच जानि ।
या रसा करियें नहू मौनि ॥
जिहि पिढ प्रसूता-प्रथम गाय ।
निजु बच्छा को पावत्रि सुभाय ॥
तुम विरद दीन बकसन सुजान ।
हम हैं अधीन अनमाकथान ॥

दोहा

यों कर ध्रुव न जाचिंय प्रभु सों कबरि चैन ।
धनि धनि कहि हरि तब चाहि दरसन चैन ॥

पादाकुलक छन्द

बढ़ो धीर धनिया न धावनि ।
अरु प्रभुपनि की धार अरागनि ॥

माइ सुमीनि और ध्रुव छौना ।
भीजगय अमुनन गहि मौना ॥

मत्त-गयन्द

सुंदर मन्दिर अवर औ बहुरंग तुरंग मतंग अमाने ।
कंचन के मनि मंडित साज सजे तरुनी अरु पुत्र सयान ।
बाग बड़े कल्पद्रुम के शोभनाय जुदेत मनोरथ दान ।
ते ध्रुव मान नहीं अपने सपने के समान सबै पहिचान ॥

रामचरित रत्नाकर

कवित्त

जैसे तजवन्तनि में उद्धत प्रभाकर औ,
पव्वयनि मध्य हिमवंत ज्यों पहार है ।
सिंधुन के मध्य ज्यों गम्भीर छीरसागर है
नरन में त्यों तुम न विक्रम को पार है ।
रामचन्द्र सुनो रावरे के सम कोऊ अब
जग में न दूजो यह बात निरधार है ।
बरुन कुबेर न असुर जम नाम जम
पावक समीर न पुरंदर उदार है ।

नाराच छंद

चली बुझाइ गेल ते अनन्त नीर धार है ।
नम प्लवङ्ग वीर औ मतंग वार वार है ॥
धप प्रचण्ड वृक्ष डार पात मूल तच्छन ।
चल्यो महेन्द्र प जव समीरनन्द गच्छन ॥
अनेक रंग की चली अनेक धार छूटि कै ।
अनिन्दता गिरिन्द्र की गई शिला सुफूटि कै ॥
मनस्सिला शिला बिसार हरिताल सो मिली ।
समीरनन्द वीर के प्रचण्ड पाग सों मिली ॥
अविरण ताम चम्पिक शिलानि दूध सम्भव ।
स धूम ज्वालमा नग भुजंगान मुकुट छुण्डन ॥

भजे मनत्र नाग वृंद बुद्धि चित्त धारि क।
हुत मन्त्र कनक सों मुयान को विमारि क॥

छप्पय

चण्ड फुरहुरी मंडि धरत उद्दंड मचक्क।
विकट कण सबोंचि पुच्छवरि उच्च उचक्क।
चल्यौ व्याप के पथ कपिनि कुंजर वन मड्यौ।
हनूमन्त उद्दाम चित्त आनन्द घमड्यौ।
त्यौ महिन्द्र पवे सब शृंगे गई दरकिर क।
त्व चल्यौ नीर चहुँ मार त सरिको मिना करकिर क॥

माधव-विनोद

भमवतु वदन मतङ्ग कुम्भ उलग ग्रग धर।
वन्दन वन्दित अनुण्ड कुंडलित गुण्डि सिद्धि घर।
थचन मनिमय मुकुट जगमग शुभ्र शीश पर।
लोचन तीन विशाल चारि भुज ध्यावत सुरनर।
'गनिनाथ' नन्द स्वच्छन्द नित, काटि विघन छरद्वन्द हर।
जय बुद्धि विलग अमन्द दुति, इन्दु भाल आनन्द कर॥

रास पञ्चाध्यायी

सवैया

रावरी हाँसी विनोदनि सों भ्रम गोंमुरी की सुनि नाम नरेरी।
जागि उठी मनमथ की अगिनि छिनो छिन बाढत भाँति घनेरी।
सींचौ हम अधरामृत सों 'गनिनाथ' कहौ जिनि आन करेगी।
नातर या विरहानल में जरि ह्वायगी मान्ह भभूति की ढेरी।
मनमथ मनोहर मूरति न्याम न क्या अबला दग्मावन हौ।
मरमाइ में नेह मनोविधि मा मुस-मोद न कमा वग्मावन हौ।
'गनिनाथ' गुमान कहो किनहो विरही विरहै परसावन हौ।
यह बात न चाहिय नाथ तुम्हें जु हमें इतना तरसावन हौ॥

सग्राम दर्पण

दिशशूल कथन (दोहा)

साम, शनिश्चर वार कों, पूर्व न करौ पयान।
दक्षिण को गुरु के दिना चलिये नहीं सुजान॥
भानुवार अरु शुक्र को, मति पश्चिम को जाउ।
मंगल अरु बुधवार को उत्तर दिशा बचाउ॥
पूरव में शिनि अग्नि दिशि, नैऋत दक्षिण जान।
वायव पश्चिम में समझि ईश उत्तर पहिचान॥

अथ जय पराजय नानार्थ स्वर प्रश्न कथन [दोहा]

बाय स्वर की चाल में बाय प्रश्नक आय।
पूछे तौ सग्राम कों, जीत आपु उनाय॥
याहा दक्षिण स्वर चलत, आर दाहिनी आय।
पूछे तौ अति कष्ट कर, पावे मन की भाय॥
बंध स्वर की आर के, पूछे अपनो काज।
नाम होय तत्कालही सम्पति सुख को साज॥

प्रेम पच्चीसी [दोहा]

मगल मूरति विघनहर, सुन्दर त्रिभुवन पाल।
सेवक प्रेम-समुद्र के, जै, जै, श्रीनन्दलाल॥

रचना

क्या गो था नरमार तुमारा नहिं मुखड़ा दिखलाते है।
रात दिना दिन तेरी चरचा मुभन्, और न भाव हैं।
बन्दा मद्दव गिर्द क्या गिरन्दी फरमा है।
'भामनाथ नहीं में क्या दिन अन्दर दिल पल्ला है॥
ये तुमसे महबूब गुबि बन असाद उरझे है।
मौन सब मुरशाद इनमें ये औरोमे सुरझे हैं।
बन्दगी पहिचान न्दरं तू भला दिया न अरला है।
मानाथ नहीं में क्या दिन अन्दर दिल पल्ला है॥

खान पियन दों गल्लें भूलीं साहम नहीं ठहरदा है ।
विधि का मान बराबर गुजर निमि न्नि आठ पहरदा है ॥
बिन तेरा मुख दखे जानी काम कहर अति करदा है ।
'सोमनाथ' नहीं स कसा दिल अन्दर विच परदा है ॥
नरदबन्द वे अरन्न कन्हैया जे पन को प्रनपार हैं ।
पार नजर-पहिचान गहगही गुरव दरद उसाते ह ॥
प्रम पन्थ में डग द जानी अब क्यो हिये अहरदा है ।
'सोमनाथ' नहीं स कसा दिल अन्दर विच परदा है ॥

रस-विलास

छप्पय

उदय दिवाकर रंग-अंग आभा वर धारिनि ।
त्रिनयन चन्द लिनार ईस अरधंग विहारिनि ।
सिंह वाहनी सिद्धि चारि भुज आयुध मंडिनि ।
जुग्गिनि मंडल संग चाड दानव दल खंडिनि ।
बहु बुद्धि वृद्धि वरदायनी माहनि सुर नर मुनि मननि ।
रजे सहाय 'ससिनाथ' की जय जय सिंधुर मुख जननि ॥

नायिका-लच्छणम्

दोहा

सुन्दर बेलि कला चतुर, भूषन भूषित अंग ।
इहि विधि बरनो नायिका रस को पाइ प्रसंग ॥

उदाहरण [कवित्त]

मारुति बधू सी मारी सुन्दर सुगंध सनी
जगमग दह दुति कुन्दन क रंगसी ।
गौन सुघराई की-सी मौंव अरविंद मुखी,
ननन की गति गुन नरन तुरंग सी ।
छूटनि चरैया मनि-भूषन, मयूष चारु,
'सोमनाथ' लाग यानी उपमा विरग सा ।
राज रति मन्दिर अनग अगना सी आजु,
वाल अंग अंगनि म जोवन तरग सी ॥

सुजान विलास

सवैया

आश्रमनि में द्रुम पुञ्ज निकुञ्ज प्रफुल्लित सौरभ की भरनी है।
चारु प्रभाकर की तनया अरु चारि पदारथ की करनी है।
नित्त जपै 'सोमनाथ' हिये जहँ की रज पापन की हरनी है।
लोकन सों बरनी बरना दुख की हरनी ब्रज की धरनी है॥

कवित्त

प्रबल प्रताप दोनों भाँति सों बिराजै जाके
अरिन के पीर, सोर धमक निसान की।
ठट्ट मरहट्टन के निघट्ट डारे बानन सों
सेम सर लेत है प्रचण्ड किरपान की॥
'सोमनाथ' कहै सिंह सूरज कुमार जाकौ,
साथ त्रिपुरारि की सी लाज बखौन की।
चढ़ि कै तुरंग जङ्ग रंग करै सेलन सों,
तोरि डारी तीखी तरवार, तुरकनि की॥

२—टहकन कवि—इनके पिता का नाम रघीलदास था। ये जाति के खत्री और चौपड़ा गोत्र के थे। इनका निवास स्थान जलालपुर था जो तहसील नगर में एक प्रसिद्ध गाँव है। इन्होंने अपना परिचय स्वयं इस प्रकार दिया है—

टहकन कवि जलालपुर बासी।
छत्र धर्म नन्दलाल उपासी॥
पिता रघीलदास जग नामा।
जाति चौपड़ा कुल अभिरामा॥
समय पाय कवि गयो सियाही।
रूप अतु भाषा करी तहाँ ही॥

टहकन का कविता काल विक्रम की १७वीं शताब्दी का आरम्भ सिद्ध होता है। इनका बनाया हुआ जयमनअश्वमेध नामक ग्रन्थ पाया गया है। यह २०×३०/८ साइज का ३५ पृष्ठ का ग्रन्थ है। इसमें ७३ अध्यायों में महाभारत के अश्वमेध पर्व की कथा दोहे चौपाई तथा सोरठों में लिखी है। ग्रन्थ निर्माण काल अषाढ़ बदी १२ बुधवार संवत् १६०६ है जिसे स्वयं कवि ने इस प्रकार लिखा है—

कवित्त

मोर मुकुट सीस सुभ केसरिया तिलक माथे,
बेसर बनी है नाक मोती ढरकन है।
नगत जटित लोल कुंडल कपोलन पै,
दसन रसनि छवि कांति धरत है।
बांसुरी अधर राजै उर वनमाल साजै
छुद्र घटिका बाजै छवि कही ना परत है।
नूपुर विसाल पग 'टहकन' प्रभु नंदलाल,
ऐसो ध्यान धरे बाढ़ि पातक हरन है॥

दोहा

प्रश्न किया रुक्मिनि बहुरि, कहौ कृष्ण समुझाइ।
तीन अवस्था तुम रहे, ब्रजा में बसि जदुराइ॥

चौपाई

तीन अवस्था तुम ब्रज रहे, कौन खेल अंगन मव कहे।
प्रथम किसोर पुगंड कुमारा तुम गोकुल में किया विहारा।
पांच वर्ष की बालक होई कहै किसोर अवस्था मांई।
तिह आगे पौगंड वय दस, वय पाच रसोलो किसोर रस।
तुम तीनहु ब्रज माहि बिताई, इक दिन हमरे मन यह आई।
ब्रज की विधि जानत बलमाना निहि सो पूछ लहु सब नाना॥

छप्पय

यथा बुद्धि अनुसरि किया रवनी हिय हर्षित।
अश्वमेध गभीर ग्रन्थ, कवहुनी अच्छ मति।
सु दुक उत अल बुद्धि, कछुक परिकृति हरि दीनी।
वान चौन सुभ अच्छर सुभग पायी सुभ कीनी।
श्री नन्दलाल की कृपासो, इय कनु को भाषा करी।
कवि 'टहकन' बुध जन सावही जहाँ चूक नरनन परी॥

३—हरि प्रसाद—आप मिश्र वंश के चतुर्वेदी जाति में उत्पन्न हुए थे। इनके पिता का नाम श्री गणेश चतुर्वेदी तथा पितामह का नाम श्री मक्खनलाल चतुर्वेदी था। भरतपुर महाराज के आप दानाध्यक्ष थे। हरिप्रसाद प्रारम्भ से ही

काव्यानन्द में मग्न रहते थे, इसका कारण वातावरण था। इनके पूर्वज काव्य प्रेमी रहे थे। अतः आपने भी इस सम्पत्ति को धरोहर रूप में प्राप्त किया और बचपन से ही काव्य सृजन करते रहे। आपकी महत्वपूर्ण कृति भाषा तिलक उपलब्ध हुई है, किन्तु गणेश वाहनों द्वारा खंडित हो गई है। इस पुस्तक के अन्तर्गत मिश्र परिवार का क्रम बद्ध सुन्दर परिचय मिलता है। हिन्दी के साथ २ इनका संस्कृत का अच्छा ज्ञान था।

आपके कविता काल के विषय में विद्वान् एक मत नहीं है। उसका कारण यह है कि उन्होंने अपनी रचनाओं के अन्तर्गत कहीं भी इसका उल्लेख नहीं किया है। अतः आपका कविता काल अनुमानतः सम्वत् १७६० ठहराया है।

इनकी भाषा के विषय में पाठकों को भाषा तिलक से पूर्ण परिचय मिलता है जिसमें उन्होंने विशुद्ध ब्रज भाषा नवीन छन्द एवं अलंकारों का प्रयोग किया है। इनके काव्य के कुछ उदाहरण द्रष्टव्य हैं —

असंभव भणित

कवित्त

कमल मृणाल तन्तु सिव सस वारि रज छ
कीरति समुद्र गामिनी के तट बैठि किनि।
बकुल मुकुल दाम परिमल तौलि तौलि
मग्नमकलि अग लाइयतु कहि किनि।
चन्द्रव रात सुभ-सीतल समीर गुन
साजि नजि लाज कहि पियौ सुधा पय किनि।
मदन मनोरथ पथिक पिय भेटि भेटि,
बिन गुन गार हिय उपर धरायौ किनि॥

गुंफ नाम शब्दालंकार

दोहा

शब्द निरथक हू जहा रचना ते सुख देय।
गुंफ नाम सो जानिये शब्द विभूषण तेय॥

सवैया

भृंग रगी सुम प अनेक सुरूपानि भूमति भूमनि छाई।
पायन पजनि को मनक, कटि किंकिनि घुंघर त्यों छुननाइ॥
नाच उछाह लिये लगे लालु अनोमनि औ बनिता घिर आई।
थाता थेई थाता थई शब्द करत सर बाजन तार सब मन भाई॥

भारती वृत्ति

कोमल और उद्धत रचन अथ सुकोमल आनि ।
कठिनाई न तिहि सरिस, वृत्ति भारती जान ॥

उदाहरण

भृकुटि निकट छिटकी अलक, रही सुलभगी छाय ।
मकरध्वज धनु सों लगी मनु जीवा दरसाय ॥

८—कृष्णलाल भट्ट—'कलानिधि' 'लाल कला निधि' और 'कृष्ण कला निधि' आदि अनेक उपनामों से कविता करते थे। भरतपुर राज के संस्थापक महाराजा बदनसिंह के पुत्र श्री प्रतापसिंह से आपका घनिष्ठ सम्बन्ध था जैसा कि इनकी रचनाओं से विदित होता है—

'ब्रजराज कुँवर विराजि हैं, सु प्रतापसिंह उजागरे ।
तेहि हेत विरचित कवि कलानिधि चारु ग्रन्थ गुनागरे ॥

कलानिधि का भरतपुर के अतिरिक्त बूँदी, जयपुर तथा मथुरा आदि में भी रहना पाया जाता है। देवकवि के आश्रयदाता राजा भोगीलाल के यहाँ भी इनका अच्छा आदर था। इन्होंने राजा भोगीलाल के लिये 'अलंकार कलानिधि' नामक ग्रन्थ लिखा। इनका अधिक समय प्रतापसिंह के आश्रय में ही व्यतीत हुआ। इनके लिये इन्होंने वाल्मीकि रामायण के बाल-काण्ड, युद्ध-काण्ड और उत्तर काण्ड आदि की भाषा में रचना भी की।

केशव की भाँति बहुमुखी प्रतिभा व पाण्डित्य का आभास इनमें मिलता है। ये संस्कृत के विद्वान थे। इन्होंने उपनिषदों का शंकर भाष्यानुसार गद्यानुवाद किया है जो प्राचीन हिन्दी गद्य का एक नमूना कहा जा सकता है। महाकवि केशव के समान इन्होंने आचार्यत्व में भी ऊँचा कदम उठाया है जैसा कि इनकी रचना 'शृंगार माधुरी' एवं 'अलंकार कलानिधि' से विदित होता है। इन्होंने रामचन्द्रिका की पद्धति पर विविध छन्दों में वाल्मीकि रामायण का भाषानुवाद भी किया है। भाषा भावानुकूल सानुप्रासिक एवं ओजस्वी है। शृंगार में कोई कोई छन्द तो मतिराम के रसराज की टक्कर के हैं। इनका कविता-काल विक्रम संवत् १७९६ से १८१० तक ठहरता है। इनके निम्नलिखित हस्तलिखित ग्रन्थ मिलते हैं—

(१) शृंगार-माधुरी (बूँदी नरेश बुधसिंह के लिए सम्वत् १७६९ में लिखित)
(२) अलंकार-कलानिधि (राजा भोगीलाल के लिए लिखित);
(३) उपनिषत्सार (इनकी यह पुस्तक स्वान्तः सुखाय मालूम होती है)

(४) दुर्गा माहात्म्य (भरतपुरान्तर्गत वैर के राजा प्रतापसिंह के लिये संवत् १७९० वि० में लिखी गई)
(५) रामायण बालकाण्ड, युद्धकाण्ड और उत्तरकाण्ड (यह भी राजा प्रताप सिंह के लिये लिखी गई)

इनके अतिरिक्त संस्कृत में एक 'रामगीता' नामक पुस्तक भी इन्होंने लिखी है जो जयदेव कृत 'गीत गोविंद' की परिपाटी पर है। माधुर्य की दृष्टि से कहीं कहीं यह जयदेव के समकक्ष दिखलाई पड़ते हैं।

इनकी कविता के कुछ उदाहरण प्रस्तुत किये जाते हैं—

शृंगार माधुरी

दोहा

हुकम पाय नृप को सुकवि 'सकल कलानिधि' लाल।
यह शृंगार रस माधुरी, कीन्हीं ग्रंथ रसाल॥
सम्वत् सत्रह सौ वरस उनहत्तर की साल।
सावन सुदि पून्यो सुदिन, रच्यो ग्रंथ तत्काल॥
छत्र महल बूंदी तखत, कोटि 'सूर' सम नूर।
बुद्धिबली पतिसाह के, कीन्हीं ग्रंथ हुजूर॥

सवैया

सब भूपनि के सिर अवतंस महा सिव प्रेम नरिंदवती।
महि मान महिम्मत हिम्मत की हद किम्मति की हद हिंदवती।
सुख सौं सरसी सरसी सरसी सरसीरुह सौरभ वृंदवती।
गुण सौं नगरी नगरी नगरी अधिराज बिराजत बूंदवती॥

अलंकार कलानिधि

सहेतुक विप्रलम्भ [सवैया]

एक समै इन मानिन में विधिनाहि अराधि महा वर पायो।
ता दिन ते अलि नन्दकुमार विलोकन ही इनको मन भायो।
मान भरी अलि भूल परी उन थाप दियौ तन तापन तायो।
राम दई धन दम्पन को अरु दम्पन संग निमेष लगायो॥
कंचन की ग गेंद मनोहर कंचुकी माँझ छिपाइ धरी है।
त अब दीजिये दीजिये कहि या बालि हँस ठिग आइ हरी है।
बाल बिना बनाइ हँसी तज ओठनि दंत उजास भरी है।
मानो नये द्रुम पल्लव ऊपर कुन्दकली खिलिकें बिखरी है॥

उपनिषदसार

दोहा

चरण कमल श्रीराम के अकथ सुखानंद मूल ।
जिहि रज सो पावन ह्वै, पायौ धाम अतूल ॥
भाष्यकार भगवान जे, कहे सूत्र पर ग्रंथ ।
तही ग्रंथ संक्षेप सो, समुझौ सुमनि सुग्रंथ ॥

तत्तिरीय सूत्र

नमो ब्रह्मणे । नमस्ते वायो । त्वमेव प्रत्यक्षं ब्रह्मासि ।
त्वमेव प्रत्यक्षं ब्रह्मावादिषम् । ऋतमवादिषम् ।
सत्यमवादिषम् । तन्मामावीत । तद्वक्तारमावीत् ।
आवीन्माम् आवीद्वक्तारम् ॥१२॥ ॐ शांति शांति शांति ॥

अर्थ

"ब्रह्म जो वायु रूप है ताको नमस्कार होऊ, आगे हूं वायु ताको नमस्कार होऊ, इहां परोक्ष प्रत्यक्ष दोऊ करि वायु ही कहियत हैं। अरु तुही वह इन्द्रिय और प्रत्यक्ष ऐसो ब्रह्म है जाते तातें ताही को प्रत्यक्ष ब्रह्म कहूँगो। उत कहै शास्त्र अनुसार कर्त्तव्य के अनुसार बुद्धि में भली भांति निश्चित जो अर्थ सोऊ तो आधीन है। तातें ताही को कहूँगो। सोई अर्थ वाक काम और सम्पन्न कीजियत सत्य कहिबे सोऊ ता आधीन है सो सम्पन्न कीजियत है।"

दुर्गा माहात्म्य

सवैया

धर्म संजुत कर्म सबै करिहैं अति आदर ह्वा सो सदाई ।
धारत है तिनकों प्रतिपाल जु राखत बुद्धि सदा थिरताई ।
ते पुनि स्वर्ग कूं जात सदा नित पाइ प्रसाद तिहारो ही पाई ।
तातें तुही तिहुं लोकन में इक देव सदा सबको फल दाई ॥

रामायण

दोहा

जस थी कुंवर प्रताप ने, ठयो ग्रंथ को मान ।
रामायण भाषा कियो सुकवि 'कलानिधि' जान ॥
बालकाण्ड अरु युद्ध अरु उत्तरकाण्ड उदार ।
रचे भट्ट 'श्रीकृष्ण' ने, मंजुल प्रेम प्रसार ॥

आस पास ठहराया जाता है। आपके पद्य बड़े सरल सरस और हृदय ग्राही हैं। उदाहरण के लिए कुछ छन्द प्रस्तुत किये जाते हैं —

कवित्त

अरे मेरे मूढ मन ! काहे चिन्त होत,
चतुरभुज चिंतामनि तेरी चिंता हरि है।
बंशीधर अवर विश्वभर कहावत है
मोसे दीन दुखिया को कैसे करि बिसरि है।
असरन सरन ऐसो विरद जो धरावत है,
भीर पर भजन की कैसी भांति करि है।
बारन की बार कछु करी ना अबार सो तो
अबकै अबार यथा हमारी बार करि है॥

गिरि को उठाइ ब्रज गोप को बचाइ लियो
अनल ते उबार काहू बालक सभारी को।
गज की गरज सुनि आहत छुडाइ दियो
राख्यो व्रत नम धरम पडवन की नारी को।
राखे गज घटा तर बालक विहगम के
राख्यो पन भारत में भीषम व्रतधारी को।
त्रिविध तापहारी निज सतन सुखकारी एक,
मोहि तो भरोसो भारी ऐसे गिरधारी को॥

कहा भयो जो पै तुम द्वारिका के राजा भये,
गोकुल के वासी खट्टी छाछ के पिवया हो।
कच्छ मच्छ रूप बाराह नरसिंह भये,
कहूँ हाय बावन आछे स्वांगो भरया हो।
धेनु के चरैया गुंज माल के रखैया कहूँ
बंसी के बजैया अरु बन के रहैया हो।
टेरत हो प्रान गन पूछत न मेरी बात
जानी हम घात भृगु-लात के सहैया हो॥

—:०:—

प्रकरण २

सूदन-काल

महाकवि सूदन—इनका जन्म मथुरा में माथुर चतुर्वेदी कुल में हुआ था। इनके पिता का नाम बसन्त चतुर्वेदी था। इन्होंने 'सुजान-चरित्र' में अपना परिचय इस प्रकार दिया है—

मथुरा नगर सुवास, माथुर कुल उत्पत्ति वर।
पिता बसन्त सुनाम, 'सूदन' जानहु सकल कवि॥

जिस प्रकार महाकवि भूषण ने महाराष्ट्र केसरी शिवाजी के वीर चरित्रों का वर्णन कर समाज में ख्याति प्राप्त की उसी प्रकार इन्होंने भी भरतपुराधीश सूरजमल के वीर चरित्रों का वर्णन कर साहित्य समाज को चकित कर दिया था। यह महाराज के साथ युद्धों में उसी प्रकार रहते थे जिस प्रकार पृथ्वीराज के साथ चन्दबरदाई। सूदन की रचनाओं से यह विदित होता है कि यह केवल कविता के ही नहीं वरन् तलवार के भी धनी थे। युद्ध कुशलता इनकी रचनाओं में टपकी पड़ती है। मिश्र-बन्धुओं ने इनके विषय में लिखा है कि 'इन्होंने आँखों देखे युद्धों का वर्णन किया है'। हमारा मत इस विषय में यह है कि इन्होंने युद्धों में स्वयम् भाग लेकर पूर्ण अनुभव के साथ रचना की है। इनका कविता काल सम्वत् १८०७ से १८१० तक माना जाता है। इनकी उपलब्ध रचना 'सुजान-चरित्र' है जिसका प्रकाशन ना० प्र० स० काशी से हो चुका है।

सुजान-चरित्र के सम्बन्ध में विद्वानों का मत है कि यह रचना अपूर्ण है। सम्भव है कि कवि के स्वर्गवास हो जाने से पूर्ण न हो सकी हो। इस ग्रन्थ में वीर काव्य में रीति काव्य तक की प्रवृत्ति एवं परम्पराओं का दर्शन होता है। इसमें वीर रस प्रधान है। इसमें रस के अनुकूल ही ओजस्विनी एवं कड़कती भाषा का प्रयोग किया है। भाषा सरस ब्रज भाषा है। इस ग्रन्थ की भाषा से ज्ञात होता है कि कवि को देश की बहुत सी भाषाओं का ज्ञान था। दिल्ली की लूट में पंजाबी, महाराष्ट्री पूर्वी, बंगाली तथा गुजराती आदि सभी बोलियों का स्त्री पात्रों में प्रयोग कराया है। ग्रन्थ के प्रारम्भ में कवि ने अपने पूर्ववर्ती एवं समकालीन कवियों की वन्दना कर अपना-वन्दना का परिचय दिया है। यह ग्रन्थ काव्य के साथ २ इतिहास की भी पूर्ति करता है। कवि ने अनेक छन्दों का प्रयोग बड़ी कुशलता से किया है। इनकी शैली में उत्कृष्टता तथा वर्णनों में ओज की मात्रा प्रचुर परिमाण में मिलती है। वर्णित दृश्य का चित्र सा खींच देना इनकी

विशेषता है। इनकी रचनाओं में केवल यमक अनुप्रास आदि अलङ्कारों की छटा ही नहीं दिखलाई पड़ती वरन् अनेकों अलङ्कार स्वाभाविक रूप से आकर पाठकों को रसप्लावित किये बिना नहीं रहते। 'सुजान चरित्र' में वर्णित आठ युद्धों में प्रत्येक युद्ध के पश्चात् हरिगीतिका छंद में उस अध्याय का संक्षिप्त वर्णन करना इनकी निजी शैली है जिसकी परम्परा भरतपुर के सभी कवियों में पाई जाती है। वीर रस के अतिरिक्त इनकी कविता में अन्य रसों के भी बड़े ही सुन्दर भाव पूर्ण छंद पाये जाते हैं, जो अपनी समता नहीं रखते।

सुजान-चरित्र

कवित्त

अदिति असोक भरी सोक भरी दिति और,
दोस भरी पूतना, अदोस भरी ओपिका।
कंस हिये भौ भरी अभौभरी अधवंस,
पंडव के कीरति, अकीरति की लोपिका।
लाज भरी द्रौपदी सुजान भरी ब्रज-भूमि
कुबरी इलाज भरी साज सद सोपिका।
देवकी अनंद भरी ऊग "अजचन्द" धरी,
भाग भरी जसुदा सुहाग भरी गोपिका॥

अनी दोऊ बनी घनी लोह कौह सनी घनी,
धमनु की मनी बान बीनत निषंग में।
हाथी हूटि जात माथी नग न थिरात भौन
भारती में हात नग कीरति-तरंग में।
भानुकी सुनासी कवि सूदन निकासी तेग,
आहत सराहत कराहत न अंग में।
वीर रस रंग में यों आनन्द उमंग में सो
पगु पगु अग्र होत जोधन को जंग में॥

छप्पय

मिली परस्पर डीठि वीर पग्गिय रिस अग्गिय।
जग्गिय जुद्ध विरुद्ध उद्ध पलचर खग खग्गिय।
भग्गिय सद्द शृगाल बात दै भाल उमग्गिय।
लग्गिय प्रेत पिसाच पत्र जुग्गिन ले नग्गिय।
रग्गिय सुरंग रंभादि गन इन्द्र रहस आवाज दिय।
मराठ करकि उद्दार भर दुन्द मिसाद जर भ्रम भ्रमिय॥

कवित्त

बाघ बिष चाये भया घटमुख राम देखि,
आसन मे राम बस बास जाबी अचल।
भूतन के खया आस पास के रमैया,
और बानी के नथया हू क ध्यान हू ते न चलै।
चल बाघ वाहन बसन को गयद खाल,
भाग औ धतूरे की पसार देतु सचल।
घर को हवालु यहै संकर की बाम कहे,
लाज रहै कैसे पूत मादक कूँ मचल॥

कवित्त

श्रोनित-अरघ डारि लुत्थि जुत्थि पावडे द,
दारू-धूम धूप दीप रजक की ज्वालिका।
चरबी को चदन चढाय पल टूकनुके,
प्रच्छन अखड गोला गोलिन की चालिका।
नवद मीबौ साहि सहित दिल्ली को दल,
कामना विचारी मनसूर पन-पालिका।
कोटला के निकट बिकट अरि काटि सूजा,
भलो विधि पूजा कै प्रसन्न कीनी कालिका॥

मालती छन्द

फिरयौ मनसूर कियो बलपूर कन्यो करि कोप परें बहु तोप
कर सन मान बुलाइ सुजान कियो बहु मान बजीरहिं आन
लियौसु अगार-सुजान कुवार कियो, सुपयान, दुहूँ बलवान

आभीर छन्द

पुनि उतरि पार जमुना अपार उन में पठान हुव सावधान

दोहा

एक ओर मलार दलु, दूज सिहसुजान,
उतहि कहेते अग्गधरि, मनसुर आप पठान॥
चहूँ ओर घौसान के, छाए सद्द महद्द।
मनहुँ गगन मिलन कों, आयो सिधु बिहद्द॥
दोउ जाम जोतन लगे खडे सुभट बिनु जग-
राय सुजान के दलमलनु आग भरी उमग॥

८–रंगलाल — इनका जीवन वृत्तान्त कहीं भी उपलब्ध नहीं है, केवल मिश्र बन्धुओं ने इनको अपने 'विनोद' में ८२५ वीं संख्या पर लिखा है और कविता काल १८०७ वि० माना है। यद्यपि आप महाराज सूरजमल के दरबार में रहा करते थे, किन्तु उनके सम्बन्ध में आपकी कोई रचना नहीं मिलती, केवल महाराजा जवाहरसिंह की प्रशंसा का एक छप्पय प्राप्त है जो नीचे उद्धृत किया जाता है। ऐसा अनुमान होता है कि सूरजमल के निधन के पश्चात् ये महाराज जवाहरसिंह के आश्रय में रहे हों।

छप्पय

जटित जवाहर मल्ल, रल्ल चहु दिसि अति हल्लिय ।
गहर नदिय खल भलत, फनपती थर थर मल्लिय ।
तरवर घन गिर परत, होत कुम्भा हल भारिय ।
हय ही सौ धर धसक मसक नर मिलत न नारिय ।
चढ़ि हक निमक अभंग मल, प्रगट जग दल जात तव ।
सुज्जान नंद रंगलाल भनि कुल बदनेस सुभाति इव ।।

९–अखराम — कविवर अखराम-भरतपुर नरेश सूरजमल के दरबारी कवियों में से थे। ये जाति के ब्राह्मण थे और हिन्दी संस्कृत, ज्योतिष शास्त्र, पुराण आदि के प्रकाण्ड पण्डित थे। याज्ञिक बन्धुओं ने माधुरी ५ वें वर्ष की प्रथम संख्या में इनके रचित पांच ग्रन्थ बतलाये हैं —(१) सिंहासन बत्तीसी (२) गंगा माहात्म्य (३) कृष्ण चन्द्रिका (४) वेदान्त-हस्ता मलक (५) स्वरोदय। इनके अतिरिक्त सुजान विलास भी एक और पुस्तक बतलाई जाती है जिसके विषय में यह दोहा प्रचलित है —

प्रथम सुताहि असीस दै उपज्यो हिये हुलास ।
सूरजमल के नाम को रच्यो 'सुजान विलास ।।

इस पुस्तक का विषय महाराजा सूरजमल का यश वर्णन ही ज्ञात होता है। इसी प्रकार का और इसी नाम की एक पुस्तक महाकवि सोमनाथ की भी है, जो सिंहासन बत्तीसी की कहानी पर आधारित है। कविवर अखराम का सुजान विलास उपलब्ध नहीं है।

कविवर अखराम की कविताओं में ओज और अनूठी उक्ति के साथ ही साथ वर्णन की सजीवता का भी अच्छा समावेश है। भाषा सरस एवं सरल है और कविता में भरतपुरी छाप भली भांति झलकती है। इसमें सन्देह नहीं कि ये अपने समय के कवियों में उच्चकोटि के कवि थे। इनका कविता-काल विक्रम संवत् १८१० के आस-पास माना जाता है, जैसा कि इन्होंने सिंहासन बत्तीसी की समाप्ति

ठारह स वारह गनौ, मवत् मर धर मूर ।
मातन व-ि की तीज का ग्रन्थ किया परिपूर ॥
अब इनके काव्य की भाँति भी कर लीजिय —

कवित्त

चन्द सी वदन अरविंद स नयन राज
श्रवन मनोज नामा मरम मुहाई है ।
दाडिम दसन सुधासिंधु स अधर बिम्ब
रसना रसीली कांति छवि की निकाई है ।
गोरे गोर गाल गाल कनुकी कलासी भुजा
श्रीफल उरोज सब-माभा की सफाई है ।
रम्भा जुग जंघ पग-कंज 'अखैराम' कहै,
आनन्द की ढेरी न विधाना न बनाई है ॥

स्वरोदय

कवित्त

ग्रान गुन गाइवे का, ध्यान उर ध्याइवे का
तामस वहाइवे कों निमिन्नि गोंइ लै
भक्ति निधि जारिवे कों आठो सिद्धि मांगिवे को,
मन्न मनोरिय का चित्त म चिताइ न ।
होनहार जानिवे को जोतिष बखानिवे का,
काल क पिछानिवे को नीक कै मचाइ लै ।
स्वर को विचार चाख्यो वेग्न को सार यह,
पहन उर हार 'अखैराम' सुख पाइ लै ॥

'मूल दलोक'

पट् शतानि शिव रात्रा सहस्राण्यर विंशति ।
एत संख्या श्वस्छामा सोह माह प्रकीर्तिन ॥

भाषा

सहस एक विंशत कहै छय सहस पुनि स्वास ।
रजनी दिवस दिन सोह मंत्र प्रकास ॥

वैगान्य—हस्तामलक

कवित्त

जम कहै झोट धाइ टेढ़ फूट काँच मार्ग
भामन सभान सुख पकज निधानिय ।

कुंडल कलगी सिर पेच औ ललाट टीका,
जसो मुख मांड तसो यामें दरसानिय ।
ऐसो जग जानि लीज बुद्धि को विलास तसे,
एक ते अनेक होत ध्यानवान जानिय।
नित्य उपलब्ध है स्वरूप जो जगत मांझ,
सोई हम जानें नहिं दूजो उर आनिय ॥
जसे रवि सोखत मयूपन सों भूमि रंग
सबतें विभिन्न काल लिपत ने जानिय ।
सोखि सखि वपत सहस गुनो पावस मे
कोटि कोटि बुंदन सो समझ सु मानिय ।
जसे उपजत हैं खिपत जग जीव जंतु
एक तें अनेक अविनासी सो बखानियें ।
नित्य उपलब्ध है स्वरूप जो जगत मांझ,
सोई हमें जानें नहिं दूजो उर आनिय ॥

१०—लाल कवि—भरतपुर नरेश बदनसिंह और उनके पुत्र सूरजमल के आश्रित प्रतीत होते हैं। खेद का विषय है कि इनका विशेष वृत्तान्त उपलब्ध नहीं है । इनकी रचनाओं में ही राज्याश्रय का पता लगता है। ये वीर और शृंगार दोनों रसों पर समान अधिकार रखते थे। इनकी प्रतिभा इनके प्रत्येक छन्द से प्रकट होती है। भाषा सरस, सुहावनी एवं प्रवाहयुक्त है। इन्होंने महाराज बदनसिंह की मृत्यु पर जो छंद लिखा है उससे विदित होता है कि महाराज के मृत्यु-सम्वत् १८१२ वि० के आस पास ही इनका रचना काल भी रहा होगा । इनकी कविता ऐतिहासिक तथ्यों से भरी हुई है।

कवित्त

घटती कलपतरु लाल जानी कामधेनु,
पारस परसि लोह कंचन न करतो ।
फट जाती चिन्तामनि फूटि जातो गिरि मेरू,
ध्रुव गिरि धरनि धरा ने मेम धरतो ।
सूख जाते सिंधु मानो बेहनी नें बरु बात
सूर सोगे चन्द तातो तौऊ का बिगरतो।
सज्जन मगन सोच चन्द बदन बाद
हाय हाय बदन महीप प न मरतो ॥

उपयुक्त छंद म कवि की ऊँची प्रतिभा व साथ साथ कवि कम की कुशलता का अच्छा परिचय मिलता है। इन्होंने कविताओं म श्रेष्ठतम उपमाना का यथावत् प्रयोग कर सजीव एव सरल चलती भाषा का अच्छा निदर्शन कराया है। इनकी वीर रस सम्बन्धी रचनाओं की ओजस्विता स्वत ही बनती है। उदाहरणार्थ कतिपय कविताए निम्न लिखित हैं —

कवित्त

दक्खिनै ज्न ज्र आजनो उमड निन्है
खड गहि खड्ग जमु सह्यो दम का।
कहै कवि लाल सुर सकल नमाम भूत
पूत पन चारी हार सूरन सहस कौं।
गगाप्रसाद स्वामी-काज म पाव गाप
जग जितवार सामि सामिन हमेस का।
एक मत सूरमा निवार्यो प्रथीराज डमि
एकीएका रतन निवार्यो नवनम कौं॥

* * *

कौन जटवारे की बचावतो मरम स्वामि
धरम क काज नाज साहि गनी परनी।
दक्खिनी दल भुज बलन कौन ठलतो जु,
आमिष अहारिन का भूख काप हरनी।
मकर क हार को सुमेर कौन हो तो अब
जाप सुरनारिन की आरती उतरती।
गगापरसाद जो न जूझतो समर बरी
कथक हजारे अपछरा कैसे बरनी॥

* * *

फिरन फिरगी बहु ओर बरवान भये,
मुगल पठान गर्व सब समरनो।
गालन क मार तोपखान कै खान भये,
तुरक मवार करो कम धीर धरनो।
जिनन न मगर मलीनिया मिसिर और
आमिषखोना को मनारथ कया मरनो।
मार करि करतो समर सूरमचन्द जो न
बाबु न जीवन को गीमा कौन करनो॥

कधो कैंधे नागने की मनि बैनि ठनि रही
कधो प्रात कील प भ्रमर अभिलाषी है।
कचन के पट्ट पै लिखो क मत्र मोहिनी की
कधो अभिलाषन को ग्रन्थ माप माखो है।
कहै कवि लाल हाल जाहिर जहान बीचै,
कान्ति उपाउ क उक्ति इमि भाषा है।
मर जान रूप क खजाने प मुहर कधौं
प्यारी तेरे नदी स्याम काम रूचि राखी है॥

* * *

जवत महा न नवहा न न नियत क
मानी म मनी म मवही त सुखदाई है।
अति अभिराम काम वान त मरम माहे
मुनि मुनि माहे मन छिन छिन छाई है।
कहै कवि लाल हाल जाहिर जहान बीच
जानियतु प्रोढ़ काऊ पंडित पढ़ाई है।
जाके आग ऊख औ पियूष सब मीठो लगे
ऐसी मीठी भाही मा कहा मा सीख आई है॥

११—हरिवश —इनका विशेष वृत्तान्त ता प्राप्त नहीं है, परन्तु सुजान चरित्र म इनके नाम का उल्लेख है। यह महाकवि महाराजा सूरजमल क सम कालीन हैं। इन्होंने महाराजा सूरजमल व महारानी किशोरी का प्रशसा म अनेको फुटकर छन्द लिखे हैं, तथा 'बरसान की लीला' नामक पुस्तक भी लिखी है। इनका कविता क उदाहरण नीचे प्रस्तुत किय जाते हैं —

कवित्त

गोर वार विकट कराल कर नागी दत,
गौरी काली निरखत छुधा की तरगत।
कहै हरिवश सत सीस नख ईस हीरे
गौर सेवनाम गाथ गौहर उमगत।
सिह श्री सुजान जग जानिम सुकीन पर
फहराई भुजा सो चढ़ाई भाह भगत।
भग भार सुगत, औ भुजग भार कठ ते
हरष हर गौर गौरा भार अरधग त॥

रंगमाला–गीता

श्री 'हरिचरन' विनोद रच्यो नित, गौर-श्याम छवि जागी जो ।
जागी मन्दिर भरतपुर राज, मग नर्तनादिक भागी जी ।
कुंजन कुंजन केलि कुतूहल गावत नव नव बानी जी ।
दूलह नन्दकुमार रसिक वर, दुलहिन राधा रानी जी ॥

१७—शिवराम—ये जिला फिरोजाबाद के अन्तर्गत पीगेली ग्राम के रहने वाले थे। इनके पितामह का नाम पीताम्बर तथा पिता का नाम हृदयराम था। ये जाति के सनाढ्य ब्राह्मण थे। महाराज सूरजमल के दरबार में इनका अच्छा मान था। इन्होंने 'राग रस सार' नामक एक बड़ा ही सुन्दर ग्रंथ रचा है जिसमें अपने आश्रयदाता का वंश वर्णन करने के पश्चात् उनका यशोगान करते हुए राग रागिनियों के परिवारों का उत्कृष्ट वर्णन किया है। ग्रंथ में कवि ने अपने वंश वर्णन में भी कई पहेलियाँ बुझाई हैं। ग्रंथ के अन्त में महाराज सुजानसिंह के यश-गाथा का सुन्दर वर्णन किया है। ग्रंथावलोकन से इनकी विद्वता का पूर्ण परिचय प्राप्त होता है। आपकी शैली में विशेष चमत्कार है। इस ग्रंथ की रचना पर महाराज सुजानसिंह ने इन्हें ३६००० (छत्तीस हजार) रुपया पुरस्कार दिया था जिसका कवि ने एक दोहे में इस प्रकार वर्णन किया है —

जब ग्रंथ पूरन भयो, नृपति करी बकसीस ।
सरस रुपया मान सों दिये सहस छत्तीस ॥

इनकी कविता के उदाहरण नीचे प्रस्तुत किये जाते हैं —

छप्पय

जयति नन्द सुत चरन सरन आनन्द करनवर ।
एक रदन सोभित सुभाल चन्दन सिन्दूर धर ।
विघन हरन दुख दरन धरन गज बदन प्रचंडन ।
जग वंदन बुध सदन हरष गिरि कुल जस मंडन ।
शिवराम सुकवि करुणा करनि कर त्रिसूल गनपति धरहिं ।
श्री नृप सुजान गृह रैन दिन पल पल प्रति रक्षा करहिं ॥

अथ राग परिवार वर्णन (दोहा)

मल्लारी अरु सोरठी सूहो जगत बखानि ।
आसावरी सुहाविनी, सब नारि इमि जानि ॥

मघ राग के अष्ट पुत्र (छप्पय)

नट कारन मारग अवर कन्नार राग भनि ।
गुडराग पुनि गुम्भाल जालधर मुन मनि ।
गवर राग प्रवीन मेघ परिवार म्नो वहि ।
एत रागन की खानि सकल मुन मु विग्रर वहि ।
शिवराम राग माला डनि सुन्दर ग्रह स्पन पर्बाहि ।
मन मोहन सुर नर नारि क ग्बन नानि सुरज डिर्राहि ॥

सवया

श्री बन्नम को वन प्रसिद्ध भयो कलि म बन कीरति गाई ।
पडित क मन मडित ह अरु गवन पीडत ग्रन्थ मुहाइ ।
भूमि क भार उतारन को भुज दड महा प्रगट बलदाई ।
सुरजमल न्पि नम धार वहै शिव सूरज त अधिकाई ॥

क वनवास प्रवास क कचन क मृगछाल क सज समली ।
क शिवराम सुयो करो श्रौनन वेद क मत्र क प्रेम पहली ।
जाग श्री भाग समान म सार है साव कही विव बात सुहेली ।
सनो भली गल भली किधौं कि नवली की बाह गल अलवेली ॥

१ —शिवराम—आपका जन्म तहसील कुम्हेर के अन्तगत भटपुरा ग्राम म हुआ । आपक पिता का नाम नरूर भट्ट था जो कि स्वयं बड विद्वान् थे। अत शिवराम न भी विद्या एव बुद्धि पतृक सम्पत्ति स्वरूप पाई। सुजान-काल क वीर रस क कवियों में आपको विशेष ख्याति हुई। यद्यपि आपने फुटकर कवि ताओ की रचना की है किन्तु उनके काव्य में ओज झलकता है। महाराज सूरजमल के यश वणन करन म आपन कमाल कर दिखाया ह। कहा जाता है कि आपक पूवज महाराज भरतपुर के आश्रित थ। इसक प्रमाण म अब तक आपके वशजो को माफी मिली आरही है। शिवराम के वीर रस पूर्ण काव्य के एक उदाहरण म उनकी प्रतिभा एव कृतृत्व का परिचय मिल जायेगा —

छप्पय

जगी कमठ की पीठ नाव तुम तहा जमाई ।
धरा सम क भार भीत उपर जो उठाई ।
ग्यो दीप परिकोट माह मुलतान ग्वारन ।
रतन गौर दल मकर भुजा ऊची धर धारन ।
बीर हुत भारत निलक जब सुजान रटन नगन ।
सिर छत्र सनातन मानिवो मुख ग्वन सुनन वचन ॥

१४—सोभ कवि—आप भरतपुर नरेश महाराज जवाहरसिंह के बंधु नवलसिंह के आश्रय में रहते थे। आपका कविता-काल सं० १८१२ वि० ठहराया गया है। आपके जन्म एवं वंशजों का कहीं भी उल्लेख नहीं मिलता। अतः दुःख है कि इस ग्रंथ में हम उनका परिचय देने में असमर्थ रहे हैं। आप कोमल भावनाओं के कवि थे। अतः शृंगार की ओर झुकाव होना स्वाभाविक था। आपने "रस चन्द्रोदय" नामक रीति ग्रंथ लिखकर अपनी शृंगारिक प्रवृत्ति का परिचय दिया है। 'रस चन्द्रोदय' के अतिरिक्त आपके अनेक फुटकर छन्द भी मिलते हैं। इन सभी छन्दों के अन्तर्गत नवलसिंह की वीरता, दानशीलता तथा गुण-ग्राहकता आदि गुणों का परिचय दिया है। 'रस चन्द्रोदय' ग्रंथ की रचना कवि ने नवलसिंह के लिये ही की है। ग्रंथ के रचना-काल के विषय में कवि ने स्वयं यह दोहा लिखा है —

वसुविधु वसुविधु वत्सरहि सावन सुदि गुरुवार।
सरद सुसिद्धा श्यामि तिथि भयो ग्रंथ अवतार॥

यहां पर कुछ उदाहरण देकर कवि की शृंगारिक भावना का दिग्दर्शन कराया जावेगा। रसराज शृंगार की उपासना में कवि को कहां तक सफलता मिली है, इसके विषय में कवि के निम्न लिखित उदाहरणों से पाठक स्वयं अनुमान लगा सकते हैं —

प्रगल्भा-लक्षणम् (दोहा)

पति सों केलि कलान में अति प्रवीन तिन चाह।
यहै 'प्रगल्भा नायका' नवलसिंह नर नाह॥

उदाहरण (सवैया)

ए रजनी सजनी ! विनती यह बार घटा लौं रहो मनुहूर।
हार हिये मुक्ताहल चार विचार के सीतलता बन हूर।
आपनो नायक है सब लायक 'सोभ' सहायक भाव न भूर।
भावे न कूल सिया श्रुति मूल सरोज के फूल प्रभात न फूर॥

सवैया

बंक भई भृकुटी अलि भाल, मनोज नृपाल की नीति सों जागी।
मंद हँसी खिलसी मुरि आनँद आनन प्रेम के पूजन पागी।
द्वै लटकी लट माहँ रसाल सी प्रेम प्रभा भरी अनुरागी।
नीर समावन के मिसही, बरबीर की बार जिवावन लागी॥

कवित्त

असित अगर नभ-अम्बर के मेघ मेरा,
महि २ अति बज सज्जन की ओर परे।

गोला घार बरसत अपार धार छोर ओर ।
द्रुम डार चल पवन मन मोर पर ।
सामन सुरभि धाई धाई वृषभान जौंही
दाहिन जसोदा नंद ग्वाल बाल सोर पर ।
अधरन मधुर बजत 'सोभा' वंशी धुन
गिरिधर गिरिधरयो छिगुनि के छोर पर ॥

१५—दत्त—इनका विशेष वृतान्त प्राप्त नहीं है। इन्होंने महाराज सूरजमल की प्रशंसा में 'सूरजमल कौ कृपाण' नामक १४ छन्दों की एक पुस्तक लिखी है। आपकी कविता वीर-रस से ओत प्रोत है और भाषा ओजस्विनी है। उदाहरण नीचे दिये जाते हैं—

कृपाण छन्द

जहँ बज्जत निसान सारे, गज्जत निसान,
सूर सज्जत मदान और तज्जत गुमान ।
जहँ छुट्टत कमान, गोला गोली बरखान
धुआँधार आसमान, छिप्यौ भानु कौ विमान ।
जहँ होत भाज भाज घार दुंदुभी गराज
ताप तरप तग्राज, गज घटा घहरान ।
तहँ हिम्मत निधान, भूमि भारी मघवान
सिंह विक्रम सुजान, वाह बाही किरपान ॥

सवैया

कंचुकि माहि लसे उकसे परे कामिनी ऊँचे उरोज तिहारे ।
'दत्त' कहैं अनु विस्व-बिजै करि काम धरे उलटे के नगारे ।
जोबन जार बढ हिय फोरि कै भौंर कुते ये कठोर निहारे ।
गढ के गुम्मज कै गिरि कैं गज-कुम्भ कै गब गमावन हारे ॥

१६—वेदाच—आपका जीवन वृतान्त कहीं भी उपलब्ध नहीं हुआ है केवल महाकवि सूदन ने सुजान चरित्र में इनका नाम उल्लेख किया है। ये कवि महाराज सूरजमल के ही आश्रित प्रतीत होते हैं। इनकी कविता का उदाहरण नीचे दिया जाता है—

सवैया

आगे ते दल साज चल्यो नृप, भाग बढ्यो पग पीछे धर्यो ना ।
मरु है मर चल्यो निरवान न एक तें दूसरो मन करयो ना ।

'केशव' श्री बुंदेलेश के नंदन ता सम और जग्ग बरयौ ना ।
हाथी टरे घने माथो टर, परधान टरे पै सुजान टर्यो ना ॥

१७–जुलकरन–आप जाति के भट्ट और डीग के निवासी थे। यद्यपि इनके जीवन का विशेष परिचय तो प्राप्त नहीं हो सका है, परन्तु इनका महारा[ज] सूरजमल और उनके पुत्र महाराज जवाहरसिंह के समय तक विद्यमान रह[ना] प्रतीत होता है। इनका कविता-काल सम्वत् १८१५ वि० के आस पास ही ठहर[ता] है। कहते हैं इनके दो पुत्र थे और दोनों ही कविता करते थे। ये वीर रस के प्रधा[न] कवि हैं। इनके पद्यों में महाराज सूरजमल की वीरता का ओजस्विनी-भाषा [में] वर्णन किया गया है। सूरजमल के स्वर्गवास पर आपने जो अनेक सुन्दर प[द्य] लिखे, उनमें से कुछ नीचे दिये जाते हैं —

कवित्त

एक कहै मोहि दिल्ली बदली करनै धाय्यो
दूजो कहै मोहि दक्खि पूर्यो चौक अंगना।
तीजो पटा डार्यो चौथी हरम लगाइ गई
पांचई भरैवट वधायो कर कंगना।
कहै 'जुलकरन' छठो माथे प मोर धार्यो
सातई दुराया चौंर कीनो रन अंगना।
आगे पाकसासन के आसन के ढिग जाय,
दूलह सुजान ताको भयर बंगना॥

रन नाच्यौ रन भूमि भूमि भूमि लड्यौ भूजा,
सत्रु की सगाती लाग पीछे का हटि गयौ।
कहै 'जुलकरन' अनल सो ताता भयौ,
रातो भयौ रूप छवि छोम में पटि गयौ।
टारे ते टर्यौ न ऐसौ बरलौ मसान स्यौ,
तन टूक टूक तरवारन कटि गयौ।
धध रवि मण्डल को छेदि गयो दूर लौं,
सूरजौ धरैन का फोटक फटि गयौ॥

छप्पय

अरे मन मेरे तेरे औसर घनेरे नेरे
लोक ही के बैरे सब नाम ही के अरि है।
मित्र को कलत्र सब चित्र में रमन है
कहै 'जुलकरन' तगो साँचो एक हरि है।

बाहै तू न जानत न मानत मरोर मरयौ,
ठानत है काची और कौन की उबरि है।
ह्वै है मोर मिहन करेगो जब निहत सु,
मुहत के आये कोऊ महन न करि है॥

१८—भूधर — इनका विशेष वृत्तान्त तो ज्ञात नही होसका, केवल इतना पता चलता है कि ये जाति के ब्राह्मण थे और भरतपुर के महाराज जवाहरसिंह (स० १८२०-२५ वि०) के आश्रित थे याज्ञिक बन्धुओ ने लिखा है कि 'सम्भवत यह भूधर वही है जिन्होने भगवतराय खीची के लिए छन्द रचना की है किन्तु इसका कोई प्रमाण नही मिलता। इनकी रचित दो कृतियां 'ध्यान बत्तीसी, तथा दान लीला मिलती हैं, जिनकी भाषा इन्हें भरतपुर का होना सूचित करती है। कुछ उद्धरण नीचे दिये जाते है —

सवया

मोर किरीट लसै सिर चारु ललाट दिपै छवि चंद कला की।
बाँके कटाक्ष विसाल महादृग कुण्डल लोल कपोल थला की।
दतन की दुति कठ सिरी मुक्ता कर ककन छाप छला की।
नूपुर की कटि किंकिनि की उरते न टरै छवि नन्द लला की॥

(ध्यान बत्तीसी)

पूरन परम दयालु निरजन घट घट वासी।
वसुदेव गृह औतार लियौ अबली अबिनासी।
ब्रज चौरासी कोस लौ लीला करन रसाल।
असुर हनन के कारन भये नद के लाल।
सुनौ ब्रज नागरी॥
बरसाने की ग्वालि सब-दधि बेचन आव।
उज्ज्वल मिश्री गध मोल मन मानो पाव।
सखी विचित्र, सहचरी लियौ राधिका सग।
आपस मे बतरात सब चली आपने रग।
सुनौ ब्रज नागरी॥
मिलि कृष्ण अरु राधिका दान रस अमृत लीनो।
निरख लडती लाल प्रभू तै सरवस दीनो।
यह सुख स्यामा स्याम को कवि बरन्यो जाय।
निसिदिन 'भूधर' दरस के हिरदै रह्यो समाय।
लख ब्रज नागरी॥

(दान लीला)

१६—वीरभद्र :—इन कविवर के सम्बंध में इतना ही ज्ञात हो सका है कि ये जाति के ब्राह्मण थे तथा भरतपुर राज्याश्रित कवि थे। कविता काल महाराज सूरजमल के राज्य काल सम्वत् १८२८ वि० तक ठहरता है। इन्होंने भगवान श्री कृष्ण की लीलाएं (व्रज विलास) काव्य ग्रंथ में दोहे, चौपाइयों में लिखी हैं। इनकी भाषा अत्यन्त सरल, मधुर, ललित एवं प्रवाह युक्त शुद्ध व्रजभाषा है। एक अवतरण प्रस्तुत है —

दोहा

गुरु चरनन चित लाय कै करौं कृष्ण कौ ध्यान।
सुमिरा राधारमण की हरि लीला रस खान॥

चौपाई

तब हरि मन में मतौ उपायो। वाव पनि को स्वाँग बनायो॥

दोहा

इतवित सरकन देत नहिं, सासु जिठानी, नन्द।
तउ नैनन की सैन में चोर्यो गोकुल चन्द॥

चौपाई

यही सरूप भेद कछु नाहीं। साझ समै आयौ गृह माँही॥
बुन्यिा विकल गोपकी भयो। ठगी वचन द कुंवर कन्हैया॥
सुनरी मीता मरी वाता। व्रज म नंद पूत विख्याता॥
मैं तो सुनि है, बाकी वातें। मेरी सर्प धर्यौ विख्यात॥
छल चितवनियाँ ढीठ गुमानी। लपट लोभी गोरस दानी॥
जाकी बात भली सुन पाव। ताको छलबल कैसे अपनावे॥
कबहूँ भावै वार कुवार। दौर्यौ छूट्यौ मरे द्वार॥
धरि है कछुक अटपटी चोरी। अब आवत कहियत है हारी॥
तू मत धसन दइरी ताही। वाकी बात न जियत पत्याई॥
टाव विचार दीजियो गाढ़ी। अपनी साट लीजियो आढ़ी॥
मावधान है रहियो भारी। मैं तो सोवन जाय अटारी॥
साँझ पाई घर धनी पधार्यो। गाढ़ी देखि किवार पुकार्यो॥
भीतर ते यह उठी महनारी। वह तौ चकित है रह्यौ मारी॥
कहा भयो री जननी तोहे। क्यो पहिचानत नाही मोहे॥
साझ कहीं तुम जोउ नन्द के। तो गुन जानत छंद बंद के॥
इतनो मान तू कौन कराव। धर्म्यौ विरान घर म आव॥
कहा भई री माता बौरी। लाग्यो भूत कै परी ठगौरी॥
बौरो हाय जसोमति तेरो। लागे भूत रहै घर घेरो॥

२०–सुधाकर—इनका जीवन-वृत तो प्राप्त नहीं हो सका है, परन्तु महाराज सूरजमल सम्बन्धी कविताएँ इन्हें उस काल का कवि होना सिद्ध करती हैं। इनका कविता काल १८०० विक्रम सम्वत् के ग्रास पास माना जाता है। इन्होंने जो फुटकर छन्द महाराज सूरजमल की प्रशंसा में लिखे हैं उनमें से कुछ उद्धृत किये जाते हैं।

कवित्त

तेरो तो ताप मारतंड सौ प्रचंड तप,
बरिन के तन जर बकला भये जात हैं।
अरिन की दाहिनी तोरई सी सूखि जान
धारे अपजस जामों कार भये गात हैं।
सुकवि "सुधाकर" न बरन्यो ब्रजेन्द्र तेज,
सजन ते भाजि बरी बधू अकुलात हैं।
जैई तव तात-नान उदक सो होत हुती
तेई अश्रु पानन की धार सो अन्हात हैं॥

गालिम को जलाय दूनी में दानी दरसत,
दौलत को मेह नेह बरसन जुवानी है।
उदित उदार परिवाह में अपार तेरे
उज्वल अमल तेरी कीरति बखानी है।
कोकिला सी बानी जानी चन्द्र सौ मुखारबिंद,
सामा रूप देख रति अति ही लजानी है।
तो सी तुही मानी और उपमा न जानी पर,
सुधाकर बखानी सो ब्रजेन्द्र महारानी है॥

२१–रामकवि—यद्यपि इनका विशेष परिचय तो प्राप्त नहीं हो सका है किन्तु इनकी कविताओं से यह भली भांति सिद्ध होता है कि आप प्रसिद्ध कवि सूदन के समकालीन थे और भरतपुर दरबार के आश्रित थे। इनका कविता काल सम्वत् १८८० के ग्रास पास ठहराया जाता है। आपकी कविता के कुछ उदाहरण निम्न लिखित हैं—

बदनसिंह परसिद्ध जो ब्रजमंडल को भूप।
ताके सूरज मल सुत, सूरज ही को रूप॥

कवित्त

दौर मल्ल सूरज के मदावर दूटर सौ,
मारवाड़ पहर राठौर मदमत्ता को।

उडि जात मोरछो, सटकि जात सरीला को,
सकल जमान जस माखी मधुछता को।
भगना श्री परना के हरना से भाजि जात
कपत बसति कुल्लि चपत के छता को।
दिल्ली के मरद मव बिल्ली से दुबकि जात,
चौंकि चौंकि पर चमू चक्कव चकता की ॥

२२—रंगलाल—आप भरतपुर के निवासी तथा भरतपुर नरेश जवाहर सिंह के आश्रित कवि थे। आपका कविता काल १८२० से १८२५ तक निश्चित किया गया है। आपने महाराज जवाहरसिंह के यश का वर्णन सुन्दर ढंग से किया है। उनकी "साखा" नामक पुस्तक महाराज जवाहरसिंह के यश एवं वंशावलि प्रशस्ति की है। इस पुस्तक में आपने पद्य के साथ २ गद्य का भी प्रयोग किया है। भाषा सरस एवं सरल है। उदाहरण देखिए—

दोहा

सरहद नापी समद लों सूरसेन के नाम।
छपन कोटि जादो भये मथुरा मडल गाम ॥
हाथी घोड़ा हैं घन बहुत खजाने दाम।
कर्मा म दे सोहरी दीनी बहुत इनाम ॥
लीनी चौथ मल्हार सू थानेडा सू गार।
ताही बडय पठान की, रुहिला दिये पछार ॥

२३—मुरलीधर—ये भरतपुर निवासी तथा महाराज सूरजमल के पुत्र नवलसिंह के आश्रित कवि थे। इनका कविता-काल सं० १८२०–२५ वि० माना जाता है। इन्होंने श्रीमद्भागवत के पंचम स्कन्ध का हिन्दी पद्यानुवाद किया है। अपने समकालीन कवियों की भांति ग्रन्थ में अध्याय की समाप्ति पर अध्याय में वर्णित विषय का संक्षिप्त विवरण हरिगीतिका छन्द में दिया है। उनकी शैली सूदन से मिलती जुलती सी है। कविता के उदाहरण निम्नलिखित हैं—

हरगीतिका

नृप चक्रवर्ति सुजान को सुत नवलसिंह सुजान है।
सनमान दान कृपान पूरो वीर बुध बलवान है।
तिन हेत'मुरलीधर'लिख्यो श्री भागवत मतिहि लियो।
पंचम-स्कन्ध अध्याय षोड्स प्रकट यह पूरण भयो ॥

मुनि प्रगट सकल संसार रीति।
दुख सुख की नहि तासां सुभीत॥
त प्रवल विष्णु माया विचारि।
भुव कठिन पथ म न्यि डारि॥

२४—भोलानाथ—यह भरतपुर के निवासी तथा जाति के ब्राह्मण थे और महाराज जवाहरसिंह के पुत्र नाहरसिंह के आश्रय में रहते थे। इनका कविता-काल सं० १८२०-२५ वि० माना जाता है। इनके दो ग्रन्थ बतलाये जाते हैं, उनमें से प्रथम, लीला-पच्चीसी, तथा द्वितीय 'सुमन प्रकाश' हैं। सुमन प्रकाश अभी तक प्राप्त नहीं है। लीला पच्चीसी, में प्राचीन परिपाटी के अनुसार, राधाकृष्ण की रासलीलाओं का सरस एवम् भाव पूर्ण वर्णन है। इनकी कविताओं के कतिपय उदाहरण नीचे दिये जाते हैं —

सरस बजावत बेनु, सुनावत राग अपार।
कौन बहुत सुधि कर, बस हिय नंद दुलारे॥
जतन-जुक्ति अनेक मिलें बिन- दरसन के हूँ।
तासों चिन्ता करत हियो, समुभत नहि जहूँ॥

वेद रिचा जे कही, कही रिषि अमर कही जे।
ते गोपी बड भाग सांवरे नेह पगीते॥
मुकुट बांधि लै लकुट, ग्वाल-गोधन संग डोलनि।
बन, बजाय रिझाय गाय सुर, मधुरे बोलनि॥

२५—मोतीराम—आपने सारस्वत ब्राह्मण-कुल में जन्म ग्रहण किया था। आप भरतपुर के महाराज जवाहरसिंह के आश्रित कवि थे और फुटकर छन्दों में रचना किया करते थे। आपके जन्म स्थान के विषय में, अभी तक पता नहीं चल सका है किन्तु इतना अवश्य है कि आप जीविका उपार्जन के हेतु भरतपुर पधारे और महाराज जवाहरसिंह ने १) एक रुपया, दैनिक वेतन पर आपको अपने आश्रय में रखा। इसके प्रमाण में स्वयं 'मोतीराम' ने एक कवित्त लिखा है।

इनका कविता-काल सं० १८२० से १८२५ वि० तक माना जाता है। आपने फुटकर छन्दों में भिन्न २ विषयों का लेकर रचना की, किन्तु जवाहरसिंह के दान का ही अधिक गाया है। भरतपुर आने के लिये शिवजी ने उनको जो स्वप्न दिया, उसी का उदाहरण स्वरूप नीचे दिया जाता है—

कवित्त

मासों आज सपन मे निव महाराज एसें,
वह गये साई हम वरनो प्रमान है।
मगी जप व्रत नय, पूजन अनक विधि,
योहा है सव उर जाके मगा ध्यान है।
मानीराम' ब्रह्म कुल-पालक कलपतरु,
सव बात लायक सा दया का निधान है।
तर जा मलारय हैं पूरन करगो तिह
मेरा भक्त नाहर जवाहर जवान है॥

एक वियोगिनी का मर्मस्पर्शी चित्रण —

कवित्त

पीव पीव करत फिरें जो माहि मान पीव
सौन चाव चातक मढ़ाकें कर आदरन।
कुटिल कलापिन के कठन कटाग्र डारौं,
देन दुख दादुर विराय डारौं गादरन।
मानीराम' भिल्लीगन मंदिर मुदाई डारौं
रधिक जुनाइ मार्थों वग के विरादरन।
विरह की ज्वालन सा जलद जराइ डारौं,
स्वासन उड़ाऊ वरी बेदरद बादरन॥

२६—व्रजचन्द—आपका विशेष परिचय उपलब्ध नहीं है। इनका कविता-काल वि० १८२०-२५ के अन्तर्गत ठहरता है। इन्होंने महाराज सूरजमल की प्रशंसा के अनेक फुटकर छन्द लिखे हैं। इनमें से उदाहरण स्वरूप एक पद्य दिया जाता है —

कवित्त

शंकर के आगे जैसे त्रिपुर के जुथ भजे
भामकर आगे जैसे तिमिर भगात है।
वारि आगे अगिनि बयार आगे बादर ज्यों
धार आगें कायर ज्यों धीर ना धरात है।
केहरि के आगे जैसे कुंजर समूह भजे,
गुम्मरि के आगे पाप देखत बिलात है।
यमें ही सुजान नन्द 'कवि ब्रजचन्द' कहे,
सिहनके आगें अरि भगि जात हैं॥

२७—शोभनाथ—इन कविवर का विशेष वृत्तान्त उपलब्ध नहीं हुआ है परन्तु इनकी रचना से इतना पता अवश्य लगता है कि ये महाराज सूरजमल के समय से लेकर महाराज जवाहरसिंह तक रहे हैं। इन्होंने 'माधव जयति' नाम का एक ग्रन्थ लिखा है, जिसका रचना काल सं० १८२८ वि० है। कविता के उदाहरण निम्न प्रकार हैं।

दोहा

माधव जयति सुनाम यह ग्रन्थ करन आनंद।
'शोभनाथ' कवि लख कियो चतुरन हेतु सुछंद॥

छप्पय

सूरजमल सा जग करत, कबहु नहिं कम्पौं।
कर उत्थान पठान रुहेलन, मद को चम्पो॥
लार मलार लगाय, राख लीनो कर चाकर।
और कितेक अमीर दिलीपुर के गुणआकर॥
अति बली जवाहर जगत मे जाहिर जिहि गुन गन सही।
वीराधिवीर विक्रम अमित ब्रज-महीप राजत मही॥

२८—महाकवि देव—आप इटावा के अन्तर्गत ब्राह्मण जाति मे उत्पन्न हुए थे। आपका जन्म 'भावविलास' के रचना काल के आधार पर सं० १७३० वि० माना जाता है। मिश्रबन्धुओं ने अपने विनोद मे इनका स्वर्गवास सं० १८०२ विक्रम को सन्देह के साथ प्रकट किया है। निश्चयात्मक रूप से यह किसी ने नहीं लिखा कि महाकवि 'देव' का देहावसान ठीक किस सम्वत् में हुआ। भरतपुर राज्य के पुस्तकालय में इनकी कुछ 'फुटकर' कविताओं का संग्रह सुरक्षित है। इससे यह प्रतीत होता है कि ये भ्रमण करते हुए वृद्धावस्था मे भरतपुर राज्य मे आये। यहाँ पर आप भरतपुर-नरेश जवाहरसिंह से मिले और उनको दो कवित्त सुनाये जिनको सुनकर जवाहरसिंह बहुत प्रसन्न हुए और आपको ५०००) पाँच सहस्र रुपय पारितोषिक स्वरूप प्रदान किये। इस घटना से देव ८५ वर्ष की अवस्था में १८२५ वि० में भरतपुर आये।

महाकवि 'देव' के काव्य के विषय में जितना लिखा जाय उतना ही थोड़ा है। इतना निवेदन पर्याप्त है कि आप रीति-काल के प्रमुख कवि हैं। चूंकि भरतपुर-नरेश जवाहरसिंह (१८२०-२५) का आपने यशोगान किया एवं कुछ समय के लिये आपने भरतपुर निवास किया, इसी नाते उदाहरण स्वरूप उनके द्वारा भरतपुर के विषय में लिखे हुए कवित्तों में से एक कवित्त दे देना पर्याप्त होगा।

दक्खिन के दक्खिनी पछाहूँ के पछाही भूप,
उत्तर उन मैनाहू पूरब को रन की।
सुभट समाजन की गाजन गरज भूमि,
तरजत छाती 'देव' दानवन दल की।
यदुवंशी नृपति सुजान के सपूत वीर
कहाँलौ बखान करें तेरे भुजबल की।
मोहि भई जाहर जवाहर निहार हाय
माय लगी सायत विलायत कलकत्ती॥

२९—गोधाराम—आशुकवि 'गोधाराम' का कविता-काल १८३० से १८६० वि० सम्वत् तक माना जाता है। इन्होंने महाराज जवाहरसिंह की प्रशंसा में अनेक छन्द लिखे। चन्द बरदाई की भाँति इनका भी महाराज रणजीतसिंह के साथ युद्ध में साथ २ रहना पाया जाता है। महाराज इन्हें मात्रा हीन (गधा) कहा करते थे। जब लार्ड लेक ने भरतपुर पर घेरा डाला और दोनों ओर की सेनाएं अपनी शक्ति का प्रदर्शन करने में लगी हुई थीं, तब महाराज ने इनसे कहा, "अरे मात्रा हीन इस समय कुछ कह सकते हो?" गोधा ने कहा—"महाराज की जमी आज्ञा हो।" महाराज ने तत्काल एक समस्या 'बचिहौ गुपाल फौज मारगो फिरंगी की" दी, जिसकी गोधा ने उसी समय निम्न पूर्ति कर सुनाई—

भारत में भीषम पिता को पत राख्यो नाथ,
द्वारिका में टेरा सुनी पाण्डव-बधू गी की।
मघवा मही ही जब दक्यो दुराय गिरि,
गोवर्धन धारि रक्षा करी ब्रज-लोगों की।
तुरत ही सुदामा को दारिद विनास्यो नाथ,
हरनाकुस मारयो सो गाथा है भिमगी की।
अबकी हमारी बेर बान मूँद बैठे कहाँ,
बेगिहौ गुपाल फौज मारौग फिरंगी की॥
प्राची में लगी ही आ बजीर काची रुसि गयो
पट्टन में टीपू अर आक आर बरतो के।
दक्खिन दहन पठान के महल भागो,
डके गिरपाल नृप कप मन घरतो के।
गाई पाग माय मत दिल्ली-पति दम पर
सूबा उमराव सब त्यागीर भरतो के।

तेही तेग धारन सो गोला बौछारन सो,
बरती बुझाई रे सुजान चक्रवर्ती के ॥

३०—मोहनलाल—आप कुम्हेर निवासी प० केशवदेव के सुपुत्र थे, और जाति के सनाढ्य ब्राह्मण थे। इनके रचित चार ग्रन्थ पाये गये हैं, उनमें जो रचना-काल मिलता है उससे यह अनुमान होता है कि आपका जन्म सम्वत् १८०० विक्रमी के आस पास हुआ था और मृत्यु १८५० के पश्चात्। आपके रचित ग्रन्थ (१) रग मजरी (२) फूल मजरी (३) पत्तल (४) पिंगल सार हैं, जिनमें से कतिपय उदाहरण नीचे दिये जाते हैं—

रग मजरी (दोहा)

मुकट जटित हाटक मनो, दधि सुत गुह उर माल ।
सज जुमरदी तन बसन, आवत मोहन लाल ॥
ठारैस तेतीस अरु, गढ कुम्हेर शुभ ग्राम ।
केशव सुत मोहन रची, रग मजरी नाम ॥
सींग क्रीट सारंग धर मृग मद केसर भाल ।
खेलत ख्याल बसत को, मनमोहन ब्रज बाल ॥
झूलत रंग हिंडोलना मानो चढेयो अनग ।
सारी मोहै सोसनी बनी बाल शुभ रग ॥
ओढ कुसूमल चूदरी, खेलन चालो तीज ।
सग सखी नव-यौवना, शिर शोभित ऋतु भीज ॥
कृष्ण वासनी धर सुखद, पावत स ल नाम ।
केलि रची सबही सहित, वृदावन निज धाम ॥

फूल मजरी रचना काल (दोहा)

पट्‌ वेद वसु इन्दु ये, सवत् कुम्हेर सुगाम ।
केशव सुत मोहन रची फूल मजरी नाम ॥

अवतरण

कमल नयन या हर लला, सुदर साँवल गात ।
बनते आवत सुरभि सग, मन्द मन्द मुसकात ॥
पीत पगा भीनो भगा वर कुसुमन की माल ।
नगन जटित कर मुरलिका बाजत शब्द रसाल ॥
बसे कदम तरें अली पहिरें बसन दुकूल ।
पिय परेम बनाव यह जनु गुडहर को फूल ॥

गुलचीनों की भांति कौ भली भांति रंग राय।
लहंगा चारु-सुहावनो रह्यो भली छवि छाय॥
मैंने कहुँ देखी लला गुलमगस की माल।
लखि हांसी आवत हमन, कियो कहा जंजाल॥

३१—चतुराराय—यह जाति के ब्रह्म भट्ट थे और महाराज भरतपुर के आश्रय में रहते थे। इनका कविता-काल सं० १८३३ के आस पास ठहरता है। इनकी रचना में अलासहानखाँ के साथ पथन में होने वाले युद्ध का वर्णन है जो 'पथना रासो' के नाम से प्रसिद्ध है। यह युद्ध वि० सम्वत् १८३३ में हुआ था। कवि ने व्रज भाषा पूर्ण भाषा में इस युद्ध का वर्णन किया है और साथ ही भरतपुर राज्य के महाराजाओं की वंशावली का बखान करते हुए ऐतिहासिकता का परिचय भी दिया है। पथना रासो से कुछ उद्धरण नीचे प्रस्तुत किये जाते हैं—

सुमरन सारद मात को, गनपति कौं सिर नाय।
छन्द पथन को कियो, चतुराराय बनाय॥

छप्पय

मानचंद के भयो कुँवर व्रजराज महीपति।
ताके सुत द्वै भये मुख्य जाग्यो प्रताप अति॥
भावसिंह अतिराम और चूरामन ठाकर।
बुद्धसिंह गजसिंह कुशलसिंह भयो दिवाकर॥
जाहिर जहान हिन्दुवान में, कह 'चतुरा' आनंद छयो।
यह वंस अंस वसुदेव सुत, भावसिंह भूपति भयो॥
भावसिंह के द्वै भए, रूपसिंह बदनेस।
व्रज मण्डल मंडन मही सुरपुर मध्य सुरेस॥
सारदूल अतिराम के भयो परज्जा तुल्ल।
ढिग राख्यो बदनेस ने, प्रानन की समतुल्ल॥
दियो भूप 'बदनेस' ने, ताहि पथना गाम।
ताके सुत चौदह भये चौदह बुद्धि निधान॥
जाहर जम्बूदीप में, दान और किरपान॥
मनी सहानखान ने, दीना वक्र तुरंग।
सूरवीर तिसप चढ़े, घर घर जीन उमंग॥
ठारह से तंतीस में, माह मास सुदि ग्यास।
मली सहानखान ने, तज्यो आगरो वास॥

३२–उदैराम –यह कवि जाति के गौतम ब्राह्मण और ग्राम टोंटपुर तहसील भरतपुर के रहने वाले थे। याज्ञिक बधुओं ने 'माधुरी वर्ष ५ संख्या १' में भरतपुर राज्य के हिंदी कवियों पर एक खोज-पूर्ण लेख लिखा है उसमें इनको महाराज रणजीतसिंह के समय में राज्याश्रित कवि लिखा है और इनका कविता काल सं० १८३४ से १८६२ माना है। इन्होंने राधाकृष्ण की लीला विषयक अनेक छोटे ग्रंथ रचे हैं। उनमें से इनका सुजान सम्वत् नामक ग्रंथ प्राप्त हुआ है किन्तु वह अपूर्ण है। यह ग्रंथ राजस्थान प्राच्य प्रतिष्ठान जोधपुर में प्रकाशित हो चुका है। इसमें महाराज सूरजमल के चरित्र का वर्णन है। खोज से एक पुस्तक गिरवर विलास और प्राप्त हुई है। इनकी रचनाओं में अनुप्रास उपमादि अलंकारों का बड़ा ही सुंदर समावेश है। इनकी भाषा श्रुति मधुर चमत्कारिक एवं प्रभावोत्पादनीय है। वर्णनों में सजीवता है। सुजान विलास, गिरवर विलास के अतिरिक्त उदैराम द्वारा रचित श्री कृष्ण की ७ लीलाओं व 'पक्ष पच्चीसी' बारह मासी व फुटकर कवित्त और पाये जाते हैं। कविताओं के कतिपय उदाहरण निम्न लिखित हैं —

दोहा

दसम सुनी देवी वक्तुक, हम तुम एकहि संग।
साई अब वरणन करौं, श्रवण सुखद परसंग॥
ब्रजमण्डल जदुवंस में, अंस कला अवतार।
उदित भया भूपति मुवन, सूरज हरन अध्यार॥
(गिरवर-विलास से)

मर उर आयकें, विहाय विधि-मन्दिर का,
सुंदर सरोवर मति मंजुल में न्हाइये।
करकें सिंगार हार, अंग साज, अलंकार,
तन सुकमारि सारे गंध सो लगाइये॥
भारती भवानी जगरानी, वाक् बानी बठ,
नवियन के कंठनि हंसासन विहाइये।
लै के करवीन परवीन मन मोद मान,
आइये सयानी सो सुजान गुन गाइये॥
(सुजान सागर से)

एक दिना ब्रज नारि निरख जमुना में न्हाती।
ताव लगाय गुपाल करी निनसों छल घाती॥
चीर चुराये आय तव सबकी नजर छिपाय।
काहू न जाना नहीं चले कदम पर जाय॥
(कृष्ण लीला से)

जमुना के तीर तीर वृन्दावन की ओर जहाँ,
बन्दर चकोर मोर कीर लै पढ़ावै है।
छूट रही अलकें अलबली अकेली बन
बाँसुरी में दै दै हेला गाय जो बुलावै है।
इतने में एक आय चोरी कै औचक ही,
छरे अहीर के तू ऐसो इतरावै है।
आज तो अकेलो पायो, करन मन भायो कहीं
लूट लूट खायो, बल कौनको दिखावै है॥
जानत ही हम मारग वही जसमात में मारग सबै ही बिसारी।
एक को बीर भरोसो कहा कहि और में और कछु कर डारी॥
गाय बजाय रिझाय हमें ठग अब गयो सब दै मुररवारी।
हाय कहूँ अब असी-मनी, पर हाथ बिकाय गयारी विहारी॥

३३—राजेश—इनका विशेष वृत्तान्त तो प्राप्त नहीं है परन्तु भरतपुर आश्रित कवि अवश्य प्रतीत होते हैं। इन्होंने महाराज रणजीतसिंह की प्रशंसा में कुछ छन्द लिखे हैं, जिससे इनका कविता-काल सं० १८३४ के आस पास ठहरता है। कविता का उदाहरण नीचे दिया जाता है—

परम रजेश तू द्विजवंश-वंश-अंश हंस,
कीरति तिहारी, क्षीर सिंधु लौं भरी रहै।
अतुल अगाध बोध विमल विधाता जैसो,
सर्वगुण ज्ञाता ज्ञान आनंद-भरी रहै।
चण्ड मार्तण्ड सो प्रचण्ड तेज लोचन में,
ताही की ज्वाल अरि-उर में भरी रहै।
व्रज बलवार रणजीतसिंह तेरो धाक,
भूपन के भौन भौन आजर परी रहै॥

३४—वंशीधर—आप महाराज रणजीतसिंह के राज्यकाल में काव्य रचना करते थे। ये भरतपुर निवासी और जाति के ब्राह्मण थे। आप द्वारा रचित कोई ग्रंथ उपलब्ध नहीं है केवल फुटकर कवित्त ही मिलते हैं। इनकी काव्य रचना को देखकर यह प्रतीत होता है कि आप एक कुशल काव्य मर्मज्ञ थे। आपकी भाषा भावानुकूल है। भाव पक्ष एवं कला पक्ष दोनों में अच्छा समन्वय है। आप अनुप्रास एवं यमक लिखने में सिद्ध हस्त प्रतीत होते हैं। भक्ति परक एवं शृंगार रस पूर्ण कविताएं लिखने में आप अत्यन्त कुशल हैं। इनके फुटकर छन्दों में से कुछ छन्द उदाहरण स्वरूप प्रस्तुत किये जाते हैं—

पापी तीन तापी जापी नापी औ उपापी सम,
सोहत सुधापी जोव आपी थल थया को।
वारुवन वारिकन वारतन वारव हैं,
वारि अघ ओघन उवार बर दया को।
नातो कीनों हातो नातो पूर्यो सुरपुर ही को
पातो कीनों बशीधर मुक्त भरया को।
कामना को गया काम-तरु की कनया अहै
तरनि-तनया ते उजासो सेम-भया को।

दूसासन दुमन दुकूल गहयौ दीन बधु
दीन ह्व क द्रुपद-दुलारी यौं पुकारी है।
छाडे पुर पारथ को ठाडे पिय पारथ से
भीम महा भीम ग्रीव नीचे कर डारी है।
अवर ज्यो अवर अमर कर्यो बशीधर'
भीषम करण द्रोण सोभा यौं निहारी' है।
सारी मध्य नारी है कि नारी मध्य सारी है
कि नारी ही की सारी है कि सारी ही कौ नारी है॥

सदल गुलाव रग रैनी अग चद्र उद
महा वहा महा रूप पातिको निकाई है।
वेसर विलास लोल लोचन मधुर हास
हिय 'म हुलास की गुराई मुख छाई है।
त्यौरी की तरगं भ्रुव भग म अनग कोटि
कौतुक करत 'मुसिकान' अलताई है।
धाहन चुचात 'ललचात 'लपटात' मन,
बसीधर माधुरी 'अनूप छवि पाई है॥

३५—गुलाम मुहम्मद —यह पीरमुहम्मदखा के पुत्र थे और रणजीत काल मे हुए थे। इन्होंने भरतपुर नगर का, यहा के राज्य का तथा दुग आदि का विस्तृत बरणन किया है। जिस प्रकार हिन्दी के अन्य मुसलमान कवियो ने प्रेम सम्बधी कथाएँ लिखी है उसी प्रकार आपने भी 'प्रेम रसान' नाम की एक प्रेम-गाथा सवया कवित्त, दोहा तथा कु डलिया आदि विविध छन्दो मे लिखी है। रूपक उपमा आदि के प्रयोग म आप बडे कुशल थे। आपकी पुस्तक बहुत ही मनोहारिणी है जिसम कही २ उर्दू तथा फारसी के शब्दो का भी प्रयोग हुआ है। एक दो स्थान पर गजलें भी दी गई हैं। उदाहरणाय कुछ छन्द प्रस्तुत किये जाते हैं —

सवैया

हे वृषपाल कृपाल घनो सुधि लेहु सहाय करो किन मेरो ।
लुंज भयो दुख संकट में अति व्यापत मो तन व्याधि घनेरो ।
ता बिन कौन पुकार सुनें मग में ठग हरत गति अँधेरो ।
श्रीगनि पास निराम भयो अब केवल आस रही हरि तेरो ॥
तेरा ही भरोसा है तू कृष्ण मुरारी है ।
मैं दीन बिचारा हूँ तू कुंज-बिहारी है ॥
मैं दास कहाँ जाऊँ को बाँह गहे मेरी ।
सुधि लेहु बिसंभरजी अब आस तिहारी है ॥
चाणूर सहारयो तैं गहि केस हन्यो कसाई ।
अब ढील यहाँ एतो, किहि भाँति बिचारी है ॥
कंगाल सुदामा सो तैं राव किया छिन में ।
दासी जुहनी कुब्जा सो राज दुलारी है ॥
पर काज घने सारे गजराज उबारे तैं ।
वृषपाल बिदुर कीने तू ख्याल खिलारी है ॥
प्रहलाद बचाये तैं पाताल बली दीना ।
अवतार लियो मथुरा ब्रज भूमि सुधारी है ॥
ससार यहाजानें अस्तार घन तर ।
अब लाज रखो माधव यह अर्ज हमारी है ॥

३६—बालकृष्ण—यह कविवर उदराम के समकालीन थे और रणजीत-काल में हुए थे। आप राधाकृष्ण के अनन्य भक्त थे। इनकी 'यथा प्रीत परीक्षा' नामक रचना हमारे देखने में आई है। यद्यपि यह एक छोटी पुस्तक है जिसमें केवल १०८ पद्य हैं किन्तु इनकी रचना अत्यन्त भाव पूर्ण और प्रभावोत्पादक है। उदाहरण देखिए —

अवतरण

एक समय सास्त्र कीनी मन इच्छा । लन राधिका पर चन परतीत परीच्छा ॥
बसी यों राधिका कर परतीत हमारी । जाव जहाँ जय जहाँ वृषभान दुलारी ॥
त्रिया भये भूषण सज तन भूसर सारी । माँग पार बनो गुंथे मनों पन्नग नारी ॥
तस त्रिय सकल सिंगार कर सौरभ सरसाये । लखिकें सिवाय मार दामन माँहि लजाय ॥
चली गई जहाँ राधिका वृषभान किसारी । गज मराल मन हंस का जिनको छवि धारी ॥
राधा आदर दरि के अति आनन्द कीनो । आसन दे कर पान दे कर बिजना लीनो ॥
पग पग अवलोकिकें मन माहिं बिचारी । यह तो काऊ है बड़ो महाराज कुमारी ॥

ौ प चाहति हो सुनौं तो बात बखानो। हित जानक कहत हैं जो बुरी न मानो॥
हा तियन मे राधिका गुन रूप निधाना। कु मरि तुम्हारे कथ की इक अकथ कहानी॥
आवत हो मग चली जब लखी अकेली। उन उठाय कें कांकरी मो तन का मली॥
व हूँ सखी है रहा जब कछु न बोल्यो। अपन सग के सखन म मन माहि पलालो॥
रे मन म रिस भई कछु न बाते। हौं पुनि-चलि आई सखि तेरे हित नाते॥

३७—हुलासी —यह कवि भरतपुर के रहने वाले और जाति के ब्राह्मण थे। आप वीर रस की कविता करते थे। इनका कविता-काल सम्वत् १८३४ वि० के आस पास ठहरता है।

उदाहरण (कवित्त)

अलवर उदपुर बीकानेर, जोधपुर
कोटा औ करौली पीठ जयपुर के न गये।
राजा रजपूत धुर दच्छिण औ पछाह के,
विभव बिहाय क सु आप बस ह्वै गये।
कहत 'हुलासी' राव राजा सब पूरब के,
हारके नवाब, अग्र ज टोपी नै गये।
जबू दीप खंडन कौ मंडन भरतपुर
वाके गढ टूटेते अनेक मर है गये॥

३८—मूलराय —यह कवि जाति के ब्रह्मभट्ट (राय) थे। ये तहसील नदबई जिला भरतपुर के अन्तगत नूरपुर ग्राम के निवासी कासीराम के पौत्र तथा अद्भुत राय के पुत्र थे, जैसा कि स्वयं कवि ने अपने परिचय मे निम्न दोहा लिखा है :—

नगर नूर की देस है बजराजा कौ धाम।
ताम ग्रन्थ बनाइये, मूलराय कवि राम॥

इन्होंने पद्मपुराण म वर्णित गीता के महातम का 'गीतामहात्म' नामक विविध छन्दो म भाषानुवाद किया है। अनुष्टुप छद के परिमाणानुसार इसमे २००० छद हैं। इनके ग्रन्थ का रचना काल स० १८३६ वि० है, जैसा स्वय कवि ने लिखा है —

ठारस छत्तीसवा विक्रम सवत जान।
कार मास वदि पचमी सोमवार शुभ भान॥

३९—देवकर —ये जाति के माथुर चतुर्वेदी थे। इनका कविता-काल सं० १८३८ वि० ठहरता है। इन्होंने महाराज सूरजमल के भाई वैर के राजा प्रतापसिंह

के पौत्र पुष्पसिंह के लिये "पुष्पप्रकाश" नामक एक छोटासा ग्रंथ सं० १८३८ वि० में लिखा है। इनकी कविता का उदाहरण नीचे प्रस्तुत किया जाता है —

व्रज नरेन्द्र को कुंवर प्रताप।
ताको सिंह बहादुर आप॥
पुहुपसिंह ताको परगास।
तासिन किये यह पुहुप प्रकास॥

दोहा

गो गोपी गोपाल गन गुंज गुलाब गहि पानि।
गोकुल गोकुलचंद को, गुंजा गुंज गुंजानि॥
मिन थिलात-वाला विकल बाधा विरह बिसाल।
चल चुप दर्गों चपल चल चकित चित्त नदलाल॥

८०—पदमाकर—ये जाति के तैलंग ब्राह्मण थे। इनके पिता का नाम मोहनलाल भट्ट था। पद्माकर का जन्म बाँदा में सम्वत् १८१० वि० में माना जाता है। भारतीय काव्य गगन में यदि सूर सूर्य और तुलसी शशि हैं तो पद्माकर गुरु के समान देदीप्यमान हैं। इन्होंने अनेक राजा महाराजाओं से अतुल सम्मान एवं प्रचुर द्रव्य प्राप्त किया था। यह भरतपुर नरेश रणजीतसिंह के समय में उनके पास भरतपुर पधारे थे। वहाँ से भी इनका बहुत सम्मान एवं धन दिया गया। महाराजा रणजीतसिंह व उनके पुत्र बलदेवसिंह के विषय में इनके फुटकर वीर रस के बहुत कवित्त यहाँ उपलब्ध हुए हैं, उनमें से कुछ नीचे प्रस्तुत किये जाते हैं —

इंकन पे घोर मार माची चहुँ-ओर ताव
आग की झकोर ताऊ-पावन-रहें नहीं।
कहै पद्माकर त्यों दुहँ भुज दंडनि-को
चंडता विलोकि भीम-भावत मन नहीं॥
टेका पर टेका के सुबंका बलदेवसिंह,
जग जुरे आनन के साके ह गन नहीं।
है वर प्रचण्ड जहाँ काटि भरि मुंड नहीं,
मुंड-मुंडे मासी पे बटोरन बन नहीं॥

कहर को कोस किलकाली को कोलाहल सो,
हालाहल सलिल, धरातल कड़क को ।
कहै 'पद्माकर महीप रणजीतसिंह
तेरो कोप देख यो दुनी में को न धक्को ॥
चिल्लिन को चुगल बिजुल्लिन को तीखो तेज,
बापुरो कहा है बड़वानल अरब को
गव्विन को गजन गुसल गुरु गोलन को
गाजन को गज गोल गुमज गजब को ॥

उच्छलत सुजस वलच्छ नव लच्छ रिच्छ,
दिच्छिन हू छीरधि लों स्वच्छ छाइयत है ।
कहै पदमाकर महीप रणजीतसिंह
अच्छिन में ओज पर निच्छ पाइयत है ।
पच्छ बिन लच्छि लच्छि बिकल बिपच्छी होत,
गव्विन के मुच्छ कर तुच्छ नाइयत है ।
प्रकटत पुच्छ कुच्छ कुच्छ पर गैप जब
रच्छ परि मुच्छ पर हाथ लाइयत है ॥

पल को प्रलय को, मीच मेल को मुठी में मूठि,
मेल को उच्छल्लत सुमल्ल बलबीर को ।
कहै पदमाकर उमड़े को उमादल पै,
दड़ को दुनी में वेग बाढ़व समीर को ।
वज को बलाय मद मर्जे को महीसुरन,
गज को गरज बज्र मास्यो सुना सीर को ।
मोड़ को दई को भव तोड़ को अगनि पुंज
मोड़ को अतंक वीर बका रणधीर को ॥

दाहन तें दूनी तेज तिगुनी त्रिसूल हू तें
चिल्लिन तें चौगुनी चलाक चक्रचाली तें ।
कहै 'पदमाकर बिलद बलदेवसिंह
ऐसी समसेर मेर सत्रुन पै घाली तें ॥
पाँच गुनी पवि तें पचीस गुनी पावक तें
प्रगट पचास गुनी प्रलय पनाली तें ।
सपन सों सौगुनी सहस्र गुनी सूरज तें
लाख गुनी लूक तें करोर गुनी काली तें ॥

८१—मुरलीधर—यह जाति के भट्ट ब्राह्मण थे। इन्होंने अपनी कविता में 'प्रेम' उपनाम का प्रयोग किया है, और कहीं कहीं पूरा नाम 'मुरलीधर' भी लिखा है। इनका कविता काल सं० ८५० से ९ ० वि० तक माना जाता है। इन्होंने महाराज रणजीतसिंह के समय में होने वाले अंग्रेजी युद्ध को अपनी आँखों देखा था। यह उच्च प्रतिभा सम्पन्न कवि थे। इनकी रचना सरस ब्रजभाषा में है। कतिपय उदाहरण प्रस्तुत हैं—

कवित्त

जब हैं फिरंगी भयो भारत नगरपुर में,
तापन तमाप के इलाज प इलाज की।
सूरज सुजान को बहादुर लख्यो है तहाँ
छीन लई मतन में मगन जे समान की।
'प्रेम' या प्रचण्ड भारि मंडल का माग रहँया
पूरन प्रताप बल जतन चलान की।
काली करन नृपन फिरंगी सब कुम्हा भए
एक न चली चली पथर कमान की।

चमन की नानि नवनि नवीन की है
भूरि भाग भौंहन उतारे चाक च रही।
नासिका नवी की, अनूप रूप प्रेम गानि,
दन्ता की चमक नग दामिन की द रही।
चम्पक नवलित की नम्मा नगार धार
अग की सुवास छिन छाजन ना छुव रही।
पाई अमि तारो श्री मिनारी नन रग के है
आवो अग उग की गतारी रग ह्वै रही॥

कटक गुनाथ। कथा गम्म कर अपने मन
रम बज कनजी गुमानन क मेरे हैं।
धारर त र र नि दगीन ए ना क
गारर निर नार र र लम र न नरे है।
'गुरना मनि दा र रु रा म न्यार बना
गा ह र पूरा य रन नाहि पेरे हैं।
गरो नुद्ध दारी म्यो र ब्रुज रवार म्म,
भुज बीच नान का बाग बहुतर हैं॥

६१—ब्रजेश—ब्रजेश जाति के ब्राह्मण और महाराजा रणजीतसिंह के समकालीन थे। आपकी रचनाएं उत्तम कोटि की हैं। यद्यपि आपका कोई ग्रंथ तो हमें उपलब्ध नहीं हुआ है तथापि कुछ फुटकर कवित्त पर्याप्त मात्रा में मिलते हैं। इन कविताओं के देखने से यह भलीभांति सिद्ध हो जाता है कि आप बड़े प्रतिभाशाली कवि थे। आपकी रचनाओं के कतिपय उदाहरण प्रस्तुत किये जाते हैं।

कवित्त

पूरन पुरुष ताको पारहू न पावे वेद,
गावत पुरान ताहि मगन विनोद में।
पालन झुलाव हलराय पय प्याय मेलि
चित्त लगाय मात धार मन मोद में।
अज अविनासी दैत्य दानव विनासी प्रभु
सबो कमलासी तथा रहत प्रबोध में।
कहत ब्रजेश सुक सारद महेस सेस
जग जाकी गोद में सो जसुधा की गोद में।।

घनन की घोर नभ मंडल दमा निसान
साज अबसान के निसान गज गोर पर।
तड़ित तड़ाकी बगु बहुत बलाका स्याम
धाम धरे बदन घुमड़ि बरजोर पर।
पौन के पछाट भर झरना भ्रमात जल
देखत दयाल गोप गोपी जन सोर पर।
मूलत उखारि कर पल्लव सम्हारि गिरि
फिरतो लो फराय ज्यों बसायो नख कोर पर।।

मढ़ि नभ मण्डल अखण्डल उमड़ि घन
मंडि मंडि गाढ़ो घमंड अति जोर पर।
गर्जि गन घोर जोरा जोर [illegible] झकोर जोर
जलधुन प्रचार [illegible] मंद बुंद गोप पर।
पौन कर न[illegible] गात [illegible] भी निहार गोपा
हर तन मोर गोपी ग्वाल मन मोर पर।
पगरा बनिन [illegible] लिन बर
मढ़ि नगिन गिरि धाम्यो नख कोर पर।।

घटा घिरि आई कोप बासव पठाई जुत्थ,
जुथ्थन सुनाई लूम लूम व्रज आर पर।
धक धक धाई गोप गोपी मन आई गाय
बच्छ अकुलाई करें करुणा विसार पर।
जसुमति मैया ढिंग नंद बलि भैया ताबि,
ता छिन कन्हैया गिरि गह्यो बर जोर पर।
हर बर धाय भुज दण्डन घुमाय हाल,
करन प छाया त्यों बसायो नख कोर पर॥

अमित अपारें नभ मंडल गुहारें घन,
सायुध सँहारें धाय धाय व्रज वार पर।
धारा की धौंधे घर घार जल औंधे पौन,
गौन तन कौंधे त्यों अमूल तरु तार पर।
शरना के कंद व्रजचन्द दुख कंदन कौं
घूमन घुमाय धरो धौर बर जोर पर।
मधवा निमाय कर मगन फिराय गिरि,
छत्र सम छाय कै तुलायो नख कोर पर॥

नख वरनन (कवित्त)

सजन त ग्यरे मनरंजन गुमान गुर
गंजन गहीर गुन गाहक कगेरी के।
मृग के मलीन मन बधत परीन पुंज
मौन ह्वै अधीन कर- कंजन चकोरी के।
मन मरु मान मग्सान के सुधारे तीले, --
उज्ज्वल अनियारे भारे भौंर की मरोरी के।
सौतिन के मान मदलाल श्री "व्रजेश" पाल,-
राजत बिसाल नख कीरति किसोरी के॥

केसू के कुसमन कौ कफनी करी है कंठ
तमकौ कलीन मन माद उपजायो है।
अवनि कौ मौर सिर टापी औ नवा है सनी
झलकी अनार भौंर गुंज छवि छायो है।
मारयो मकरन्द द्रुम डारहि करि दंड धारी,
मन्दर समीर यों 'व्रजेश' गुन गायो है।

बडो वेपीर भीष्म प्राण की वियोगिन मा,
मागन फरीर ह्व बसत चलि आयो है ॥

मुरली वर्णन (कवित्त)

माथे मोर मुकुट रसाल सिरमौर रम
फूल हैं सरसा फूल कुडल श्रवन है।
अलकें भ्रमर जुग लोचन कमल मुख,
चन्द दरस अंनि अह्लाद के भुवन है।
मुरली मधुर गौन पचबानादि नानें
कोयल कुहुकि मान माननी दवन है।
श्रीमत ब्रजेन्द्र महाराज बलवन्त जू के
राजत बसत रूप राधिका रमन है॥

४६—गणेश —ये जाति के ब्राह्मण और भरतपुर के निवासी थे। इनका कविता-काल स० १८६० से स० १८८० वि० तक ठहरता है। ये भरतपुर के महाराज बलवन्तसिंह के दरबारी कवि थे। इनके पुत्र लक्ष्मीनारायण व पौत्र युगल किशोर भी कवि थे। ये दोनो भी महाराज बलवन्तसिंह के दरबार मे रहते थे। इससे यह पता चलता है कि उक्त कवि बहुत वृद्ध थे। इनकी रचनाओ मे से एक पुस्तक 'विवाह विनोद' प्राप्त हुई है जिसमे उक्त महाराज के विवाह का सुन्दर ढंग से वर्णन किया गया है। इनकी कविता का उदाहरण नीचे प्रस्तुत किया जाता है —

छूटत फुहारे जल जंत्रन तें जल धारे,
देखे लगें प्यारे, न्यारे न्यारे बुंद वारे हैं।
ताप तरवार ह्वै कें मुक्ता समूह स्वच्छ
लोचन पन्नते में सुकवि निहारे हैं।
नृप सिरताज महाराज श्री ब्रजेन्द्र बली
बलवन्त दूहै पैं सम्पत्ति वारे हैं।
मेरे जानि ब्याह के तमाम कौं उछाह जानि
मानो इन मानि आय वरुण पधारे हैं॥

४७—जसराम —इनके विषय मे इतना ही वृत्त उपलब्ध हो सका है कि ये जाट जाति के थे और भरतपुर के रहने वाले थे। इनका कविता काल स० १८६१ वि० ठहरता है क्योंकि ये भरतपुर नरेश रणजीतसिंह के यहां दरबार मे रहते थे।

इनके वीर रस के स्फुट छन्द पाये जाते हैं। ये खरी खरी कहने में नहीं चूकते थे। राज दरबार में गुणियों का अनादर कराने वाले दीपचन्द व पलाग्राम के पटल (गूजर) और किशना पर अप्रसन्न होकर आपने 'साल भून तेल' वाली ग्राम्य लोकोक्ति का प्रयोग बड़े सुन्दर ढंग से किया है। इनकी कविता के उदाहरण नीचे प्रस्तुत किये जाते हैं —

कवित्त

दग दरबार दीपचंद सा प्रकासित है
नाही छाय मीरजो अमीर बुद्धि साज की।
पला को पटल जा पलाय दल ताही छिन,
सही रहे येही कहैं आयुस ब्रजराज की।
जिद्द 'जसराम' जोर जाहिर जहर जूर,
किशना विप्र-दल कहै, छाय लाज ताज की।
मान दीन दुखित सताय दरबार जान
साल भून तेलें, कहो कुसल का राज की॥

सच्चा घमसान काल तीन लगि लोप परी,
मर गये सूर साचे मोहरा अगाह ते।
याई या भुजा ते मार कीन्ही जसवन्त राव
मुण्ड लागे व सलाह ते।
धरा "जसराम" अगरज जग हारि गय,
जीत जदुवंसी सूर लड़त उछाह ते।
दोऊ दीन जाया महाराज रनजीतसिंह
हारि कै फिरंगी फेर पटक्यो बराह ते॥

८८—गंगाधर—ये जाति के ब्राह्मण और भरतपुर के रहने वाले थे। इनका कविता-काल विक्रम सं० १८६१ माना जाता है। इनकी रचनाओं में [illegible] रस की प्रधानता है। ऐसा प्रतीत होता है कि आप महाराज रणजीतसिंह के दरबारी कवि थे। एक उदाहरण प्रस्तुत किया जाता है —

कवित्त

पारथ मचायो महाभारत भरतपुर
घिरे भूप भट भीमसेन [illegible]
'गंगाधर' [illegible] समसेरन की [illegible]
पड़ा घनी [illegible]

जहाँ कर रारि गिरैं गोरटा गरद्द भये
दोऊ लट्ट पट्ट रण-खम्भन तजत हैं।
फिरका फिर गिन के फार के फतूह करें
जीत के नगारे रणजीत के बजत हैं॥

४६—प्रसिद्ध —ये कवि जाति के ब्रह्म भट्ट थे। ये महाराज रणजीतसिंह की पलटन में सैनिक काय के द्वारा जीविका अर्जन करते थे। इनका कविता काल सं० १८६१ के आस पास पाया जाता है। इनके वीर रस के अनेकों फुटकर कवित्त मिलते है। उदाहरणार्थ कतिपय पद्य प्रस्तुत किये जाते हैं —

कवित्त

सुरपुर भवन भरतपुर देखन का,
काहे काज आये हो फिरंगी सूर छत्ता में।
धर क नसनी चढ़्यो कुरली खडग लिये,
किये मन भोरे गोरे सूरत चकत्ता मे।
कहत 'प्रसिद्ध' महाराज रणजीतसिंह,
धाय धाय धाम पग आगे ही धरत्ता म।
भेजी फोर पटक पछार खात खभन सों,
लेडी अंगरेजन की रोव कलकत्ता मे॥

छप्पय

कछवाये खरभरे लरे नहिं एक लराई।
रजवारे भजि गये गिरत्ता गल न पाई।
दक्षिण लक्षण भरे रण कवियन मुख भाखी।
दीभ दहली भई मैंढ सूरज सुत राखी।
दिगपाल हालि भुवपाल भग जब नृप बल चढते जहा।
रणजीतसिंह नहि जनमते तो हिन्दुन हद रहती कहाँ॥

दसे दुरबीन वडाबीन बान सग लिये
सत्तरह पहर हल्ला कीये मदमत्ता वे।
पीरे पट भडा फन बुज प निसान दिये,
बान फहराने मोरपच्छ के धरत्ता मे।
जोगनी जमात पानि वठ के अघात खात
भाँति भाति मासन सवाद नव खत्ता वे।

कहै 'परसिद्ध' महाराज रणजीतसिंह
सत्रह हजार दल काट कलकत्ता के ॥

५०—रमेश —इनका कविता-काल सम्वत् १८६२ से १८८०वि० तक माना गया है। इनका पूरा इतिवृत्त ज्ञात नहीं हो सका है। इनकी कविताओं में रसानुकूल ओज एवं प्रसाद गुण का प्राचुर्य है। स्वाभाविक अनुप्रासों के सम्पर्क से इनकी रचनाओं में अद्भुत चमत्कार उत्पन्न हो गया है। इनका लिखा हुआ एक नायिका-भेद ग्रंथ तथा महाराज रणधीरसिंह की प्रशंसा के कुछ फुटकर छन्द मिलते हैं। वीर रस की रचनाओं में से कतिपय उदाहरण प्रस्तुत किये जाते हैं।

महाराज रणधीरसिंह का आतंक वर्णन —

कवित्त

तेरी धाक धरके धराधिप धरे धरान,
धर छाड़ धावत धरा की लाज धारें ना।
घाटिन के घाटि सुनि उद्धत निसान धुनि,
भूल कर पल में पलायन में हारें ना।
कूदि कूदि भारन में छिपत पहारन में,
प्रान हानि जानि हार जीत कों विचारें ना।
श्रीमत् ब्रजेन्द्र महाराज तेज तत्ता देखि
पत्ता से उडत वैरी सत्ता कों सम्हारें ना॥

महाराज रणधीरसिंह के अश्वों का वर्णन

उच्छलन मुच्छलन बल के बलच्छ दच्छ
रच्छ गहि गच्छनि सु तुच्छ करें पौन को।
अच्छन निहारि के सुरच्छनि के पच्छ हरें
पच्छिमनि के से कच्छ कच्छि तन कौन कों।
श्रीमत् ब्रजेन्द्र के हयेन्द्र बरन 'रमेश',
लच्छिन सु लच्छिन के गच्छ बर हौन को।
दच्छिन अदच्छ के सु कच्छनि के कच्छ स्यालि
स्वच्छन विलच्छन समच्छ कर भौन कों॥

हाथियों का वर्णन

श्रीप आप आप इन्दु नीलमनि पनग म
दवे पर भूमि का 'रमेश' कहै मानि के।
उद्दित अमद त कलिद ते विलद वस,
गुजत मलिद पुज मद कों घमानि के।

ऐसे गल गाज गजराज ब्रजराज द्वार
दिग्गज हू भाज लाजें सोर पहिचानि के
सुडादण्ड उद्धत उदंड नभ-मण्डल में,
चूमे सुधा मंडन मुखारविंद जानि कें ॥

५१—मिश्र सुखदेव गंगाकिशोर—ये माथुर चतुर्वेदी महाकवि सोमनाथ के वंशज थे। इस वंश को भरतपुर राज्य की ओर से राज-दानाध्यक्ष का पद परंपरा से चला आता है। इनके वंशज अब भी भरतपुर में विद्यमान हैं और इस उपाधि का उपभोग कर रहे हैं। इनके पिता का नाम वजनाथ मिश्र था। इनका रचा हुआ संग्राम रत्नाकर नाम से महाभारत के ७ पर्व पव तथा मूसल पर्व के अनुवाद हमारे संग्रहालय में है। ग्रन्थ के दर्शन से हम इस निश्चय पर पहुंचे हैं कि आप न केवल हिन्दी के ही वरन् संस्कृत के भी ज्ञाता थे। इस ग्रन्थ में आपने अगणित प्रचलित तथा अप्रचलित छन्दों का प्रयोग किया है जिससे सिद्ध होता है कि आपका पिङ्गल शास्त्र का पूर्ण ज्ञान था। यद्यपि आपने यत्र तत्र अलंकारों का भी प्रयोग किया है, किन्तु उनका विशेष चमत्कार कहीं नहीं दिखाई पड़ता। इतना सब कुछ होते हुए भी हम यह कह सकते हैं कि आपकी भाषा में सरलता तथा स्वाभाविकता की मात्रा यथेष्ट पाई जाती है और शैली साधारणतः अच्छी है। इनकी कविता के कुछ उदाहरण निम्न लिखित हैं—

छप्पय

श्री नारायण शंख चक्र को धारण करि कें।
अरु नर उत्तम रूप आप अर्जुन को धरि कें।
सब दत्यन की दमनि देव सरसुति मन भरि कें।
श्री पाराशर सूनु व्यास आनन्द बिहरि कें।
हूजै प्रसन्न मोपै अब कृपा दृष्टि अधिकारि कें।
मैं करत प्रणति तुमको सदा अपने हियमें धारि कें ॥

कवित्त

पर्वत कैलास मध्य पूर्यो की जुन्हैया बीच
आपने समान बिम्ब आपनो निहारि कें।
धावत अनेक बार छाया सो विचारि रारि
अति ही प्रचण्ड सुण्ड दण्ड को भ्रमाय कें।
दौरे मन पुत्र ! तेरे पन्नि के घातनि तें
सम्पति है परता ताकी दया को विचारि कें।

एस गिरिजा के सपूत पूत गनपति को
सदा उर ध्यान धरो कष्ट त्रिमारि कें ॥

५२—रसनायक—जैसा कि आपके नाम से प्रतीत होता है रसनायक रस राज शृंगार के सफल उपासक थे। आपका जन्म भरतपुर राज्यान्तर्गत कामवन नगरी में भट्ट जाति में हुआ था। आपके जीवन परिचय एवं कविता-काल के विषय में निश्चित रूप से कुछ नहीं कहा जा सकता किन्तु विद्वानों ने आपका कविता-काल सम्वत् १८७२ वि० के लगभग माना है। आपका केवल 'विरह विलास' नामक काव्य ग्रन्थ उपलब्ध हुआ है। इस ग्रन्थ में भ्रमरगीत के ढंग पर पद्य में उद्धव तथा गोपियों का सम्वाद बहुत ही आकर्षक ढंग से लिखा गया है। गोपियों के द्वारा प्रस्तुत उक्तियाँ तो बहुत ही मर्मभेदी हैं और भाषा भी भावानुकूल सरल और चित्ताकर्षक है। यद्यपि आपका एक ही ग्रन्थ देखने में आया है फिर भी इसके देखने से यह विश्वास नहीं होता कि ऐसे उच्च कोटि के कवि ने केवल एक ही ग्रन्थ लिखा हो। केवल इसी एक ग्रन्थ के अवलोकन से यह कहा जा सकता है कि आप काव्य-कला के मर्मज्ञ एवं प्रकाण्ड विद्वान् थे। 'विरह विलास' ग्रन्थ से आपकी सरसता, सरलता, मार्मिकता एवं विद्वत्ता की पर्याप्त झलक मिलती है। ऐसा प्रतीत होता है कि सम्भवतः जगन्नाथदास 'रत्नाकर' को 'उद्धव शतक' की प्रेरणा रसनायक के 'विरह विलास' से ही मिली हो। इस ग्रन्थ के निर्माण काल के विषय में कवि ने स्वयं लिखा है —

अष्टादस जु बहत्तरा, सम्वत् सावन मास।
सोमवार तिथि तीज सुभ प्रगटो विरह विलास॥

आपके 'विरह विलास' काव्य के कुछ उदाहरण प्रस्तुत किये जा रहे हैं —

उद्धव (दोहा) —

अलख निरंजन ध्यान धरि निर्गुन ज्ञान उर धारि।
जोग जुगति सिखवहुँ अब सीखौ सब ब्रज नारि॥

गोपी (दोहा)

अलि! औरे काहू कवन यह दुवारिका जाहु।
बसत निरंजन सुचित ब्रज श्री घनश्याम सुजान॥

कवित्त

ब्यापक ज्ञान ब्रह्म अलख कहाँ है काहि
आदि निरंजन नाम रँग रंग पगि न।
कैसो अविनासी को है? बेद जो बखान जाहि
बिधिहू न जान हमें एक रंग रंगे ले।

ब्रज ही बसत 'रसनायक' न आन ठौर,
काहे झकझोर कर सुचित बिसरत से ।
और लौं वकत ऊधो द्वारका बताव काहे
काहे हैं हमारे प्रान प्रानन मे देख ते ॥

अन्य सखि (दोहा)

प्रेम-सुधा जिन जनम भो अलि चाख्यौ अनुकूल ।
जाग जन्तर तिनको कहा रचि मान मति भूल ॥

कवित्त

जोगल सिधारे तुम कुब्जि दै भाग आय
निरगुन हमैं लाय सम्पट लखातु हो ।
रोकन सरल पथ वेद औ पुरानन के
थापत अपथ पथ निलज सिहातु हो ।
याम यों कहा है 'रसनायक' वृथा है वाद,
चाहे जो हमारे सो न चरचा चलात हो ।
अपनी कहत पर-पीर ना लहत ऊधो
माधव मिले की विधि काहि ना बनातु हो ॥

सवैया

काहे दे जोग पठाय तुम्हें हम जानी अहो जु बड़ो जस लीना ।
कैसी अहोती कथा बधिक भरि श्रौननि हाय हलाहल दीना ।
काहू की नेक दया न लई रसनायक' वर बिसाह्यो नवीना ।
क्या हमसो अबला बपुरीन पै ऊधव आय के ऊधम कीना ॥

राधिका जी का पत्र श्री कृष्ण को (दोहा)

एक बेर ब्रज आइये, सुन्दर स्याम सुजान ।
सुरति मर्मे न रमाइ हौं माहि तिहारी आन ॥

कवित्त

एक बेर आय ब्रज-बिरही जिवाय लीजे
पाछे मन मानें सोय कीजो मनुपाय हो ।
मान ना करौंगी रसनायक' धरौंगी धीर,
गुन ही गनौंगी पै न औगुन गुनाय हो ।
पीवन अधर देव देहो ना कठिन जुग,
कुच ही अरो न अग हरख छुवाय हो ।

मोहे है हजोग मोहि नन्द के कुँवर अब
सुरति मम न हा हा गावर न्याय हों ॥

दोहा

जागत अनन्त अगाध हगि विरह व्याधि बढ़ जाय ।
मा जीवन जदुपति अब ब्रजहि बसाव आय ॥

कवित्त

आपनो जतन छाड कौनहि कछू न याम,
चन्च वच्न नाग नाहन हँमाइय ।
प्यारे पन्न्न 'रसनायक' रहे हो अब
घरको बिचारी कहा मो हूँ ना सुनाइय ।
अनि ही अनय नई जिगरी प्रचण्ड माहि
जीवन बचाय तन तापहि नमाइय ।
सूनो है मकान ब्रज विरही विकल यान
गाकुल के नाथ आय गोकुल बसाइय ॥

घर की न जल भर, मग की न पग धर
घर की न सुधि कर नति है उसास री ।
एक सुनि नाह गइ एक तिन जोट भई
एकन व अधरन छूट प्राण आसुरी ।
ताप 'रसनायक' यात कछू ना उपाय कीज
तो ता कगी जामीं होय न उपहास री ।
गाजिय जगाय वन-वासन कन्हाय फेरि,
उपज न बाँस बन बाजगी न बाँसुरी ॥

१३—मातीराम —य महाराज रणधीरसिंह क दरबारी कवि थ। इनका कविता-काल सवत् १८८० वि० क आस पास ठहरता है परन्तु इनकी रचनाओं म महाराज रणधीरसिंह म पहले महाराज बलवतसिंह तक का वर्णन मिलता है। इनके पिता का नाम रघुवरराम था जो प्रसिद्ध महाकवि रामनाथ क पितामह थ। य नगर क निवासी तथा मुद्गल गोत्रीय ब्राह्मण थे। इनके रचे ग्रन्थ ग्रन्थ हमा दखन मग चुका है जिनका विवरण इस प्रकार है —

१—ब्रजेन्द्र-वंशावली — इस ग्रन्थ म भरतपुर राज्य वंश का वर्णन बड़े विस्तार पूर्वक रसीली भाषा म किया गया है।

२—ब्रजेन्द्र विनोद —यह रीति ग्रन्थ है जिसमे नायिका भेद का लक्षण और उदाहरण देकर भली प्रकार स्पष्ट किया है।

आपकी भाषा बडी ही लचीली तथा श्रवण सुखद है। भाव व्यजना सरल तथा हृदय स्पर्शनी है। शैली म पूर्ण चमत्कार है और अनुप्रासो की छटा देखते ही बनती है। इनकी रचनाओ के कतिपय उदाहरण प्रस्तुत किये जाते हैं —

ब्रजेन्द्र-वंशावली— (दोहा)

महाराज रणजीत सुत श्री रणधीर ब्रजेद।
जगमगात जग मे प्रगट जाको सुजस अमद॥

कवित्त

प्रबल प्रचड मजु मालती निरुड मडि
मलय उदडन गरुर गहि गारिये।
गहि गहि गौहरन जौहर ज्वलित जाल,
पानिप विसाल मद चित्त त उतारिये।
'मोतीराम रुचिर अनेक उपचार भार
घन घनसार हू असार कर डारिये।
हिन्द सरताज तेरे जस प ब्रजेद्र वीर
कान्ति अमद चद चान्दनीन वारिये॥

पद्धरि छद

अति विमल नीर सरवर अपार,
जहं करत आन खग कुल विहार।
बन हस हसनी लिये सग,
निहि तीर आय विहरत सुरग
कहु चक्रवाक चातक चकोर
मन मोद भरे विहरत मोर।
कोकिल कपोत कूजत रसाल
मजुल अनूप बहु वगन जाल॥

भुजग प्रयात छन्द

लगी चारिहूँ ओर भालर भमक
सु तौ चन्द्र की चद्रिका सी चमकें।
बने पोनवार चन्दवा विराजे,
चहूँ ओर जर तार की कोर साजें।

घटा मद की सी अटा औ अटारी,
छटा सी चमक जहा गह नारी।
रची है सची चित्रमा चित्र मारी
मची स्वाग सा रूप की रासि भारी॥

कवित्त

जलद बन्दूक चहु औरन अचूक गाज,
माजें घोर गरज गरज गुन वारे है।
छन्नि छनारि स्वच्छ रजक अपार छवि
धूम धार धुरवान गार निरधार है।
'मातीराम माहन मरम सुर सार धार
रारि वर गानिन गुमान गार डार है।
पावस न हाय वीर सलन सिकार
महाराज रनधीर के करोन बल भार है॥
कुन्जन कुन्जन गरज गभीर धुनि
लरज पहार बन मघन समाज सा।
चमकत रजत चपल चपलामी घोर,
प्रलय घटामी गरे गरभ गराज मा।
तमा ताप तीनो गन भामत भरतपुर की,
रगनी ब्रजइन्द्र वीर हिम्मत दराज मा।
पूरन धुराव कर छुन्दन तुराव भर
गजब सगार अर्रै अरि म अराज मा॥
जाकी जानि जगनी म जगन ज्वनित जान
जगर मगर रहे रमहू निमान म।
ब्रजजन वारनद अधिक प्रमार भर
साक तजि बाव कुन कननि कनान म।
मातीराम सुकवि मलिन्न क वृन्द धाय,
दान मकरन्द गध पिवत मनान म।
सम नहि तार ब्रजकन वनवल्लमिन
उन्नि प्रताप आफताव हिन्दवान म॥
कनपमना क वन नामस अमन रूप,
करुना निलय गनि सनिन इनाज क।
सुगर मराजन त आज रमत दूना,
कनिमन रन रसमन रगाज क।

'मोतीराम सुकवि सहायक मदन जय
दायक बिजय बलदेव ब्रजराज के ।
श्रीधर रतन नव अम्बुज बरन रम्य
बिनऊँ चरन बलदेव महाराज के ।।

५४–महाराजा बलदेवसिंह–आपने सम्वत् १८८० से १८८१ वि० तक भरतपुर के राज सिंहासन को सुशोभित किया। आप महाराज रणधीर के भाई और उच्च कोटि के विद्याव्यसनी तथा विद्वानों का आदर करने वाले थे। आपका दरबार विभिन्न प्रान्तों के कलाकारों एवम् सत्कवियों से सुशोभित रहता था। विभिन्न प्रान्तीय गुणियों के सत्संग का प्रभाव महाराज की कृतियों में स्पष्ट झलकता है। जिस प्रकार आपकी महारानी 'चतुर सखी' ने अपनी काव्य प्रतिभा प्रकाशन का माध्यम गीत काव्य को चुना है उसी प्रकार आपने भी गीत काव्य ही अपनाया है। आपके पदों से भली प्रकार स्पष्ट हो जाता है कि आप काव्य के साथ साथ संगीत कला के भी विशेषज्ञ थे। सन्त वाणियों के सदृश आपकी रचनाओं में सरसता एवं माधुर्य प्रचुर मात्रा में पाया जाता है। आपकी रचनाओं में ब्रज-भाषा के अतिरिक्त पंजाबी एवम् मारवाड़ी भाषा का पुट भी विद्यमान है।

आपने अपनी रचनाओं में 'चतुर अली' 'चतुर प्रभु' तथा 'चतुर पिय' के उपनाम की छाप अङ्कित की है। आपकी कृतियों (पदों) के कतिपय उदाहरण नीचे उद्धृत किये जाते हैं–

ठुमरी

पचरंग पाग जरद बाकी पटका साँवर वरन पर मेरा मन अटक्या ।
ताक ताक नैन भौंह रसनारी मृदु मुसक्यान चमक चित हटक्या ।।
चतुर अली सुमति मति राधे मदन फन्द मेरा मन लपट्या ।

ठुमरी राग काफी

मन मोहन मेरे लाल हो जी सही वाला एजी सैनी बाना मेरे जान ।
छुपि छुपि के क्या नाम धरत हो वांही में लग्या मेरा ख्याल ।।
'चतुर' पीव में नाम के होला अब हो ज्यों परमान ।

राग भिभासी–एक ताला

हरि बिन कोउ नहीं मन साथी ।
सुत दारा अरु कुटुम कबीलो झूठे सुजन संगाथी ।।
बरज रहो बरज्यो नहिं मानत घूमत है जस हाथी ।
चतुर वरणय चैन जो प्यारे फिर न मिल रस माथी ।।

५५—महारानी अमृतकौर—महाराज बलदेवसिंह स्वयं जैसे सरस कवि थे वैसी ही उनकी रानी अमृतकौर भी थी। ये भी सरस पद्य रचना किया करती थी और अपने पदों में 'चतुर सखी' तथा 'चतुर प्रिया' के उपनाम का प्रयोग करती थी। इन रचनाओं से यह अनुमान होता है कि 'चतुर सखी' काव्य-कला के साथ संगीत-कला की विदुषी भी थी क्योंकि इनकी समस्त उपलब्ध रचनाएँ गीत काव्य के रूप में ही हैं। इनके पदों के पढ़ने से मत भागी का सा आनन्द प्राप्त होता है। इनका अधिकांश काव्य भक्ति रस में ओत प्रोत है। कतिपय रचनाओं के उदाहरण निम्नाङ्कित हैं —

राग गौड़ मलार ताल जलद

प्यारी सिखयो है सावन तीज गावे सिखयां है सावन तीज।
पचरंगी दामिन लावन सी ओढ़े रंगिरली चीर।
कस कहुँ अंगिया की सोभा आभूषन की भीर॥
कानों में हीरा की झलकनि बसरि नटवन धीर।
पायन तो घायल करि डारे पिय साँवल बलबीर।
चतुर सखी या विधि सो खेलो वा जमुना के तीर॥

जल भरन कूं जाय स्याम खड़ो पनघट पे।
राधे तेरो रूप अनूठो लाल देखि सुधि सब भूल्यो।
महरि को लरिका महा अति खोटो गलियन में रोक टोके।
चतुर सखी ने यह छवि निरखी कहा कहें सब की गरिया॥

राग इमन

प्रीत जुरी मोरी तुम सूं गिरिधर। प्रीत जुरी मोरी तुम सूं।
चतुर जतन क्या है कर जोरी अब लागी हरि छूटन सूं॥
महाधूर्त वह नंद लाडिलो घात चलावे बल सूं।
चतुर सखी' मेरे बिरह बहुत है जिन दरसन अब तरसूं॥

राग सोरठ—ताल चपक

मोहन मुकुट की झलकानि।
कोटि चन्द्र जिसम मनि भनि तुरत न ता अनुमानि।
नन्दजा को कुँवर सुन्दर राधिका प्रान।
चार जुग में बरन सब नहिं प्रेम रस की खानि॥
व्रजवासी मन लाग जुग सो करत अमृत रस पान।
चतुर सखी के प्रान प्यारे स्याम रहु मोहि मान॥

५६—जयदव —य काव्य क साथ साथ ज्योतिष मे भी प्रकाण्ड पण्डित थे और महाराज बलदेवसिंह क दरबार म रहत थे। इनका कविता-काल १८७१ वि० है। इन्होन जातक भूषण जाग नामक ग्रन्थ संस्कृत ग्रन्थो के आधार पर हिन्दी म लिखा है। ग्रन्थ म काव्य सौन्दय तो नहीं है परन्तु जातक सिद्धान्त पर भाषा के पद्यो म अच्छी पुष्टता प्रतीत होती है। उदाहरण के लिय इनक दो दोहे प्रस्तुत किय जाते ह —

मन्हाराज बलदेव जू क ह्यो महज ही भाय।
'जातक भूषण जाग की भाषा देहु बनाय॥
सम्बत् ठारह सौ बरस इकहत्तर को मान।
कातिक बदि पाच गुरु पुनवसू मा जान॥

५७—धरानन्द— इनका पूरा नाम घासीराम था। इन्हान कही कवीन कहा धरानन्द और कही घासीराम नाम स कविता का है। य भरतपुर क निवासी तथा जाति के ब्राह्मण थे। इनके वंशज अब भी भरतपुर मे है, जिनम पंडित रामचन्द महाराजजी कमकाण्ड केसरी ज्योतिषाचाय राज पण्डित प्रसिद्ध व्यक्ति है। घासीराम संस्कृत क प्रकाण्ड विद्वान् थे। इनके रचे हुए संस्कृत म वेदान्त न्याय, ज्योतिष आदि पर कितने ही ग्रन्थ है। आपका बहुत सा साहित्य आपके उक्त वंशधर प० रामचन्द्र न श्री हिन्दी साहित्य समिति को भेट कर दिया है। कवि धरानन्द महाराजा बलदेवसिंह क दरबारी कवि थ। हिन्दी साहित्य म आपन एक रीति बृहद् ग्रन्थ साहित्य सार चिन्तामणि नामका लिखा है। यह ग्रन्थ गद्य-पद्य अर्थात् चम्पू क ढग का है। इसकी विशेषता यह है कि इसम तुलनात्मक शैली पर अन्य कवियो की कविता क साथ कवि न अपनी कविता लिखी है। इस ग्रन्थ का निर्माण-काल सम्वत् १८७२ वि० है। इनकी कविता के उदाहरण नीचे प्रस्तुत किये जात है —

छप्पय

मद जल मडित गड चड लगि चचरीक गन।
हरत मुड भनु दण्ड विविध जिहि पूजत सुरगन।
सत दन मद मत्त बन साभित अनेक गति।
सवत सम सुरेस, अनक नरम महामति।
सिंदूर पूर साभित वदन, सदन बुद्धि भव भय हरन।
जय सुर नर मुनि बदित चरन लम्बोदर कविजन सरन॥

कवित्त

गुंजरत कुंज कुंज मरम मनि्‌न कुल,
उडन, पराग पुंज रग मरमायो है।
प्रफुल्लित मालती वन्व वन भूमि रहो
पवन भमारनि। सुगन्ध नरमायो है।
सुमनन की मम्पन मरमत कलि बाग बीच
वग्न 'कवीन' पचवान बल छायो है।
माननी क मान गढ़ तोग्वि क काज आज
काम नृप मेवन वमन वन पायो है॥

कहा कहाँ पाई भूठ मानी म मचाई मत
दुर न दुराई गति पावम गयद की।
वग्न की वड़ाई लघुनाई मा लघुन का या
पर पहिचानी परछाइ सूक चन्द की।
मै ना बग्जत ही महीन बे का बार बार
मौतन मदाई ही मिठाई विम कद की।
पामीगम कहै कठ कुनगी लगाई अब,
माई गी उपर मुधराइ नन्दनन्द की॥

प्रकरण ३

राम-काल (पूर्वार्द्ध)

महाकवि रामलाल —महाराज बलवन्तसिंह के स्वर्गवास के अनन्तर भरतपुर राज्य का विशृंखलित होने लगा। अंग्रेजों ने ऐसा सुअवसर देख भरतपुर दुर्ग पर आक्रमण कर दिया और दुर्जन साल को पदच्युत कर राज्य को अपने आधीन किया। बलवन्तसिंह को सिंहासन प्राप्त हुआ और राज्य शासन अंग्रेजों की देख रेख में होने लगा। राज्य की स्थिति एक दम बदल गई। युद्ध और वैमनस्य के स्थान पर शान्ति तथा मैत्री स्थापित हुई। फल स्वरूप हिन्दी कविता को पुष्पित एवं पल्लवित होने का एक स्वर्ण अवसर प्राप्त हुआ। शान्ति स्थापन के साथ २ कवियों के विचारों और भावों में परिवर्तन आने लगा। महाकवि सूदन ने वीर रस की जिस काव्य सरिता को प्रवाहित किया था वह आगे चलकर मंद गति से बहने लगी, यद्यपि इसका प्रवाह सर्वथा सूखा तो नहीं। वीर रसात्मक छन्द अब भी लिखे जाते थे किन्तु जो कुछ भी लिखे जाते थे वह अधिकतर बंदी जनों की विरदावली के रूप में ही होते थे क्योंकि जाटों की वीरता एवं शौर्य के वे दिन समाप्त हो गये जब "लखिनी पछ ला करि खेला त अजाब खेल हला मारे गग में रहेला मारे जग में" अथवा "तर तग तत्ता में चक्ता की न रही सत्ता पत्ता से उडाय अंग्रेज कलकत्ता के" जैसी वीर रस पूर्ण कविताएं रची एवं कही जाती थी।

अब शृङ्गार रस का समय आया और रीति कालीन कवियों की भांति इस काल के भरतपुर के कवि भी अपने काव्य को शृङ्गारिक रचनाओं से अलंकृत करने लगे। परिणामतः राजा और प्रजा दोनों को कविता से विशेष प्रेम बढ़ने लगा। भरतपुर नरेश बलवन्तसिंह स्वयं उच्च कोटि के कवि थे और कवियों का बड़ा सम्मान करते थे। इनके आश्रय में रहकर अनेक कवियों ने इनकी उदारता का वर्णन किया है और सुन्दर २ ग्रंथ लिखे हैं। इन कवियों में महाकवि रामलाल एवं रसानंद इन कवि पुंगवों ने वीर रस के साथ साथ शृङ्गारिक रचनाओं को अधिक महत्व दिया है।

महाकवि रामलाल यजुर्वेदी शाखा के मुद्गल गोत्रीय ब्राह्मण थे। इनके

वंश के आदि पुरुष प्रताप मिश्र विराटपुर (बयाना) के समीप सूरौठ ग्राम के रहने वाले थे। इनके पुत्र रामचन्द्र तथा पौत्र रघुवरदास हुए। ये वहां पर अपने शत्रुओं के द्वारा अधिक सताये जाने से तंग आकर नगर (भरतपुर राज्य के अन्तर्गत) में रहने लगे। इनके छः पुत्र रामरतन, सीताराम, मानीराम, रेवराज सेवाराम तथा मन्नाराम हुए। सेवाराम के चार पुत्र हुए जिनके नाम राम, कृष्ण, धनुधर तथा हनुमान थे। ये ही राम हमारे महाकवि राम (रामलाल) हैं। छन्द सार ग्रन्थ में इन्होंने अपना वंश परिचय विस्तार पूर्वक दिया है।

कविवर राम ने मथुरा में विद्याध्ययन किया। इनके गुरु का नाम घासीराम था जो संस्कृत साहित्य के अच्छे ज्ञाता थे। विद्या लाभ कर जब राम कवि अपने घर नगर लौटे तो रावल दिनसुखराम की प्रेरणा से यह हिन्दी में काव्य रचना करने लगे। उच्च कोटि के कवि होने के कारण महाराज बलवन्तसिंह ने इन्हें अपने दरबारी कवियों में स्थान देकर सम्मानित किया।

अब तक हमारे देखने में इनके सात ग्रन्थ आ चुके हैं जो काव्य की दृष्टि से एक से एक बढ़ चढ़ कर हैं। इनके ग्रन्थों का विवरण इस प्रकार है —

१—अलंकार मंजरी —इस ग्रन्थ में प्रत्येक अलंकार के लक्षण स्पष्ट करके कवि ने सरस कवित्तों के उदाहरण दिये हैं। यद्यपि यह ग्रन्थ केवल २८ पृष्ठों का है तथापि गागर में सागर का समावेश है।

२—छन्द सार —यह ग्रन्थ पिंगल शास्त्र की शिक्षा के लिये बनाया गया है। विषय प्रतिपादन कितनी सुन्दरता से किया है यह तो देखते ही बनता है। इस ग्रन्थ की यह विशेषता है कि पुस्तक के आरम्भ में कवि ने देव स्तुति और वन्दना आदि के पश्चात् अपने आश्रय दाता महाराजा बलवन्तसिंह का वंश वर्णन कर भरतपुर नगर, शहर महल हाथी घोड़े, तलवार आदि वस्तुओं का वर्णन बड़ी ही सुन्दर और उत्कृष्ट भाषा में किया है जो समय के ऐश्वर्य एवं वैभव का पूर्ण द्योतक है। सिंह और सिंहनी के सवारी रूप में महाराज की वीरता और यश आदि गुणों का सुन्दर चित्रण किया है। इसके अनन्तर ग्रन्थ का मूल विषय वर्णित है।

३—हितामृत लतिका —यह ग्रन्थ हितोपदेश तथा पंच तंत्र आदि के ढंग पर लिखा गया है। उपदेश ओजपूर्ण भाषा में बड़े सुन्दर ढंग से लिखे गये हैं। इन्होंने भी सूदन तथा सोमनाथ के समान ग्रन्थ के प्रत्येक अंग के अन्त में 'नवर-छन्द' की आवृत्ति की है जो इस प्रकार है —

जदुवंस को अवतंस नृप बलवन्तसिंह प्रवीन
तिहि हेत द्विजवर राम कवि अमृत-लता यह कीन।
यह मैं विचार समाप्त कीनो सुभग पहिलो अंग।
वर विमल मित्रन तू वर सुख मित्र लाभ प्रसंग॥

(४) शिखनख —इस ग्रंथ में शिख से नख पर्यन्त बाला रूप वर्णन किया गया है। प्रत्येक विषय वर्णन अपने ढंग का निराला तथा एक दूसरे से बढकर है। अलकारों का प्रयोग इतना सुन्दर और हृदयस्पर्शी हुआ है कि मुह से बरबस वाह वाह २ निकल पडती है।

(५) विजय सुधानिधि —यह ग्रंथ महाराज बलवन्तसिंह की आज्ञानुसार रचा गया था। इसमे महाभारत के कर्ण वध से लेकर दुर्योधन के ताल प्रवेश तक की कथा बडे अच्छे ढग से २६ तरंगो मे लिखी है। इस ग्रन्थ के प्रत्येक तरंग के अन्त मे इन्होने एक दुबई (हरिपद) छन्द की आवृत्ति की है जो इस प्रकार है —

श्री बलवन्त भूप व्रज रक्षक हुक्म रूप के दीना ।
तिहि हित यह कवि 'रामलाल' ने विजय सुधानिधि कीना ॥
वरण विलास ललित पद याम रुचिर वीर रस मायो ।
सजयपुर प्रवेश नृप कौ हित प्रथम तरंग बखायो ॥

(६) गगा पच्चीसी —यह पुस्तक काव्य चमत्कार से पूर्ण अलकृत है। इसमे केवल २५ छन्दो मे गगा के भिन्न २ अगो का वर्णन सुन्दर भाषा मे प्रभावशाली ढग से किया है।

(७) विरह पच्चीसी —यह पुस्तक इन्होने कविवर रस रासि के कहने से महाराजा बलवन्तसिंह के लिए लिखी है। इसमे गोपियो तथा उद्धव के संवाद और गोपियो का विरह वर्णन एसी उत्तम रीति से किया है कि विरह का मूर्तिमान स्वरूप खडा हो जाता है। अनुप्रासो का स्वाभाविक चयन इतने सुन्दर ढग से हुआ है कि 'रत्नाकर' का उद्धव शतक छायानुवाद सा प्रतीत होता है।

उपयुक्त ग्रन्थो के अवलोकन से महाकवि रामलाल अपने समय के सर्वोत्कृष्ट कवि ही नही वरन् लब्धप्रतिष्ठित आचार्य भी सिद्ध होते है। अन्य आचार्यों की अपेक्षा इनमें यह विशेषता पाई जाती है कि इनके ग्रंथो मे शिथिलता एव नीरसता किचित् मात्र भी दिखाई नही देती। लक्षणो तथा उदाहरणो मे कही भी दुरूहता नही आने पाई है। अलकार रस नायिका, एव पिंगल आदि सभी काव्यागो का सुबोध एव सरल भाषा मे वर्णन किया है। इनकी भाषा मे प्रौढता सजीवता एव मार्मिकता का समावेश है। शैली हृदय ग्राही तथा विद्वत्तापूर्ण होने के साथ २ सर्व साधारण के लिये भी बोध गम्य है। इनके प्रत्येक छद का रस परिपाक एव भावो की मधुर व्यंजना पाठक को रस मे निमग्न किये बिना नही रहती। उदाहरण लीजिये —

(अलंकार मंजरी से)
वस्तु उत्प्रेक्षा उदाहरण (दोहा)
लाल बाल के भाल पर मृग मद करत बिलास ।
सुधा लेन आयो सनी मनौं सुधानिधि पास ॥

हेतूत्प्रेक्षा लक्षणम् (दोहा)

जहाँ भावना और की, और निमित युत हेत ।
हेतु उत्प्रेक्षा' तहाँ कवि, रसिकन कूँ सुख देत ॥

उदाहरण (सवैया)

के लागी ग्रीषम की इन्हें घाम ही, के अलि काम की ज्वाल दहे हैं ।
के रंगरेज मजीठ रँगे पग, के मधु के मद छाकि रहे हैं ॥
'राम' कहै कि गुलाल भरे निन के ठिन काहू प छाह छए हैं ।
ए नैन-लाल के संग जगे तें किधौं सजनी दृग लाल भए हैं ॥

फल उत्प्रेक्षा लक्षणम् (दोहा)

फल लख के भाव सूं, तब कर जिहिं ठौर ।
तहाँ 'फलमु उत्प्रेक्षा', बरन रसिक बहोर ॥

उदाहरण (दोहा)

तव नैनन की सहस दृग होन हेतु मृग माल ।
विधि पलत दमत महो, निस दिन फिर विहाल ॥

प्रथम तुल्य योगिता लक्षणम् (दोहा)

हित अनहित यह एक मे, जहाँ लखाई होय ।
तुल्य योग' मे प्रथम को, भेद जानिये सोय ॥

उदाहरण (दोहा)

व्रजपति नृप बलवंत को, चहुँ दिसि जस यह हाल ।
अरि गुनियन कूं उमगि के, देत सदा वह माल ॥

भरतपुर वर्णन (कवित्त)

पुर चहुँ ओर घोर सोर कर नाचे मोर,
कोकिल कुहू कुहू के लागत सुहाई है ।
कदली कदंब निंब, अंबु जंबु तरु वर
निलप लवंग लता 'राम' छवि छाई है ।
हाट-हाट द्वार घर-घार बाट वीथिन मे
गुंजत सुभुंज अलि पुंज मधुराई है ।
नृपति व्रजेस के निवेस बसिबे के हेत,
राग भय रेनु के वसन वन आई है ॥

अग्नि वर्णन (कवित्त)

भूम भूम भभकि दमकि के चमकि जात
झरि भरि परत झपट भर ज्वाल की ।
शंभु की लटागी फेरि निज्जुन छटा सी बनी
अरिन बटागो तू पटा सी पटे व्याल की ।

नृप कर वामी वह न्यासी है महेस हू की,
दुति चपला सी है छलासी जिम छान की ।
ग्रमि ब्रजराज की कहत द्विज 'राम लाल
पावक छलामी है कला सी कि गों काल सी ॥

गण जाति—भुजग प्रयात

मगन्न यगन्न रगन्न पिछानौ।
कह 'राम लौ या मही दव जानौ ।
जगन्न नृप वम्य जाना भगन्न
मु मूद्र तमन्न मगन्न तगन्न ॥

चम्पक माला लक्षणम्

या कवि वारा पाद मिलाव
भामस तीना जारि बनाव ।
मा फिरि ग्रना म गुरु दाज
चम्पक माला छन्द हि कीज ॥

उदाहरण

श्री हरि देवा जो गिरिधारी
है ब्रज पूरो है रख बारौ ।
श्री बलवन्ता की ग्रब बारी,
बगहि रक्षा राखि मुरारी ॥

गजेन्द्र गति छन्द

द भगणा मुनि याद सब कवि या विधि चण सुधार धरौर ।
या दस तेरह ठानि विराम फिरा गुरु दा लव ग्रन्त रगौरे ॥
या विधिसा वृत म तुक चारि विचारि मभारि निहार भगौर ।
राम कहै यह छन्द सुनाय गजेन्द्र गती फनभक्त बरौर ॥

उदहरण

मारन के मुनि मोर ग्रली ग्रव हान दरार हिय बिच मरे ।
एक जरो विरहागिन सा फिर चातक पीव पुकारि क टेर ।
न दल माध ग्ररी वदरा यह मो ग्रगना नित ग्राय के घेरे ।
श्री ब्रजराज मिलाय द ग्राज परौमिन पाय परौ ग्रब तेरे ॥

मधुभार छन्द

नन ग्रष्ट राखि जा ग्रत भाखि ।
इम पद ठानि मधुभार जानि ॥

उदाहरण

यह शीलबन्धु लावण्य सिन्धु ।
नमो नगारि, राधा मुरारि ॥

हितामृत लतिका (छप्पय)

गजत दुव रद वदन मदन आभा सो धर सत ।
वदन चन्द मद कदन करत जन हित वन बरसत ।
पग्न चलत हर मदन अग्न हित मचलत रोई ।
जदन गग्न बुन रत्न होन यह बात न गोई ।
वह साइ गउरी नद जग वेद राम उर धर वन्हु ।
गुरु चग्न सीतल फन भव त्रिविध ताप वह परिहरहु ॥

दोहा

गंगा फेन मुलम्ब इव राजत ममि जिहँ सीस ।
सो कृपालु अनुकूल हो, सो प सिव जगदीस ॥
पाटलिपुर हरि मन्त्र नृप तिह कृत हित उपदेस ।
बाचा परम विचित्र कह नीति अनेक नरेस ॥
तिहि क मत अनुसार मैं नृप बजेस क हेतु ।
हित अमृत लतिका कहु सुमरि उमा वृषकेतु ॥

छप्पय

देवसरा क तीर वस पाटिलपुर सुन्दर ।
तासु सुदरसन नृपति रूप बन विद्या मन्दिर ।
पालन नित प्रति प्रजा तनय सम भाव न आना ।
हित बर्षा वर बरन भरन जग इन्द्र समाना ।
सो नृप इक दिन फिरत महि, अनायास श्रुत पथ हुय ।
अति विमल अमल सुनि वाक तें, सुनत भयो अरनाव दुय ॥

तोमर छन्द

सुनि न इमि सुन्दर वन भन । चित दै नृप बारहि बार सुन ॥
सुनि क हठि भूप गयो घर म । सुत मद बिलोकि दह्यो उर म ॥
सुनिया महिपाल मनोन्नरी । सुत पडित नासु न धम धुरी ॥
जिहि की जग जीवन जानि वृथा । जिमि लोचन अधन भाग वृथा ॥

स्रग्विनी

मैं जहा जाय कै हाल देख्यो वही ।
है बे हस मे बास बैठी मही ॥
बिम्बरी रागिनी ताहि सेव खडी ।
चित्रिणी है मनो चित्र ही म गढी ॥

देखि के दूर ते माहि वाली भली ।
दूतका ते कही याहि लाग्रो ग्रली ॥
तासु के पास मो लय दूती गई ।
देखि के माहि ताजीम तान दई ॥

छन्द नका

सुक मारिका ग्ररु देस सहज सुभाव की ।
मत राजनीति विचारि पर इनको न उचित नरम ॥
ग्रनि मृदुल ते निज हाथ को विधिहू न राखी जाय ।
तात कहो वब वचन विधि करि देम का मरमाय ॥
ग्रति ग्रधर्मी ग्रनि धम रनि ग्रति ग्रालसी कुल हीन ।
ग्रति काम वस मति थिर न जाकी मो नृपान मलीन ॥
तू तुच्छ मैत्र क्रूप की एक हम ही की जान ।
इह हेतु हम त कहत उह के विविध चरित्त बखानि ॥
वड वृक्ष की जग सेइय फल विमल छाया हतु ।
फल हीन होय तउ सुछाया सकल स्रम हरि लेतु ॥
वड होय बड के ग्रासरे लहि हीन मग होइ हीन ।
जिमि मुकुर म गजराज उज्जन लगन लघु ग्रति हीन ॥
डरि जान सब भय एक भग ही जानि समरथ राव ।
तिमि भय निभय प्रवल भय त ममक चन्द्र प्रभाव ॥

दोहा

तब मैं निनत यह कहा, वस यह इनिहास ।
कहन लग मात तब ह्व प्रसन सुखराम ॥

(नख सिख)

व्रजपति नृप बलवन्त कू परम रसिक पहिचान ।
रस शृगार बरणन करो गनपति गुरु उर ग्रानि ।
सो शृगार तरुनी विप बरनत बरन उमग ।
तान ग्रव कहि हा सकल सिख ते नख लौ ग्रग ॥

कपोल कौतिल (सवया)

के ग्रति पद्म म ग्राय परयो ढुरि, के गाभरयो विप हेम को वागर ।
के घनश्याम को राम कहै प्रतिबिंब सिंगावन सौतनि गारन ।
के चतुरानन चारु चितेरे की लखनी को लिखना लग्यो श्यामन ।
गात कपोल प नाहि तिया तिल, गहु ठयौ ससि को करि ग्रासन ॥

त्रिजय सुधानिधि

छप्पय

मुख प्रकास ससि मोर पक्ष अवतंस परम प्रिय ।
चारु चरण कौस्तुभ उदार उरवर सोभित श्रिय ।
गोपिन के दृग कमल काम समुचित अर्चित तनु ।
गोप सघन के मध्य बसत जनु लसत कुसुम धनु ।
गावत बजात मुख वेणु सुरभाष्य सरस सगीत लय ।
अवतार उदार अपार छवि जयति जयति श्री कृष्ण जय ॥

दोहा

नारायन नर वर वदन वाणी व्यास मनाय ।
रच्यो ग्रंथ भाषा सब ब्रजपति आयसु पाय ॥

छंद प्रमाणिका

सुभीम फेरि सैन म । भयो जुभार सैन म ॥
गरा सुरा बुझावरे । वही तुमल्य आवरे ॥
नव मभार सूरमा । सुसस्त्र धारि ऊरमा ॥
बजाय बाजने भर । जु पट्टु सैन म भिर ॥
हिन अरी गिर रथ । किते जु सस्त्र स विथ ॥
तुमार पुत्र माद द । लर उदार नाद र ॥
चढ़े तुमार धार सो । उनट्टु पट्टु जार सो ॥
सुधार सस्त्र जे लए । जुभार मामही भये ॥
तुमार पुत्र न भगे । जु पट्टु आवत लगे ॥
सुकाम राय म गई । जु पॅच तान कं गई ॥
निरोग यम है वही । सुरव्य त परयो मही ॥

छंद आर्या

यह धावत अर्जुन है हतम । सम आस कछू न रहे चित म ॥
हमरो दल कं धन प्रान सब । नह लचन रथ्य जुभार अबै ॥
मन उल्लघन कं पथ्य तथा । निज वारिधि ज्यो मरजाद जथा ॥
गज व्याम नद्यो सुन सैन घनी । लखि बैहरि नार गजार सुनी ॥
तब आश कर नृप मान्य न बरस सपरिमित बान ।
चहु ओर तें दल ग्रस्यो दमकन भानु किरन समान ॥
सर दस चहु भाग महीपति पठ्यु दल के भार ।
सखि बस तारो सरस सो पचार भर सधीर ॥

तट वासी बगन

छाँडि कै सुराज साज माजि ग्रब धूतन की
पूतन की नेह गेह ग्राम जग मोर की ।
'राम' इह भाँति नर नायन की पाँति बहु
जहँ तहँ भाँति तीरथ है सुधा घोर की ।
पीवत ग्रघाय न्हाय धाय देव-सरिता म
दुरिता नसाव त दिखाव गति नाक की ।
कूदत फिर धर बिधनन क माथे पाय
गगा तट बासी कर हामी सुरनाक की ॥

सवया

मातु ! तज्यौ पन पापन घात को बान यहै जग लाग धरगो ।
इद्र बिरचहु के पुर म हरि के घर म ग्रति सोर परगौ ।
तो मुख नक उदास भये जन 'राम' निराम ह्व रोय मरगौ
मा निरधार उधारि हौ जो न तो या कलि कौन प्रतीन करगौ ॥

या छिन माक बिदारन को सुरलाक सौ सभु जटान म ग्रावत ।
राम कहै जग दीनन के हित सीस चली सिब सीस सा धावत ।
नारद सारद सेसहु ते जस जानत नाहि सकयौ करि गावत ।
ग्रब ! स्वरूप तुम्हारौ यहै निरलाभन के उर लोभ बढ़ावत ॥

बायु सखा सुत बधु कौ बाहन ता ग्ररि जीवन की सुख दनी ।
ना सिर राजत तासु भयकर जासु प्रिया जग ग्रानद सनी ।
जा पितु के सुत के सुत को सुत तासिर मडन नाक नसनी ।
श्री बनबत क सीस सदा बस राम कहै सोइ मातु त्रिवनी ॥

विरह-पचीसी

उद्धव गापी सवाद (दोहा)

मैं ग्रनक कविता रची परिचि पचि मति ग्रनुसार ।
उत्तम मध्यम वा ग्रधम नृपन कही न्व बार ॥
तब मा मन चिंता चली, परी कविन क पास ।
पर निरन मो मन कही तब बानी रस रास ॥
नृप कछु जान नहीं, नृप के उर की बान ।
गोभन है बनबत श्री सुनन बिरह की घान ॥

या त तू अब बिरह रच प्रिय हमार मन मान।
हरि है तोर दरिद्र मुनि ब्रजपति भूप निदान॥
सुनि कविराजन के वचन, मो कहँ भयो अनद।
विरह पचीसी यह रची भक्ति सुगुन गुविंद॥

कवित्त

स्याम के सखा हू आयो जानि द्विज 'राम कहै
धाम धाम पास इमि वचन सुनाय कै।
जब ते गये है ब्रज छाँडि ब्रजराज पुरी
तब ते भई है आज खबर पठाय कै।
मान ते दिखाय ताय लाय जमुना के तीर
मंगल गाय बीर सुखुद बुलाय कै।
बिनिया न जाओ लाल बनिया लिखी है कहा,
छतियाँ जुडाओ यह पतिया बचाय कै॥

इन्द्र हू के धाम को सुधाम अभिराम राम,
पाँव हू धर ना मग मान तजि भाजगी।
तन तजि द है तऊ न जहै ब्रज छाँडि कहू
ते के रज रूप अग स्याम के बिराजगी।
हमरी तुवा की ऊधौ दुदुभी मढाय है प
भूप जान सूधी पाथ, प्रेम ही को छाजगी।
नाजगी न मान सुर साजगी न आन वस्तु
गाजगी निसान वा'ह वा'ह कहि बाजगी॥

सवैया

जाय के द सिदि ग्रौसधि ऊधो जु वा सुवजाय जब निधि पाग्रो।
स्याम सब ब्रज के अभिराम है काम कहाय हा जाग जताग्रो॥
आनें जू जान रहो चुप कै कब के तुम ग्यान निधान कहाग्रो।
बूर हमैं अवरूर जराय गयो तुम तापर अब नौन लगाग्रो॥

कवित्त

जार परी रावरो अनोखी रीति 'राम द्विज,
रस धन स्याम सरसाय पाय राजहू।
मो मन तुम्हारो यह हा मन हमार गात,
विरह हुतासन सुवासन समाज हू।

याही ते बिहारी नन्द मगन वारी भये
भारी भारी विपति बिडारी जिन ग्राज तूँ ।
अहो ब्रजराज ! तुम मागन चहौ जो हम,
धारन कियौ हौ गिरिराज जिहि काज तू ॥

सवया
भोग लिखे कुबजा तनकू ब्रजबासी वियोगहि तू सिरजाय ।
राम कहे ते विथा टरि है मरि है जा वृथा करि है पछिताय ।
या जग म हुए नही घन घरि देही लई बपु पूरब न्याय ।
लाल तू प्रेम कहा अब ऊधब भाल के अक मिटै न मिटाये ॥

अब कुबरी दुबरी क नजि पाय तू गोपिका नाथ कहाय जू ।
मुख पाइय तोला निवास करा फिर जादव राम दुहाइय जू ।
मन भाई जो प्यारे करी मगरी कछु नेह को नातो निभाय जू ।
जिन नाइये बेर तिया हरत ब्रजराज पिया ब्रज आय जू ॥

कोकनद लोकमी ग्रलीक उपमान वर
दिपत महल महा वचन क सभा है ।
जान गड पायन निछौना मखमल के जु
मूला गिवत बन फिरत अचभा हैं
कहै कवि राम बलवत भूप तेरी धाक
धीर ना धरत ग्ररि-दारा दुनि दभा है ।
रनि जानी काम काम माहिना मुनिन जानी,
इन्दु जानी रोहिनी सुरिद जानी रभा है ॥

५९—रसरासि ये महाराज बलवतसिंह के दरबारी कवि थे। इनका कविता काल सम्वत् १८८० से १९०० वि तक माना जाता है। इनका कोई ग्रन्थ तो उपलब्ध नहीं है किन्तु फुटकर कविन अवश्य मिलते है। रसरासि अपने समय के एक लब्ध प्रतिष्ठित कवि थ। महाकवि रामलाल आपका गुरुवत् आदर करते थे। इन्हीं की प्रेरणा के फलस्वरूप कविवर रामलाल न महाराज बलवतसिंह के लिये विरह पचीसी नामक ग्रन्थ लिखा था। इनकी कविता अत्यन्त सरस सरल प्रभावो त्पादक एव मर्मस्पर्शी है। ब्रज भाषा के प्रसिद्ध कवि सूरदास की सी विरह वेदना आपकी कविता म परिलक्षित होती है। इनकी कविता के उदाहरण देखिये —

कवित्त

अब कहा पाइय उपाइ न उपाइय हू
वह रसरासि' केलि जन की बजायवी ।
चातुरी चनाग्यो न वाने हू बुलाइवी जू
मानत हिय म वाकी मनहू मथायवी ।
रूप रसमानि चौप चाप रस सरन प्रति,
मन की हरन चटकीली चाल आयवी ।
काहू मा जताइबा न वेदन बनायवौरी
रहस्या नन तायवी कि मन पछतायनी ॥

रूप ही निा की भयो नयो जमधारी जिन
मारि डारी नारी ऐसी निठुर निहारयो है ।
बच्छ मार्यो बकी मार्यो अजगर हू मार डार्यो
हय हू को मारि खरहू को मारि डारयो है ।
मन मानि भूल्यो फूल्यो फ्यो रसरासि यहा,
ऐसा इन कीनों मा तो मदन निमार्यो है ।
मामा माग्व का पाप मुकुट उताग्व का
इनगी मिवनी ताम तन का पवार्यो है ॥

सवया

जिनके रट भ्यन ही का मन, प्रम चेरी भई उन पाइन की ।
निरमोही नि हु नरमा नत कहा जिनक चल नाहि चवाइन की ।
'रस रासि हम पहिचाना कहा, तुम जानन हो गति गाइन की ।
इसम रस नीन रमाइन की, सु कगी तुम नीन कमाइन की ॥

६०—नथुरामसिंह —य बुन्देर के निवासी और जाति के अग्रवाल वश्य थे। आप महाराज बलवन्तसिंह क समय म हुए थ। इनक फुटकर छन्द पाय जात हैं। इनका कविता-काल सवत् १८८० वि० स सम्वत् १९०० वि० तक पाया जाना है। आपकी कतिपय रचनायें उदाहरण स्वरूप प्रस्तुत की जाना हैं—

दोहा

नाग वसी रोहिनी, आठें औ बुधवार ।
मद रत बरसा मर्भ लियो कृष्ण औतार ॥

कवित्त

मान्द जनायो पितु मातु हू सुनायो न्दिव,
रसायो दौर आनद अपार है ।

भादों का अंधयारी तिथि अष्टमी विचारी
　　सुख सुंदरता भारी बुध रोहनी उदार है ।
ताही समै सारे रखवारे हरकारे भारे
　　सोये सुख पाय सुन तारे औ किवारे है ।
जै जै विरजेस धारे दुंदुभी धकारे दरे
　　धय धय आज कृष्ण नीको अवतारे है ॥

तीन लोक ध्यावे ताहि पालने झुलावे रानी,
　　माखन खवावे पय प्यावे महा मोद में ।
चुकर चुकर घूंट नैन घुटुअन चले
　　पल पल निहारे अति आनंद विनोद में ।
देखवे कूं आई सब महलन लुगाई धाइ
　　गावत बधाय हिय पाये महा मोद में ।
बालक बनाम नाम परमेसुर दिखाम,
　　जग जाकी गोद में सो जसुधा की गोद में ॥

६१—भोलानाथ—ये जाति के कायस्थ और महाराजा बलवन्तसिंह के समय में प्रसिद्ध दीवान थे। कविता में ये अपना उपनाम शंकर शरण रखते थे। इन्होंने शिवपुराण का भाषानुवाद किया है। इनका कविता काल सम्वत् १८८० से सम्वत् १६०० वि है। इनकी कविता का एक उदाहरण प्रस्तुत है—

हिंडोला गौरी झूलत पिय के संग ।
　　सब सखियां मिलि झोटा देती उड रही नान तरंग ॥
निपट रहे झूला में दोनों मानों एकहि अंग ।
　　संकर सरण पिया छवि निरखत, बरस रह्यो है रंग ॥

६२—ललिता प्रसाद—ये महाराज बलवन्तसिंह के समय में दीवान थे और कविता में अपना उपनाम रामसरण लिखते थे। इनका लिखा हुआ कोई ग्रन्थ तो उपलब्ध नहीं हो सका है, केवल फुटकर पद मिलते हैं। इनका कविता काल सम्वत् १८८० से १८६० वि० ठहरता है। उदाहरण देखिये—

देखो आज नन्दलाल ।
पहिरे फूलन की माल ।
संग लिए गोपी ग्वाल ।
यमुना तट विहारी ॥ १ ॥

सीस मुकुट अलकनि छाज।
अधरन पर मुरली राज।
मंद मन्द मधुर बाज।
कुण्डल छवि न्यारी॥ २॥
लाल गात मृदु कपाल।
अलक कुटिल रही डाल।
भानु भाल कर विसाल।
अँखिया रतनारी॥ ३॥
निरख निरख लाज काम।
रमन मन में आठों याम
रासरंग त्यागी श्याम।
ब्रजपति गिरधारी॥ ४॥

६३—विहारी—इनका पूरा नाम श्री महन्त विहारीदास था। ये सन्त कवि भरतपुर दुर्ग स्थित विहारीजी के मन्दिर में महन्त थे। इनका कविता-काल सम्वत् १८८० से सम्वत् १९०० वि० ठहरता है। इन्होंने भक्ति में विह्वल होकर अनेक राग रागनियों में भगवान श्री कृष्ण की लीलाओं का सुन्दर एवं सरस पदों में वर्णन किया है। आपकी भाषा अत्यन्त सरल और चलती हुई है। इनकी रचनाओं में भरतपुरी भाषा की छाप स्पष्ट रूप से परिलक्षित है। उदाहरण लीजिये—

राग काफी

आज नाच री नन्द को मटकि मटकि।
मेरो जियरा हरयो यान लटकि लटकि॥
लट पर पाग मुरलि जाकी चटपट।
गोरी गात मुख चटकि चटकि॥
चरपटी नैन कहै मुख नट पट।
गोरी नारि यान लटकि नटकि॥
आज नाच री०

अब मैं नीकी राग बान मुकुन्दा।
धुधुमन नाम बान घुंघरार चितवनि आनन्द कन्दा॥
मनन ख्याल सैनत चितवन जसुमति गाद गुविन्दा।
मटुला किंकिनि कंकन नूपुर पग पंजनि गति छन्दा॥
अंगुली पात स्याम तन सुन्दर छवि मन्दिर ब्रज चन्दा।
नासिक कन्न तुनार नाद में दतुना मुनि मन फन्दा॥

सुमिरत सम महेस सब मति धरत ध्यान मुनि वृन्दा ।
व्रज दूलह चिंतामनि स्वामी कृपा करो नंद नन्दा ॥

६४—बलदेव —ये जाति के खंडेलवाल वैश्य और भरतपुर के रहने वाले थे। इनके गुरु का नाम उद्दाम मिश्र था। इनका कविता काल सं० १८७० वि० से १६०३ वि० तक है। पता चला है कि ये सरकारी नमक के महकमे में पदाधिकार थे। इनके दो ग्रंथ देखने में आये हैं —(१) विचित्र रामायण और (२) गंगा लहरी।

विचित्र रामायण हनुमान नाटक का एक सुन्दर अनुवाद है। इनकी कविता हृदय स्पर्शी सरस एवम् प्रसाद गुण युक्त है। थोड़े से उदाहरण नीचे प्रस्तुत किये जाते हैं —

कवित्त

पूरन मयंक के समान स्वेत अंग ज्योति
उज्ज्वल सुधा से स्वेत अमर उदाम है।
पंकज पतार स्वेत आसन उदार जाके,
वाहन मराल पै बिराज सुख धाम है।
पुस्तक धारे कर बेद उचार सुख,
सारे काज जन के सकल गुण ग्राम है।
वीना बजाय सब सुख सरसाय वहु,
तासी सारदा के पद कमल प्रनाम है॥

भरतपुर दुर्ग वर्णन (छप्पय)

दुर्घट दुर्गन माहि दुर्ग इक दिपत अवनि पर।
विदित भरतपुर नाम तासु महिमा उदार वर।
उन्नत बुर्ज अपार चारु विधु मंडल परसत।
चहूँ दिसि लहर गंभीर नीर निरमल जहं दरसत।
वह कुसुमित वन उपवन सघन, त्रिविध पवन संचरत जहं।
उनमत भ्रमत आमोद बस मधुप वृन्द गुंजरत जहं॥

गंगा लहरी (कवित्त)

ह्वै के निसंक एक हूक ते जराई जान
जघन के जोर होत जल निधि नाख्यो है।
मारि मारि राक्षस बिदारि वन रावन को
अक्षहि संहारि फल आसारम चाख्यो है।
मानो है विसल्या जान राम प्रान लक्षन के,
लंकपुर जारि सब भ्रम अभिलाख्यो है।

ऐसे हनुमन्त जू को पाट ताहि देतन सो,
रामसिन रमी एक चित्र निरख राख्यो है ॥

तेरे आसरे मैं वा पाय के विसाल मग
बढ्यो गज जात या मैं नासा कहत भव ।
याही ते कृपानिधि कृष्ण की अरजना करी,
वाहू को न अरजनि मानी कछु राह देव ।
जो पै कहूँ या मर्म उचारना रहौगी नाहि,
ता मैं निराधार नहिं दूसरा अधार भव ।
सुर छिन म्याय दनि रोनना दिखाय रहौं
कौन के अगारी जाय रुदन करेगा अब ॥

६८—नवीन—इनका पूरा नाम गोपालसिंह था किन्तु 'नवीन' उपनाम से अधिक विख्यात थे। ये महाराज बलवन्तसिंह के दरबारी कवि थे। इनका कविता काल सम्वत् १८८० से १९४० वि० तक माना गया है। इनके जो ग्रन्थ देखने में आये हैं उनसे पता चलता है ये उच्च कोटि के अनुभवी कवि थे।

नवीन जयपुर निवासी 'ईस' कवि के पट्ट शिष्य थे। उन्हीं के द्वारा इन्हें 'नवीन' उपनाम मिला था जिसके सम्बन्ध में उन्होंने इस प्रकार लिखा है —

जानत हो नहिं जानत अक्षर, हुती चित की वृत्ति मूढ़ता भीनी ।
सो निज दास के नाम ख्याल बनावन जोग हरे हरि कीनी ।
ताहू पै नाम धरायबे को साचन नाम धर्यो तब या सुधि आनी ।
श्री गुरु ईस प्रवीन कृपा करि दीन को छाप 'नवीन' को दीनी ॥

उपरोक्त पद्य से स्पष्ट हो जाता है कि आपका 'नवीन' उपनाम कल्पित न होकर गुरु प्रदत्त है। ये भरतपुर के निवासी थे। अब तक आपके निम्नलिखित चार ग्रन्थों का पता लगा है। (१) प्रबोध रस सुधा सागर (२) नेह निधान (३) रंग तरंग (४) सरस रस

प्राप्त ग्रन्थों में 'प्रबोध रस सुधा सागर' कवि की उत्कृष्ट रचना है। इसे कवि ने छः तरंगों में विभाजित किया है। काव्य के विभिन्न अंगों की सरस एवम् विशद व्याख्या करना इसकी विशेषता है। इस ग्रन्थ में एक महान् विशेषता यह है कि कवि ने एक विषय को लेकर पहले अन्य कवियों की कविताएँ दी हैं और फिर उसी विषय पर अपनी रचनाएँ प्रस्तुत की हैं। इससे एक तो अन्य कवियों की विषय पर कविताएँ एक स्थल पर मिल जाती हैं और दूसरे भिन्न भिन्न प्रकार से एक ही विषय पर अगल और विचारधारा का तुलनात्मक

अ-ययन हो जाता है। आपकी सुमधुर कविताओं के उदाहरण नीचे प्रस्तुत किये जाते हैं —

प्रबोध रस सुधा सागर

दोहा

जुगल चरन ब न्दन करौ, सब नेवन समुदाय
ज्यो हाथी के खोज मे, सब के खोज समाय ॥
प्रेम मगन बिहरैं [illegible] दिन, राधा न न्दकिशोर ।
मोउन ध मुख चन्द के जाउन नन चकोर ॥

नन वणन (कवित्त)

नीरजनना ताविज की तीर त तरन तारि
जाती मिल हाती जो न नासिका अगावी म ।
खजर अजाव अरविन्दन की आभा पर,
भूमन गजब सो न एनिक सराबी म ।
मानी की जानी निल तूल ना प्रवीन तुल,
तालन नवीन चख पल की दराबी म ।
मीनन के मीन करि भौरन की भौर देत
विज विज खजरीट खिचत खराबी म ।

भूमन चलत मद धूमत खुमारी नन
जानक कलित साभा ललित सुभाल की ।
श्रम क कमार दख दरन्द बन्द दूनी
परन्द दुमार म पलट लाय माल की ।
रा त नवीन रेख अजन अधर लर,
मानिन की मान की बराबर न माल की ।
मानी औ न्ई सा जाल जानी सा निसानीहू की
न आय निसानी क अगूठी नग लाल की ॥

विरहपुरा क विरहीन प सवाल द द
कर न्वनरफी भई का जान नील है ।
वाकिना गवाही भरं प्रेम के मुकदमा म
दावा को सबूत कर वानन अपील है ।
न्मिरी मजामिन की जागी भये फून फून

गुंज की 'नवीन' कुंज कुंजनि दलील है ।
रति-रन माहि अदालत लसत ताके,
गजवार राजत बसत कौमा नवीन है ॥

आँख मिचौनी (कवित्त)

और खेल खेलत मो ता खेलि है जवा की माह,
यहा लौं मलीन उपहासन का पैगी ।
कौतुक 'नवीन' कौन लाग तू सुजान निज
समक सुजान कध मा न अब अलौगी ।
छतिया छुवाव पीठ ठागै द गुदी मे नीठ
छाडन कहे ढीठ कमा नूर झलोगी ।
जोबन म न्हैं कटि भीचना नरा न्थ्या
ना मग कन्हैया आँख मिचौनी न खेलौगी ॥

सवैया

नन्द यशोदा के अवा के मुख्य सौं आछी सपूत भयो जमुना के ।
गाउ की गाय की हार की प्यार की नेकहु लाज नहीं सगि याक ।
ठौर कुठौर ठठोलिन बालिन लागि 'नवीन' छली छवि छाक ।
या गन नौं न मिले उस कौ यह सावन म अग चीर क ताक ॥

६६—बद्रीनाथ —य कवि जाति के गौड़ ब्राह्मण और भरतपुर के निवासी थे। इनके पिता का नाम गिरिधारीराम था। आप संस्कृत और हिन्दी दोनों के अच्छे विद्वान् थे। आपका लिखा हुआ केवल एक ग्रन्थ 'रास पंचाध्यायी' देखने में आया है, जो इन्होंने संवत् १८६६ वि० में लिखा है। रचना सरस एवं सुन्दर है। इनकी कविता में कतिपय उदाहरण प्रस्तुत किये जा रहे हैं—

छप्पय

गनपति गुरु गोविन्द गिरा गिरजा गंगाधर ।
गिरि गंगा गोपाल, गाय पति गोपनि गिरधर ।
व्यास विबुध त्रिभुवन और कुल विद्या भाजन ।
सनी सूत सनकादिक, सुखद सुक सम सनातन ।
रसिक और रस आदि सग परम आगरन जे धरन ।
तिनकी पद रज क रहौं विमल सब माया हरन ॥

दोहा

समरसुरी समरी सरो करगी भमरी और ।
मुरली धुन परन्त जे महि कसी सुवन बहोर ॥

जहा परम उज्ज्वल सीप सज्जल जनित मुक्ता माल हैं ।
चहु तीर सारस सारिका सुर कवि कुक मराल है ॥
वर चक्रवाक चकोर चातक, कोकिला कल कूल है ।
रसपुज सजन मजु कुसमित भृग गुज समूल है ॥
अस वरनि निमि ता तीर की वन ईस वृन्दा विपिन है ।
अनि मघन जोजन पच अचित जुगल मजुनि धरनि है ॥
तहा ललित लूम लवग लतिका परम मरसत वान है ।
अनि चारु चन्न तन्न जालर नीर वरचित गान है ॥

६७—पद्म —इनका निवास स्थान भरतपुर मे वुद्ध की हाट था। पद्म कवि महाराज बलवन्तसिंह क दरबारी कवियो मे स थे। इनके कुछ फुटकर छन्द पाये जात हैं किन्तु साधारण श्रेणी के हैं। इनका कविता काल स० १८८० स सम्वत् १९०० वि० तक ठहरता है। उदाहरण प्रस्तुत है —

कवित्त

कसो व्रज आनँद भयो है रामचन्द्र कसो,
कृष्ण कस उत्सव को महा सुख लह्यो है ।
करन की सी कीरति और बलि की सी यश करी
इन्द्र को सी नृत्य सा तुम्हार नित्य रह्यो है ।
राजा बादशाह अग्र जहू सराह सब,
'पद्म कवि आपको ही जाग अस कह्यो है ।
भूप व्रज इन्द्र महाराज बलवन्तसिंह
सुजस बधाई को समुद्र पार भयो है ॥

सारग धनुष धारि सुदर्शन चक्र धारि
कौमोदक गदा धार दुख दरिवो कर ।
नन्दक खडगधार पाँचजन्य सख धारि
'पद्म धरि सपत समृद्धि भरिवो कर ।
और हू अनक आयुधन की सु-अज्ञाकर,
भूतल त सत्रु के समूह हरिवो कर ।
माजी श्री अमृतकौर भूप बलवन्त जू की
सदा राम रमानुज रक्षा करिवो कर ॥

६८—गोपालसिंह —ये महाराज बलवन्तसिंह की रानी राजकु वरि के ड्योढी

वाल थे। इन्हीं महारानी के लिए इन्होंने पद्मपुराणान्तर्गत 'कार्तिक महात्म्य' के कुछ अध्यायों का अनुवाद किया था। शेष अध्यायों का अनुवाद चौबे जीवाराम के पुत्र नरसिंह (नरहरि) ने किया है। इनकी रचना के कुछ उदाहरण प्रस्तुत हैं —

दोहा

गिरिजा नन्द मन आर कर, नैन भई या माप ।
ना कारण मय देव गण वृक्ष मय दिन आप ॥

तब ताहि ते अश्वत्थ रट हरि सबु रूप मय मही ।
तुम सुनो सकल मुनीस हो तब सून लिपि न या कही ॥
पुनि सब दिन के माहिं पीपर को सुस्पर्शन कीजिये ।
सदा सनीचर वार कू कबहूँ न ताको छीजिये ॥

सवया

कृष्णाग्नि ते उत्पत्ति भयो, बहु मंगल कारक पाप को हारी ।
भक्ति समेत कहैं रु सुनै मन वांछित पावत तें नर नारी ॥
पापनि ते छुटिकैं सुत मित्रन, सब निमाल है बठि सुखारी ।
जान परत हरि सालहि को तिनकी कवि कीरति गावत भारी ॥

श्री बृजराज बलवन्त बहादुर, तिनको सुजस सुहायो ।
राजकुंवरि तिनकी पटरानी तिन चरनन चित लायो ॥
तिनका ड्योढ़ीवान राम निज नाम गुपाल कहायो ।
तासु भ्रात अग्रज के हित माधव चरित बनायो ॥

६६—रामकृष्ण—ये भरतपुर के रहने वाले तथा महाराजा जसवन्तसिंह के दरबारी कवि थे। इनका कविता-काल संवत् १८८० वि० से संवत् १६०० वि० तक पाया जाता है। इनका कोई ग्रन्थ तो उपलब्ध नहीं हुआ है परन्तु कुछ फुटकर कवित्त अवश्य प्राप्त हुए हैं। इनकी रचनाओं के कतिपय उदाहरण नीचे प्रस्तुत किये जाते हैं —

कवित्त

जिनने को मान सुन मार सुन सुर साधुन को,
लीनो अवतार ब्रज माँहि आनि नीको है ।
रचकी समन वसुन्ध पर हेतु बहु
भक्तन के हेतु ही कृपा करनाम कीन्हौं है ।

गोपी ग्वाल गाय गाय वच्छ प्रति पाल भल,
भूमि को उतारो भार दुष्ट मद छीन्हा है।
सोई रामकृष्ण महाराज बलदेवजू को
सकल मनोरथ को सिद्ध फल दीन्हो है॥

सदा आय सर्वोपरि सुख के समूहन का
श्री जी की कृपा त विधिवत विलम्यो करो।
सकल समृद्धि अष्ट सिद्धि नव निद्धि वृद्धि
सम्पत समेत त खजान म लम्यो करो।
विभव सु तज औ प्रताप त्यो सुजस स्वच्छ,
श्राग और आनंद अमूर मरम्यो करो।
आनद के कद रामकृष्ण चद-कुल-चद
श्री ब्रजेंद्र बलवन्त हिय म वस्यो करो॥

७०–धनश –य कवि जानी के ब्राह्मण, और भरतपुर के निवासी थे। इनके पिता का नाम चन्दराम था। इनके दो बडे भाई हीरालाल और मुकद भी बडे विद्वान् एव कवि बतलाय जात हैं। धनश हिन्दी और सस्कृत के प्रकाण्ड विद्वान थे। ये महाराज बलवन्तसिंह के प्रसिद्ध दरबारी कवि थे। इनका कविता काल स० १८८० वि० स १९०० वि० तक पाया जाता है। इनकी केवल फुटकर रचनाए मिलती है। उदाहरण देखिए —

गोवरधन गिरधरण धीर धर दुख विमोचन।
नन्दराज युवराज रुचिर राजीव विलोचन।
सकट बका बक कस केसि अभिमान विमरदन।
खल भुजग फन रग भूमि निरतन विध वधन।
कन्द रूप रल दलन वर रास रसिक रस रूप जय।
गोकनम गोपाल ज गोपीनाथ जगनाथ जय॥

७१–व्रजचद – य भरतपुर क निवासी तथा महाराज बलवन्तसिंह क दरबारी कवि थ। इन्होंन कवि कुल-चूडामणि कालीदास क शृगार तिलक का अत्यन्त सुन्दर पद्यानुवाद स० १८६५ वि० म महाराज बलवन्तसिंह क लिये किया था। कविता क कुछ उदाहरण प्रस्तुत किय जात हैं —

कवित्त

पण्डित प्रवीन मन रम्य कवि कालीदास
कर नाय त्या सर प्रथम को सार है।

तन्नी प्रवीनन के भेद बहु भांति जान,
फिरि प्रगटायो यह सूक्ष्म अपार है।
श्रीमत ब्रजेन्द्र महाराज बलवन्तसिंह,
तिनकी कृपा सो यह रस विसतार है।
पंकज चरन सम राधिका चरण ध्याय,
कीन्हो 'व्रजचंद' ग्रन्थ निनक शृंगार' है॥

याहू है मृणाल दोऊ मुख अरविन्द बसौ
सुन्दर स्वरूप ही को लीला जल लीनो है।
पुलिन नितम्ब द्वन्द नैन है नवीन मीन
कुल वाल जान मा सिवाल परवीनो है।
भनि 'व्रजचंद' त्रिवलीन की तरंग उठै,
उरज उतगन को चक्रवाक कीनों है।
काम बन शोध निज तरन कों तीय तन
प्रजा के करया ने तनमा रच दीनो है॥

७२—सुन्दरदास—ये जाति के ब्राह्मण और भूडा दरवाजा डीग के निवासी थे। इनके वंशधर अभी भी विद्यमान है। इनका कविता काल स० १८८० से १९०० वि० माना जाता है। इन्होंने कोई ग्रन्थ नहीं लिखा है, केवल फुटकर कविता ही देखने में आती है। उदाहरण के लिए इनका एक पद प्रस्तुत किया जाता है—

प्यारी नया छाव हमारी। टेक
जित मग धेनु धरत पग भूपर सोई बाट हमारी।
मागन मिसरी अरु दधि व्यंजन सब उपभोग तुमारी।
सुन्दर स्याम चढ़ कदमन ऊपर टेरी नाम पुकारी॥

७३—नरहरिदास—इनके पिता का नाम जीवाराम चतुर्वेदी था और ये भरतपुर के निवासी थे। महाराजा बलवन्तसिंह की पटरानी श्री राजकुँवरि के लिए इन्होंने 'कार्तिक महात्म्य' नामक ग्रन्थ की रचना की थी। इनकी भाषा बहुत ही साधारण है, और शैली में किसी प्रकार का चमत्कार एवम् विशेषता नहीं पाई जाती है। पूरवर्ती कवियों की भांति स्थान नी प्रत्येक अध्याय के अन्त में एक छन्द दुहराया है जिसके तीन चरण वही रहते हैं तथा चतुर्थ चरण विषयानुरूप बदलता रहा है। वह छन्द इस प्रकार है—

श्री ब्रजपति बलवन्त बहादुर, तिनको सुजस सुहायो ।
राजकौर तिनकी पटरानी, तिन चरणन चित नायो ।
चौबे जीवाराम तनय सुभ 'नरहरि' नाम कहायो ।
ताले श्री ब्रजराजकुवरि हित 'माधवचरित' बनायो ॥

इनकी कविता के कुछ छन्द उदाहरणार्थ उद्धृत किये जाते हैं —

छन्द भुजंग प्रयात

रहे देव शर्मा निपुत्री सदा को
　　हुतो चन्दशर्मा नाम सिष्य ताको ।
तब ताहि तू व्याह दीनी जु प्यारी
　　भयो ता सम सोहि को मोद भारी ॥

सोरठा

ताहि पुत्र सम मानि, चन्दर शर्मा शिष्य को ।
वोहू पिता सम मान तिन्हे तहा सेविन भयो ॥

सवैया

यों तब कृष्ण कहें सुभ नम सु पूरब जन्म सुन्यो हरसानी ।
देखी विभौ परमेसुर की परनाम करी मन मे मुसिकानी ।
तीनहु लोक अधार प्रभू तिन सौं सतभामा कहै पटरानी ।
और कथा कहिये हम सो प्रिय यो उचरी मुख सो वर बानी ॥

७४—लाल — ये जाति के जाट और भरतपुर के निवासी तथा महाराजा बलवन्तसिंह के दरबारी कवि थे। लाल इनका उपनाम है। इनके यथार्थ नाम का अभी तक पता नही लग सका है। सम्भवत इनकी अनेक कृतिया हो किन्तु हमे अभी तक 'लाल ख्याल' नामक रचना ही उपलब्ध हो सकी है। इनकी रचनाओ म विनोदयुक्त हास्य का पुट पर्याप्त मात्रा म पाया जाता है। इनकी रचनाओ मे सर्वाधिक विशेषता यह पाई जाती है कि लाल अथवा मुनिया शब्द से इनकी कोई भी रचना अछूती नही बची है। लाल और मुनिया को माध्यम मान कर कवि भौतिक और आध्यात्मिक तत्वो पर मनोरजक ढग से प्रकाश डालता हुआ अपनी प्रतिभा का परिचय देता है।

इनकी भाषा टकसाली है। भाव व्यञ्जना इतनी अनूठी है कि कवि की सराहना करते करते तृप्ति नहीं होती। इनकी सुमधुर रचनाओ के कतिपय उदाहरण प्रस्तुत हैं —

कवित्त

एक बनो गधहा एक बठ गयो पालकी मे,
धोरा बन एक एक जाग अग लीनो है ।
एक हाथ पायी लै बार बार थायी कहै,
एक देत ताल सुर साजन प्रवीनो है ।
एक जानि रीतन को सगरो प्रवासें नीत
फार टारें कपरा इक और भेम कीनो है ।
लेतेंई नाम सुख काम के अराम वारे
देखो ब्रजराज ने मडान ख्याल कीनो है ॥

वृद्ध वल पाय एक पाजरा बनाय लायो
अनि ही महीन तुरो नीलम ते टाली को ।
जोवन के जार जग जगमगात जेवर सौ,
ताम जोन हान आय लाल ही की लाली को ।
लाली वृषभान की जहान म प्रमान बागे
कीरति के आगन मे मांचे सम ढाली को ।
सुदर मनोनी लोनी मोढ तन सारी नील,
अगन की आप उग लालिमा प्रवाली की ॥

पीजरा मुधर तन पाय कें सुहाय रह्यो
उछट उछटन की छोर नहि हटरे ।
काम वम पाय अग मुनिया सुभायो रूप,
दूजो नन सग दग नाममो हा मटरे ।
ग्यान कर ध्यान गहि पावन परम पद,
तातें भव-ज्वाल माल लाग नहि लटरे ।
मान मायो मेरो मैं तो तावा ममभावन हा
जाही को बनायो जग ताही कों मु रटरे ॥

७५—श्रीधर —ये श्री हरदेवजी के मदिर के महत थे । इनका पूरा वृत्त ज्ञात नही हो सका है । इनके पिता का नाम श्रीराम गोस्वामी था । इनके वशज अब भी भरतपुर मे विद्यमान हैं । इनके लिखे हुए कई ग्रथ बतलाये जाते हैं किन्तु कहा जाता है कि वे मथुरा के एक व्यक्ति के अधिकार मे हैं । इनकी रचनाओं म से एक छद यहाँ उद्धृत किया जाता है —

सवैया

भूलि हू नेह को नाम न लेहु जु कोऊ कहूँ हरि-चित्त हरे ।
सासा निसूकत ही रहिये, निसि वासर प्रेम प्रवाह ग्ररे ।
नेकहु श्रीधर प्रेम विचित्र हियो उरझ निवरै न निवेरे ।
जे दुख कानन सो सुनते ग्रब, साईं निसान घुरै सिर मेरे ॥

७६—वैद्यनाथ —ये महाकवि सोमनाथ के वंशज माथुर चतुर्वेदी ब्राह्मण थे। गणेश कवि ने विवाह विनोद मे इन्हे महाराजा बलवन्तसिंह का सभा पंडित लिखा है। इन्होने सम्वत् १८८४ वि० मे 'विक्रम पंच दंड कथा' नामक पुस्तक लिखी है। खेद है कि इनका विस्तृत जीवन वृत्तान्त उपलब्ध नही हो सका है। प्राप्त सामिग्री मे से कतिपय उदाहरण दिये जाते हैं —

भये इकट्ठे नृप अनेक महमानी कीनी ।
विविध भांति विंजन सुधार रचि ग्रानन्द भीनी ॥
तिही समय विक्रमादित्य बोले वर वानी ।
रतनसेन नृप सुनो बात इक अचरज सानी ॥
मोर्र ठग्यो नहि काहू कहूँ परदेस देस महि ।
इहा तिहारे सहर माहि मे ठग्यो मोह लहि ॥
बँदोबस्त एसो न चाहिये नृप थानन मे ।
वेस्या की सब बात कही सुनि नृप कानन मे ॥
रतनसेन तिहि वेस्या को सुहुजूर बुलायो
रतन डवा अरु दंड साडिया सहित मगायो ॥
ग्रौर वस्तु भूसन सुवस्त्र सब ही मँगवाये ।
सरजाम अपने समस्त लकें अपनाये ॥
पीछे वेस्या को रिसाय करि सजा दिवाई ।
सहर बाहिर काढि दमन मे ते निकराई ॥
नृप जकनहि फेरि सीस दीनो निज घर को ।
करी बहुत सिष्टाई दियो ग्रानंद निहि वर को ॥
ग्राय विक्रमादित्य रतनसेनहि संग लकें ।
ग्ररु समस्त निज फौज लिए ग्रानंदित ह्वै कें ॥
सहित कुमरि जयमाल ग्रवन्तापुरी सिधारे ।
घन वजे वादित्र दुदुभी परह नगारे ॥

७७—महाराज बलवन्तसिंह—भरतपुर नरेश महाराज बलवंतसिंह (सम्वत् १८८७ से १९०९ वि०) का शासन-काल हिन्दी प्रेमियों के लिये विशेष रूप से स्मरणीय है। आपके पिता महाराज बलदेवसिंह और माता अमृतकौर दोनों के काव्य-प्रेमी एवं साहित्यानुरागी होने के फल स्वरूप इनका उच्च कोटि का कवि होना स्वाभाविक ही था। शासन एवं सभी ललित कलाओं के विकास की दृष्टि से बलवंतसिंह का समय भरतपुर का स्वर्णयुग माना जाता है। राज्याश्रय एवं प्रोत्साहन पाकर इनके समय में काव्य कला ने विशेष रूप से प्रगति की। इसी काल में महाकवि रामलाल और कविवर रसानन्द आदि जैसे प्रतिभाशाली कवि हुए जिन्होंने अपने काव्य सौरभ से भरतपुर ही नहीं समस्त हिन्दी संसार को सुरभित कर दिया। यह अत्युक्ति न होगी कि जितने सत्कवि अकेले महाराज बलवन्तसिंह के समय में हुए और जितने सुन्दर २ काव्य इनके आश्रय में लिखे गये उतने सत्कवि भरतपुर के समस्त नरेशों (महाराज बदनसिंह से लेकर महाराज ब्रजेन्द्रसिंह तक) के समय में नहीं हुए और न इतनी सुन्दर कृतियां ही लिखी गईं। यह गौरव भरतपुर नरेशों में केवल बलवन्तसिंह को ही प्राप्त हो सका। भरतपुर निवासी ब्रजभाषा के प्रसिद्ध कवि चम्पालाल 'मंजुल' ने आपके विषय में ठीक ही कहा है —

सूरज सूरज उदित बहुरि बलवंत प्रभाकर।
कियो कला-सर ललित जातिमय परम प्रभाकर।
सोमनाथ सूदन, व्रजेश, बिरही रस नायक।
राम, रसानंद, ललित-कमल विकस सुखदायक।
सिंगार वीर, वैराग्य रज अद्भुत पीत सित सचरन।
मधु-पान हेत 'मंजुल रसिक' अजहु मधुप गूंजत चरन॥

बलवंतसिंह स्वयं बड़े सरस कवि थे और भाव पूर्ण कविता करते थे। इन्होंने अपनी कविताओं में 'हरिनाम' उपनाम का प्रयोग किया है। इनका केवल एक पद्य ही पर्याप्त होगा —

कठिन कंगूर कोट बिकट सवाम तर
कुंजर तुरंगन की पुंज हू बिलायगो।
जोर भर्यो जो घर सरासन को घन मानो
धरनी में धमक पाताल ठहरायगो।
ऐसो समो न पाय, कवि 'हरिनाम' कहै,
कृपन सपूत कूर पाछे पछितायगो।
आप न हरख न सेम कुमर माहीं तू तो,
एक दिना सकलो पसार होय जायगो॥

प्रकरण ४

राम–काल (उत्तरार्द्ध)

महाकवि रसानद—ये महाराज बलवतसिंह के दरबार म उच्च कोटि म कवि थे, जसा कि कवि ने स्वय हित कल्पद्रुम म सकेत किया है—

अस चित्त बिचारि बुद्धि अनुमान सा।
रस आनदहि बुलाय कहिय सनमान मा।
जिमि व्रजेन्द्र बलवतसिंह प्रना न्ई।
तिमि तुमनें ह्व कृपा पात्र रचना ठई॥

इन कविवर क लिखे हुए अभी तक निम्न ग्रन्था का पता लग सका है—

१–व्रजेन्द्र विलास—यह ग्रन्थ ८ उल्लासो मे समाप्त हुआ है। इसम कवि ने भरतपुर राज्य के वभव का विशद वणन सरस एवम् सरल भाषा म किया है। अलकार और पिंगल पर बडे ही चमत्कार पूण ढग से प्रका । डाला है।

२–नख शिख—यह ग्रन्थ कवि की अप्रतिम सरस प्रकृति का द्योतक है। इसम रीति कालीन पद्धति पर कामिनियो के समस्त अगो (नख से शिखा तक) का मधुर एव अलकृत भाषा म वणन किया गया है। यह हिन्दी साहित्य मे अपन ढग का एक अनूठा ग्रन्थ रत्न है।

३–गगाभूतलागमन—इस ग्रन्थ म बाल्मीकि रामायण के आधार पर गगा जी का पृथ्वी पर आगमन मनोहारिणी भाषा मे वर्णित है।

४–समर रत्नाकर—इस ग्रन्थ का नाम कही २ पर सग्राम रत्नाकर' भी लिखा है। यह जमिनी अश्व मेध का भावानुवाद है।

५–सग्राम कलाधर—यह महाभारत क विराट पव का अनुवाद है।

६–मौज प्रकाश—इसम श्री कृष्ण की लीलाओ का सुदर ढग स वणन किया गया है

७–हित–कल्पद्रुम—यह अनवार–सुहली (फारसी ग्रन्थ) का हिन्दी भाषा म बडा ही सुन्दर अनुवाद है। इस ग्रन्थ की रचना धाऊ गुलाबसिंह की आज्ञानुसार महाराज कुमार जसवतसिंह के लिये की गई थी, जसा कि नीचे के पद्य म कवि ने स्वय लिखा है—

प्रथम 'ममर रतना कर यथ जु विस्तर्यो ।
जामें जमिनि अश्वमेध भाषा करयो ।
रच्यो द्वितीय 'भग्राम क्लाधर' का तथा ।
है जाम बगट पव की सव कथा ॥
तीजो भोज प्रकाश की जु रचना करी ।
नाम अद्भुत राम जु क्रीडा विस्तरी ।
अब ब्रजेन्द्र जसवन्तसिंह हित, प्रीत मा ।
रचो ग्रन्थ रम न्याय नीति की रीति मा ॥

दोहा

श्री जसवन्त ब्रजेन्द्र हित, सोधिनीति का पथ ।
रस आनन्द बरनन करन, हित कल्पद्रुम ग्रन्थ ॥
बाण ब्रह्म निधि ससि हि गुनि सवत विक्रम राय ।
अक्षय तितिया मास पुनि, माधव गुरु दिन पाय ॥

उक्त ग्रन्था के अवलोकन से यह भली भाति ज्ञात होता है कि रसानद केवल कवि ही नही वरन् आचार्य भी थे। इनके वर्णनो म कलापक्ष और भावपक्ष का सुन्दर समन्वय पाया जाता है इनकी भाषा कोमल कान्त पदावली युक्त सरल एव सरस ब्रज भाषा है। भाषा रसानुकूल परिवर्तित होती गई है। युद्धा के वर्णन म ओज का प्राचुर्य वीर गाथा काल का सजीव चित्र उपस्थित कर देता है। आपने भक्ति नीति और शृगार की परम पावन त्रिवेनी प्रवाहित कर तत्कालीन कवियो म विशिष्ट पद प्राप्त किया था। आपकी रचना म कतिपय उदाहरण नीचे दिये जाते हैं —

हित कल्पद्रुम ~ (छप्पय)

जयति सच्चिदानन्द नन्द नन्दन जग वन्दन ।
दुष्ट निकन्दन दुष्ट भुजग गावन ध्वनि छन्दन ।
मुरली अधरन धरे मधुर सुर पूरत हरषन ।
बरसन रस आनद, जुवति जन नित नित आकरषन ।
भुमिभार मद अनरात म उफनति सुसमा मोहनी ।
ब्रज मडल मडन का प्रगट चटक ह ब माहना ॥

दाहा

साध्य साधन आदि म रसिकन क हित जान ।
भूरिष के हित नौहि म, कनह कवि उनमान ॥

छप्पय

कही काग सुनि हितू कहनि प चित्त दीजिय ।
अनजाने परदेसी सो नहिं प्रीत कीजिय ।
जाको सील सुभाव प्रगट आश्रम नहि जान ।
तासो छिप्रहि बुद्धिवान मित्रता न ठान ।
घर हू मे वास न दीजिय नीति मत तो या कही ।
जो वास देइ तो मित्र सुनि पाव इमि विपदा मही ॥

काव्य छन्द लक्षण

प्रथम रसकला वसुकला पुनि दिसकला प्रमानि ।
इन चौबीस कलान को काव्य छन्द सुख दानि ॥

उदाहरण

चढत प्रबल बलवन्त भूप, जब सहज सिकारहि ।
खल भल दस दिस परत डरत अरि धीर न धारहि ।
धूर पाटि नभ अंध-धुंध, रवि मण्डल झम्पति ।
भार सहत नहि सेस कमठ दिग्गज कम्पनि ॥

लक्षणामूलक व्यङ्ग लक्षण

द्विविध लक्षणा मूल है प्रथम गूढि पहिचान ।
दूजी व्यंग अगूढ यो उभय भेद उर आन ॥

उदाहरण (कवित्त)

एरी नित नये दिन कठिन वितय कसे
जसे ये अनमे आय स्वाग अरवो करहि ।
पापिन कलापिन कुजापिन कुपडो हित
चरचा चलाय ललचीली करवो करहि ।
कवि रसआनद' बिलोक कमलन मुख
पारवो नैन नीर की नदी सी ढरवो करहि ।
ललिन ललन यभ भतन सदभ कीन
दभ भीन मौंर पररभ भरिवो करहि ॥

यानी छीरनिधि की तरग सी उमग भारी
सरद विहग सी पियूस पारावार सी ।
सतगुन के सार सी सुमुक्त नव हार सी,
बिकसी कहारन्गार कुमुद कतार सी ।

मन रस आनद विमल गगाधार सी है
हिम के पहार सी सुखद घनसार सी ।
सिह बलवन्तजू के जस विस्तार सी या,
छिरकी है चन्द छटा फटिक पगार सी ॥

सवैया

राम की वात सुन अति आतुर चातुर आय चले इहि ओर हैं ।
त्यों रस आनन्द सीस नवाय लगाय रहे पग नन्द किसोर हैं ।
ता ह रसी मुख मौन सधी न कही जु वसी भृकुटी की मरोर हैं ।
राम कठोर हिय म जमत भय सिय तर उरोज कठोर हैं ॥

वर्ना वरनन (दोहा)

जगमग भूमग भाल की, है सुहाग निधि रूप ।
पूरनता शृगार की, वदी वरन अनूप ॥
जटित जडाव सु जगमगत, वदी ललित लिलार ।
जनु पूरन ससि अक म रविकर करत विहार ।

नैन वरनन (दोहा)

खजरीट पकज कुरग चपल तुरग सर मीन ।
लाज सील पानिप भरे वरनत नैन प्रवीन ॥

नैन मुख की सुखमा निरखि उपमा फिरत मरात ।
वचन श्रवन नैन हनत है सुनाव व भाव ॥
मुख सुखमा उपमा सिय भयो कनकी चद ।
कनक अटकी वनरी, भ्रम्यो भँवर मकरन्द ॥

विष्णु सग सीतल सलिल सज उज्जलता वारि ।
उठत जु गग तरग है मिल मिल सब्द उचारि ॥

छप्पय

सोभित मुकुट सिगार गरे मणिन मनकावलि ।
करन चन्द्र दुनिमन्द, कुन्द निन्द रसनावलि ।
कटि गुम्फ पट पीन करन कुण्डल छवि छाज ।
रस आनन्द द्युति पुञ्ज, काति मनमथ मन लाज ।
अनुदिन प्रकार विक्रम त्रिविन भवन न श्रुति स्मृति वरनि ।
ब्रज मडन पूरन प्रेम जे अवतारी अवतार मनि ॥

७६—मन्नालाल —य जाति के ब्राह्मण थे और महाकवि रघुनाथ की सभा में रहते थे। यद्यपि ये हिन्दी पढ़े लिखे नहीं थे किन्तु प्रसिद्ध विद्वान् के सम्पर्क में रहने से इनका हृदय में भी काव्यांकुर उत्पन्न हो गया था। फलस्वरूप इन्होंने भी मद्भगवद्गीता तथा हितोपदेश का सुन्दर अनुवाद किया तथा राजनीति के ऊपर पुस्तक रचना किया। हितोपदेश की रचना राम स्वरूप प्रस्तावना में इस प्रकार लिखा है —

मन मुकुन्द निधि नन्दमधि गुरुवासर परिमान।
… … मंगल पर भगवत् प्रभय समान॥

इनकी भाषा में कि … चमत्कार नहीं पाया जाता और व्याकरण सम्बन्धी भूल भी पद पद स्थल में पाती है। इतना होने पर भी वर्णन शैली सरस सरल तथा हृदयग्राही है। उदाहरणार्थ इनके कतिपय पद नीचे दिए जाते हैं —

भगवद्गीता (छप्पय)

सवहि नाथ धरि मन्त्र … जान मुर नायक।
प्रत्यक्ष सहित सन्त रज दम मत मुख गायक।
नाम … … निमिर बहु कारि दिवाकर।
अजर मुरासुर निरत पाय जय … गिरा वर।
सनि प्रगम सब … यदि प्रगट पुनिहि लिखिय।
… वरनि अथ गीता प्रगम … तथ सुमिरिजय॥

याहि भय नहि नर धनंजय के तर साथ।
… नय या बचन मध्य साधि तव … ।
नाद पुण्य या हाय माह तू … गाना।
नम स्वर्ग की मुख्य … यह अर्जुन … ।
नाहु न … या मम, दुबलता छाडौ मत।
उठि समर मनि … जु अरि … लार धारनि अत॥

हितोपदेश चौपाई

हिरण्य गर्भ रहा इम विराजा … ताहि बात निज राजा।
सो … राज करन … लायो राज साज के … म पायो॥
…, भासन बुध जन ताका, … विहीन सुख कहा प्रजा को।
… … म मरि के अन्ध, चलन न नाव बिना खेवट के॥
… … बिन धर्मा, निवहत नहीं सुगम सुभ कर्मा।
… …, ताहै निज पुत्रन की नाई॥

हाय भूप जासूस निहानो मा वरना न आयो कीनो ।
जा नृप के जासूस नम्पी है न नन मा अन्त अम्पी ॥

दोहा

सुवर हाय जासूस अति, जा नृप क निन पास ।
मा घर रहे जगत री नग त्रिभी अनयास ॥

सोरठा

रहे मान्न न जान, नार र आश्रम सुर मन्न ।
पग्न तृपहि पन्चिान, गून गान जासूस न ॥

पुन्रग रविन

आरम्भा जानि वर नागन मा रर हाथ
दूसर वग्न जाहि रम ठग्र नही ।
रग्न वग्न आनि उगज रनम भागी
फन गमी नाग जामा पट है भर नहा ।
अनि ध्यागे राम गमी कुन मन गायो नाय,
अनि ही दुग्ग राज गुगा है पर नग ।
रवीराम जाम नाभ मरच ररारर ही,
बुद्धिवन है ष गमा रागम वर नग ॥
गागा पन्चान न्य रर न्ग भौर स्याम,
मान रगि नग तुग मांग गिर वनी न ।
पग्न जार आ त अनूप न्प
हूहि हूहि माना गन पर हूर रनी न ।
रिया अनन मान सुनन मन्नी गार
याट न्हि ध्याग व म गूढ मृग–नैनी न ।
गगा मुनि गाग रगभान वा विमाग भाग
रा प नग है आज भ्रकुटी ननगी न ॥

८०–न्पगाम –य जानि र ब्राह्मण और भग्नपुर नगर निवासा थे। य टनन विम्यात् थ नि न्नव नाम पर अभा नव कु गन्पगाम नामर मान्ना जमा हुआ है। न्नरा कविता–काल सवत् १८१८ वि० स १९०८ वि तर माना जाता है। गर जी क मन य नर नान क रागण न्नर यगन क नाम गपजा वार वर नान है। रनि नान र माग ट य न्नानिर–गान्न क भा मन्द्र विद्वान् थ। न्न्नान ट्टे म पूर धार नि रन मान रा न्न प्रकार न नम रिया था—

राम दास रखे नहीं पाप कर दीय छीन ।
चौबीसों की सरन म होऊ मन म लीन ॥
हिम रितु अगहन मास पुनि नौमी भौम सु पाद ।
रूपराम तन त्याग के, मिले सेम म जाइ ॥

जो बानी या मुखत निकसी सम करग साची ।
झूठी बात काई मत जानो आप सरसुनो साखी ।
पढ्यो गुन्यो नहि भाषा ग्रन्थन नाहि गयो कछु साखी ।
'रूप' राम के प्रभु सम न अपने मुख तें भाखी ॥

कहते है आपकी यह भविष्य वाणी अक्षरशः सत्य सिद्ध हुई। इनके रचित दो ग्रन्थ उपलब्ध हुए है (१) गंगा लहरी और (२) नतपचासिका। नतपचासिका मे इन्होने अपने उपास्य देव शिवजी के बिवाह आदि उत्सवों का विविध राग रागनियों व सुन्दर छन्दो मे वर्णन किया है। यह वर्णन बहुत ही स्वाभाविक सरल सरस और हृदयग्राही बन पड़ा है। इस ग्रन्थ का रचना काल कवि ने इस प्रकार दिया है —

एक सहस्त्र पर आठसौ तापे ऊपर एक ।
भई कृपा श्री सम की गाए चरित अनेक ॥
सावन सुक्ला पंचमी रच्यो चरित विचार ।
जो याकूं सीखे सुने बाढे धर्म आचार ॥

आपकी भाषा साधारणत अच्छी है। इनके कुछ उदाहरण प्रस्तुत है —

राग बिलावल

समजो अबतो निबहि बनगी ।
नाव जरजरी मझट नाही किहि बिधि पार लगगी ॥
अति गंभीर भमर म भरम पवन प्रचंड धुलगी ।
आगे ठाडी दुरजन सनो मारहि मार मनगी ।
धक्का पे धक्का लागत है बुधि नहा धीर धरगी ॥
इहां काऊ रख बारो नाहा और कछु न हलगी ।
'रामरूप' की चरन सरन दउ मारग सुजस भनगी ॥

राग रतिन–ताल धीर

समजो सनान छोगाजा चरन कमल बिश्राम ।
जो चारणो माई नरथा काई करो उपराम ॥
चौरास्या का स्वाग धर्यो मै मर्यो न काई काम ।
राखि सीखि म थ नरी समझो कोई करो मन स्याम ॥

थे जानो हमें भूजा ना यह रीझ पचे बिन काम ।
रामरूप' ना और न माँगें दीजै अपनो धाम ॥

राग मलार

रमन लाऊ सुन्दर नवल हिंडार ।
चंद बदन श्री रास रसिक मनि कुंवरि तरुन तन गोरे ।
नीलाम्बर अरु अरुन बसन की छबि घन दामिन भोरे ।
रामरूप दोऊ दंपति विहरें मधुर हसत थार धारे ॥

कहूँ जी सम कू-लाप सुनावें ।
रतन जटित को कयो पालनो रेसम डोरि झुलावें ॥
मात भामिन चपलता मत मिलि मंगल गावें ।
और कोई इहा आस न पावे सुख मनि विद लावें ॥
राई लोन कू वारि फेरि के कौन स थाप लगावें ।
रामरूप' मनि निरखि लाल कूँ तनमन धनहि लुटावें ॥

गंगालहरी

छन्द पद्मावती

संवत् रस राग वसु चन्द्र असित सुभ माघ सुक्र तरस मनिलाम ।
बुद्धवार कर गंगा लहरी रूपराम हिय करी निकाम ॥

श्री गोपीनन्दन सुर नर वन्दन जग अभिनन्दन विघन हरो ।
श्री रूपराम जन करत कीरती गंगा ननमय चित करो ॥
श्री मातु भवानी निगम बखानी ब्रह्म कमण्डल धरि गंगा ।
भागीरथ आनी मुनिगन मानी कुलन उधारन ज गंगा ॥
सुर निमल धारा अगम अपारा वारि सेव जन सुद्धि लहे ।
तन मन अघ धारी तब बर पारी अधम उधारन मीत यहै ॥
सिर सोम निवासी परम प्रकासी कलुस संघ नासन जन ये ।
जल पान करन भव रोग कटत रसि भेसज असन जिमि तनक ॥

८१—जीवाराम—ये कवि महाराज बलवन्तसिंह के आश्रित थे। इनका जन्म तालफरा ग्राम (तहसील कुम्हेर) में चतुर्वेदी वंश में हुआ था। इनके रचित दो ग्रंथ उपलब्ध हुए हैं—

१—मसलनामा—यह गद्य में लिखा हुआ है। इसमें अकबर बादशाह तथा बीरबल के मसखरे बड़े ही रोचक ढंग से दिये गये हैं। तत्कालीन परिस्थितियों के

अनुसार सभाचातुर्य के लिये ज्ञातव्य विषयों का भली प्रकार से निदर्शन कराया है।

२—व्रजेन्द्र सभा विलास—यह बड़ा ही सुन्दर पद्य ग्रन्थ है। यद्यपि इस ग्रन्थ में किसी विशेष विषय का प्रतिपादन नहीं किया गया है फिर भी वर्णन शैली बड़ी ही रोचक है।

प्रारम्भ में वंदना आदि करने के पश्चात् अपने आश्रयदाता के वैभव हाथी घोड़े शिकारादि का वर्णन कर महाराज बलवंतसिंह की श्री वृद्धि के लिये विविध देवी देवताओं से प्रार्थना की है। इस ग्रन्थ का निर्माण काल कवि ने स्वयं इस प्रकार दिया है—

ठारह सौ अरु छानवा, सुद्ध महीना माह।
तब कविता परगट करी मानो भयो उछाह॥

इनकी रचनाओं के कतिपय उदाहरण नीचे प्रस्तुत किये जारहे हैं—

सैल-सुता गौरी के तनय श्री गनेस नाम
　　तिनकी कृपा ते मिटे सकल कसाला है।
जिनकी कृपा ते सब दिन अनुकूल होत
　　तिनकी कृपा ते होत सिवहू दयाला है।
जिनही के सुमिरेते दुख को बिनास होत,
　　गज को बदन गरे फूलन की माला है।
बाप मृग छाला ओढ़े ओढ़न दुसाला आप
　　सिद्धि के दयाला एस संकर के लाला है॥

हाथी वर्णन (कवित्त)

दिग्गज से सोहत दुरद दरबारन पै
　　दखि दखि धन के धनेरे घनवारे है।
माहत सवारी मीन कतन सवारी सजे,
　　हौदा बने हद माना सोचन में ढारे है।
झूम झूम चलत झुकाव झुकि सुंडन को,
　　झुंडन के बीच में चलन बल भारे हैं।
श्रीमन व्रजेन्द्र महाराज बलवंत तेरे
　　गज मतवारे कधों गिरि मत वारे हैं॥

कवित्त

मलय समीर वीर तीर सो लगत माहि
　　धीर नहीं धरयो जात तरफत ही रहैं।

बिसर बिसासी मेरे गौंमी मारि फामी गारी
दामी मा नगाया हत कमे करनी रहैं ।
ऊधो यह सुध ममभाय दाजो साबरे सा,
तावरे स ग्राव गोपी तन म तयार हैं ।
ग्राखिर ग्रहीर हैरी जानन न पीर हू गो
सुध ना मरीर है गो केम करजो रहैं ॥

८२—लक्ष्मी नारायन —य कवि मरतपुर निवासी गगेग के पुत्र ग्रौर जाति क ब्राह्मण थे। इनका कविता काल सवत् १८९० से १९०० वि० तक माना जाता है। प्रतिभावान हान के कारण इनको भी पिता के सदृश्य राज्य सम्मान प्राप्त था। ग्रपन ग्राश्रयदाता क ग्रादग पर जगन्नाथ त्रिशूली की 'गगा लहरी का भावानुवाद तथा 'ग्रनन्त कथा पद्य म लिखी थी। उदाहरण निम्नलिखित हैं—

कवित्त

वसुधा क सकल सुहाग की समृद्धि निधि
'नारायण ब्रह्म द्रव मान' लखिबी कर।
कहा ग्रनेरज जा महम का मरज ही म
महा एस्वयसाली कर रखिवी कर।
सर्वश्रुति साम्य का सुमानस ममूहन के
सुकृति की मूरि मा दुवन हरिवी कर।
सुधा की महान्दर है सलिल निहारा गग,
मेरे ग्रमगल की निनाम करिबी कर॥

प्रान मम प्रान पटरानी जे नृपासन की
मृग मद निनके पयाधर तटीन म।
'नारायन' यहै सुन एरी गगा मान वह
तौला मित तरी जल रासि लहरीन म।
तौनो व ही मृग निज बधु जानि प्रीति जुत,
सहमन ममूहन ना मिन सुखासीन म।
विहर ह्व मुद नित घरिके त्रिमत वपु,'
नदारिक वनन के वृन्द बल्लरीन म॥

८३—रामानद —इहाने सवत् १८९१ वि० म रानी किमोरी की ग्राज्ञा से 'सीस रतन भूषणामणि नामक ग्रथ रचा है जिसम ६७ प्रसगो म सीताराम

तथा मानसी गंगा की महिमा का विस्तृत वर्णन बड़े ही रोचक ढंग से मधुर भाषा में किया है।

अष्टराग

राधा माधव भूलत फूलत हुलसि हुलसि मुसकानी।
जनु दरपन प्रतिबिम्ब निहारत मन भावन मन भानी॥
कबहुँक मुरली मधुर बजावत, गावत रागिनि राग छाग।
मानो बन घन व्रज नर नारी काम मंत्र पढ़ बीज बाग॥
गिरिधर नागर रसिक उजागर, हँसि हँसि झुकि झुकि भ्रव भर।
जनु मनमथ रति करत लराई नकहु इत उत नाहि टरे॥
इक कर चिबुक परसि पुनि माधव, बोरि बदन पर देत हँसी।
मिस कर उमग पयोधर परसत, मृगलोचनि तब मोह बसी॥
नील पीत पट अंचल चंचल घन दामिनि की कौन छबी।
कंकन किंकिन नूपुर ठुमकनि कथन कर सो कौन कवी॥
गोप कुमारी पचरंग सारी कनक किनारी भल्र मली।
अंग आभूषन बाजत रुन झुन जनु उर बचन कमल कली॥
झुकि झुकि दरसत हरसत मोहन सुमन पराग वर बार वही।
बाजत जन्त्र अनक एक गति राग असावरि गावतही॥
श्री (बनवारी भनि सुखकारी मुरली सम्हारी गायबी।
मानहु मोहनि मंत्र उचारत सबको सुधि बिसरायबी॥
नवलकिसोर भोरी गोरी वय गति थोरी (रूप) लसी।
मृदु मुसिकाय रिझा प्रीतम को स्याम सुजान मनहि बसी॥
सारि मभारी दे चटकारी सरस सुधारी राग लई।
भौंह नचाय बचाय मान गति तान मोहन पर राव दई॥
मोहित भौ गिरिधर वर नागर धरत मुरली लटक गई।
श्रवन सुनत मृदु स्वर सुर वनिता चन्त मकन गति थकित भई॥

८४—रामबख्श —ये जाति के ठाकुर तथा भरतपुर के निवासी थे। आपका जन्म संवत् १८६७ वि० के आस पास तथा देहावसान १८८७ वि० में हुआ। ये महाराज बलवन्तसिंह के समकालीन कवि हैं। इनके पुत्र मुरलीधर तथा पौत्र भगवत प्रसाद दोनों ही कवि हैं। आपकी कविता बहुत खोजने पर भी विशेष नहीं मिल सकी है। केवल दो छन्द उद्धृत किये जाते हैं —

कवित्त

जो प पिय प्यारे तुम निपट दिमागी हम,
तो प वाह को जु तुम करी प्रीति ठेठ म।
हमहूँ न जानी कान्ह नीति पहचानी अब,
सब सुभ जानी जो कहानी ढंग मेठ म।
हो तुम निठुर रामकृष्ण पहिचान लय,
नाहा कछु आवन है ऐसा या अनठ म।
कुबजा मग लाग्या हम रूप जो दिखाया कान,
आया उर रिना म प्रभू नीक जू जठ म॥

चन्द बिन रजनी सराज बिन सरोवर,
बेग बिन तुरग मतग बिना मन्द की।
बिन सुत सदन सिंगारी सुपति बिन
बिन धन नरम नृपति बिना पद की।
बिन हर भजन जगत मोहै जन कौन
नौन बिन भाजन नित्य बिना उद की।
'रामकृष्ण सरस सभा न सोहै कवि बिन
तिया बिन लाज न नगर बिना नद की॥

८१—मेवाराम—य कर के निवासी थे। इन्होंने किन्हीं रामपाल सदृकनी प लिय नल रुक्मिणी चरित्र की रचना की है। इनकी भाषा सरल सरस एवम् प्रवाह युक्त है। इनका कविता-काल स० १८८२ वि० के आस पास है। इनकी कविता क कुछ अंश प्रस्तुत हैं —

चौपाई

अस सुन मुनी मनोहर गाना। रुक्मिनी का प्रबंध बखानी॥
जगी नींद भरके अस जाना। लख्यो न प्रिय की रूप रसाना॥
सोही नहि नसार की राजा। निय की ठान म भयो मकाजा॥
पीय पीय पुनि असुर भयाना। गद् गद् गिरा मग्न भई रानी॥
प्रहा कय बन तजी सकली। सूखन के बचन की बली॥
प्रसन मय रमन दरसायो। हमको बन म बसा नरनायो॥
ऊच स्वर गा नख नारे। मार नार कुसुमावलि भार॥
प्रहा नई तुम काना कन्त। अति प्रयन भयो दुख महा।
नरवीस जिन गय सुजाना। सूना नजरें माहि निसाना॥
स्वामी कही सुराहि पुरारी। पुनि धारी मन म दृन धारी॥

दोहा

वन उन म भटकत फिर रानी व्याकुल रूप ।
पछिन मा पूछन लगी तुम रखे नल भूप ॥

८६–चतुर्भुज मिश्र –ये भरतपुर निवासी तुलसीराम के आत्मज गुम्यानी राम क पुत्र और जाति के ब्राह्मण थे। इन्होंने 'अलंकार आभा' नामक ग्रन्थ की रचना की है जिसमें अप्प दीक्षित के आधार पर अलंकारों के बड़े ही रोचक उदाहरण दिये हैं। ग्रन्थ रचना काल के विषय में कवि ने लिखा है —

सम्वत् रस निधि वसु ससी सिसिर मकर गत भान ।
पाख अमित तिथि पचमी सुरगुर समय प्रमान ॥

इस प्रकार इनका कविता काल १८८६ वि० ठहरता है। इनके ग्रन्थ की भाषा बड़ी ही रोचक तथा शैली प्रभावोत्पादनी है। उदाहरण के लिये कुछ छन्द प्रस्तुत किये जाते हैं —

विशेषोक्ति लक्षणम् (दोहा)

पूरन कारन होत हू कारज उपज नाहिं ।
ताहि 'विशेषोक्ति' बरण बुध जन सकल सिहाहिं ॥

उदाहरण (सवैया)

हू न करूँ सुधि भूलि अब तउ जात उत चित मान बमरो ।
भूख लग नउ खात बन न सुनू न कछु श्रुति रावहुँ नेरो ।
मोऊ तऊ नहिं आवत नाद सह्यो किन जातरी मा दुख रेरो ।
काम ससाल जर उर म तऊ नह न रच घट वलि मरो ॥

असंगति अलंकार लक्षणम् (दोहा)

जहां हेतु अरु काम को भिन्न देस सवरुद्ध ।
तहां असंगति को प्रथम बरन भेद विसुद्ध ।

उदाहरण (सवैया)

सुन्दर नील सरोरुह से सुचि सावल रंग रंगे रुचि लावहिं ।
हाथ लियो अपनाय सब, नभ भूमि विभाग भले दरसावहिं ।
पै गति य घन हैं विपरीत री, और को औरहि व्याधि लगावहिं ।
आप करें विस पान विदेसिन, को तिय मूर्छित ह्वै मुरझावहिं ॥

तद्गुण अलंकार लक्षणम् (दोहा)

निज गुन को तजि जब गहे सँगति को गुन वस्तु ।
'तद्गुण' ता आभरन है बरन सुकवि समस्त ॥

उदाहरण (सवैया)

श्री बलवंत बली तुमरे अरि की तिय ताप तची घबरानी ।
नग्न सरीर फिरें बन में कछु ओढ़न को उर प्रीत प्रमानी ।
पल्लव तोरि धर्यो तन चाहत हाथ पसारि तबै उमहानी ।
चारु लतावलि रंगन ते भय पाण्डु तिन्हें तज देत निसानी ॥

८७—युगल किशोर—ये ब्राह्मण जाति के राजत अल्ल वाले लक्ष्मीनारायण के पुत्र और भरतपुर के निवासी थे। इनके वंशजों को महाराज बलवंतसिंह से 'कवीश्वर' की उपाधि मिली हुई है। महाराज के आदेशानुसार इन्होंने 'रस-कल्लोल' नामक ग्रन्थ की रचना की थी। अब तक इनके ३ ग्रन्थ देखने में आये हैं—(१) रस कल्लोल (रस ग्रन्थ) (२) ब्रज विलास (ब्रज का वर्णन) और (३) श्रीराम जानकी मंगल। साधारणतया इनकी कविता सुन्दर है और यत्र तत्र वर्णनों में स्वाभाविक सजीवता भी पाई जाती है परन्तु इनकी भाषा में व्याकरण सम्बन्धी भूल अधिक है। इनका सवैया तथा षटपदी छन्दों पर अच्छा अधिकार था। इनकी कविता के उदाहरण नीचे दिये जाते हैं—

रस कल्लोल

शोक लक्षणम् (दोहा)

वांछित वस्तु वियोग सों रति को पूरन नाहिं ।
मन विकार उतपन भयो, परिमित शोक कहाहिं ॥
वांछित वस्तु वियोग लघु, शोक कहो तज वन् ।
विप्रलम्भ करुना जिसे, कर ज्ञानी भन् ॥

विप्रलम्भ रति को गहै करुना पूरन नाहिं ।
इतो भेद है दुहुन में, समझे सुकवि मन माहिं ॥
प्रीतहिं रीतहिं जो कहो, तो तिन शोक न होय ।
है असमंजस यह मनो समझ कहै न कोय ॥

भय लक्षणम् (दोहा)

अपराधक बहु रोग ते, देव भय दरसन पनि ।
मन विकार उत्पन्न भयो परिमित सो भय जानि ॥

जौलौं श्री महेश औ सुरेश नारदादि मुनि,
जौलौं गंग जमुन फनिन्द भूमि धारे को।
जौलौं राम नाम तौलौ अग्र ब्रजराज प्रभू
उमर दराज रहौ कुवर निहारे को॥

८८—मणिदेव —ये भरतपुर राज्यान्तर्गत जहानपुर ग्राम के निवासी और जाति के भट्ट थे। अपनी विमाता के व्यवहार से असन्तुष्ट होकर काशी चले गये और वहा गोकुलनाथ के यहां रहने लगे। काशी नरेश की आज्ञा से इन्होंने महाभारत के कर्ण, शल्य गदा सौप्तिक एषिक विशोक स्त्री तथा महाप्रस्थान पर्वों का पूर्ण तथा शान्ति पर्व के २७५ अध्यायों का अनुवाद किया है। अपनी अन्तिम अवस्था में ये विक्षिप्त से हो गये थे। इनका समाज में बड़ा आदर था। अन्त इनको स्थानों से इन्हें ग्राम हाथी घोड़े आदि भेट में मिले थे। इनका कविता काल १८०० से १८२० वि० तक है। इनके कुछ छन्द उद्धृत किये जाते हैं।

रूप माला

वचन यह सुनि कहत भा कलाग हम उदार।
उडौगे मम संग किमि रूपमाला सा कहहु तुम उचार॥
खाय जूठो पुष्ट गर्वित काग सुनि ए वैन।
कह्यौ जानत उड़न की गत रीति हम बल ऐन॥
उड्डीन अरु अवडीन अरु प्रडुीन अरु नीडीन।
सडीन नियगडीन अरु वीडान अरु परिडान॥
पराडीन सुडान अरु अति डीन अरु श्राडीन।
डीन अरु सडीन डीनक महाडीन अडीन॥

इहै आदि प्रकार गत है उडन के ते सब।
भली विधि हम सिख ताते गहन इतना गब॥
जौन गति की किए हाहु अभ्यास तुम गति तौन।
ग्रहण करिकै उडौ मा सग सको जो करि गौन॥
काग के ए वचन सुनिके कह्यौ हंस सुजान।
एक गति सब विहग की तुम काक शत गति वान॥
एक गति सो उडब हम-तुम यथा रुचित सुवंस।
बाधि यहि विधि वद्ध्म लागे उडन बायस हंस॥

भए तहं अति वग्न विक्रम उभय योधा धीर।
महि परम्पर गण गई गगन नकु न पीर॥

गर्जि गर्जि अखंड गति गर्हि उभय वीर उदंड।
धरत चालन दोर्दंडनि चपल अनिरुद्ध चंड॥
मंच वोउ अपसव्य फिरि जो सव्य सो अपसव्य।
फिरत वाहन गदा गर्दै सुभट भो भरि सव्य॥
गदा सो भरि गिरा धरनिहि स्नेह भेदहि नव।
टूटि टूटि अतूल वाहन गह जय की टेव॥

कहा निद्रा आतुरहि अरु भग्न अमराव नाहिं।
कहा निद्रा ताहि नेर महा चिन्ता जाहि॥
सकल ए मम हित निकसन कहा निद्रा माहिं।
पिता के रत ते अनिक दुख कान बूझत ताहि॥
विप्र हम निज धर्म तजिके गह्यो क्षत्री धर्म।
हम क्षत्रिन के कर्म अब उचित तजि के मर्म॥
झूठ करि तजि धर्म उन मम पितहि डार्यो मारि।
तेरा अब हम करत उन कहँ नीति धर्म विचारि॥

८६—हनुमन्त—ये जाति के ब्राह्मण और नगर के निवासी थे। इनका जन्म सम्वत् १८८१ और निधन सम्वत् १९६० वि० में हुआ। इनके पिता का नाम पं० सेवाराम था जो ज्योतिष के अच्छे विद्वान् थे। हनुमन्त भरतपुर महाराजा जसवन्तसिंह के आश्रय में रहते थे। इनके रचित आठ ग्रन्थ मिले हैं—(१) राधा मङ्गल (२) जानकी मङ्गल (३) कवितावली रामायण (४) सूर्य पुराण (५) तोता पच्चीसी (६) संगीत शिरोमणि (७) नायिका भेद (८) भाषा चाणक्य, इनके अतिरिक्त और भी ग्रन्थ बतलाये जाते हैं। हनुमन्त अपने समय के उच्च कोटि के कवियों में से थे। अपने वंश परिचय में इन्होंने अपने को नगर के प्रसिद्ध कवि रामदास उपनाम राम कवि का भाई प्रकट किया है। इनका भाव और भाषा दोनों पर समान अधिकार था। इनकी कविता के उदाहरण प्रस्तुत किये जाते हैं—

सुन गिरि वहत पर नर बानर बालन बचन सभार स तू।
मैं गिरि जयो ताहि सुनाऊ प्रगट समक्ष के कारन तू।
इन्द्री कुल धमर अपन्न लगि, य कुठार मस हारण तू।
तुरत पठाऊँ यम नोकन म, नतर मार कर धारण तू॥
इति कहन तन अनन्त, राई मिल्यो शशी नाय है।
निज बान प कुल तान कीनी नतर रिस उपजाय है।

तृन तूल रिपि रिम अगिन भारी जगत आहुनि पाय है।
निज भ्रात के रघुनाथ वचन, विचार बोनहु जाय है ।।
(जानकी मगन)

पद्मिना लक्षण कवित्त

बिज्जुल छगामी हाम्य लगन पटासा चाय,
चितवन बाँकी ज्यों बलाका चाल यान की।
हमत कहन बान भरत प्रमून माना,
हाटक वरन दुति भपत हुमान की।
रभा मनका की अपछरा की उवमी की कहूँ
कहत ममान बुद्धि मुग्ध अजान की।
कवि हनुमन छवि धाम काम वाम वाटि
रूम रूम वारा रमी वनी वृषभान का ।।

६०—छनमल — ये जाति के ब्राह्मण और दाग के निवासी थ। आप संस्कृत के अच्छे विद्वान् थे। इनका कविता काल सं० १६०१ वि० के आस पास ठहरता है। इनकी फुटकर रचनाएं कवित्त तथा विविध छन्दों में मिलती हैं। उदाहरण प्रस्तुत किये जाते हैं —

कवित्त

रूप सो जगत में निपट रही भपट निय
गग का तरग, भाल बीच ससि धार प।
भुकि रही अग में उमग भंग रंग भरी,
लिपटे भुजग चट रास के सरीर प।
दुष्टन का काल रघुराज निज भक्तन का
नृत्य कर ताण्डव ताल के तरार प।
दखे दुख भाग जात दारिद बिलाय जाय,
श्री रूपेश्वर नाथ रूप सागर किनार प ।।

षटपदी

जयति कमरी ननय ज्ञान निधि मुनिमन रजन।
कवि कुल कमल दिनेस मारुतन पटल प्रभंजन।
हारवपुर नृप सुवन सखा सुग्रीव सहायक।
नारी पति बध हेतु मन कृत कपि कुल नायक।
जय जातुधान वन अनल सम सुर नर वर वन्दित चरन।
जुग जोरे पानि द्विज छत्र कहै जयति २ असरन सरन ।।

६१—रामबक्स—आपका जन्म सम्वत् १८८० वि० के आसपास माना जाता है और मृत्यु सम्वत् १९३० वि० है। ये डीग के निवासी तथा जाति के ब्राह्मण थे। तत्कालीन कवि समुदाय से इनको काव्य प्रेरणा मिली और फलस्वरूप ये अच्छे कवि हो गये। साहित्य के साथ ही आपको ज्योतिष का भी उच्च कोटि का ज्ञान था। सुनने में आता है कि आपने अनेक ग्रन्थों की रचना की थी, किन्तु इन्फ्लूएन्जा की बीमारी में आपके प्रपौत्र का सपत्नीक देहावसान हो जाने पर इनका साहित्य नष्ट हो गया। बहुत खोज करने पर भी आपके साहित्य की उपलब्धि नहीं हो सकी, केवल जनश्रुति के आधार पर कुछ छंद मिल सके हैं। आपका उपनाम 'राम' है। यद्यपि इन्होंने टकसाली ब्रज भाषा का प्रयोग किया है किन्तु शब्द चयन सुन्दर एवम् सरस है और अनुप्रासों की स्वाभाविक छटा तो बड़ी ही हृदयग्राही है। आपकी सरस रचनाओं के कतिपय उदाहरण प्रस्तुत किये जाते हैं

बलरामजी की वन्दना (छप्पय)

जय अनन्त बल धाम राम बलराम स्याम युत ।
गौर बेस गोपेस सेस अवतार भार हुत ।
धरा धार अतिधीर वीर यदुवंसिन मैं बर ।
असुर मान मद्दन हल-दल मुसल पानि धर ।
भुज जुगल सदा तहि 'राम' कहि दीह दुष्ट मुष्टक दवन ।
जय अच्युताग्रज भगत-दुख प्रलम्बघ्न रेवति रवन ॥

शरद वर्णन (कवित्त)

कैधौं सन्नाव काम दल सी मिली है आय,
कैधौं छीरसिन्धु कैधौं कलकी बिहाईगी ।
कैधौं घनसार की तरंगनि तरंगन,
जाहिर जहान माहि आछी सुखदाइनी ।
मृदु मखतूल कैधौं बिधिन बिछाय मन,
राम श्री निवासन की परम कन्हाईरी ।
या विधि सुहाई मन भाई द्विज राम कहै
छाई महि सरद मे सरद जुन्हाईगी ॥

फाग के अवसर पर श्री राधा की गर्वोक्ति (कवित्त)

मुरली सुरंग कर छीन 'द्विज राम' ताके
मग के समान सार सार कै नचाऊगी ।
अधर मधोर की म धमक धुमि धमको न
सौंचक गुलाल है, को हाथ भर लाऊगी ।

केसर की कीच में करूँगी बरजोरी घेर,
ऊपर गुलाल लाल झारी भर नाऊँगी।
गोकुल गली में भली भाँति सों अलीरी आज
नन्द के लला को लली करिकें नचाऊँगी॥

नैन वर्णन

तरुन तुरंगम ते चौगुनी चलाकी चाहि
चातिक को चूक मति चकित चितेरे री।
मीन गन हारे मृग बारे द्विजगन हूँ न
काम हू बिमारे बान जान कर चेरे री।
मारे मुख चितवन के गारे है गुमान पग
प्यार मन-भौंर के सुधारे कंज हेरे री।
अंजन ते बारे यें निहारे चतुरारे बीर,
नाज भरे भार कजरारे नैन तेरे री॥

नृसिंह वीर

प्रगल्भी प्रचंड रन भिरवे को भीषम सो,
बान छोर अर्जुन सो भीम रन धीर सो।
पूरी पंज पारथ को राम द्विजराज जसो
भारी गिरि मेरु सो सागर गंभीर सो।
तेज पुंज वासव को पूत पुरहूत जसो
कीरत को चन्द सो प्रेम नृप राज नीरसो।
विप्र-कुल भूषण सुजान श्री नृसिंह वीर,
बचन बरसिवे को हरन पर पीर सो॥

छलको छरया पूरो पंज को परया,
मान खण्डन झरया औ तरया रतिराज को।
धीर को धरया पर कारज करया
नाख लाखन लरया औ दरया सत्रु साज को।
मौनन ढरया पूर गव को भरया,
दण्ड मण्डन परया औ भरया भारी नाजको।
सिंह सो बहादुर रन भूमि ना टरया
अरि उपर फरया औ सरया सब काज को॥

६२—धाऊ गुलाबसिंह—ये जाति के गुजर क्षत्रिय तथा महाराज यशवन्तसिंह के धाऊ थे। आपकी राज्य सरदारों में उच्चकोटि की प्रतिष्ठा थी। आप बड़े काव्य प्रेमी तथा कविजनों के आश्रय दाता थे। आपने 'प्रेम सतसई' नामकी पुस्तक लिखी है, जिसमें १७५ दोहे अन्योक्ति के १७५ दोहे नीति के १७५ दोहे शृंगार के तथा २७५ दोहे शान्त रस के हैं। इस प्रकार यह ७५० दोहों की सतसई बड़ी ही सुंदर और उच्च कोटि की पुस्तक है। कवि ने ग्रन्थ की समाप्ति का समय इस प्रकार लिखा है— (११८)

पट जुग नद सुचन्द्र सम ज्यष्ट सुकल सुभ पच्छ।
द्विनिया मनि पूरन भई प्रेम सतसई स्वच्छ॥

सतसई से कुछ उदाहरण प्रस्तुत किये जाते हैं—

अन्योक्ति (दोहा)

रंगी लता फूली फली बसि कर उनस मांग।
अली बनी क्या दल मन यह नाको नहिं याग॥
जीवन नहिं धन मान पै सुनत न माटी बान।
का मृग तन तप कियो, सुन साधे तून गान॥
जो सूरज जागे कमल, गार चन्द्र चकोर।
इतै नाग जो मीन को जीय कहौ किहिं ठौर॥
सुबरन काच सदाय कै मानिक जुत पग दाय।
पग पग मानी नगौं काग हंस नहिं हाय॥

नीति (दोहा)

कहूँ कहूँ छोट जो करन सो न बड़े त हाय।
तृपा तृप मारन सकत उस सिंधु न जाय॥
नीति सहित जो सूरता, साट जय की हेत।
सुध्यो सगिया रन सुप बिन साप्यो जिय लेत॥
पर फूलन जुत एक तरु बन को करत सुपास।
ज्यों सपूत सुत एक ही कुल को करत प्रकास॥

शृंगार (दोहा)

प्यारे तेरे दरस बिन, चित न लहत कहुँ चैन।
चन्दन चन्द्र चाँदनी, सब लगत दुख दैन॥
सर यार तू निठुर है नहिं जानत पर पीर।
तरफत हौं तेरे बिना, जिमि मछरी बिन नीर॥

तेरे बदन मयंक को, मो मन भयो चकोर।
रैन दिना इक टक सदा लख्यो रहै तुव ओर॥
वह चितवन वह चाल गत, वह मीठी बतरानि।
छिनहुँ न चित तें टरत है कसकत निसि दिन आनि॥

शान्त रस (दोहा)

बालन की तू बार का नेक न नायो बार।
मेरी ही अब बार का कीन्हो कहा विचार॥
हरी करी की बेर का नेक न कीनी बेर।
कब का आरतबत हूँ क्यों न सुनत हौ टेर॥
सुर सरिता के तीर बस कर हरि तन अनुराग।
बहु सोयो खोयो बहुत अबहू तो तू जाग॥
जग हरि में हरि जगत में, हरि बिन कोई नाहि।
ज्यो नभ सब में बसत है सब नभ ही के माहि॥

९३—काशीराम—ये महाराज यशवंतसिंह के दरबार के प्रसिद्ध सरदार और जाति के ब्राह्मण थे। इनका जन्म गोवर्धन में हुआ था। इन्होंने सम्वत् १९२२ वि० में 'मनोहर शतक' नामक पुस्तक की रचना की जिसके शीर्षकों में नीति शतक, शृंगार शतक, शान्ति शतक, बारहखरी, शान्त रस पद, श्लेष कवित्त और होली आदि विशेष उल्लेखनीय है। इनकी कविता हृदय स्पर्शनी एवं भाषा सरल सरस तथा लचीली है। इनकी कविता को पढ़कर यह निश्चय होता है कि ये उच्च कोटि के कवि थे। कविताओं के उदाहरण प्रस्तुत किये जाते हैं—

नीति शतक में (दोहा)

नृपति पास लघु नरन कौ, छिनक न चहिये बास।
ग्रसत राहु जब चन्द को होत तेज कौ नास॥
नृपति जो मंत्री हीन है छीन राज ह्वै जाय।
बिना नींव ऊँचो सदन जिमि छिन माहिं गिराय॥
पालन खोटे नरन कौ, लाख करौ दिन रैन।
बसन पर पै फेरत नाना के से नैन॥

शृंगार शतक से (दोहा)

रति ही थाई भाव है जाको कह्यो कबीन।
रस शृंगार सो जानिये कोविद निपुन नवीन॥

ताकी उतपनि ह्वान है मिलि विभाव अनुभाव।
सात्विक सचारी तहाँ प्रवटत हान दुगव ॥

प्रम व्रुहा उपज्यो मिच्यो सनित प्रीति ना आय।
ताप मान मनाप की किहु विधि मही न जाय ॥

बिछुआ वणन (दोहा)

छिनक छिनक छुन छुन वर, बिछुआ पग दरवार।
मना जगावत मैंन कौं, रन पुकार पुकार ॥

नितम्ब वणन (दोहा)

गान नितम्ब विराजई गाग गजन गुजार।
मना लग्वई भजि गई, उलटि दुदुभी डार ॥

लक वणन (दोहा)

लक लग नगी पानरी तनक छिपाये हान।
छुई मुई मम लचत क, कमवो मी लप जात ॥

सयोग वणन (दोहा)

दरम परम वनरान मा दपति जा मुख होन।
रम नभाग तामा कहत, मकर कविन वे गोन ॥

उदाहरण (दोहा)

मिमकी अग कमकी निया ममका जब भरि अक।
फिर फिर फिरवी मी फिर, थिर की ना परजक ॥

उद्वग वणन (दोहा)

पिय वियाग, पयरान चित, लगत न काहू ठौर।
ताही का उद्वेग कहि लिग्यो कविन सिरमौर ॥

उदाहरण (दोहा)

इदु लगत विदुक गगन, तारे कनक अगार।
लगत विना बलवीर क मव मिगार अजार ॥

मान लक्षण (दोहा)

अरे मूढ़ यह पुष मों, दई नई नर रह।
त्याग सकल मद मोह का हरि पद मा कर नह ॥
जस प्रतगी काठ की नचत नार के साथ।
त्यों ही नर नचत है, काल करम क हाथ ॥
य नारी ना नाहरी, लगत प्रान हर लेत।
वाघिन सा वच जात हर, नारी वचन न देत ॥

बारह खरी (दोहा)

ककका कमला पति कुमर, करुना निधि घनश्याम।
निसि दिन मन रटिबो करो छाँडि सकल मद काम ॥
खखा खर दूषण हयो खगपति प असवार।
आनद क द मुक द को भज मन वारम्बार ॥
गगा गिरिवर धारियो गायौ ग्वाल बुलाय।
गव गारि पुरहूत को, लीनो ब्रजहिं बचाय ॥

फुटकर

पापर कहत ता सो पूरी कर काम मेरा
मोमन कचोरी धर धीर न धराय ते।
तूहै पकौरी तो सो बडी सी खताई भई
पायौ ह कछू कसार प्रीतम पराय ते।
कस रबडी है खाजा मुकरन मनाहर माहि
नाही गोदी सी कहा होत घबराय त।
कहत है समासे खजला के सब बराबरी के,
गुप चुप रहो जी कहा बानन बनाय ते ॥

कधौ रूप सरिता म मीन मीन केतु के स,
कधौं आन कजन म कजन विराजे य।
कधो लाल रेशम क जाल मध्य खजन युग,
कधो विधि कारीगर तीखे सर साजे य।
कधो हम अधन मे हीरा मनोहर है,
कधो रूप बाटिका म नरगम छवि छाजे ये।
कधा नौकयार सीप मुक्ता उगल रही,
लाचन तिहारे प्यार मुखके समाजे ये ॥

माना कनसाहै कलधौत क सुधा सा भरे
मानौं य मिलौना द्व मनमथ के ख्याल के।
माना फून कज उर उलट घरे हैं विधि,
माना युग चकवा हैं सुखमा सुताल के।
माना बिब दाडिम रिय हैं बाल बारी क्म
माना फल गाभिन है तरुनी तमाल के।
मानों हम दु दुभी धरी हैं विधि औंधे कर
श्रीफल मनाहर हैं जोबन रसाल के ॥

६४–शोभाराम –ये भरतपुर मे अहीर जाति म उत्पन्न हुए थे और पलटन मे नोकरी करते थे। इनका कविता काल स० १६२० वि० से सवत् १६६७ वि० तक रहा। आपन अपने समय म भरतपुर मे कविता की धूम मचादी थी। ये एक बडे कवि मडल क मण्डलेश्वर थे। कवित्त लावनी और ख्यालो का अखाडा इनके स्थान अटलवद दरवाजे सोधी वाली वगीची पर हर समय जुडा रहता था। इनके पास दूर २ से कविता प्रेमी एव कवि गण आते रहत थे। इन्होंने हजारो कवित्तो की रचना की है। आज भी भरतपुर मे कितने ही प्रौढ और वृद्ध पुरुषो को इनके अनेक छन्द कठाग्र हैं। इनकी रचनाओ के सग्रह का प्रयास किया जारहा है। इनकी रचनाओ म दो पुस्तक बतलाई जाती है— (१) गौरी मगल और (२) हनुमानाष्टक। विविध विषयों पर लिखे हुए इनके अनेक छन्द बहुत ही भाव पूर्ण हैं। इनकी भाषा म खडी बोली की झलक दिखाई देती है जो हिन्दी उर्दू मिश्रित मुहावरेदार तथा रसीली है। उदाहरण स्वरूप इनके कुछ छन्द प्रस्तुत किये जाते है—

कवित्त

आगरो अठारह ब्रज बारह कोस मधुपुरी
गोवरधन ग्यारह कृष्ण डूबत त उबारी है।
साठ कोस जयपुर आठ कोस नदबई,
दिन भर को रस्ता बर ब्यानो ही सुखारी है।
चल तो चौकस चौबीस कोस गोपालगढ
पास है पहाडी आगे अलवर तिजारी है।
गुरुन की सहारो कहै शोभा मतवारो इह
भयो है उजारो रहबो भरतपुर हमारो है॥

करके फरियाद बरबाद हुआ बरसो स,
खाना ना सुहाता भूख भागी परेसानी त।
सुनता नहीं अर्जी क्या मरजी है यार तरी
किया नहीं त्यार कभी हम कर मह्रबानी त।
"शोभा समझाव इश्क तेरा सताव रहम
तुझको नहीं आव मुझे खाया जिन्दगानी तें।
हाल तुझसे नही छानी सही बडी परसानी
एरे दिल जानी ! मेरे दिल की न जानी तें॥

एरे दिल जानी ! मरे दिल की न जानी
लगन तुझसे लगानी सही हमन परेसानी है।

तू है लामानो बात तेरी पहिचानी,
कर अपनी मनमानो भाह मो प हाय तानी है ।
'गोभा वह समानी इश्व आतिश झ लानी
वहै चदमा स पानी पर ता भी ना बुभानी है ।
हुआ हूँ बरानी कहूँ कहा तव कहानी
हाय मैंन नही जानी नह मौन की निमानी है ॥

ललित विमारी गोरी भारी सखियान सग
अग अग आम क अनग न कला करी ।
थारी बस नारी और आढे सुरग सारी
मजके सिंगार नारि आई है ग्रना भरी ।
सग क मगान आन शाभा सुजान काह
घेरि वनितान लूट नधि की मदा करा ।
दिखाय कमर लाचरी चढा भौह चाकरी,
सु भाकरी गली म प्यारी हा करी न नाकरी ।

लूटा खूब दक्खिन का आया दौर जपुर का
छोडा डेढ चहर जलाया नग्र जाही का ।
तोडा दरवाजा फील हूल के हठीले भूप,
आया माफ जीत क न लाया खौफ काही का ।
'नाभा वर बाप का निराला था जवाहर न,
लूटा खुद जाय क घराना बादशाही का ।
दिल्ली नगरे बग मगरे पुकार लोग
नोहा नगरे का यारा गजब खुदाई का ॥

(हनुमानाष्टक म)

हम दुख दहि ताहि भृष्टि हू मा भृष्ट करी
भृष्ट बुद्धि नीच नाहि जानत पर पीर की ।
मेरे ही इष्ट तो मुगल्रन सा मार डारो
नखन बिदार करो किरचें सरीर की ।
'नाभा का सताव ताके दावो क्या न कठ आय
स्वाम का धुमाय नपथ अजनी क छीर की ।
टाकरन मारि कें उडाय जो न देहु ताहि,
कमरी कुमार ताहि दुहाई रघुवीर की ॥

९५—रावराजा अजीतसिंह—महाकवि रसानंद के अस्त होने के अनन्तर भरतपुर राज्यान्तर्गत ब्रजभाषा काव्यसृजन का झण्डा रावराजा अजीतसिंह ने उठाया। ये भरतपुर राज्यवंश में उत्पन्न हुए थे और उच्चकोटि के भक्त कवि थे। ये 'कृष्णदासि' तथा 'अजीत' उपनामों से रचनाएँ किया करते थे। इन्होंने 'वृंदावनानंद रसोद्दीपन महत्पद' नामक ग्रन्थ में अपना परिचय इस प्रकार दिया है—

बदनस सुपुत्र जु सूजमल सुत तासु भयो रनजीत है।
भौ सिंह लक्ष्मण तासु के भइ जासु हरिपद प्रीति है।।
तिनके भए उमरावसिंह अजीत सुत हर लाइ के।
'कृष्णदासि' स्व छापधरि, किय महत्पद रस दाइ के।।

कुण्डलिया

प्यारी सिय सुरसरि जमुन सरस्वती अनुराग।
वृंदावन रसिकन हिये नित ही रहत प्रयाग।।
नित ही रहत प्रयाग वही नव गुनन त्रिवैनी।
मुनि मन मजन करन हारि अति हो सुख दैनी।।
कृष्ण पक्ष वर मकर मास तिथि ऋषि शुभकारी।
हरि शिव द्रग निधि चन्द्र वप भल हिम ऋतु प्यारी।।

(दोहा)

जमुना तट वृंदाविपिन कुंज बिहारी कुंज।
'कृष्णदासि' की बास तहाँ लखति जुगल छवि पुंज।।

उपर्युक्त पद्यों से स्पष्ट है कि अजीतसिंह उमरावसिंह के पुत्र थे, जिनको भरतपुर राज्यदरबार में रावराजा की उपाधि प्राप्त थी। ये वृंदावन रहा करते थे इसी कारण इनके वंशज अब तक वृंदावन वाले रावजी कहे जाते हैं। इन्होंने सरल, सरस एवं सुमधुर ब्रज भाषा में पद रचना की है। इनकी काव्य शैली दो भागों में विभक्त हो सकती है—प्रथम श्रेणी में वह रचनाएँ आती हैं जिनमें शुद्ध ब्रज भाषा का प्रयोग हुआ है। इस प्रकार की रचनाओं को समकालीन भारतेन्दु हरिश्चन्द्र ने भी अपनी कृतियों में यत्र तत्र उद्धृत किया है। ऐसे अनेक पदों में से एक यह है—

गाओ सखी कुंज केलि रस गीत।
× × जीत रहत अजीत।।

दूसरी शैली वह है जिसको इन्होंने वृंदावन निवासी ललित किशोरी का अनुसरण करते हुए अपनाया है क्योंकि ये ललित किशोरी को गुरुवत् मानते थे। लखिए ललित किशोरी के इस पद्य को—

अरे मल्लाह ये जालिम, हम मझधार क्या वार ।
लगादे पार किश्ती को वृथा क्या वादवा जोर ॥
जग बल्ली लगा जालिम यहा जल बहुत हिलोर ।
ललित किशोरी गुन मान निठुर क्या हमें मुख मार ॥

कितनी सुन्दरता मे अनुसरण किया है —

अरे मल्लाह ला किश्ती हमे उस पार जाना है ।
बताना राह उस जांकी, जहा वेदद कान्हा है ॥

अब तक रावराजा अजीतसिंह के ३ ग्रन्थ प्राप्त हो सके है सम्भवत और भी रचनाएँ हो। इनकी रचनाओं से उदाहरण प्रस्तुत है —

(१) वृन्दावन रमोद्दीपन महरन्द —(इस पुस्तक मे केवल कडका छन्द का प्रयोग हुआ है)

जयति ज जयति ज जयति ज राधिका स्वामिनी सकल ब्रज यूथ नारी
जयति वृन्दा विपन रुचिर जमुना पुलिन सुखद चित्त हरन नित वहन वारी
देव सुकदेव श्री सारदा शेष शिव कहत वृन्दा विपन सोभ लाज
काम मद कोह दुख द्रोह लोभादि सब देपि बनसी बदुर दूर भाज
बसौं वृन्दा विपुन लखो नित जुगल छबि सदा पहन बस सुख वढो रासी
दीन अति हीन अब यही विनती करत राधिका श्याम धन 'कृष्ण दासी'

(२) विनय शतक —इसम राधा कृष्ण सम्बन्धी उपासना अनेक राग रागिनियो म वर्णन की है —

राग विभाग

मरी लाज नाथ अब आप हि ।
तात मात सुर बधु न कोऊ तुमहि हरहु भव तापहि ॥
मोहि समान नहिं लोक पतित अरु कोऊ सुन्या न हेरयो ।
तुमहि पतित पावन निगमागम अधम उधारन टरयो ॥
मोहि अधमाधम पतित तुच्छ अति समझ सरण प्रभु दीज ।
सुरनर मुनि स्वारथी सकल कोउ परमारथ न पतीज ॥
तुम सिवाय और न हरि काऊ जो भव दुक्ख मिटाव ।
कृष्ण दासि मोसे पतितहि प्रभु तुम बिन कौन तिराव ॥

राग मालकोस

काहे को भटकत मन बौरे तनक तो धीरज राख ।
कृपा सिंधु बृज राज स्याम को करि भरोस तजि माख ॥
कहैं तोहि निराश दयानिधि तेरी केतिक चाल ।
त्यारन्यि बहु अधम कृपा करि तू फिरि क्या घबरात ॥

'कृष्ण दासि' की बात हाथ दुहु मकल मानि गोपाल ।
श्राये सरण माहि राखे जिमि राखहु मोहि दयाल ॥

राग सिन्धु भैरवी

जुगल कृपा भयो सकल यह पूरण ।
नाना संग्रह व्याध समाज रचो चटपटी नाम सु-चूरण ।
सुनत परत रति होहि निरन्तर राधा कृष्ण चन्द्र पद पकज ।
जिनकौं नानि करत भव नारद सनकादिक मुनि सेष सेव ब्रज ॥
मंगल तत्व वेद निधि चन्दा मास विभूत श्याम पख तीज ।
तिथि सु प्राण भृगु वासर सुन्दर ग्यान समय सुख दायक ठीक ॥
'कृष्ण दासि' यह दीन विनय मैं मनि मम कीनी जुगल निहार ।
बुध जन मोघ कृपा करि लीजौ अपन जानि मोहि छिम सब खोर ॥
जुगल किसोर विनय यह मोरी यही सब विध जी की आस ।
भव दुख मेटि चरण रति दीजे शरण राखिय श्री वनराज ॥

(३) द्वादशाक्षरी —इस ग्रन्थ में बारह खरी के क्रम से राम चरित्र का वर्णन किया है। अन्य कवियों ने भी बारह खरी लिखी हैं किन्तु उन्होंने प्रत्येक अक्षर का १२ मात्राओं सहित लेकर नहीं लिखा है।

सिया राम पद बदि पुनि श्री गुरु पद सिरनाय ।
राम चरित बारह खरी बरनौं मति सम गाय ॥

करी प्रार्थना विधि कर जोरी ।
हरि महि भार हरि यह तोरी ॥
काल्ज करि हा भई नभ बानी ।
धीरज धरि विधि महि मन मानी ॥
किरपन जिमि धन ल सुख लहही ।
एम प्रथ्वी उर सुख ग्रह ही ॥
कीरति मान दशरथ है राजा ।
अवध पुरी के माहि विराजा ॥

ठिठर मनहुँ सीत के मारे ।
स्तनहि मुनि वशिष्ठ पगधारे ॥
ठीक बचन कहि यहि मुनि ग्यानी ।
बहु विधि समुझाट सब रानी ।

ठुमर ठुमर गेरहि सवर जन।
मुनिवर चार बुलाये सुच मन॥
ठूठा कहि कहि चरन बुभाई।
लावहु जाय भरत दाऊ भाई॥

न गुण अमित मत्त मुनिरागी।
भाप बुधि सम कृष्ण सुरामी॥

क सा न ला वारह परी क्रमसा कही विचित्र।
मानान युत अरु सब वर्न्यो राम चरित्र॥
राम कथा विस्तार बड जम मत तम कहि गाय।
काय चूक जह होय जो लीजो गुनी नाय॥

संवत ग्रह गुण सिद्धि प्रभु शुभ नायक सुख खान।
दुतिया श्रावण मास तिथि अमित सु पाडव जान॥

६६—रामधुन —ये क्षत्रिय कुल में उत्पन्न हुए थे और भरतपुर निवासी जयकिसन के पुत्र थे। काव्य प्रेमी होने के साथ २ आपको ज्योतिष तथा वैद्यक से भी प्रेम था। ये व्यापार द्वारा जीवन निर्वाह करते थे। इनका कविता-काल सं० १६२५ वि० माना जाता है। उदाहरणार्थ छंद प्रस्तुत है—

कवित्त

मख नन्द मेत भान वृष इन्दु वन माल,
मिथुन त्रिसूल गुन कक बद छाये हैं।
सिंह तन बिछौना गिरि कन्या को छौना तुल,
वृश्चिक विनोद धन राम चित लाये हैं।
मकर मन मनोरथ पुजाव ऋषि ध्यावें
बरणन करत नाग गंगाधर भाये हैं।
कुंभ गज आनन प मीन मन कज धरे,
रामि मिति बारह गनम गुन गाये ह॥

६७—रामद्विज —ये जाति के ब्राह्मण थे और घनश्याम तथा शोभा राम आदि कवियों के अखाड़ा में कविता पाठ किया करते थे। इनका कविता काल १८५५ वि० है। उदाहरण प्रस्तुत है—

कवित्त

छूम छूम छुमक छबीली छनि छप छप
घप घप धारत धरा प पग दौगन।
लट पट लटक सु उरगी मटक अंग,
मपटत चाल नटनागर त नौगुने।
भूमन के भार सो सिंगार के सजे हैं गात,
वान ते त्रिमेव जावे बल बढ सौगुने।
'राम द्विज' भनत तिहारो रघुराज बाज
चचला ते चपल चलाकी चाल चौगुन॥

दोहा

कर गहि ना मरदन करो, कछु न निकर सार।
यह मिसवारी पीउ की, पाय न दूजी बार॥
चूरो भजन मतकर, हु गवार मनहार।
कै मिसकी पिउ मज प क सिमको यह बार॥

पान के पिटार माल ऊंची सी दुकान वठी
आलिन म पठी कर वानन अडावे की।
पानन सो पान मल आमिकन का पान देत,
सिसकिन समेत पाल फारन कढावे की।
कहै द्विज राम करि सुरमा सो पनी दीठ
सूरमा सो मार मार मल क मडाव की।
बालन अमानिन माल न बिसात मोहि,
रूप तव ताल म तमालन तडावे की॥

६८—पीर —ये भरतपुर निवासी नन्दूराम ब्रह्मभट्ट के सुपुत्र थे और काव्य रचना द्वारा जीविका उपाजन करते थे। इनके विविध विषया क छन्द पाये जाते हैं। इनकी भाषा टकसाली, उर्दू हिन्दी मिश्रित मुहावरेदार तथा लचीली है। इनका कविता काल सम्वत् १९३० वि० ठहरता है। उदाहरण प्रस्तुत हैं —

कवित्त

माना महताब सा खिला है क्या जमी पै दम,
जिस पर जुलुम गक ददा बुलन्द है।
निकलि अम्बार सा चुनाव हार गौहर का
गुचे गुलों का दम्न लद्दुआ पसन्द है।

पौर बग मात या चमाव ब्रज पूजा करै
नत हा नाम टन ग्रापन रा फ रै है।
हुआ है न होगा जग मे ग्रागा गया
जग मग़गना राज रा फ ग र है॥

माई मग मेज प नवना उहू तिनाशता
तीवी चात नाहन नाइ मोज गाता की।
मन मन जघन तुजा म भुजा लाय नाथ
वान्ही कलि कुज म ग्रनोखी वान माना नी।
ो नमी आनि मा जाा ह ग्रनमार नार,
कुचन न्नि न्य गाभा कहै वा ना की।
मानो रूा नाग वीच जजन वनार मम
गन्र ग्रनार म नाा है चाव नाना रा॥

सवया

ग्रानि ग्रनु मुल ग्रगनिल काइ नि राल लुरीट भय हैं।
ग्रौर पव गुल्काव विनाकन गन्ना गुलाव मिनार छय हैं।
जावन जाम गरगिन क रग मव मिरीफल ग्रान ठय हैं।
कामिनि क कुच कचन मौट म जाना नय नहिं तौना नय हैं॥

६६—हरिनारायन —य वर क निवासी ग्रौर जाति क जाट थ किन्तु ठाकुर कहलात थ। ग्राप ग्राशु कवि थे ग्रौर प्राय ख्याल लावनी तथा मरहटी (मराठी) ग्रादि तुरन्त बनाकर सुनाया करत थ। इन्होने कविता म ग्रपना नाम हरिनन्द भी प्रयोग किया है। फुटकर छन्दो क ग्रतिरिक्त इनक तीन ग्रन्थ प्राप्त हुए हैं —(१) रुक्मिणी मगल (२) भरतपुर युद्ध ग्रौर (३) रसिक मनोत्सव। रुक्मिणी मगल बडा ही रोचक ग्रन्थ है। इसकी भाषा सरस मानुप्रास ग्रौर प्राजल है। इसम करुणा रस का बडा ही सुन्दर प्रवाह मिलता है। इसका रचना काल माघ शुक्ला ६ स० १६ = वि० है। इस ग्रन्थ की कथा द्वारा दूर २ क पडित ग्राज तक जीविका उपार्जन करत हैं। इसम कोई सन्देह नही कि ठाकुर हरिनारायन ग्रपन समय क मर्म एव प्रतिभावान कवि थ। ग्रापका कविता काल सवत् १६३० वि० क ग्रास पास माना जाता है। इनकी कतिपय रचनाए प्रस्तुत की जाती है —

रुक्मिणी मगल

सुन सौनकादिक सो कहिय सुकथा प्रसग।
रुक्मिणि हरि जनन प्रति वरनो भक्ति उमग॥

दराम कथा मनि जथा करि भाषा करि हरिनंद ।
यथा रुक्मिणी हरण की लीला गुण गोविंद ॥

राग प्रभाती

हर उठे नारद मुनि आय आज रहु बड भाग हमारे ।
दरसन दिय दीय हमहूं मुग माहन मुग मृदु वचन उचार ॥
गति सज्जन मज्जन जस निमल गावन रहित राम के ध्यार ।
धरनागमन प करि कृपा दिर नारद आा यर्श पग नार ॥

राग आसावरी

कान्हा नहा नव तुम बिन रानी कहन रुचीने राग ।
भीषम नृपति सुना तन शोभा नवग भाग सुहाग ॥
सानवनी नरसान मयानी कृष्ण तुम्हारी माग ।
श्री नारद कुमर सु कहि मुनि प्रेम रमीना राग ॥

छन्द

कह रुक्म जनक मलीन दुष्टो, वृद्ध अति दुरमति नव ।
अघि चारि घर घर नचन नाहू निज सुना हूँ नर तव ।
जा पूतना घाती निपाती मात भ्राता उनरना ।
पर निपन क हरि चार प्रभुना इनि गारुड़ मनमता ॥
रन जरा सिधु सगाम भाग भज गया द्वारामती ।
दुविजा परम प्रिय जासु रुक्मनि नर कहै पितु नधुमती ।
सनवार प्रम बिरुद्ध मम मा कीजिय यह नीति ।
परि रहै बिन नरन का निन निन महा विपरीति ॥

राग मरहठी

हरि दुखी दरस बिन दख नागर नट के ।
सून टर श्रवन रथ फेरि लपन घट घट के ।टेर।
मैं नारद के मुख सुनी तव वृद्द घनेरे ।
जब त हरि सुन्दर स्याम वस मन मेरे ॥
कुदनपुर म भय दुष्ट विकट दुहै भेरे ।
मम साक निमिरि भजन करि जगत उजेरे ॥
निस काट सहाई मम घू घट की पटके ।हरि दुखी०।

राग मरहठी

बनी एक जोगिन अलबेली, डालि गल फटकि माल सेली ।टेक।
पहर लीय कुण्डल कानन म सीस तिरपुड अलख मनम ।
जुगल जादू जुग नननि मे, लगी है भस्म सकल तन म ॥
पूगी नाद बजाइ क, भिक्षा करन जाइ ।
मत्र मोहिनी डारिक सज्जन लिये बुलाइ ॥
नाथ गुरु पूरे की चेली ॥ बनी० ॥१॥
आढि मृग चम चन्द्र वदनी मदन अल मस्ती रति रमनी ।
करन कमनेनी चोट घनी, भगोये भेप बसन कफनी ॥
द्वार्ड द्वार सुनावत्तो पूगी स्वाल सुजान ।
दरसन देखन रसिक जन, बहुत फिरे हैरान ॥
किने जोगिन त वाद खेली ॥ बनी० ॥२॥
कुबरी करन घरन प्यारी नागिनी लटका लट कारी ।
कौलनी नागिन पर डारी किये निज बस म नर नारी ॥
देश कामरू पढ़ी, विद्या वीर वताल ।
मूछित भोगी बस किये जागीन केरे जाल ॥
भुरकनी बसीकरण पेली ॥ बनी० ॥
घर ही घर खप्पर भरवाता जरी जतर करि २ जाती ।
चपल चपला सी चहचाती, प्रघट सयस्तिन गुण गाती ॥
तप का मूरनि जागिनी ठगिनी सकल जहान ।
दरसन देखन भटकत हरिनरान क प्रान ॥
नाथ गुर पूरे की चेली ॥ बनी० ॥

दोहा

य शुभ कथा विवाह करि श्रवण परीक्षन भूप ।
पहुचि द्वारिका करत हरि, नित नव चरित्र अनूप ॥

छद

पहुचे निकट हरि द्वारिका तिय भरत मारग भरि रहे ।
धारत नगर म बग ब्गर घर घर जगर मग करि रहे ॥
द्वारन कलश साभिन पताका देहरिन मणि खचित है ।
माणिक झिलिल मिल चौक आँगन अमित रूप गुण रचित हैं ॥

दोहा

जबत आई रुक्मिनी महलन जगमग जोति ।
रिद्धि सिद्धि उमुख गृह नित निरन्तर होति ॥

कवित्त

जोवन अनग अग अगन तरग उठ
सीमता सुहाग भाग सुन्दर रतीसी है।
सुधाके समुद्र म सरोज कली कोमल सी
मिली मित रग अति लक पतलीसी है।
'हरिनद' नदन प्रवीण मन मोल रतन
मधुर मुख बोली वर अमृत भरीसी है।
रूप ऊजरीसी नील साच ढरीसी हरि,
कचन छरीसी न परसी न परसी नरीसी है॥

भरतपुर युद्ध

डीग भरपुर वर विकट बाकी ब्रज भूमि राजधानी।
हा फिरट अग्र जा म अडवगी नृपनि जग ठानी॥
कलकत्त की अठकामल म निन होती वतकही सही।
हिदुतान मे किला भरतपुर उम सरवा काई और नही।
छीन छीन कर जाट जुल्म कई राजा की ले लई मही।
लूटी भरी बादशाही अब दिल्ली म क्या खाक रही॥
कई कराड मसूर अली से रुपे लिये जग न जानी।
हा फिरट अग्रेजा ... ॥
फिर वाला अग्रेज कपनी का इकबाल सदा का है।
लहमे म सर कर लगे अडबीला जाट कहा का है।
द मूछा प ताव कहै स्योसिह हिन्द का नाका है।
मान हमारा कहा लक मन लड भरतपुर बाका है॥
जब वाला अग्रेज तुम्हारे मौत सीस पर मडरानी।
हा फिरट अग्र जो ... ॥
शेऊ नार से जुरे मोरिच जगी ताप जजीर चन।
धुआ घन घुमड बद्दल म प्रलय काल क स बदले।
गुब्बारे गाल बज्जर वे तीर तमचे चले घने।
शक्ति शूल-तलवार हजारा वार सूर सम्मुख झेल॥
गढ म वाहर निकल लड जहाकी मना मरदानी।
हो फिरट अग्र जा से अडवगी नृपति जग ठानी॥
नर फिरगी आगें नृप ने खत लिख भेजा प्यारा है।
त हल्ला नह किये यार अब कें इक वार हमारा है।

राग मरहठी

बनी एक जोगिन अलबेली, डालि गल फटकि माल सेली ।टेक।
पहर लीये कुण्डल कानन मे सीस तिरपुंड अलख मनमे ।
जुगल जाटू जुग ननैनि मे, लगी है भस्म सकल तन मे ॥
पूंगी नाद बजाइ के, भिक्ष्या करत जाइ ।
मन्त्र मोहिनी डारिके सज्जन लिये बुलाइ ॥
नाथ गुरु पूरे की चेली ॥ बनी० ॥१॥
ओढ़ि मृग चर्म चन्द्र बदनी मदन अल मस्ती रति रमनी ।
करन कमनैती चाट घनी, भगोये भेष बसन कफनी ॥
द्वारई द्वार सुनावती पूंगी ख्याल सुजान ।
दरसन देखन रसिक जन, बहुत फिरे हैरान ॥
कित जोगिन ते बाद मेली ॥ बनी० ॥२॥
कूबरी करन घरन प्यारी नागिनी लटका लट कारी ।
कीलनी नागिन पर डारी किये निज बस मे नर नारी ॥
देस कामरू पढ़ी, विद्या वीर बताल ।
मूढ़िन भागी बस किये जागीन केरे जाल ॥
भुरकनी वसीकरण पली ॥ बनी० ॥
घर ही घर खप्पर भरवाती जरा जतर करि २ जाती ।
चपल चपला सी चहचाती, अघट सायस्तिन गुण गाती ॥
तप की मूरति जागिनी ठगिनी सकल जहान ।
दरसन दखन अन्वत हरिनरान के प्रान ॥
नाथ गुरु पूरे की चेली ॥ बनी० ॥

दोहा

म शुभ कथा विवाह करि श्रवण परीक्षत भूप ।
पहुंचि द्वारिका करत हरि, नित नव चरित अनूप ॥

छंद

पहूंचे निकट हरि द्वारिका तिय नरन मारग भरि रहे ।
धारत नगर मे बग डगर घर घर जगर मग करि रहे ॥
द्वारन कलश माभिन पताका देहरिन मणि खचित हैं ।
माणिक झिलमिल मिल चौक आँगन अमित रूप गुण रचित हैं ॥

दोहा

जवत आई रुक्मिनी महलन जगमग जोति ।
रिद्धि सिद्धि सुख गृह नित्त निरन्तर होति ॥

कवित्त

जावन अनग अग अगन तरग उठै
मोमता सुहाग भाग सुदर रतीमी है।
सुधावे समुद्र मे सरोज वले कामल सी
खिली मिन रग अति लक पतलीमी है।
'हरिनन्द' नदन प्रवीण मन माल रतन,
मधुर मुख बोली वर अमृत भरीमी है।
रूप ऊजगीमी शील मावे ढरीसी हरि,
वचन छरीमी न परमी न परसी नरीमी है॥

भरतपुर युद्ध

डीग भरपुर वर निकट वाकी व्रज भूमि राजधानी।
हो फिरट अग्रेजा से अटकगी नृपति जग ठानी॥
कलकत्त का यठकामल म निन होना बतकही सही।
हिदुस्तान म बिना भरतपुर उम मरकी काई और नहो।
छीन छीन कर जाए जुल्म कई राजा की ले लई मही।
लूटी भरी बादशाही अब दिल्ली म क्या वाक रही॥
कई कराह मसूर अली मे रुप लिय जग न जानी।
हो फिरट अग्रेजा ॥
फिर वोला अग्रेज अपनी का इकबाल सदा का है।
लहम म मर मर लगे अडवीला जाट कहा का है।
द मूछा प ताव कहै न्योमिह हिन्द का नाका है।
मान हमारा कहा तक मत लड भरतपुर बाका है॥
जब बोला अग्रेज तुम्हारे मौत सीस पर मडरानी।
हो फिरट अग्रजों ॥
गाऊ आर म जुर मोरिचे जगी ताप जजीर चल।
धुआ घन घुमड बद्दल म प्रलय बान के से बदले।
गुब्बारे गोले बज्जर वे तार तमचे चल भले।
शक्ति शून तलवार हजारा बार सूर सम्मुख झले॥
— गढ म बाहर निकल लड जहानी मना मरदानी।
हो फिरट अग्रेजों से अडजगी नृपति जग ठानी॥
नेक फिरगी आगे शूरा ने खत लिख भेजा प्यारा है।
त हमा वहु किये याग अब म इक बार हमारा है।

घर से निकले जट्ट बाहर से हुलकर धर ललकारा है।
जिच्च फिरंगी किया जाय दस कोस पडा सोई हारा है॥
श्री महाराज रनजीत सिंह मूं छन रंग रही रजपूतानी।
हो फिरंट अंग्रेजा ॥

अठारह स साठ की साल मे साका हुआ बडा भारा।
हार गया अंग्रेज नृपत जीता रनजीत सिंह प्यारा।
जमना पार उतारे गोरे डोबे किते तेग धारा।
रमाल गिरि या कहे श्री व्रजपति नरेश जस विसतारा॥
हरनारायन मर्गो क साखे गावें सुन नानी ध्यानी।
हो फिरंट अंग्रेजो ॥

१००—रामदयाल —ये सामवंशीय क्षत्री मातीराम के सुपुत्र और भरतपुर निवासी थे। इनका जन्म सवत् १६०१ वि० तथा निधन १६५७ वि० मे हुआ। इनका केवल एक छन्द इनके सुपुत्र वल्लभराम से प्राप्त हुआ है, शेष साहित्य नष्ट भ्रष्ट हो गया बताया जाता है। इनका कविता-काल स० १६३० वि० ठहरता है।

कवित्त

सेसा मे महस से नारद हू मगन रहे,
मनक सनन्न सु नाम सो लगे रहैं।
बाल्मीक व्यास सुक ब्रह्मा हू धरें ध्यान,
मारकण्डे भुसुंड हू सदा उर म धरे रहैं।
नामम मुनि गौतम वसिष्ठ विश्वामित्र
सून बालसिल्य हनु सिव हू जगे रहै।
नाम न्व दादू कबीर सूर राम शरन
गम मरन रामदयाल भी खडे रहैं॥

१०१—साधूराम —ये कुम्हेर निवासी गंगाराम के पुत्र और जाति के ब्राह्मण थे। इनका कविता-काल सवत् १६३० से १६५० वि० तक ठहरता है। इनके रचित फुटकर छन्द पाये जाते है जिनम से कतिपय प्रस्तुत हैं —

कवित्त

झूम झूम आय आय बरसें फुहारन त
सीतल पवन मनु मन्द चल यागी है।

गरजें घन घोर घोर मोरा मचावें सोर
छाई वन बागन बहु भांतिन बहारी है।
चहक चिरयां नदी नारन प बोल रही
तालन पैं कोकिल की कूक लग प्यारी है।
मरन प मिथुन प छाई छबि साधू राम',
पावस की सोभा स्याम रंग अनियारी है॥

हाथ नहीं पाव नहीं पर नहीं पूछ नहीं
मानस को मास खाय बिन कहीं जावना।
मन म मगन रहे जान वह कहा रहै
देखी ना किसी न पूछे अगहू ममावना।
वाप मन जानो दोजौ ज्वाव हुसियारी सू
'साधू मा विचार साचे छन्द क्यो बनावना।
दगल म आवै स्याल मेर पर लाव बाना
छाड घर जाव गनी बात क्या बतावना॥

१०२–दिगंवर –ये रामाराम के अखाडे के कवियो म से हैं। विशेष खोज करने पर भी इनका वृत नहीं जान हो सका है। इनका कविता-काल सं० १९३० से १९५७ वि० तक है। उदाहरण स्वरूप इनकी एक रचना प्रस्तुत की जाती है —

कवित्त

निकस गये हाकम हुकम के करन हार
हाली औ मवासी न हू अलग खडे रहे।
आछे आछे महलन म पर्दा जडे बाफना के,
खास खास पलगन प तकिया धरे रहे।
गज तुरंग सूरवीर अस्त्र जावे माल,
मौर तोपखाने त अलग डरे रहे।
तजो दद–अवर 'दिगंबर पयान कियो,
आसन बिभूत के म बासन पडे रहे॥

१०३–गंगाबक्स –ये भरतपुर निवासी सीताराम के सुपुत्र और जाति के ब्राह्मण थे। इनका कविता-काल सं० १९३० से १९५७ वि० तक ठहरता है। इनके

केवल दो ग्रन्थ उपलब्ध हो सके है — (१) अद्भुत रामायण और (२) महिम्न का भाषानुवाद इनके अतिरिक्त राधा कृष्ण विषयक छोटी २ लीलाएँ भी पाई जाती हैं। इनकी रचनाओं से यह स्पष्ट है कि ये साधारण श्रेणी के कवि थे क्यों कि इनके छन्दों की गति म प्रवाह का अभाव पाया जाता है। उदाहरण देखिये —

छन्द तोमर

नख दीघ ग्रीवा सोय, दीघ माय चरण जाय ।
बहु मुखन पीरे नन, कोई मित्त कटक हन्न ।
हुए वही कण बखान, महाबल पराक्रमी जान ।
सा हैं असंखन बार आन प्रन की ममीर ।
ऐसे जा गगा गाय, घट ताल नाद बजाय ।
कोटिन किक्रिन आकार सब युद्ध मे हैं भार ।
है श्री ग्मातल बीर पिगाक्ष जा है सरीर ।
काटिन सु बीरहि जान कसी जा बानी मान ।

महिम्न भाषा कुडलिया

विजय नाम सम्बत प्रगट, गुनी मै अडतीस ।
मास भाद्रपद ग्रीष्म ऋतु सुक्लपक्ष बदीस ।
सुक्लपक्ष बनीम बद पान तिथि को ईसा ।
सा तिथि दसमी जान, बार मनि घटि चालीसा ।
मूल नाम नक्षत्र आयुष्मान दीसा ।
धृत वप सुजान, जो यह रच्यो बनीसा ॥

१०४—ठाकुरलाल —इनका जन्म सम्वत् १६०२ वि० म नन्दग्राम निवासी प० प्राणसुख के यहां हुआ था। आर मान नाना प० ग्यारम बटारे व पौत्र राव हरनार्यासह व पास कामा म आकर रहने लगे। शिक्षा पूर्ण होने पर ये शिक्षा विभाग म कामा के प्रधान अध्यापक पद पर नियुक्त होकर अध्यापन का काय करन लग। इनकी शेष आयु कामा म ही व्यतीत हुई। जहा इनके वंशज अभी तक विद्यमान हैं। शिक्षा विभाग के तत्कालीन उच्चाधिकारी प० मयाशकर स बिगाड हाने पर इन्होंने उनसे सम्बधित एक कवित्त बनाकर सुनाया, जिस पर अप्रसन्न हाकर कारई म उनका स्थानान्तरण कर दिया गया। तत्कालीन शिक्षानिरीक्षक रायमहाय को उन्होंने निम्नलिखित दाहा लिख कर भेजा —

वित वामा वित कारई, परयो विपति में आय।
ठाकुर दास गरीब की, करियो राम-सहाय॥

इस दोहा के पहुँचते ही बाबू रामसहाय ने उन्हें पुनः वामा भेज दिया। कुछ दिन नौकरी करने के पश्चात् उन्होंने पेंशन ले ली और वामा के गोस्वामी बल्लभाचार्यजी के आश्रय में रहने लगे। आपकी रचनाओं के कतिपय उदाहरण इस प्रकार हैं —

पावस वर्णन

कवित्त

पीउ पीउ रटन पपीहा निसि-वासर है,
घन घिरि आयौ नभ मंडल में छायौ है।
नाचत है केकी कीर कोकिला अलापैं तान,
थर हरात हियरा सोर घनन मचायौ है।
झूम रही बल्ली बन सघन लतान माहिं,
रौंच सुनि दादुर की जियरा डरायौ है।
यह तो बरसात रहत वर साथ जाकी,
जीवन जग ताको सु जाने पिय पायौ है॥

बरस रहे धारा धर धरा पै धाय धाय,
चमचमात चपला चित चाव को बढ़ावनी।
दाब घनघोर मोर कूकें चहुँ ओर सोर,
बगुलन की पाँति बहु भाँति ललचावनी।
प्रबल प्रवाह नदी नीर है गंभीर बहे,
सावन की रैन है मनोज सरसावनी।
दरसत घटान का छटा छवि माद भरी,
जीवन सुफल किये पावस सुहावनी।

उपदेश कवित्त

हिल मिल रहिये प्रयोजन या आठौ जाम
कीजिये जो काम जाम जीव कौ आराम है।
दीजिये दिखाई जाहि देखते ही चाह होय,
लीजिये न नीच संग नाम बदनाम है।
यहै द्विज ठाकुर समझ औ विचार-दस
गर्व औ गुमान को तजना एक राम है।

रूपसा रतन ।माये ।जोवन , सो धन ।पीय,
।। ।। —ताहक ।गमायबो गमारन को काम है ।।

१०५—रामनारायण—इनके पिता का नाम भीकाराम था। ये जाति के ब्राह्मण तथा तहसील डोग के अन्तर्गत खोह नामक ग्राम के निवासी थे। ये वल्लभ सम्प्रदाय के अनुयायी थे। इनका रचा हुआ एक सुन्दर ग्रन्थ राधा मंगल नाम का मिलता है। इस ग्रन्थ में श्री कृष्ण का श्री राधा के साथ विवाह होना वर्णन किया है। इसका रचना काल सं० १९३३ वि० है। भाषा सरल सुबोध एवम् पाण्डित्य पूर्ण है। प्रत्येक वर्णन में इतनी कुशलता है कि चित्र सा खिंच जाता है। इनकी कविता के उदाहरण प्रस्तुत किये जाते हैं—

छप्पय

नील सरोरुह स्याम काम सत कोटि लजावत ।
अरुन ब्रसन वारिज समान दृग अति छबि पावत ।
पीत वरन कटि बसन दसन दामिनी बिनिंदित ।
आनन अरुन उदोत ज्योति राका ससि निंदित ।
मन चोरत मुनि मुसक्यान मृदु नेति नेति श्रुति कहत नित ।
जन जान गुसाँई राम उर करहु बास नित हित सहित ।।

त्रिभंगी

इक दिवस सयानी जसुधा रानी दधि मथबे कूं आप लगी ।
सुत कूं पय प्याम गुन गन गाम दूध उफन तो देख भगी ।।
नहिं कृष्ण अघाये अति रिस छाये दधि मटकी के टूक किये ।
माखन सो खायो सैंस लुटाम्रो जब भय पायो भाग दिये ।।
गोपी सो आई देखि रिसाई खोज खोज लखे जात भई ।
पकरन को धामे हाथ न आमे तब मन में घबरात भई ।।
माता पचिहारी कृष्ण विचारी जन हित कारी ठहर गये ।
पकरयो कर जावें भौत रिसावें बांधन काजे दाम लिये ।।
ओछी भई डारी बहुतक जोरी तब मति भोरी होत भई ।
तब प्रभु मुसकाए आप बँधाए माया के विस भूल गई ।।
निज बाजि मिधारी इत बनवारी मन में सोच विचार भले ।
यो कहत गुसाँई "रामनरायण" नल कूवर के पास चले ।।

१०६—बालमुकुन्द—यह जाति के तलङ्ग ब्राह्मण तथा कामा के निवासी थे। इनके पिता का नाम मुरलीधर था। यह कामा में श्री गोकुलचन्द्रमाजी के

गोस्वामी वल्लभलाल के आश्रय में रहते थे। इनका जन्म सम्वत् १९०५ वि० है। इन्होंने 'कामबन महात्म' तथा 'सनातन धर्म-विजय' दो नाटक लिखे हैं। इनका कविता काल १९३५ वि० ठहरता है। रचनाओं के उदाहरण नीचे प्रस्तुत किये जाते हैं —

कवित्त

गोपीजन मोही सब रूप देख मोहन को,
मृगी गन मोही सब मधुर सुर गान पै।
वक्ष-स्थल दर्सिके रमांचित चंचल भयो
गाय सब मोही गोपाल लाल वान पै।
भक्त सब मोहे प्रभू भक्त-वत्सलता देख,
देव सब मोहे चार भुजा अभै दान पै।
दास के मुकुन्द चरनारविन्द मोहे सन्त,
तीन लोक मोहे तेरी बाँसुरी की तान पै॥

सात दरवाजे और मंदिर चौरासी जहाँ,
ऊँचौ एक महल सो प्रकट दिखात है।
अस्सी चार खम्भन की संख्या नहीं पूरी होत,
एक घट जात चाहे एक बढ जात है।
विष्णु के सिंहासन चौरासी बने ठौर ठौर
चरन पहाड़ी थारी भोजन सुहात है।
तीरथ चौरासी जाको राजा विमलेश जहाँ
कामबन जात ताको काम बन जात है॥

१०७—प्यारेलाल—ये अग्रवाले वैश्य और भरतपुर के रहने वाले थे। इनका मुख्य व्यवसाय दुकानदारी था। इनका स्वर्गवास सम्वत् १९७४ वि० के आस पास हुआ। इनका कविता काल १९३५ से १९६४ वि० तक माना जाता है। ये घनश्याम के शिष्यों में से थे। इनकी कविता का एक छन्द प्रस्तुत किया जाता है —

कवित्त

घन घन गरज छाय मेघ नीर झरी लाय,
सीतल समीर बहै तीक्षन दामिनी।
कोकिला विलोल बरैं मोर बोलैं जहँ ग्रार
चोप काम आयो जी अकेली ज्ञान-कामिनी।
प्यारे जी सरीर सुख सब कोऊ चाहत है
कठिन कठोर है पगई प्रीत-पामिनी।

मारैं डारैं मर्दनै मरोर डारैं बादरवा
दाबें लेत दादुर दबाये लेत दामिनी ॥

१०८—देवीराम —ये कामवन के निवासी और जाति के सनाढ्य ब्राह्मण थे। इनका जन्म सं० १८९८ वि० में हुआ था। इनका कविता काल संवत् १९३७ वि० बतलाया जाता है। इनके लिखे कुछ फुटकर कवित्तों से उदाहरण प्रस्तुत किये जाते हैं—

तोमर त्रिसूल खड्ग खप्पर विराज हाथ,
पास फाँसी चक्र गदा आयुध करालिका।
सिंह की सवारी कारी घटा छवि मान मारी
टीकौ मृग मद सुचि दीप लाल भालिका।
कलुआ मसानी भूत प्रेतन के दल संग
भरो अगवानी गले मुण्डन की मालिका।
बिन अपराध मोयं दुष्ट दुख दियौ मात
'देवी' दुख देबा की कलेवा कर कालिका ॥

खाय नाय पेट में गवाय नाम धूर धन,
देसौ बुद्धि राते दिन तोऊ तंग तौर हैं।
गांठ नाय दाम पै बिनार नाम काम काहू,
मांगन न जाय कहूं धनिन की पौर हैं।
पर उपकार हेत तन मन वार देत,
आपनी बिरानी माहि कूद पर दौर हैं।
देस लाग मानि जिन सरबस दियौ 'देवी'
नरन समाज माहिं वेही सिरमौर हैं ॥

१०९—नत्थीलाल —ये डीग के निवासी जाति के ब्राह्मण तथा बलदेव राम के पुत्र थे। इनका जन्म सं० १९३८ वि० में हुआ था। ये 'द्विजनाथ तथा नत्थन उपनामों से कविताएं करते थे। इनकी तीन रचनाएं —(१) विपरीत बोध (२) शुभागमन श्रीकृष्णसिंह यूरुप से और (३) शुभागमन श्रीब्रजेन्द्रसिंह मुद्रित हो चुकी हैं सांगीत इन्द्रानन्द बांसुरीलीला और नागलीला अभी अमुद्रित हैं। इनकी फुटकर रचनाएं बहुत हैं, क्योंकि ये ब्रज भाषा के पुराने मण्डलीय कवि हैं। इनकी कविताओं के उदाहरण नीचे दिये जाते हैं—

कवित्त

अनिल रचौं है दे द ताव विसकर्मा नें
आमय पचावन को शत्रुन अहारी है।
दल वलत वीर हर हर हसत रहै,
दामिनी लपक सीत्र 'म्यान ते निकारी है।
भनें 'द्विजनाथ महाराज श्री ब्रजेंद्रसिंह
तेरी भुजानी भव उदित मतवारी है।
भार देय भारी सी हारी रन मचाव अब,
भजनें म भवानी भाखत वलिहारी है॥

मोहन मुकुन्द गिरधर वृन्दा विपिन विहारी।
तुम चरणन की सरण हूँ, मैं प्रेम का भिखारी॥
स्वामी हो सबदा ही कर्ता हो जग जनन के भेदी हो भगवान सब मनन के।
नाता ही निधाना हो, दाता हो निधनन के निरमूल धूल मे से हो फूल जीवनन के।
जग आपका बना है, गिरवस गिरधारी तुम चरन की सरण हूँ मैं प्रेम का भिखारी॥

११०—जानी विहारीलाल—ये जाति के औदीच्य गुजराती ब्राह्मण थे। इनके पिता का नाम मन्नूलाल तथा पितामह का सदाराम था। आप भरतपुर म प्रधान अध्यापक का काम करते थे। इनका कविता काल स० १६५० वि० के आस पास है। इनकी रचनाएँ उस समय की पत्र पत्रिकाओं म प्रकाशित होती रहती थी। इस समय इन की ३ रचनाए उपलब्ध हैं—(१) दम्पति श्रुतिभूषण (नायिका भेद की उत्तम पुस्तक है। इस म कविता बहुत ऊची शृगार रस का दव और विहारी के भावो पर है। भाषा सरस प्रवाह युक्त है) (२) अष्टा अष्टक और (३) महिम्न। इनकी कविता के उदाहरण नीचे प्रस्तुत किये जाते है—

दोहा

अजन दृग मजन किये सजन भजन मान।
गजन कजन दुख दियें, जन रजन पिय जान॥
मनि मुक्ता हीरा जडे, पन्ना लटकत कान।
मनों समर घर द्वार प झूमत सुभट जवान॥
जटित सीस नक स्याम मनि, छवि सुन्दर इमि देत।
अली 'वेध चम्पक कली जनु पराग रस लेत॥

चित चकोर चिन्तात रह्यो बदन चन्द दुति भोर ।
रवि ऊवो नभ चढ गयो, तऊ न आयो भोर ॥
नीलाम्बर सो मुख ढक्यो या दासी नदनन्द ।
कालिन्दी कल नीर बिच भिलमिलात जिम चन्द ॥

विप्रलब्धा प्रौढा (कवित्त)

उमग उमाहन सो सकल सिंगार साज
पागी प्रेम पिय के सुभाइ सखि सग हैं ।
प्रीतम बिहारी केलि मन्दिर न पायो तहा
देख सूनो सज उठी बिरह तरग हैं ।
व्याकुल विकल भई बेकरार बाल परी,
लिपटी लटकि लटी दाऊ मुख सग हैं ।
मानो आज भूमि प सुधाधर ही परयो आय,
ताप तकि प्यासे अमी पीवत भुजग हैं ॥

उत्कठिता प्रौढा (कवित्त)

आली नभ लाली सी दिखान लागी जागी निसि
भागी भयो सोर भोर होन ही चहत है ।
चहुँ ओर बोल रहे पछी चौचहाट करि
चटक चट फूली कली फूयो चहत है ।
भनत रति पाली न आये बनमाली मैन
रन गई खाली जिय धीर न गहत है ।
तोहि वह यौ प्यारी भोर आवत ही 'बिहारी सो,
मान ठानि बठो मोन यो मन कहत है ॥

वेद न्याय सांख्य शास्त्र पाशुपति बष्णव य,
पाचो मत जुदे जुदे मारग बतावें हैं ।
मनकी इच्छानुकूल होय कें सुधर्मारूढ
गूढ इन पथन म तत्व तज धावें हैं ।
तेही परिणाम माहि अद्भुत अजन्मा एक
अनत अव्यक्त रूप आप ही को पाव है ।
सूध असूधे मग वही भये सरिता सब
जसे जाय अत एक सिधु म समावें हैं ॥

१११–जानी श्यामलाल –आप भरतपुर के निवासी तथा जानी बिहारीलाल हैड मास्टर के छोटे भाई थे। इनकी कुछ रचनाएं प्राप्त हुई हैं जो इनके विद्यार्थी जीवन की सी प्रतीत होती है। आपका कविता काल सम्वत् १९५० वि० के आस पास रहा है। उदाहरण प्रस्तुत किये जाते हैं —

स्थावर जंगम जीव अपार। भोगत भोग शरीरहिं धार॥
'श्याम' सुजान कियो निरधार। भाल लिखी लिपि को सक टार॥

चकोर छंद

गारस लै घरते, चलती बन श्याम अचानक गल मझार।
रोकत टोकत ल लकुटी कर मांगत दान मचावत रार॥
रूप सुधारस प्याय तब वह, जाय बसे अब कोस हजार।
हाय कहावत साची भई सखि, भाल लिखी लिपि को सक टार॥

११२–मुकुन्द –ये महाराजा जसवन्तसिंह के शासन काल में हुए थे और बयाना (भरतपुर राज्यान्तर्गत) के फौजदार गंगाप्रसाद के आश्रय में रहते थे। इन्होंने अपने आश्रयदाता के नाम पर 'गंगा पुराण' नामक ग्रन्थ की रचना की है, जिसमें गंगा महिमा तथा राजनीति आदि का वर्णन है। इनकी कविता बहुत साधारण कोटि की है। इनका कविता काल सम्वत् १९४० के आस पास है। कुछ पद्य उद्धृत किये जाते हैं —

दोहा

श्री गुरु चरण सरोज रज, सिर पर धारन कीन।
कवि 'मुकुन्द' वर गुन कहे सरस्वती वर दीन॥

चौपाई

तीन नयन उपवीत भुजंगा। सन्त बसत गिरिजा के संगा॥
ससि ललाट माथे पे राज। भागीरथी जटा में गाज॥
आदि कमंडल विधि उपजाई। दुतिय सीस शंकर के भाई॥
तहाँ अखण्ड एक गिरि भारी। जासों गो मुख निमल बारी॥

दोहा

भागीरथि सरनें गही, मत दरस हित लागि।
पातक जन के दूर कर, करे ज्ञान मन जागि॥

११३–जुगल किशोर –ये जाति के ब्राह्मण तथा भरतपुर के निवासी

थे। ये बहुधा भरतपुर के कवियों के अखाड़ों में सम्मिलित हुआ करते थे और तत्काल रचना करके सुनाते थे। इनके फुटकर छंद पाये जाते हैं। इनका कविता काल १९४० वि० के लगभग है। उदाहरण प्रस्तुत है —

कवित्त

बार बार हमसे इकरार किया आने का
वह दो आप आयोग कौन से महीना में।
इती निठुराई मित्र भाई है निहारे मन
कपट की न बात करो दाग हान गीना में।
'जुगल किशोर' जुग फूट नद मारी जाँय
जीती बाजी न हारो यह बात न करीना में।
आप सब प्रवीना कछु बुद्धि की कमी ना
हाय ऐसा जुल्म कीना सा साफ त्याग दीना में।

११४–मंगलसिंह —ये जाति के श्रीमाल जैन थे। आपके पिता नथमल श्रीमाला भरतपुर के प्रतिष्ठित व्यक्ति समझे जाते थे। आपका रचना-काल १९४० वि० के लगभग है। इनके रचित चार ग्रन्थ–(१) 'होरी के रसिक जनों का निवेदन (२) 'तीयकराचन (३) जबू नाटक (४) मंगल भजनावली प्रकाशित हो चुके हैं इनके अतिरिक्त २ अप्रकाशित ग्रन्थ और हैं जिनके नाम क्रमश ' श्रीमालों का इतिहास तथा पंच-पुष्प हैं। इनकी कविताओं के कतिपय उदाहरण निम्नलिखित हैं —

दोहा

कठिन प्रीत की रीति है, कठिन कर्म की नास।
भव सागर सो तरबौ कठिन धर्म विस्वास॥
वचन निवाहन कठिन है कठिन होत उपकार।
सम्पति में समता कठिन अरु सयम कौ सार॥

पद

प्यारे पइया परो गिर जाय जाय, मोप रंग जिन डारो धाय धाय।टेक।
न गुलाल मुख प लिपटानौ कर पकरयो मेरो आय आय॥
पिचकारिन सो बिंदिया सरक गई बिखरयो कजरा हाय हाय॥
दम दगाम त यहा गत कीन्ही कहा कहौं घर जाय जाय॥
मम्मी कान न बगि मनाई, 'मंगल' हा-हा खाय खाय॥

ज्ञान ध्यान धारणी अनेक दुख टारनी
त्रिताप को निवारनी सवारनी पवित्त तू।
जगत्त जोति जागनी सुहाय रग रागनी,
सु प्रेम पूज्य भावनी सुभागनी सरूप तू।
काम को बढावनी बढावनी अगूढ सुद्ध,
मनको समभावनी रिभावनी रसिक्क तू।
शम्भुनाथ भावनी अगाध बुद्धि लावनी,
सुरग रग रगनी तुरग रग भग तू॥

११५—घनश्याम —ये जाति के अग्रवाल वैश्य और भरतपुर के निवासी थे। इनका जन्म सम्वत् १८८४ के लगभग माना जा सकता है क्योंकि इनका स्वर्गवास ८० वर्ष की आयु में सम्वत् १९६४ में हुआ था। यह शोभाराम के समकालीन थे और अपने अखाडे के प्रधान थे। इन्होंने अटल बन्द दरवाजे बाहर वट के नीचे गणेश मूर्ति की स्थापना की जहां कवियों का प्रतिमास अखाडा जमा करता था। अब भी गनगौरा की तीज के दिन वहां पर कवित्त आदि होते हैं। इनके बहुत से शिष्य थे। इनकी रचित 'यमुना लहरी' तथा 'नख सिख' दो पुस्तकें हैं जिनसे कुछ छन्द उदाहरणार्थ प्रस्तुत किये जाते हैं। यमुना लहरी अप्राप्त है किन्तु उनके कुछ छन्द उन्हीं के शिष्य लाला कलावन्त बजाज से हमें प्राप्त हुए हैं—

यमुना महिमा

मैं तो कलि काल की कलौंछ मेटब के लिये
आयो तब नाथ नाक वेद सुन लीयो मैं।
भनै 'घनश्याम' नैक रविजा निहारे तीर,
नीर भरि हाथ में सु आचमन पीयो मैं।
जबते सरूप नटनटवर भयो है मेरो
लेस न परत कौन पाप कर्म कीयो मैं।
देवन की दवपति पतित बनाय मोय
कान कै समान कान कारो कर लीयो मैं॥

नख सिख

कधौं मखमली सेज साजी पिय केलि काज
कधौं रूप रमनीक मगल को थल है।

कधौ मृदु पानिप की धार की धरनता है
कधौ मुखचद हास कचन को पल है ।
कहै 'घनश्याम किधौ क्यारी रोम केसर की
सोभित है नाभि कुड मनका को जल है ।
कुवर किसोरी गोरी माखन त मृदुल महा,
उदर अमाल गोल पन्ज को दल है ॥

कधौ नाग नागनी के छुट भय नाग सुत
कधौ श्याम मावस क साभिन कुमार हैं ।
कहै 'घन सुन्र किधौ सुन मरवन के
मसले मसाले डर तम के से तार हैं ।
काम क तुरग फटकारब का चौर चार
कधौं अनुराग मुख चन्द के सिंगार हैं ।
कारे सटकारे भारे अतर फुलल डारे
मृदुल सुधारे यारे नवला के बार हैं ॥

जमुना लहरी

प्रथम नगि स्थल मे गौ लोक राखत हो,
दूज रवि मण्डल का किरन सुहाई हो ।
तीज 'घनश्याम भन जामन के वृक्ष पर,
चार्थ डार डारन मैं फल फूल छाई हो ।
पच मे प्रवस हिमगिरि म धुमी हो धाय,
पष्ठ मे बिराट शृग धूम छवि छाई हो ।
सप्त म चली हो गो लोक मा अपार धार
राधिका कुमारि के कुमारि ढिग आई हो ॥

विष्णु स्वास जल है सुजल प एक कच्छप है
कच्छप प शेष नाग फन बिस्तार है ।
कहै 'घनश्याम शेष नाग प धरी है धरा
धरा प धरयो एक भूधर अपार है ।
भूधर अपार प जामुन को वृक्ष एक
जामुन के वृक्ष पर फल दल वहार है ।
फल दल वहार पर मारतण्ड मण्डल है
मारतण्ड मडल म जमुना की धार है ॥

११६—मुरलीधर —ये गोमाराम के शिष्य थे। इनका जन्म सम्वत् १९१६ वि० तथा निधन सम्वत् १९८३ वि० है। मुरलीधर जाति के ढाकर राजपूत थे और महाराज कृष्णसिंह के इजलास खास में जमादार थे। इन्हीं महाराज ने आपको 'कविराज' की उपाधि से विभूषित किया था। समय २ पर कितने ही स्थानों से समस्या पूर्तियां पर आपने पुरस्कार तथा सम्मान प्राप्त किया था। यद्यपि ये विशेष पढ़े लिखे न थे तथापि नायिका भेद एवं अलंकारों का विशेष ज्ञान था। प्राचीन कवियों की कृतियों का आपने अच्छा अध्ययन किया था। कविवर ग्वाल पर इनकी विशेष श्रद्धा थी और उनके लिखे हुए छन्द आपको कण्ठ थे। आपकी तीन पुस्तकें मिली हैं—(१) गज प्रकाश (२) वाग्णि विलास और (३) दीग वर्णन इनके अतिरिक्त आपके फुटकर छन्द भी बहुत मिलते हैं। आपकी भाषा सरल सरस एवं प्रसाद गुण युक्त है। उदाहरणार्थ कुछ छन्द प्रस्तुत किये जाते हैं—

कवित्त

बारठे के महल बसन दरबार होन
सुखमा बिमान की सुरेस लखि लाज है।
पीरे रंग अंग सजे भूसन बसन चारु,
मानिन हैं जैसे बीर रस को समाज है।
न्यौछावर नजर करें हैं सरदार सब
उड़त गुलाल नाच बाजन को साज है।
ताम श्री ब्रजेन्द्र महाराज कृष्णसिंहजी ने
'मुरली मनोहर' बनायो कविराज है।

प्रबल प्रतापी श्री ब्रजेन्द्र जसवंत सिंह
जा दिन सिधारे स्वर्ग चढ़ के विमान में।
कामदार रयत सिपाह आँखि आँसू ढरें,
हाय हाय तो सी ना नरेस भो जहान में।
'मुरली मनोहर' महीपन के सोच महा,
सात हू बिलायत मांक दमहू निसान में।
भूपर मनुज रोवें पेड़न पखेरु पुंज
तारे ससि सूरज हू रोवें आसमान में॥

फील मुखड़े पे एक दन्त की कमाल जेब,
माहताब सर पर भलकना नूर बन्द है।

तसबी ताल गुल नडडू चार दम्न नीच,
पहने गले गोहर का हार हरचन्द है।
'मुरली मनोहर' जुवा मा दुव नाम लेत,
बवलो को टाल कर जर ववगद है।
हुआ है न होयगा जहा म अक्लमन्द एसा
जसा श्री गणेश कोहजा का फरजन्द है॥
उमड उमड एंड एड व मगारी वढ
ह्ल ह्ल क मगन मन युद्ध को उमक्वर।
दख दख दूर त झपट्ट मप्पट्ट भर
साकर तुराय स।फ तीर से लपक्कर।
मुरली मनाहर सो मन मुडे सीगन के
वज्र के समान भिर नक ना हिचक्कर।
हक करें न धक वर न सक वर ह्यिे न नक,
छूटत ही बाजत धडाधड की टक्कर॥

जाके रूप आग रूप रूप को न जन्यो पर
एसी तो अनूप रूप हायगी न है गई।
रभा सी रमा सी उवसी सी तिलात्तमासी
सची मनका हू महा उपमा लज गई।
'मुरली मनोहर' निहारी वह एक बेर
फेर ना खबर कहा किन म बिल गई।
छल ही छलाबा ही कि छला की छलन हारी
आई आग लन को सु दूनी आग न गई॥

भीष्म प्रतिना (सवया)

आज सुरासुर दखत ही रन बानन की वरसा बरसाऊँ।
मार रथीन महारथि हैं भुवि सोनित की सरिता उमगाऊँ।
भीसम भौंह चढाय कहौं 'मुरली' हरि हाथन शस्त्र गहाऊ।
स्वर्ण-ध्वजा कपि की करिके तब तौ नृप शान्तनु पूत कहाऊ॥

कुडलिया

दीन राधे का सखी गुथ बेला के हार।
जाने परें गुलाब क, जा कर लिये कुमार।
जा कर लिये कुमार, भये चम्पा गर धारत।
गुल सोसन क मय नन पुतरीन निहारत।

ज्यों के त्यों ही तुरत, गिहम कैं चेला कौन ।
ऐसे चरित दिखाय कृष्ण चद्दन कर दीन ॥

राखे हम चुगायन कर मुक्ता घरलीन ।
मुरली कर दुति अरुनमा अरुन सु मुक्तावीन ।
अरुन सु मुक्ता वीन परयौ हसन भ्रम भारी ।
दौर चुगन चकोर ममुक्त पाक चिनगारी ।
तब मु करि मुख हसी भय मित लाहिन आये ।
तौ लाग रहै लरन करन यह कौतुक राय ॥

दोहा

शाही फौज भजाय कें दिल्ली कर उजरन ।
किया जवाहरसिंह नृप, यह दरबार बमत ॥

कवित्त

प्यारी प्रिय सग रग भौन म सुरति कर,
अगन मा उमग अनग उदर्यौ पर ।
भूमिन करन भई भूसन कहूँ क कहूँ
जरी के दुकूलन तें बादला झरयौ पर ।
'मुरली मनोहर' कहैया रगरन वार
वदन अनूप श्रम स्वद निचरयौ पर ।
मानौ सुरभान ते हिय म भय मान वार,
मुधा की प्रवाह मुधानिधि तें ढर्यौ पर ॥

११७—नवल किशोर—ये जाति के ब्राह्मण और भरतपुर के निवासी थे। इनके पिता युगलकिशोर तथा पितामह लक्ष्मीनारायण एव प्रपितामह गणेश सभी कवि थे। कविता इनकी पैतृक सम्पत्ति थी। इनके वशधर अब भी कवीश्वर नाम से प्रसिद्ध हैं। इनका कविता काल सम्वत् १८४२ से १८७० वि० तक पाया जाता है। इनकी रचनाएँ (१) जुगल विलास (नायिका भेद) (२) पथना युद्ध (३) दुर्गाष्टक और (४) विवाहोत्सव (श्री कृष्णसिंह) हैं। इन्होंने ब्रज भाषा का प्रयोग किया है जो अलकारों की छटा से सुसज्जित है। इनकी रचनाओं के उदाहरण प्रस्तुत किये जाते हैं—

सवैया

चैन नहीं दिन रैन परयौ, जबतें तुम नैनन नैक निहारे।
काज बिसार दिये घर के ब्रजराज प लाज समाज बिसारे ॥

सा विनती सुन मोहन मानिया मोसा कभू मत हूजियो न्यारे।
मोहि सदा चित सा नित चाहिया,नीके के नेह निवहियो प्यारे॥

भुजगी

झरें श्रोणधारा गिर भूमि माही।
गिरे वीर योद्धा, रही सुद्ध नाही॥
झरी मेघ की सी लगी तायरी है।
वधू इन्द्र की सी सु बूंदी परी है॥

पथना युद्ध (रोला)

तोप शब्द घन घोर, रार मारन जब पारी।
मनौ पथन माझ, भई पावस ऋतु भारी।
धूम उठ चहु ओर मनो बादर दलछाय।
उडत पतगा लखे मनौ खद्यात जुधाये॥
वरसत गोला नाहिं, मनो श्रोला सम झरक।
गोलिन की बौछारि परत ऊपर गढ गरिक॥
झमझमात समशेर तेग चपला अति चमकें।
बक कतार ज्यो उडत तई भाले ज्यो तमक॥

दोहा

इत पावस ऋतु शिशिर मे दरसी है मधिवाय।
रस रे गन्ध अपार है कानन सुनी न जाय॥

कवित्त

नाभा को सदन सब भांति ते भरतपुर
आनद अपार नित नय सरसत हैं।
तहा श्री ब्रजेन्द्र कृष्णसिह महाराज राज
अमित उछाह रूप बत दरसत है।
दीपन मे दिपत दिलीप ज्यो महीपन म,
देखि देखि सुख ब्रजवासी हरसत है।
द्यौस द्यौस उत्सव ते उत्सव अनत गुनो
अग अग दूना दून रग बरसत है॥

११८—कृष्णदास—ये वल्लभ सम्प्रदाय के अनुयायी तथा जाति के सूर्य्य द्विज ब्राह्मण थे। इनके गुरु का नाम गोस्वामी गोपेश्वर महाराज था। इनका कविता-काल १९४५ वि० के आस पास है। ये नगर के तहसीलदार और उच्च

श्राटि के कवि थे। यद्यपि इनके लिखे कितने ही ग्रन्थ बतलाये जाते हैं, किन्तु हमें केवल तीन ग्रन्थ ही देखने को मिले हैं—(१) रस विनोद—इस ग्रन्थ में रस, नायक-नायिका भेद और संचारी भाव आदि का सुन्दर ढंग से वर्णन किया गया है। (२) भक्त तरंगिणी—इसमें भक्ति की महिमा का वर्णन करते हुए कृष्ण के प्रेम पर पूर्ण रूपेण प्रकाश डाला गया है। इनकी कविता में नन्ददास के काव्य का सा आनंद आता है। (३) भगवत सलाह पीयूष—यह ग्रन्थ प० फतहसिंह तथा मथुरा निवासी व्रजमोहनदास के परामर्श से लिखा गया था। इस ग्रन्थ की रचना सर्व प्रथम संस्कृत में हुई फिर हिन्दी गद्य में अनुवाद किया गया। इसके अवलोकन से उत्तर हरिश्चन्द्र काल की व्रज भाषा के गद्य का आभास मिलता है। यह भक्ति रस प्रधान ग्रन्थ है। इनकी कविता के उदाहरण देखिए —

खंडिता लक्षण

और तरुनि के चिह्न सहित पिय जिहि घर आवै।
बुद्धियुत अति चतुर 'खंडिता' ताहि बतावैं॥

उदाहरण (दोहा)

कहा बात निसि इत लसे दरस दिखायौ भोर।
वह देत हिय धा लगी कठिन कुचन की कोर॥

कलहान्तरिता लक्षणम्

नहि मान जो मान मनायौ तरनि रिसाई।
कलहान्तरिता वनिता पुनि पाछे पछिताई॥

उदाहरण (दोहा)

गहि गई कार कटाक्ष की हियते बिसरत नाहिं।
रोमहि निरखन सुधि करन स्याम छुवानो बाँहि॥

११९—ऊपरराय—ये कामा तहसील के नौगावा नामक ग्राम के रहने वाले थे और जाति के राय थे। इनका विशेष वृत्त उपलब्ध नहीं हो सका है। आपका कविता काल सं० १६५० वि० के आस पास प्रतीत होता है। इनकी कविता का उदाहरण प्रस्तुत है —

सुधा रस त्यागो तो न यावो कछु अभिमान
विष अनुराग्यो तो न मांद उर आनि हैं।
जोग लिए भजो तो हमारे तन भोग मम
निश्च अधिक यह लीना हम जानि हैं।
उद्धव जू ऐसे ही विचार रहियो सँभारि,
भूलत कहीं है यह भूल जिय खानि हैं।

हमतो हैं वेही वेही ओर तें भये हैं ओर,
　　ओर तें भय ह तई ओर वात जानि है ॥

१२०—कृष्णलाल—ये भरतपुर निवासी गुलावसिंह के सुपुत्र और जन मत के अनुयायी थे। इनका कविता काल स० १९५० वि० के आस पास है। इन्होंने 'वियोग मालती' नामक ग्र थ की रचना की है, जिसमें इनका व श परिचय मिलता है। इनकी कविता का उदाहरण देखिए —

दोहा

चचल चपला दामिनी, अधरन की जनु होल ।
कोकिल कंठी बदन त निकसत नाहीं बोल ॥

मयन कुसुम भ्रकुटी रची, बना अनग कमान ।
आप अहेरी जावनी तकि तकि मार बान ॥

ये नना वरी अरी करन चह कछु और ।
गोके बन न रोकत लग रहे छवि ठौर ॥

१२१—कनल वहादुरसिंह—आपका जन्म भरतपुर मे एक सम्भ्रान्त ब्राह्मण कुल म साम्वत् १९१३ म हुआ था। आपके पिता भगवानसिंह यशब त काल म नमक विभाग के अध्यक्ष थे। स्वय वहादुरसिंह सेना म कनल तथा तोसखाना विभाग के मुतजिम थे। आप हनुमानजी के अनन्य भक्त और उच्च कोटि क कवि थे। य विहार उपनाम से कविता करते थे। इन्होंने लगभग २१ ग्र थो की रचना की है। आपकी भाषा वडी ही सरल सरस मुहावरेदार तथा भावपूर्ण है, उस पर प्रान्तीयता की छाप स्पष्ट दिखलाई देती है। जहाँ पर ख्याल लावनी तथा शिपरणी आदि आते हैं वहा कुछ २ खडी बोली का भी आभास मिलने लगता है। उदाहरण देखिय —

सीता मगल (कवित्त)

सागर सुधा के मे सम्प कौं बनाव वच्छ
　　तापर जमाव गिरि सुदर शृङ्गार को।
नरम नवीन सुचि रेसम की नती कर
　　मथन मनोज या सरोज कर धार को।
एत उपचारन त प्रगट रमा जो होय
　　तोऊ सकुचात मन वाजिद कुमार को।

सीता मम सीता जग और न पुनीता काई (१५३)
गाव वेद गीता जस सीता के विहार की ॥
केसर चमेली तल गरद मिलाय सान
उबट न्हवाय के अगोछ रग भीने हैं।
मानिन के काम की सुभायमान आए पग
कामलता चाज व सरोज छवि छीन–हैं।
तरया अग्न ध्वज अकुमादि चिह्न सारे
माहैं लन गमिक निहार मन लीन–हैं।
हीन भय हीरा मनि रीन स न्हिाई दन
मीन हू अधीन नम्र मीन समि कीन है ॥
राधा कृष्ण विहार (सवया)
वालन आइ वन घर बीच बडो अति बाहर होत खरारी।
क्या नहि रोकन मात जसोद लस नहि तू सुत व गुन भारी।
माखन भौन घर दुबकाए विहार कहैं पुनि लेत निहारी।—
चारत धाम मध्य नवनीत बडो अब ढीठ भयो बनवारी ॥
कवित्त
बाग नन फूल माई नम्र बहु रगन के
नज फहरात जिमि अचल उडाव है।
गाजत हैं दुदुभी अनूप, पग नूपुर सी
काटि कर किंकिनी मकल छवि छाव है।
चित्रिन निकन-मनी भूखन जडाव जडे
थनम उरोज-प निहार नलचाव है।
मातिन की झालर भमक द्वार एसे रही—
जसे निय कथ का, गिलोक-सुख पाव है ॥
सुदर नवनी पिकबैनी मृग ननी बाल
आई है सिंगार साज द्वार काम धाम की।
गावती मलारें श्री निहारें मघ मालन का
आनद निचार हिय ध्यान घनश्याम की।
सीतल सुगध मद चलत समीर तहा
करत विहार चित चार लन वाम की।
जमुना क कून आज भून अज दूल्है तीज
धारी मन फूल नम भूल मन काम की ॥

सवैया

मोद बिहार कियौ पति संग पलग प केलि कला भल ठानी।
भोर जगी मुख घोवन हेत लियौ कर में भरि नीर सयानी॥
ही गज मूरति बिंद ललाट परी वह छूटि सुहाथ समानी।
देख हसी मुग्धिवाय तिया इम डूबत हाथी हथैरी के पानी॥

१२२—बाबू कन्हैयालाल —ये भरतपुर निवासी मंगलसिंह के पुत्र और जाति के श्रीमाल जैन थे। इनका जन्म सम्वत् १९२८ के आस पास हुआ था। आप हिन्दी उर्दू और अंग्रेजी तीनों भाषाओं के अच्छे ज्ञाता और उच्च कोटि के कवि थे। इन्होंने सात ग्रंथों का निर्माण किया जिनमें से पांच प्रकाशित हो चुके हैं —(१) भक्तामर स्तोत्र (२) घनश्याम संदेसावा (३) अजना सुन्दरी नाटक (४) रत्न सरोज नाटक और (५) शील सावित्री नाटक प्रेममयी नाटक और रसिक सुन्दरी नाटक अभी तक अप्रकाशित है। आपका एक फुटकर संग्रह भी मिला है जिसमें लगभग २००० छन्द विविध विषयों पर लिखे गये है। इनमें कुछ उर्दू की गजलें कसीदे और अंग्रेजी की पाइम्स भी है। तारीख ३ फरवरी सन् १९३३ का लिखा हुआ अन्तिम छन्द देखिए —

कवित्त

पाती के ऊपर ही पीतम के अक्षर देख
छाती सो लगाय मृदु होठ चूम लीनो है।
लीनी है निकार फार कागज समोद बाल,
बाचत ही बाचत कछु मन्द मुस्कीनी है।
मन की उमग झलमलत चन्द्रानन प
पत्रिका ने मन्त्र फूक कीनी रस भीनी है।
आमते सजन की का हम रोक लहू गल
कंचुकि दुराय सरमाय चल दीनी है॥

आपकी चमत्कार पूर्ण नवीन उक्तियों के सरस छन्द उदाहरणार्थ प्रस्तुत किये जाते हैं —

गुण अवगुण जामे परयौ, वाहि नही बिसराय।
चन्दन हू की अग्नि लगि, देव देह जराय॥
जारौ या मन जारिये, हम सा चार निगाह।
पट घूघट का कर सके हिय में पठी चाह॥
कहैं ब्राह्मण दीजिये मिष्ट भोज निज हेत।
स्वर्ग बैंक में कर जमा लीजे ब्याज समेत॥

सुन्दरि तेरी देह में विद्युत प्रवाह महान।
ताहि चालन कों लगे कुच द्वै बटन समान॥

१७३—गुलाबजी मिश्र—आपका जन्म भरतपुर के एक सम्भ्रान्त ब्राह्मण कुल में सम्वत् १९२८ में हुआ था। ये संस्कृत और ज्योतिष के अच्छे ज्ञाता थे और हिन्दी में 'कंज' तथा 'भूमि कंज' उपनामों से रचनाएं करते थे। 'श्रीरामचरित-मानस' के अद्वितीय विद्वान् होने के कारण आपकी ख्याति दूर २ तक फैली हुई थी। श्री हिन्दी साहित्य समिति से आपका विशेष प्रेम था जहां मृत्यु पर्यन्त इन्होंने पुस्तकालयाध्यक्ष के पद पर कार्य किया। आपकी रचनाओं से कुछ छन्द उदाहरणार्थ प्रस्तुत किये जाते हैं—

कवित्त

आयौ है फागुन मची है धूम ब्रज भर में
भोर ही तें कुंवर कान्ह रंग में रंगे रहैं।
संग में सुदामा श्रीदामा मधुमंगलादि,
लै लै पिचकारी महा मोद में पगे रहैं।
गावत कबीर मा उड़ावत अबीर कंज
मलत गुलाल गोरे गालन सगे रहैं।
चोवा और चन्दन की मची है कीच बीथिन में
हारी पिचकारन के झुंड से लगे रहैं॥

आई फेर राधिका दई है टेर गोपिन को
ललिता विशाखा तुंगभद्रा सखी रहैं।
हारी मन आसा नेंक पकरि नेंक प्यार कूं
करेंगी निहाल याहि योंहि ठरी रहैं।
ऐती सुन धाय जाय पकर लियौ कान्ह कूं
छीनी सब आन माल मोतिन लरी रहैं।
मलत गुलाल गाल गुलचाद बंदी भाल,
चूनरि उढ़ाय प्यार सूत्र बन्नी रहैं॥

धर्म की मूरति है कि न्याय की सूरति है
दया को दरयाव है कि दानी दानवीर सों।
पीर कौ धरया पर पीर कौ हरया किधौं
दीनन कौ भया औ सनेया सांई सीर सों।

गोधन को भक्त अनुरक्त विप्र पाद पद्म
सीतल और स्वच्छ शुद्ध गंगा के नीर सौ।
भूमि कंज कृष्णसिंह भूपति तिहारो जस
बरनौं कहा लौ बाढ्यौ द्रौपदि के चीर सौ॥

लाज कौ जहाज है कि साज है मुसाहिबी कौ,
दृग अभिराम है कि मन्मथ कौ रूप है।
अरि उर साल है कि सतन प्रतिपाल किधौ
राम जू कौ लाल है सुकोरनि कौ भूप है।
राज काज दक्ष है प्रत्यक्ष है प्रभाव कंज
सैना सचालन में अद्भुत अनूप है।
राजन के राज महाराज श्री कृष्णसिंह
जंबू द्वीप खंडन में तौलो तुही भूप है॥

जा दिन ते प्राणनाथ साथ गये ऊधव के,
ता दिन ते गोपी ह्वै मौन धरी रहती हैं।
करके उपवास त्रास दर्कें निज देही का
प्यारे के वियोग जन्म सारे दुख सहती है।
भूमि कंज बार बार याद कर मोहन की
आसुन की नदी धार बीच चली बहती है।
गोपीनाथ गोकुलेश दरश देवो वेगि आय,
करि पछिनहौ हाय गोपी यो कहती है॥

जब लौ जग माहि सयोगी सनेही सयोग भरे सुख पायो करे।
जब लौ अरविन्दन की कलिया अलि वृन्दन के मन भायो करे॥
जब लौ भुवि गंग की धार बहै नभ मंडल सूर्य सुहायो करे।
तब लौ ब्रजरानी हमारी सदा मन भाई सु तीज मनायो करे॥

१२४—लक्ष्मीनारायन "काजी"—ये भरतपुर के निवासी और जाति के ब्राह्मण थे। ये संस्कृत और हिन्दी दोनो के प्रकाण्ड विद्वान् थे और दोनो मे ही कविता करते थे। आप बड़ी सरल प्रकृति के थे और शिक्षा विभाग मे अध्यापक का कार्य करते थे। इनकी मृत्यु के अनन्तर इनका काव्य संग्रह अस्त व्यस्त हो गया। इनका कविता काल सन् १९१५ के आस पास माना जाता है। इनकी रचनाओं के उदाहरण देखिये —

पतङ्ग

दर्शन देगा नहीं पतङ्ग।
पूर्व दिशा में चमक रहे हैं खद्योता समग।
पट पट पर चमक चमक झिलमिलाते अगणित रंग॥
क्या इनके प्रकाश से विकसित होंगे पङ्कज वृन्द।
जिनके सौरभ से प्रमुदित हो होंगे मत्त मिलिन्द॥
क्या जग का तम पुञ्ज नष्ट हो सकता घोर अमन्द।
चक्रवाक दम्पति के भी क्या मिट सकते दुख द्वन्द्व॥
इष्ट देव हो अपने मन में श्रद्धायुत सानन्द।
अभिवादन के साथ अर्घ्य क्या देंगे भूसुर वृन्द॥
होंगे नहीं नित्य, नैमित्तिक काम्य कर्म रस रंग।
जब तक नभ मण्डल में दर्शन देगा नहीं पतङ्ग॥

अरे तू अब भी चेत पतङ्ग।
रूप रंग के सिवा नहीं कुछ बल है तेरे तन में।
इनके ऊपर फूल गया तू जाकर उच्च गगन में॥
यदि कोई मिल गया तुझे, तू लड़ने लगा उसी से।
किन्तु प्रेम व्यवहार न तूने किया पतङ्ग किसी से॥
सदा साथ संयोग कथन क्या तूने नहीं सुना है।
चढ़ी हवा में गर्वित हो जो इतना आज तना है॥
गुण भी है अति विकट तेरा जिससे उन्नति पाई।
यह जब होगा नष्ट न जानें कहाँ गिरेगा भाई॥
या तो कण्टक मय पथ में पड़ छिन्न भिन्न होवेगा।
अथवा किसी जलाशय में गिर रूप रंग खोवेगा॥
संचालक को धन्यवाद दे रक्षा कहीं करेगा।
नहीं एक झटके में तेरा काम तमाम करेगा॥

अरे तू अब भी चेत पतङ्ग।
जिस प्रदीप पर बार बार गिरता है सहित उमंग।
देख स्वयं उसकी निष्ठुरता सभी हो रहे दंग॥
इसके रूप रंग के कामुक कितने कीट विहंग।
प्राणहीन हो चुके बहुत से करके गहरा संग॥

तू समझा था मेरे कारण जला रहा यह अग।
तेरी भारी भूल हुई थी यह तो कीट विहग ॥
स्नेह भरी इससे लिपटी है बत्ती जो मृदु अग।
धीरे धीरे जला रहा है उसका भी यह अग ॥

१२५–सुदरलाल –यह जाति के ब्राह्मण और डीग के निवासी थे इनका जन्म सम्वत् १६३२ वि० मे हुआ था। इन्होने केवल परमराम सगीत नामक ग्रन्थ की रचना की है। ये चौबोने बाज मात होते है। इनकी कविता का उदाहरण नीचे प्रस्तुत किया जाता है।

लक्ष्मीवचन चौबोला

ससि मुख सुदर आपको, क्या है नाथ उदास।
चिन्ता राहु बन ग्रसन आई तुमरे पास ॥
आई तुमरे पास, नाथ यह कारण कहा भयो है।
कान्ति हीन छबि छीन देख मम उर म सोच छयो है।
मोयहीन जलहीन मीन लख, मेरो दुख नयो है।
काठिन बृह्म सेस थके तव भेद न काहू लह्यो है ॥
जान चरणन की दासी कौन कारण सुख रासी।
मोय यह ससय भारी।
हे भगवत आपकी माया प्रबल नचावन हारी ॥

१२६–माजी श्री गिरिराज कुवरि –ये महाराजा रामसिंह की धर्म पत्नी तथा महाराज कृष्णसिंह की माता थी। आपने कृष्णसिंह के शैशव काल म राज्य हित तथा प्रजा हित के लिय जो काय किये वह भरतपुर के इतिहास मे स्वर्णाक्षरो से अकित रहेंगे। स्त्री समज के कुरुचि पूर्ण गीतो को सुनकर आपके हृदय को बडी ठेस पहुँचती थी। अत सद्भावना से प्रेरित होकर आपने सन् १६०५ ई० म स्त्रियो के गाने योग्य सुदर गीतो का एक सग्रह 'व्रजराज विलास नाम से प्रकाशित कराया। इसके अतिरिक्त महिलाओ क दैनिक उपयोग म आने योग्य व्रजराज पाकशास्त्र नाम से एक और ग्रथ भी लिखा है। इनके गीतो के कुछ उदाहरण प्रस्तुत हैं —

एरी तोहि कहत लाज नहिं आत माहि झूठो दोष लगाव।
श्रवनन सुयो नयन नहिं देख्यो, का नदलाल कहाव।
क्या बिन काज परी हो पीछे क्या नित मोहि खिजाव।
श्वेत श्याम रातो क पीरो कसो बरण सुहाव।

इन आनन कछु हाय न आव नित उठि मोहि उड़ाव।
किन में रहत कौन को ढोटा कहा तू मोहि सुनाव।
का जान झूँठी साँची तेरी हाँसी मोहि न भाव।
जो तू मनमोहन संग मरी प्रीत पुनीत बताव।
तो व्रजपति सों लगी लगनिया लागी य कौन छुड़ावै॥

कौरनि ने व्रज नार बुलाई
ताहि पठाई गोकुल नगरी, बुलवाय व्रजराज कन्हाई।
चलत चलत इक सखी सयानी नंद महर के घर में आई।
कहत जसोदा सो व्रज सुंदर कौरनि ने बोले मदुराई।
महर हरष सुन विलम न कीनो, दिये तुरत गोविंद पठाई।
व्रजपति श्री वृषभानु के आये, गारी गावत नारि सुहाई।

बरसाने मेरी बीर बंगला छवाय देती ॥टेक॥
महर यशोदा ये पकर बुलाय लेती श्री वृषभानु ते गाठ जुड़ाय देती॥
बहन सुभद्रा ये पकर बुलाय लेती, श्रीदामा संग जोट मिलाय देती॥
कुन्ती फूफी ये पकर बुलाय लेती, लाडली के फूफा संग ब्याह कराय देती॥

१२७—शंकरलाल— आप नगर निवासी प्रसिद्ध कवि रामलाल के भतीजे तथा हनुमन्त के सुपुत्र थे। आपका जन्म असाढ़ सुदी ७ बुधवार संवत् १९३३ वि० का तथा निधन ज्येष्ठ सुदी ७ बुधवार सं० १९८३ वि० को हुआ। इनके रचित तीन ग्रंथ हमें मिले हैं—(१) हनुमन्त यश (२) राम कथा और (३) गान संग्रह। आप अपने समय के प्रतिष्ठित कवियों में गिन जाते थे। उदाहरण देखिए—

हनुमान यश (कवित्त)

अति बल धाम तेज पुंज उपमा के जिन,
काम मद भंज इन्द्र हू के मान मारे हैं।
कहि 'हनुमंत सुत' राम जू के प्यारे अति
काज सिय सार घन निश्चर निवारे हैं।
संकट निवारे निज दासन के त्रास हरे,
अधम उधारन अनंत दुष्ट मारे हैं।
मारे हैं गुमान मेघनाद पुनि रावन के
ऐसे हनुमान गन्य रक्षक हमारे हैं॥

२४ अवतार वर्णन (छप्पय)

मच्छ कच्छ नरसिंह कोल द्विजराज राम रत ।
बावन कृष्ण सुबुद्ध कल्कि नाशक मलेच्छ दल ।
व्यास प्रभू हरि हंस जग्य हयग्रीव बखाना ।
मन्वंतर ध्रुव रिषभदेव धनवंतर मानो ।
कपिल देव सनकादिक बद्रिनाथ क्रीडा करन ।
हनुमत सुमन शंकर सुकवि चतुर बीस लीजै शरण ॥

१२८—सत्यनारायन कविरत्न—इनका जन्म २८ फरवरी १८८० ई० तदनुसार माघ शुक्ला १३ सोमवार संवत् १९३६ वि० को सराय नामक ग्राम (आगरा) में हुआ था। कहते हैं जिस समय कविरत्न का जन्म हुआ उस समय इनकी माता की दशा बड़ी करुणा जनक थी, और वह दीन हीन निस्सहाय अवस्था में इधर उधर अबोध बच्चे को लेकर भटकती फिरती थी। इनकी माता पढ़ी लिखी होने से अध्यापन कार्य करती थी। संयोगवश इसी गाँव के मंदिर के महन्त रघुवरदास का इनको आश्रय प्राप्त हो गया। रघुवरदास को पठन लिखन का व्यसन था और इनके यहां हिन्दी की हस्तलिखित पुस्तकों का एक अच्छा संग्रह भी था। ऐसे साहित्यिक वातावरण में पालन पोषण होने के कारण सत्यनारायण की काव्य से अभिरुचि होना स्वाभाविक था। अतः ये बाल्यावस्था से ही काव्य रचना करने लग गये। बचपन का यह काव्यांकुर आगे चल कर पल्लवित एवं पुष्पित होने लगा यहां तक कि इनकी कविताएं इतनी उच्च कोटि की होने लगी कि तत्कालीन विद्वत् समाज मन मुग्ध होकर मुक्त कंठ से उनकी प्रशंसा करने लगा।

कविरत्न अध्ययन काल से ही भरतपुर आते जाते थे क्यों कि विरक्त मन्दिर के महन्त जगन्नाथदास अधिकारी एवं मयाशंकर याज्ञिक से आपका अधिक सम्पर्क था। ये दोनों हिन्दी के माने हुए विद्वान् और काव्य प्रेमी थे। भरतपुर से प्रेम होने का दूसरा कारण यह भी हो सकता है कि इनको रसिया सुनने का बड़ा चाव था और भरतपुर में रसियों का बहुत प्रचार था। श्री बनारसीदासजी चतुर्वेदी ने इनकी जीवनी में लिखा है कि कविरत्न के आग्रह करने पर उनको एक बार हिन्दी साहित्य समिति भरतपुर में अनेक रसिये सुनाए गए, जिनमें से उनको यह टेक बहुत पसंद आई 'बखेरी डोल पीहर में'। सत्यनारायन को केवल रसिया सुनने में ही आनंद नहीं आता था अपितु रचने में भी। तत्कालीन महाराज किशनसिंह के अधिकार प्राप्ति के अवसर पर आपने निम्न रसिया स्वयं रचकर सुनाया था—

धनि दुलहिन सो रही आज भरतपुर नागरिया ।
द्वार द्वार में लिखना वाढे, जुर्यो उछाह समाज ।
भरतपुर नागरिया ॥

सत्यनारायन भरतपुर निवासी मयाशंकर याज्ञिक तथा अधिकारीजी का बड़ा सम्मान करते थे। मयाशंकर याज्ञिक के आग्रह से ही अपनी चिकित्सा के लिए सन् १९१३ ई० में आप भरतपुर पधारे, जहाँ वैद्य बिहारीलाल तथा डाक्टर ओंकारसिंह परमार से श्वास रोग की चिकित्सा कराई। ये याज्ञिकजी का कितना आदर करते थे इस सम्बन्ध में भवानीशंकर याज्ञिक लिखते हैं —' पूज्य ' काकाजी (मयाशंकर) उनके विवाह से संतुष्ट न थे, काकाजी ने कविरत्न के अन्य मित्रों को भी इस सम्बन्ध को तोड़ने के लिये बाध्य किया परन्तु सब व्यर्थ हुआ। विवाह हो जाने के बाद वे श्री गिर्राजजी की परिक्रमा को हर पूर्णिमा को जाया करते थे। यह उनकी बीमारी की मनौती के लिये करना पड़ा था। काकाजी से मुँह छिपाते थे परन्तु एक बार गोवर्धन में सत्यनारायन दीग पहुँचे। काकाजी उन दिनों वहीं नाज़िम थे। मिलना पड़ा। उन्हें देखते ही लज्जा, पश्चात्ताप आदि के कारण कविरत्न एक दम रो पड़े"।

साहित्य मर्मज्ञ होने के कारण अधिकारी जगन्नाथदास के पास इनका विशेष आना जाना रहता था। इन्हीं अधिकारीजी से परामर्श के लिये इन्होंने अपनी 'हृदय तरंग' नामक पुस्तक भेजी थी जिसे किसी ने इनके पास से उड़ा दिया।

अधिकारीजी के साथ प्रायः ये गोवरधन परिक्रमा के लिये जाया करते थे। एक बार आषाढ़ की पूर्णिमा को अधिकारीजी ने इनके साथ चलने का कार्यक्रम बना कर जाने से मना कर दिया। उस पर इन्होंने निम्नलिखित पद लिखा —

तुम्हें शतशः धिक्कार।
तिरस्कार के योग्य आप हो अब से सकल प्रकार॥
इतने को झुठवाया हमसे दक्ष्य धोखा भारी।
प्रण पूरा न किया पुनि तुमने इसी योग्य अधिकारी॥
देकर हमको धोखा ऐसा क्या फायदा उठाया।
वहाँ ठहर क्या भटा लिया कर चित भरमाया॥
पुण्यतीर्थ को छोड़ वृथा हो कोरा क्लेश कमाया।
चमचीचड़ चमगदड़ तुमने हमको वृथा सताया॥
कारण लिखिये ठीक अगर हो क्षमा प्राप्ति की आशा।
नहिं तो रसिया गात फिरिये लिए हाथ में ताशा॥

उन्ही दिनो भरतपुर म प्राचीन हिन्दी पुस्तको की खोज हो रही थी जिसम आपने पूर्ण योग दिया। इन प्राचीन पुस्तको के अध्ययन स कविरत्न की कविता शक्ति बहुत अधिक बढ गई, जिसका उन्होन कई बार स्वीकार भी किया है। इसी खोज म महाकवि सोमनाथ कृत 'माधव विनोद' पद्यात्मक नाटक के बीच मे पृष्ठ प्राप्त हुए जिन्ह देखकर इनको 'मालती माधव' लिखने की प्रेरणा मिली। यह ग्रन्थ भरतपुर मे ही लिखा गया। कठिन स्थलो के अर्थ पर य राज-पंडित गिरधारीलाल से अर्थस्पष्ट कराया करते थे।

जिस प्रकार कविरत्न का भरतपुर और यहा के साहित्यिको स प्रेम था उसी प्रकार हिन्दी का प्रचार एव प्रसार करने वाली हिन्दी साहित्य समिति स भी। यह सस्था सन् १९१२ ई० म बनी थी और तब ही स इसके वार्षिक अधिवेशनो और कवि सम्मेलनो म कविरत्न निरतर आते रहते थे और अपनी सुन्दर २ कृतियो द्वारा जनता को प्रफुल्लित किया करते थे। कुछ छन्द प्रस्तुत हैं—

भारती वन्दना

जै जै मगलमयी भारती अखिल भुवन की रानी।
अनुपम अद्भुत अमल प्रभा, जिहि सकल जगत छहरानी॥
ब्रह्म विचार सार म निरत रत आदि शक्ति महारानी।
विश्वव्यापिनी श्रुति प्रकाशिनी, सुवरन शुद्ध कल्यानी॥

ब्रह्मचारिनी बीनधारिनी दयामयी शुभ दैनी।
नवल कमलदल आसन राजत नवल कमल_दल नैनी॥
जगमगात मजुल मुखमडल जगत पुनीत प्रकासा।
जासा विविध अविद्या तम को होत तुरत विनासा॥

ऐसी वरद शक्ति मुक्ति द महा शारद माई।
करत विनय तुमसो हम सब यह स्वीकृत कर हरसाई॥
तुम ही हो मा! सकल भाति सो या भारत की आशा।
प्रगटे हृदयभाव बहु कस बिन बानी बिन भाषा॥

जासो भारति! भारत-जन की रसना सदा विराजो।
एम नित्य विसारि दवि! क्यो? मुदित दया निज साजो॥
जग के और और रसनि हित जसी तुम सुखदाता।
जानि स्वजन भारत हू को निमि द्रवहु भारती माता॥

जबलौं भारत देश विश्व में जीवित-तिन मन भावै।
तबलौं नाम भारती अविचल अजर अमर छवि पावै॥
आवहु २ शीघ्र शारद ! वृथा-विलम्ब-न कीज।
या भारत की दीन दशा लखि क्यों नहिं होय पसीज॥

निगरयो कछु न यहाँ सुनि अजहूँ, हरहु हियो अँधियारो।
स्वागत २ जननि तिहारो पुन निज भवन सवारो॥
सहृदय सुभग सरसता सब के हृदय माहिं सरसावो।
सुमति-प्रभाकर की पुनीत प्रिय सुखद प्रभा परसावो॥

हृदय २ मधि होइ प्रफुल्लित नवल कली अभिलाख।
मन मलिन्द नित गुञ्ज २ कर निज अभिमत रस चाख॥
नित जातीय समुन्नति हित में सकल सुजन अनुराग।
भेद भाव तजि निरखें आशा निज २ निद्रा त्याग॥

काव्य कुशल हो सकल भाँति हम निज कर्तव्य विचार।
वर्तें प्रेम परस्पर सब सों प्रेमभाव सञ्चार॥
परम सौख्यप्रद होइ देश यह ऐसी सुदया कीज।
तुव चरनन में निरत रहे मन सत्य रुचिर वर शीज॥

उपालम्भ

माधव आये शरण के द्वार।
दीन दुखी जो तुमको-याचन सो दानिनु ते भारे॥
किन्तु जात यह तुव स्वभाव के तरह जानत नाहीं।
सुनि २ सुयश रावरो तुव ढिग आवनको ललचाहीं॥
नाम धरे तुमको जग मोहन ! मोह न तुमरो आवै।
करुणानिधि तुव हृदय न परसहु करुणा बुन्द समावै॥
लत एक को देन दूसरेहि दानी बनि जग माहीं।
ऐसो हेर फेर नित नूतन राख्यो रहत सदाहीं॥
भाखि २ के गोपिन के जो तुम प्रभु-चीर चुराये।
अति उदारता सों लै वेही द्रोपदि को पकराये॥
रत्नाकर को मथत सुधा को सराम आप जो पायो।
मन्द २ मुसकान मनोहर सो देवन को-प्यायो॥

मत्त गयन्द कुवलिया के जा सेल प्राण हर लीन।
बड़ी दया दरसाइ दयानिधि मो गजेन्द्र को दान॥
करि के निधन बालि रावण को राजपाट जो आयो।
तह सुग्रीव विभीषण को करि अति अहसान विठायो॥
पौंडरीक को सवनास करि माल मता जो लीयो।
ताको विप्र सुदामा के सिर कर सनेह मढ़ि दीयो॥
ऐसी तूमा पलटी के गुन नेति नेति श्रुति गावें।
शेष महेस सुरेस गनसहु सहसा पार न पावें।
इत माया अगाध सागर तुम डावहु भारत नया।
रचि महाभारत कहूँ लरावत आपु म भया भया॥
या कारन जग म प्रसिद्ध अनि निवटी स्वम' कहाओ।
'घड़े' तुम मठा घुवारें कया माचा खुलवाओ॥

वेसाख

माधव तुमहुँ भये बसाख।
कुहीं ढाक के तीन पात है करी क्यो न कोउ लाख॥
भक्त अभक्त एकसे निरखन कहा हात गुन गाये।
जसा खीर खवाय तुम को वसाहि सीग दिखायें॥
सब धान बाईस पसेरी निन तोलन सो काम।
बलिहारी नहिं विदित तुम्ह कछु ऊच नीच की नाम॥
ब पदी के लोटा के सम तव मति गनि दरसाव।
यह कछु को कछु काज करत म, तुमहिं लाज नहिं आवे॥
जगत-पिता कहवाय, भये अब एसे तुम कपीर।
दिन दिन दुगुन बढ़ावत जा मित द्रोह-द्रोपदी-चीर॥
जुगकर जारि प्राथना य ही निज माया धरि राखौ।
मत्य दान दुखियनु के हित को सत्य हृदय अभिलाखौ॥

१२९—गगाप्रसाद — य जाति क ब्राह्मण तथा डीग के निवासी थे। इनके पिता का नाम गनेशीलाल था। आपका जन्म सम्वत् १९३८ वि० म हुआ। इनकी रचनाओं म 'विनयपच्चीसी' तथा कुछ फुटकर कवित्त देखने म आये है। उदाहरण प्रस्तुत हैं —

दोहा

बूढत ते गजराज को छिन में लियो उबार ।
मो अनाथ की बेर का क्या कर रखी अवार ।।

सवैया

ग्राह ग्रस्यो गजको जल में, बल वा गज को कछु काम न आयो ।
बूढत बेर भयो अति कष्ट तब मन ते पद-पद्म में लायो ।
टेर सुनी गज की यदुनन्दन आतुर ह्वै अति जाय बचायो ।
राम का बेर न काहे सुनो, हरि एतो बिलम्ब है काहे लगायो ।।

कवित्त

लाज रखि हिन्दी की हिन्द पति दीनानाथ
तेरो प्रण सदा ते रह्यो दीन हितकारी है ।
जितनी हू भाषा हो प्रचलित जगत माहिं
हिन्दी ही भासा सब भाषन सरदारी है ।
इहिके अधार पर भाषा देस देसन की
पहले ही ब्रह्मा निज मुखन उचारी है ।
'राम द्विज' भाखें चारो वेद भखें माखें,
हमतो हैं हिन्द के अरु हिन्दी हमारी है ।।

१३०—वैद्य देवीप्रसाद अवस्थी —इनका जन्म सम्वत् १९४०वि० के ग्राम पास डीग में हुआ था । ये आयुर्वेद के विद्वान् और राजकीय औषधालय भरतपुर, में प्रधान वैद्य थे । अनुसंधान-कार्य में अभिरुचि होने के कारण भरतपुर के प्राचीन कवियों के जीवन वृत्त खोजने में आपने बडा योग दिया । अवस्थीजी का काव्य में विशेष रुचि थी और मथरेश उपनाम से कविता करते थे । इनकी रचनाओं के उदाहरण देखिये —

कवित्त

भारत में वृद्ध कुरु वृद्ध युद्ध जुद्ध जुरयो
लयक सरासन बाढ बानन की भारी है ।
अर्जुन के रोके रुक्यो तेज बल न वाका को
खिसियानो रथी जानि रिसियानो मुरारी है ।
चक्र ले हाथ पट-पीत फहरान पाछे
भीषण ह्वै भीषम पे प्रभु धायो गिरधारी है ।

शान्तनु कुमार देखि हर्षि कर जोड भाख्या,
भक्त प्रण राख्यो भक्त वत्सल बलिहारी है।

असद खान ग्राह नें कोल को गयन्द घेरयो,
टरयो श्री सुजान तान आरत उबारी है।
दीन की गुहार सुनि करुणा निधान काप्यो
रोप्यो रण चढ जाय चक्रोमी भारी है।
असद की अनी कनी घनी वनी ठनी तहा
गनीन सा कनी कनी करिकें विदारी है।
फते को बचाय फते पाई खानजादो हय
धन्य बदनेश नन्द तेरी बलिहारी है॥

शारदीय सीजन के शुरू होन पहिले ही
शहर म आन पडी फीवर की छावनी।
जुल्म जोर ज्वर बेस मजलूम पुरवासी
अस्थि शेष हूये हुइ सूरत डरावनी।
तिल्ली औ जिगर न भी मौका पा अटक किया,
जिससे पिटीसी पीली तनकी प्रभा बनी।
शासक मलरिया के शासन से शासित हा,
किसकी है ताव कहे शरद सुहावनी॥

भरतपुर की नारी वृद्धा युवा नारी सब
दश का उमाही छाई छतन चौबारे की।
होरी २ हहानी सी ग्रीवान उठाय ऊंची
ललचाहे लोचनन जोहे बाट प्यारे की।
आई है सवारी जा सम्मुख सहप उठी
केती ठाढी आग केती दौरी आर द्वारे की।
उझकि झरोखा केनो झुकि झुकि भाक झांक
झिझकी सी झाको कर ब्रज रस तारे की॥

मत वा मदपीकर मत बनो मत वाल
छोडो प्रान्तीयता को भी इसी में बुद तारी है।
मौके का देखो समझ से भी काम लेना सीखो
बहुत कुछ खा चुके और खाने में ख्वारी है।

फूट का सिर फोड़ के एकता का सहारा ला
एक स्वर से कहदो मादरे हिंद प्यारी है।
बट हैं उसके हम गैर से पतीस कोटि
राष्ट्र भाषा हिन्दी है कौम हिन्दी हमारी है॥

भूलि निज गौरव क्या धूल में पड़े हो मित्र
ऐसी क्या खुमारी मारी सुध बुध बिसारी है।
पेटा देखि तुमको हा ठोकर दे विघ्न सारा
आगे से हटा के तुम्हें बढ़ गया अगारी है।
अब तो उठि अपने अस्तित्व का प्रमाण दो,
पतीस क्रोड कंठो की गर्जन से प्रचारी है।
हम हैं महान हिन्दी हिन्द है हमारा देश,
विश्वभर में वरिष्ठ भाषा हिन्दी हमारी है॥

डंका दै अमन्द चढ्यो दिल्ली गढ़ ढकापर
लाल दरवाज्यो तोड़ पैठो मझारी है।
हाट बाट घाट घर सबही लुटाय लीन्ह,
जोर समसेर के सो जेर कर भारी है।
भाग खानजाद मीरजाद शाहजादे छोड़
होन्सी पड़ी है देखें भाग को अगारी है।
शाह की अछन रानि लूटी बादशाही खूब
सूरज महान सान तेरी बलिहारी है॥

मरट्टन के ठट्टन झपट्टन झट्ट चल्यो
है के हरावल अम्बरेश के अगारी है।
अरिको अगाड्यो हरि हरि सो सुजान टूट्यो
मोरच्यो मल्हार ही सो लीना बलधारी है।
घेरि दल दक्खन को लक्खन विदारि डारे,
कोसन लौ रैनि रैनि कीनी खूब ख्वारी है।
कच्छ कुल रच्छ कच्छपेश कह्यो कच्छपी मे
तुम सा न सूर सूजा दूजा बलहारी है॥

आया उधर से दल अहमद अफगानी का
इधर से चमू चली भगवा निशान की।

पानीपत पावनसू मोरचा जमावे डटे,
बढे रण विन बात सोच अभियान की।
नाच उठी भारत की भावी सदासिव मोप,
औंधी हुई बुद्धी उस जनल महान की।
हाती न यो हीनदशा हिन्दी हिन्द हिन्दुवो की
मानता जो भाऊ कही सम्मति सुजान की ॥

१३१—बलदेव प्रसाद —आप जाति के ब्राह्मण और भासी जिलान्तगत मऊ रानीपुर ग्राम के निवासी थे। आरम्भ म ये झासी म कानूनगो पद पर काय करते थे, किन्तु उच्च पदाधिकारियो से मत भेद होने के कारण अपन पद स त्यागपत्र देकर भरतपुर चले आए और सातुरुक ग्राम (त० कुम्हेर) मे राज्यकीय पाठशाला मे अध्यापन काय करने लगे। ये बाल ब्रह्मचारी और स्वभाव के बडे अक्खड थे। हिन्दू आचार विचार मे आपकी पूण निष्ठा थी और विद्यार्थियो से किसी प्रकार की दक्षिणा या उपहार लेना अनुचित समझते थे। यद्यपि ये भगवान राम को अपना इष्ट मानते थे, किन्तु फिर भी कृष्ण विषयक साहित्य सृजन करने मे अधिक अभिरुचि थी। बलदेवप्रसाद अपने समय के ख्यातिप्राप्त कवि थे और हिन्दी सस्कृत तथा उदू पर समान अधिकार रखते थे। इनके ३ ग्रथ उपलब्ध हुए हैं—(१) विज्ञान भाष्कर—यह महाभारत का रामायण शली पर हिन्दी मे पद्यानुवाद है। इसकी भाषा बहुत मँजी हुई और व्याकरण सम्मत है। इसका बहुत कुछ भाग सातुरुक निवासी प० नवनीतलाल चतुर्वेदी के पास अभी तक सुरक्षित है और शेष बलदेवप्रसाद के वशज कडेरलाल भौंडेले के पास है जो मऊ रानीपुर झासी म रहते हैं—(२) पीयूप प्रवाह —यह एक प्रकाशित खण्ड काव्य है जिसमे भगवान राम की भक्ति का सुन्दर ढग स निरूपण किया गया है—(३) प० बलदेव प्रसाद न सस्कृत के प्रसिद्ध कवि जयदेव कृत गीत गोविन्द का भी हिन्दी म पद्यानुवाद किया है जो इनके वशजो के पास अभी तक सुरक्षित बताया जाता है। इनकी रचनाओ के उदाहरण देखिये —

कवित्त

नव गग धार आज तल सरस विराज
सु यमुना आयु राज ओघ अघ हारी की।
भूमि अति सुहावन सुजस वर पावन
सुर मुनि हृपावन भक्ति मुक्ति कारी की।

स्वारथ सुख दानि और परमारथ खानि
लोक त्रय मुकुट विश्राम दैन हारी की।
परम पद गमनी है सुभग त्रिवेनी,
बलदेव पद वृष्टि श्रीमान् धनुष धारी की।।

जाको शम्भु उमा सादर निशि वासर जप,
शारद शेष नारद नित्य ही गुना करें।
मरा के जप वाल्मीक अजर अमर भये
जाको महत्व सनकादि मन गुना करें।
जाको कह अजामिल गणिका गज उद्धर,
कलियुग के पतित अघघा हुना करें।
वदत बलदेव श्रीमान् धनुषधारीजी
राम नाम मुक्त जीह हंसिनी चुगा करें।।

सवैया

हो अघ पुंज तू पाप प्रहारनि, हों अति दीन दयालु भवानी।
मो सौ न और कहूँ कोउ निगुण, जगदम्बा करुणा गुण खानी।।
याचक बलदेव आयो है द्वार और उपाय न है तव सानी।
राम चरण रति याचक द न करु विलम्ब राम महारानी।।

सागर तीर खरे कपि वीर अलिहि अधीर न धीर रह्यो है।
दक्षि दुखी पति भालु कह्यो तुम राम काज सब तार लह्यो है।।
शरीर विसाल भयो विकराल कौतुक भूधर जाय गह्यो है।
'बलदेव पुर' चले हनुमान कच्छप वाल न मार सह्यो है।।

१३२—हीरालाल—इनका जन्म कामा निवासी प० सूरजलाल के यहां सवत् १६८२ वि० म हुआ। इनके कवत फुटकर छन्द पाये जाते हैं। उदाहरण प्रस्तुत हैं—

हाल हम गाते कामा का।
कर विमल कुण्ड स्नान, कट अघ या नर जामा का।।
कामा नगरी सुघड बसाई, जहाँ खेलें कुंवर कन्हाई।
जिनने दुख हरा सुदामा का हाल हम गाते कामा का।।

एक पैदा नहीं पड किसी को जब सिर पर आती गर्दिश।
बात बात मे घर बाहर म लड़वाती जन जन मे गर्दिश।

गाम धाम सत्संग छुडाती, देत कष्ट लाखा गर्दिश।
वखत पडे प इस जहान म, भोगें अमीर गरीब सभी गर्दिश।
हीरालाल यों कहे चेतकर रहना हजार नाच नचाती है गर्दिश।

१३३—मगलदत्त —ये पहाडी निवासी पडित रामनारायन के पुत्र थे। इनका जन्म स० १९४० वि० तथा निधन १९८२ वि० म हुआ। ये उर्दू के अच्छे ज्ञाता थे और गजल लिखने म इनकी बडी रुचि थी। उदाहरण दखिये —

बता ए मौत फिर क्या तेरा आना हो नही सकता।
हमारा तो अभी परलोक जाना हो नही सकता।
तुझे देखें कि देश प्यारे भारत में सुधारों का।
कि जिनसे आप अपने को छुडाना हो नही सकता॥
तू हट कर लौटजा कह लाख सुनता कौन है तेरी।
गिरे भारत को इससे अब गिराना हो नही सकता॥
नही यदि मानती है पूछनी क्या काम हैं करने।
कहें दो एक सुन सबका बताना हो नही सकता॥
खडा पग प अपने अब करेंगे देश प्यारे का।
जगत से नाम भारत का मिटाना हो नही सकता॥
बनायग सभी हम वस्तुए बस देश ही मे अब।
विदेशी वस्तुओ म धन लुटाना हो नही सकता॥
कहाँ अवकाश इतना व्यर्थ की बात करें जो या।
यही सौ बात की है बात जाना हो नही सकता॥

करो हरदम हृदय स पाठको गुन गान भारत का।
बढाओ प्रेम आपस म बढे सम्मान भारत का॥
बना तुम भक्त हिन्दी क तुम्हारी मातृ भाषा है।
बिना उसके न अब सम्भव कि हो उत्थान भारत का॥
तुम्हारे उस प्रचुर धन से भरे घर अन्य देशो क
नहीं तुम म रहा क्या स्वल्प भी अभिमान भारत का॥
अगर हो तो करो तुम मत विदेशी वस्तु का आदर।
करो एसा कि उन्नत हो कला विज्ञान भारत का॥
सुशिक्षा क बिना होगी नही उन्नति कभी कुछ भी।
बढाओ देश म इसको अगर हो ध्यान भारत का।

बनो विश्वेश के सेवक करो यह प्रार्थना उससे।
दया कर दो विभो। फूले फले उद्यान भारत का॥

१३४—आचार्य सूर्यनारायन—आपका जन्म भरतपुर के एक सम्भ्रान्त ब्राह्मण कुल में अगहन शुक्ला ३ संवत् १९४३ वि० को हुआ है। इनके पिता का नाम प० मुरालीराम है। सन् १९१४ ई० में शास्त्री परीक्षा उत्तीर्ण करने पर आपको संस्कृत पाठशाला का प्रधान अध्यापक नियुक्त किया गया जहाँ सन् १९५१ ई० तक कार्य किया। पंडितजी को पढ़ने लिखने में विशेष रुचि है और वृद्ध होने पर भी पढ़ते ही रहते हैं। आपके व्यक्तित्व में शिशु सारल्य और प्रौढ़ों के गाम्भीर्य का सुन्दर समन्वय दृष्टिगोचर होता है। अभी सन् १९५५ ई० में आपने संस्कृत की आचार्य परीक्षा उत्तीर्ण की है। आप हिन्दी और संस्कृत दोनों ही के प्रकाण्ड विद्वान् हैं और दोनों भाषाओं में सुन्दर काव्य रचना करते हैं। यों तो आपकी कविताओं में सभी रसों का आभास मिलता है किन्तु वीर और श्रृंगार रस पर विशेष अधिकार है। उदाहरण देखिए—

ब्रह्मा के प्रति कवि की उक्ति (कवित्त)

तापन पै ताप हौं सहने का तयार यार
मत राख कसर जो होय तेरे बस की।
लिख दे दुख दारिद मन चाहे भलेही तू
लिख दे अनेक रेख चाहे अपजस की।
लिख दे थिर जंगम की जोनि मे जनम चाहे
एक रेख तेरी पर हिय रहै कसकी।
मेरे तो लिलार भाई कबहूँ तू लिखियो ना,
कविता सुनाय वो सु नीरस का रस की॥

शुद्ध श्रृंगार

रम्भा सी रमीली बाम कामकी कलोलन में
भीने नव निचोलन में चन्द की कला सी है।
अमी मधुरिमा सी है अधर अमोलन में
शम्भु कुच गोलन में गरल कालिमा सी है।
सुकवि 'दिनेशजू' की आशा सब पूरिबे को,
चिन्तामणि सामी कैधों कल्प-लतिका सी है।
बनन मैं सुधासी औ सुगासी है ननन मैं
पद्मा सान्द्रा मी मिन्दु मयंक निकामी है॥

हास म सुधा सी और चपलासी उजास म है,
लास अरु विलास म तो खासी मनका सी है।
शील म उमा सी रग रूप मे रमा सी चारु,
वाय रचना म तो सहायक शारदा सी है।
सुकवि दिनेश जाकी मूर्ति के उपासी हैं
वह मन-मन्दिर की उपास्य देवता सी है।
इन्दु की कलासी सिन्धु मथि क निकासी हरि
मेरे जान ये तो इन्दु मथि के निकासी है॥

नेत्र और कृपाण का रूप

दोनो ही पानी दार दोनो ही की तीखी मार
दोनो ही धार धर कटीली करी जानी हैं।
दोनो ही करती खून खूब ये हजारो ही का
दोनो ही असर तपन मौके प दिखाती हैं।
कहत दिनेश दोनो कौंध जाती बिजली सी
दोनो चोट करके आर पार हो जाती हैं।
मेरे जानि दोनो म अन्तर इतना ही यार
असि चूक जाती आखें काम कर जाती हैं॥

जवाहरसिंह का दिल्ली पर चढाई

बब्बर के वश म हुए शाह मोहम्मद जू
एसे है जब्बर क चढाई निज बरात हो।
दिल्ली दुलहिन एक लहिमा म ब्याह लई
जाका दहज यहा अब तक लखात हो।
सूजा सपूत वीर जाहर है जवाहर तू
बाप प त बाकी रहे नगन चुकात हो।
प्यासी रणचडी की प्यास के बुझान हेतु
माना तज पानी की द्विधार बरसात हो॥

सवया

कलधौति सी कान्ति लस तन की अधरान सुधा सुषमा अपनाई।
मृदु बनन औ ऋजु नैनन ने, सरलाई विहाय गही कुटलाई।
कच भारहू कौं न सम्हार सके कुच भार कमान लौं देत लफाई।
करि यचन कामिनी को मिसरी मनु पीन उरोजन लौन चुराई॥

तन की द्यु ति देखि चप चपला निहि सौरभ सों जलजात लजाई ।
जिहि रूप अनूपम का लखि क रति रूपहु म दरशात फिराई ।
मर ऊपर आनन को धरिके, तिय सोच ,रही प्रिय को निठुराई ।
विकस अरविन्द म चन्द मनों, अस सोय रह्यो अब लों अलसाई ॥

कवित्त

प्रजा प्राण गाहक हो जा प बनाहक तुम
नाहक आसमान म वितान से तन रहो ।
जीवन मीच लेत मित्र द्वारा बहुकरा स ही
देते न बूद निज स्वारथ म सने रहो ।
स्वाति वारि बपा बिन मरेंगे मनस्वी खग,
- चाहे सि धु सम्पति सब तुम्हारे ही बने रहो ।
मघवा के इशार से एमे उच्च आसन प,
तुम इस कुशासन से कब तक बने रहो ॥

प्रकरण ५

वर्तमान-काल

साहित्य वाचस्पति गोकुलचन्द दीक्षित —सम्वत् १९६६ वि० म श्री हिन्दी साहित्य समिति भरतपुर के स्थापित होते ही यहा के हिन्दी प्रचार एवम् प्रसार काय ने एक नया मोड लिया और भाव तथा भाषा दोनो म आश्चयजनक परिवतन होने लगा। समिति के प्रधान मत्री जगन्नाथदास अधिकारी और राज्य पदाधिकारी मयाशकर याज्ञिक के प्रयत्नो के फलस्वरूप साहित्य सृजन का काय द्रुत गति से अग्रसर होने लगा। यदि एक ओर प्राचीन हस्त लिखित पुस्तको की खोज होन लगी तो दूसरी ओर 'भरतपुर पत्र' जसी पत्रिका को जन्म देकर गद्य प्रसार काय भी प्रारभ कर दिया गया। अधिकारी जगन्नाथदास प्रकाण्ड पण्डित दूरदर्शी, समाज सुधारक और राष्ट्रवादी होन क साथ २ बडे काव्य प्रेमी और हिन्दी प्रचारक भी थे। यह इन्ही क सगग का फल था कि तत्कालीन भरतपुर नरेश किशनसिंह न हिन्दी को राज्य भाषा घोषित कर प्रत्येक राज्य कमचारी को उसका पढना अनिवाय कर दिया इस प्रकार राजा और प्रजा दोनो म प्रोत्साहन पाकर हिन्दी का विकास तीव्र गति स होने लगा।

अपने आश्रयदाताओ क वीर रसात्मक चरितकाव्य तथा जन साधारण को आर्पित करने वाले शृगार और भक्ति क फुटकर छन्द लिखने की जो परम्परा महाकवि सोमनाथ, सूदन और राम काल से क्रमश चली आ रही थी, उसम राष्ट्रीय विचार धारा का बहुत अभाव था। इसका विकास वतमान काल म ही हुआ। अब वीर शृगार और भक्ति के पदो के साथ २ राष्ट्रीय उद्बोधन क पद्य भी बनने लग परिणाम स्वरूप ब्रजभाषा क स्थान पर धीरे २ खडी बोली का परिचलन होने लगा। गोकुलचन्द दीक्षित एसे ही सक्रमण काल में उत्पन्न हुए थ। उनका खडी और ब्रजभाषा दोनो पर समान अधिकार था। जिस प्रकार व सुन्दर कविताओ द्वारा जनता का मनोरजन करत थे उसी प्रकार गम्भीर और विचार युक्त लेखो द्वारा समाज के ज्ञान की अभिवृद्धि भी। हिन्दी

प्रचार के लिये आपने कई पत्र पत्रिकाओं का सम्पादन भी किया और समिति के मंच से रस-रंग कवि दरबार और कवि सम्मेलन आदि का आयोजित कर जनता में हिन्दी के प्रति अभिरुचि उत्पन्न करने का भागीरथ प्रयत्न किया।

गोकुलचन्द दीक्षित का जन्म इटावा जिले के बरना नामक ग्राम में सम्वत् १९४८ वि० मार्ग शीर्ष शुक्ला ११ को हुआ था। बचपन में मातृ सुख से वंचित होने के कारण इनका पालन पोषण इनकी ताई ने किया। दीक्षितजी के पिता स्टेशन मास्टर थे, अतः उनको अधिकतर घर से बाहर रहना पड़ता था। फलतः इनका शैशव मातृ पितृ सुख से वंचित रहकर नीरसतापूर्ण एवम् कष्टमय व्यतीत हुआ। आपकी प्रारम्भिक शिक्षा आपके पितामह पं० लालमणि दीक्षित के संरक्षण में आरम्भ हुई परन्तु किन्हीं कारणों से इनका पाठशाला जाना बन्द हो गया और ये घर पर ही शिक्षा प्राप्त करने लगे। थोड़े दिनों के पश्चात् इनको इटावा जाने का अवसर प्राप्त हुआ, जहाँ इन्होंने मैट्रिक परीक्षा उत्तीर्ण की। आपके पिता रेलवे कर्मचारी होने के कारण इनको भी रेलवे में ही नौकरी लगाना चाहते थे, किन्तु दीक्षितजी को यह बात रुचिकर प्रतीत न हुई और ये भरतपुर चले आये।

यह युग आर्य समाज के सिद्धान्तों के प्रचार तथा प्रसार का था। सौभाग्यवश दीक्षितजी एक आर्य समाजी साधु के सम्पर्क में आये और कट्टर आर्य समाजी बन गये। इन्हीं साधु से इन्होंने संस्कृत का अध्ययन किया और कुछ दिनों के अनन्तर इस्लाम धर्म का ज्ञान प्राप्त करने के लिये उर्दू फारसी का भी अच्छा ज्ञान प्राप्त कर लिया। इन्हीं दिनों आपको भरतपुर में सरकारी नौकरी मिल गई जिससे यहीं स्थायी रूप से रहने लगे। राष्ट्रीय विचारों के पोषक होने के कारण सन् १९२० में आपको गिरफ्तार कर लिया गया और इनके लगभग १०००० पुस्तकों के संग्रह को पुलिस द्वारा नष्ट भ्रष्ट कर दिया गया। निदान सन् १९३१ में इन्हें राजकीय सेवा से मुक्त होने को बाध्य होना पड़ा। परिणाम स्वरूप आपको आर्थिक कठिनाइयों का सामना करना पड़ा, किन्तु विद्या व्यसनी होने के कारण साहित्य सृजन में संलग्न रहे। कविवर चम्पालाल 'मंजुल' लिखते हैं —

कविता कुमुदनि मुस्करत नव रस टरत अमंद।
चन्द्र नाम धरि चन्द्र सौं उदयौ गोकुलचन्द॥

काव्य सृजन के अतिरिक्त ये असाधारण गद्य लेखक भी थे और ऐतिहासिक तथा शोध पूर्ण कार्यों में निरन्तर लगे रहते थे। इनकी लिखी हुई १३ पुस्तकें प्राप्त हुई हैं जिनके नाम इस प्रकार हैं —(१) ब्रजेन्द्र वंश भास्कर (भरतपुर का

इतिहास) (२) बयाने का इतिहास (३) भार यात्री (४) शृंगार विलासिनी (देव) (५) दशनानन्द ग्रन्थ संग्रह (६) षड दर्शन सम्पत्ति (७) वैशेषिक दर्शन (८) मीमांसा दर्शन (९) धर्मवीर पं० लेखराम (जीवनी) (१०) भारत सञ्जीवनी (११) भगवती शिक्षा समुच्चय (१२) विदुर नीति (१३) बिहारी सतसई की टीका (चित्र काव्य)। इनकी कविता का उदाहरण लीजिए —

कवित्त

नपथ नभ निहारो लाल अवली सुमेघ चार
विजुली चमकि निकट निमा आई है।
चकित चोट बूँदते काम वेवली करत
धुलाये निसान मेकी चन्द्र" बन भाई है।
रवि ढकि तिमिर छपाकर मलीन कर,
आपु ही बली बन क अधेर घन छाई है।
तरप लखि आउ प्यारे ऐकली नवल वस
ननद ग माय सग लीन सुधि नसाई है॥

१३६—किशोरीलाल—ये जाति के अग्रवाल वैश्य और भरतपुर के हास्यरस के प्रसिद्ध कवि गिरिराज प्रसाद मित्र के अग्रज थे। इनका जन्म श्रावण शुक्ला १ सवत् १९४५ को हुआ था अतः इनका कविता-काल सम्वत् १९६२ से प्रारम्भ होताहै। इनकी कोई पुस्तक तो नहीं मिलती पर फुटकर कवित्त अवश्य पाये जाते हैं। आपकी कविता अधिकतर भक्तिपरक तथा उपदेशात्मक होती थी। भाषा और भाव दोनों की दृष्टि से इनकी रचनाएं उत्तम हैं। उदाहरण देखिये —

दान घाटी वर्णन (कवित्त)

दारा देवतान की धर धर मनुज देह
आवें जहाँ मोहन विराजे बीच घाटी म।
भनत 'किशोर' संग गोपिन के गोरस ले,
षोडस वर्षीय कला सानद सो छाटी म।
मोहन चरावें गया सग सोहैं वल भया
ले ले साथ ग्वाल बाल मागें दान हाटी म।
फूलन की टाटी म क दान रस हाटी बीच
माग टू का मोक्ष मिल ऐसी दान घाटी म॥

पावस वर्णन (कवित्त)

मज्जल वरन अग भूत वीर मेवो वीर,
निविधि ममोर म्वान बाहन मजायो है।
भनत किशोर नव अकुर त्रिशूल सोहै
खप्पर तलाव टौरू दादुर गुन गायो है।
धनुष त्रिपुड कच्छा सूखी घन सोभित है
नूपुरन घार मोर शोरन मचायो है।
करत सुगध मधुपान कर प्यारे अति
पावस न हाय क्षत्रपाल बनि आयो है॥

काई लाजवान कोई कइयक विधान पढ़े
काइ अभिमान काइ ध्यान ना तजत हैं।
काई बाग बावरी तलाव कूप अमनाना
कोइ ग्रह नह क सनह सरसत हैं।
भनत 'किशोर' केते राज काज दूर रह
केते योग सिद्ध के उपाय दरसत हैं।
कहा धन धाम धर लेउग सरा म
भय जीरन जग में तीऊ राम ना भजत हैं॥

करद दरखास्त स मरी नगी, करक दया भक्ति हिय भरदे।
भरद पुनि नान की ज्योनि घनी बम पूरन श्राम मेरी करद॥
करद मम मगल काज सुपूरन, पापन केर हिया हरदे।
हरद दुख द्वन्दन नेवि अब तू 'किशोरहिं' मानु अभ करद॥

१३७—पन्नीलाल—ये जाति के अग्रवाल वश्य और भरतपुर राज्यान्तगत कामवन के निवासी थे। इनका जन्म वशाख सु० १२ स० १९५० वि० का हुआ था। आपका कोई ग्रन्थ ता उपलब्ध नही हो सका है केवल फुटकर कविताए प्राप्त हुई हैं। इनकी कविताओं का विषय 'होरी' है। उदाहरण देखिए—

दोहा

रग मटकिया हाथ न खडी बरावर वाम।
होरी खलें परस्पर हिल मिल राधश्याम॥

झूलना छन्द

होरी म कर जोरी कारी रग की कमोरी, गोरी वयी हैं,
मरारी, मुख मल दई मुगरी है।

तक मारी पिचकारी भर प्यारी प डारी फारी न्यारी
खीच किनारी नारी सारी हिम्मत हारी है ॥
बाला नई नवेली बोली होली छेड हाली चोली
तडकी श्याम ग्रमोली होली देखी श्याम तुम्हारी है ।
जोडी लिये सग दग मृदग मोचग चग सगियन
मे भग रग खेलत विहारी है ॥

दोहा

नई चू दरिया रग म रग दई नद क छल ।
हम रसिया पगिया रग, या अगिया क गल ॥

१३८—प्यारेलाल —ये जाति के अग्रवाल वश्य और डीग निवासी लाल नीराम के पुत्र है। इनका ज म सम्वत् १६५० वि० मे हुआ। इनके पद बहुत ही सरल सरस और भाव पूर्ण हैं। कुछ अवतरण देखिए —

उमडो है देश प्रेम को सागर ।
नव जीवन नव नेह दिखावत नव यु ग करत उजागर ।
जाग जाग प्रिय नागरी, कहै व्रजेश नव नागर ।
हि द वासनी मृदुल हासनी, हिन्दी सब गुन आगर ।
तृष्णा ताप हर प्यारे हिय को, प्याय पियूष भर गागर ।
उमडो है देश प्रेम को सागर ॥

सवया

सौख्य सुधा सरसावन को सागर समान सिला ही रहै ।
हुस हस के हिलोरे लेत हिया नित हेत को ओर हिला ही रहै ।
रतिराज की मौज मनावन को मन एक से एक मिला ही रहै ।
नित आपसी प्रेम के पालन को उर प्रेम-प्रसून खिला ही रहै ॥

कवित्त

अद्भुत आभास अलौकिक तमास जाके
देत है दिखाय छटा जावन नवीन की ।
दिल दोय एक कर पास कर दूरन को
देत है सुधार प्रीति भव के भवीन की ।
हारि भखमारि विद्वान हू विचार रहे
आशा निराशा भइ खासा कवीन की ।
प्राणी मे पीछे जो प्राए ना पयान करे
कौन परिभाषा एस प्रेम परवीन की ॥

सवैया

चहुँ ओर निहारत दीखै नहीं कछु गुंजन काहे पै आन अली है।
निसि-चंद की ज्योति में ज्योति मिली जहँ प्रेम के रंग में रंग रली है।
आई अहा ये सुगंध कहा सों सुरन मिली कहा कंज कली है।
नंद नन्द को नाम लियो जबही तब जान परी वृषभान-लली है॥

१३९—हरिकृष्ण 'कमलेश'—य डीग के निवासी और जाति के ब्राह्मण हैं। इनके पिता पं० घासीराम डीग के प्रसिद्ध मिश्रा में थे। 'कमलेशजी' का जन्म सं० १९५० वि० में हुआ। साहित्य प्रेमी होने के कारण आपने हिन्दी की प्रयत्न सराहनीय सेवाएं की हैं। राष्ट्रभाषा हिन्दी के प्रचार एवम् प्रसार के लिए आपने डीग में हिन्दी पुस्तकालय की स्थापना कराई जहां समय २ पर साहित्यिक आयोजन होते रहते हैं। आप अधिकारी जगन्नाथदास के समय से ही कविता करते चले आ रहे हैं। सत्यनारायण कविरत्न और आपकी रचना शैली में बहुत कुछ समानता पाई जाती है। कमलेशजी एक उच्च कोटि के कवि हैं इसमें कोई संदेह नहीं। आपकी रचनाएं बड़ी ही सरस मधुर तथा हृदय स्पर्शनी होती हैं। सफल कवि होने के साथ २ आप कुशल-हस्त वैद्य भी हैं। इनकी रचना के उदाहरण नीचे प्रस्तुत किये जाते हैं—

प्रेम

लगन लगाई।
बिनु जाने आपुही अचानक निजकर कुबुधि बिसाई।
जानन ही जिन नेह लगायो निसि दिन जान सताई,
लाक लाज कुल की कछु कान न या मग यही भराई।
कछु जादू के जाल जड़ीसी के कछु मूल भुलाई
तन मन स्वाभिमान सुधिबिसरी मोहन मंत्र लुभाई।
माधव की मधुरी मुरली सुनि सहजें हिये समाई,
निज जीवन पिय ऊपर वारो रूप सुधा छवि पाई।
मगन रहत पीतम रस राची प्रेम-मंत्र मन नाई,
वारि दई हरि की छवि ऊपर त्रिभुवनकी ठकुराई।

मुरलिया

मुरलिया मोहन मंत्र भरी
जमुना कूल कदम्ब तर बाजत हरि के अधर धरी।
गोकुल की कुल बधुन जाहि सुन दौर कूल गाज परी
प्रेम-महानद माहि बिलानी लाज जहाज भरी।

शरद वर्णन

मत्त मदमातो सरितान्नो ना रह्यौ है मद
रही नाँहि मारग में कीच की निशानी है।
मघन की गजन है न दामिनि की दमकन है,
दादुर मडली की सुनि आवत न वानी है।
झिल्ली झनकार नाहि मोर हू पुकारें नाँहि
कूक कोकिलान की जहान सो विलानी है।
दूर भई गिरिराज चचलता पावस की,
कढ़ि आये श्वेत बार रही ना जवानी है॥

हेमत वर्णन

जूता होय पावन मे रुई को पजामा होय
काट टोपा रुई के हो कृपा भगवन्त की।
सौर होय गद्दा होय ओढ़िवे बिछाइवे कूँ
अगिन को अगीठा होय बठक एकान्त की।
गुड होय तिल हाय गम गम वरे होय
नारि हो अनोखी प्यारे कन्त गुनवन्त की।
गिरिराज' बाजरे की खीचरी मे घीउ हाय
ऋतु का उसार पूछ शिशिर हिमन्त की॥

अन्योक्ति

सुवन समान स्वान हमने था पाला एक,
खुश होते थे जिसे मलकर हिलाने मे।
गोदी मे उठा के चिपटाते कभी चूमते थे,
सुख पाते थे लस्सी दूध के पिलाने मे।
रवडी मलाई खोवा खुरचन मगाई खाड
स्वप्न म न राखी कमी जिसके खिलाने मे।
देखा गिरिराज' आज अजब तमाशा मित्र
काठन वो आता वही आँख के मिलाने म॥

हास्य

मारे है मच्छरों के दल के दल 'गिरिराज'
चटियों के यूहन के व्यूह हनि डारे है
केंचुआ के कटक कटीले काटि डारे सब
खचि खचि मक्खिया के पखरे उखारे हैं।

गजब गिजाइन प गरजि परे हैं टूट
मारि मारि दुश्मनो के हौंसले बिगारे हैं।
नीगुरो प झपट मिली न झट भागे भीरु,
वीर हम वाह ! जग जौहर हमारे हैं॥

दूर यदि हमसे रहोगी एक इंच प्यारी
हमको भी दम इंच हट के ही पाओगी।
नाक कर नहीं सो सनेह ना लहोगी लाहु
'गिरिराज' करके गुमान पछिताओगी।
खिल उठती हैं कली पाकर हमारा संग,
मस्त मधुकर है फिरि चाह कर चाहोगी।
एंठी ही रहो तो एंठ तुमको धरेगी एंठ
हमको कलपाओगी न आप कल पाओगी॥

सीस सिला नहिं होगी भले
पर सुन्दर माँग बराबर होगी।
शाहन पाग की होगी नहीं,
नहिं टोपी की ख्वाहिश चित्त मे होगी।
प्याली शराब की होगी जरूर
औ पाकिट कबी मो गानी न होगी।
शान निराली न होगी कभी
गर मूछ की पूछ कटाली न होगी॥

१४२—रघुवरदयाल—ये डीग निवासी दामोदरलाल के पुत्र और जाति के ब्राह्मण थे। इनका जन्म संवत् १९५८ वि० में हुआ था। इन्होंने तीन पुस्तकें लिखी हैं—(१) श्री कृष्ण जन्म (२) श्रवणकुमार और (३) लावन की महतारी। इनके ख्याल झूलना लावनी और गजल आदि बहुत सुन्दर बन पड़े हैं। उदाहरण देखिए—

धर वेश छल पनहारी जल भरन चले बनवारी॥ टेक
एक दिना उठ प्रात श्याम नें, ऐसो मतो उपायो है।
नख शिख ते शृंगार बनाकर, नवल नारि बन आयो है॥
रतन जटित इंडुरी सिर सोहै, कंचन की धर भारी।
धर वेश छल पनहारी जल भरन चले बनवारी॥

मेरी टेर सुनो गिरधारी रोवे द्रुपद सुता सुकमारी ॥ टेर
पापी दुसासन पाप कमायो, सभा बीच मोय खेंच के लायो।
अब चाहत करन उघारी मेरी टेर सुनो गिरधारी॥
पाचों पति न मौन गह्यो है, काहू के बल नांय रह्यो है।
तुम ही का लाज मुरारी मेरी टेर सुनो गिरधारी॥
मेरी लाज के आप रखैया, कष्ट हरो हे कृष्ण कन्हैया।
धाओ वेग वनवारी मेरी टेर सुनो गिरधारी॥
तू नारायन है औ जग तारन, रघुवर जन के काज सम्हारन।
आइये गरुड सवारी मेरी टेर सुनो गिरधारी॥

१४३–रामप्रिया माथुर –आपका जन्म सन् १६०१ में दीग के सम्भ्रान्त कायस्थ कुल में हुआ था। आपके पिता सुप्रसिद्ध इतिहासकार मुंशी ज्वाला सहाय थे जिन्होंने राजस्थान एवम् भरतपुर राज्य का शोध पूर्ण इतिहास लिखा है। पर्दे की प्रथा होने के कारण आपकी शिक्षा घर पर अपने पिता तथा भाई डा० काशीप्रसाद की देख रेख में हुई। इनका विवाह भी एक प्रसिद्ध कुल में हुआ। इनके पति धौलपुर निवासी डा० दीनदयाल बड़े ही साहित्य प्रेमी हैं और उन्हीं की प्रेरणा के फलस्वरूप इनकी काव्य प्रतिभा प्रस्फुटित हुई। इनकी भाषा सरल मधुर और प्रसाद पूर्ण है। इनकी रचनाओं से इनकी सहृदयता रचना कौशल और भाषा पर अधिकार अच्छी तरह प्रमाणित होता है। इनको समस्या पूर्तियों पर कई बार पदक भी मिल हैं। साहित्यानुराग के साथ २ आपको समाज सुधार में भी विशेष रुचि है। ये भरतपुर राज्य में व्रज जया प्रतिनिधि समिति की सदस्या भी रह चुकी हैं। स्त्री समाज को जागृत करने के लिये आपने सन् १६५० में धौलपुर में 'महिला विद्या मंदिर' की स्थापना की जहां सकड़ो बालिकाएं शिक्षा प्राप्त करती हैं। इनकी रचना के कुछ उदाहरण नीचे दिये जाते हैं —

नारी के प्रति

किस चिन्ता में डूबी हो तुम, सोच रही हो क्या मन में।
निर्निमेष नयनों से किस को खोज रही हो क्षण क्षण में॥
कहाँ सुहागलीन प्रतिभा की छटा छिपा ली जीवन में।
मानव जीवन मर्यादा जो, श्रेष्ठ रही प्रतिपालन में॥
छीन लिया अस्तित्व तुम्हारा नकली रंग चढ़ाया है।
अब जाना मायावी जग ने तुमको बहुत सताया है॥

जिस स्वतन्त्र भू पर प्रतिपालित था य समुचित आदेश।
महाशक्ति के करगत ही हु, विश्व शांति का शुभ सन्देश॥
करो मान उस नारि वर्ग का जो है महा शक्ति का वेश।
हुआ नहीं करता कदापि उस शुद्ध शक्ति का भी निःशेष॥
वेदों न इस परम्परागत गुण का सुयश सुनाया है।
अब जाना मायावी जग ने, तुमको बहुत सताया है॥

दुर्गा बन लक्ष्मी रानी न किया सुशोभित रण आंगन।
पद्मा पवित्र पतीव्रत का ही समझी थी निज जीवन धन॥
मीरा की क्या कहें कहानी, अमर हुई वो यागिन बन।
मत बिसराओ उस गौरव को, करो शीघ्र फिर आवाहन॥
उच्चासीनता, कायरता न, नीचा सदा दिखाया है।
अब जाना मायावी जग न, तुमको बहुत सताया है॥

क्या कहती हो ? राह नहीं है बाधाएं हं अकथ अनक।
किन्तु नहीं साहस दृढ़ता से, करो क्रान्ति का भी अभिषेक।
कुछ परवाह नहीं जो आवे, कठिन कष्ट एक स एक।
जमी रहो उत्सर्ग भाव से किन्तु तजो मत विमल विवेक॥
डर तब तुमको क्या है तुमन निज कर्तव्य निभाया है।
अब जाना मायावी जग न तुमको बहुत सताया है॥

क्रान्ति उठेगी प्रासादों से जहाँ विलासिता करती नृत्य।
जहा नारि क माग निरकुश, निर्दयता का होता कृत्य॥
क्रान्ति उठेगी अस्तित्वों की, जहा मिटाया ह शुचि सत्य।
रहा न जिनका वद निहित निज अधिकारों का भी अधिपत्य॥
क्रान्ति जननि है अमर शान्ति की, सोता जगत जगाया है।
अब जाना मायावी जग ने, तुमको बहुत सताया है॥

राम वियोग

हहरि हिरान से हरित अहग्नि में,
तीरन म कौन तीर राम के पवार है।
त्यागि तृन नीर ले अनिंदाय अधार दृग
नैनि राह यानि स्याम भए अति कारे हैं।
नील जल मॉहि नभ मंडल की छाह छुए
धरन छितिज कहुँ धाम्न पसार है।

औध कानवासी मृग जीव तिन्हें "राम प्रिया"
　　सूने से दिखात भ्रम सरजू किनारे है ॥

औध ही विलोक अब, पावत न चित्त थिति
　　विकल वदन सो वियोगन के मारे हैं।
सूने स्वर्ण धाम सब राम बिन राम प्रिया
　　नरक निवास ज्यों निराट अंधियार हैं।
मनुजन की कौन कहै, जीव और जन्तु सब,
　　औधि औधि आवन की आस निरवार हैं।
कोऊ बिलखाएं कोऊ धीरज बधाय कर
　　कोऊ जप जाग जोय सरजू किनारे हैं॥

केकि कंठ नाद यह, बाँसुरी निनाद जानि
　　नाचती हैं गावती है संग में सुमीता हैं।
ठाँव ठाँव देखती हैं मायु को स्वरूप वह
　　आपु ही के नेम और प्रेम में पुनीता हैं।
देखि देखि स्याम रंग क्रीडनि हैं यमुना में
　　नीर में अधीर हो डालती बिनीता है।
ऊधो कहै माधो जू गोपिन के प्रेम तले,
　　कहा है विराग और कौन चीज गीता है॥

गेह को सनेह त्याग दीन्हों अरु देह को हु,
　　मन में निहारी मंजु मूरति की चिन्ता है।
जमुना दुकूलनि पर भेंटति है धाय धाय,
　　तरु सों तमालन सों अतिशय बिनीता है।
लेहु स्याम लेहु स्याम टेरती सम्हारती हैं,
　　दौननि में हाथ दधि, और नवनीता है।
गोपिन के नेम प्रेम आगे हरि ऊधो कहै,
　　कहा है विराग और कौन चीज गीता है॥

१४४—रावत चतुर्भुजदास साहित्याचार्य—आपका जन्म एक प्रतिष्ठित चतुर्वेदी कुल में संवत् १९६०वि०में हुआ है। इनके पिता का नाम श्रीराधा-मोहन चतुर्वेदी था। ये बडे ही हंस मुख और सरल प्रकृति के हैं। बचपन मेंही आपको अभिरुचि काव्य सृजन की ओर थी परन्तु इसका प्रस्फुटन

विशेष रूपेण युवा काल में ही हुआ। आप व्रजभाषा और खड़ी बोली दोनों पर समान अधिकार रखते हैं और पद्य तथा गद्य दोनों में ही लिखते रहते हैं। इनकी रचनाओं में भाव पक्ष और कला पक्ष दोनों में सामंजस्य पाया जाता है। भाषा भावानुकूल बदलती रहती है। इन्होंने विविध विषयों पर अब तक लगभग ५१ पुस्तकें लिखी हैं जिनमें से अधिकांश मुद्रित हो चुकी हैं। आपने भरतपुर स्थित राजकीय अद्भुतालय के अध्यक्ष पद पर रहते हुए हिन्दी की असाधारण सेवाएं की है। इस अद्भुतालय की सर्वतोमुखी उन्नति का श्रेय भी आपही को है। आपकी रचनाओं के कतिपय उदाहरण प्रस्तुत किये जाते हैं—

नैन मतवार हैं (कवित्त)

अनि अनियार जग जीवन के मोहबे को
कछु कछु मुके मुरे पक्ष्म पियारे हैं।
लोचन सनेह बस जग कै लोय एस,
नेह के झुलाय श्याम स्वेत रतनारे हैं।
चतुर्भुज परम प्रवीन मीन खजन से
अंजन लगाये दृग दृगन उजारे हैं।
मोहन के मंत्र तंत्र जगत जगायबे के
सुन्दर सलोन लौन नैन मतवारे हैं॥

ललक उठे हैं लाल लोचन निहार बड़े
परम प्रवीन कधौ रति के समारे हैं।
कारे कजरारे मार मन्मथ महीपजू के
दृग अनयार मंजु लावनत न्यारे हैं।
'चतुर्भुज' चतुर कटील नैन सैन धारे
नेहके नवीन प्रिय प्रीतम के प्यारे हैं।
जग उजियार कामदेव के दुलारे
प्रेम वारि देन हारे नैन मतवारे हैं॥

सवैया

कोमल पात सरोज समान यह प्रेम को नेम निबाहनो है।
रस में निसिवासर वास करै तऊ ऊंचा प्रवीन दिखावनो है।
दास चतुर्भुज प्रीति पतंग में चित्त की हारि चलावनो है।
पूछो कहा प्रिय प्रेम को पंथ कराल सगार मा धावनो है॥

मातु रही समभाय सतीसुन है गुनवंत वही शुभ नारी।
जो हर मानि सो प्रेम करै पति नेम धरै धरनी घर वारी।

नारी कौ देव कह्यौ पति है परवीन भली यह जान दुलारी ।
नारि स्वतंत्र न हैं कबहू परतंत्र पिता पति पूत समारी ॥

(पानाञ्जलि से)

पान मन का होना है बढ़कर हीरे से ।
मर्मान्तक पीड़ा मिटती जिसके मिलने में ।
जितना जितना मूल्य बढ़ाते हैं इसका हम ।
उतनी ही उन्नति करते गौरव बढ़ने से ॥

(आत्मोल्लास से)

यह मृत्तिका का पात्र जो फूटा प्रेम ललित ना पावोगी ।
खाली खपरा से क्या फिर तुम अपना दिल बहलाओगी ।
टुकड़े टुकड़े बिखरेंगे जो फलेंगे हर जगह यहां ।
और तुम्हारे प्रेम मिलन की बात कहेंगे यहां वहां ॥

(सुमन सवैया से)

ना तुम हो कुछ भी प्रभुजी पर छाड तुम्हें कछु नाहि हमारो ।
हो तुम नाहिं कहूँ जगमें पर लेन सदा जग तार सहारो ।
रंगहु नाहिं न रूप विभो पुन फेर हम तुम खूब निहारो ।
मो मन है भ्रम नाथ यही सब रंग रंगौ रहै लोक तिहारो ॥

(चतुर्भुज सतसई से)

ओछे घट उछरे बहुत, भरे न बोले बोल ।
नीच काच पायन खुदत अमल कमल सिर डोल ॥
ढूंढ़ा जाय बजार मैं तीन बार मैं खूब ।
मंगल ना इतवार है बुद्धि बिलानी ऊब ॥
जब तक चिनगारी नहीं चमकेगी तुम माँहि ।
तब तक तकते रहोगे सदा और की छाँहि ॥

१८५—नन्दकुमार—कवि भूषण प० नन्दकुमार का जन्म कार्तिक शुक्ला पूर्णिमा सम्वत् १९६० वि० में एक प्रतिष्ठित ब्राह्मण कुल में हुआ था। इनके पिता का नाम विश्वम्भर नाथ था। आप अपनी गार्हस्थ्य परिस्थिति के कारण मैट्रिक परीक्षा नहीं दे सके और राजकीय मुद्रण विभाग में सुलेखक का कार्य करने लगे। सन २ कठिन अध्यवसाय से आप मैनेजर के पद पर पहुँच गए। राजस्थान बनने पर और भरतपुर से प्रेस हट जाने पर ये जनरल एडमिनिस्ट्रेशन विभाग में रोल्स इंचार्ज नियुक्त हुए। उस कार्य के समाप्त हो जाने पर इन्होंने स्वेच्छा पूर्वक

राजकीय सेवा से अवकाश ग्रहण कर लिया। इसके अनन्तर ब्रह्म निष्ट १०८ मोहनदास महाराज से संन्यास की दीक्षा ग्रहण कर ये बाबा राम मोल के आश्रम में निवास करने लगे और गुरुमुख दास कहलाने लगे। आपका अधिकांश जीवन साहित्य समाज-सेवा में व्यतीत हुआ।

ब्रज भाषा तथा खड़ी भाषा पर समान अधिकार होने से इन्होंने दोनों ही में रचनाएँ की हैं। भरतपुर राज्य से प्रकाशित होने वाले भारत वीर पत्र के प्रकाशन में इनका पूर्ण योग रहा। आपका गद्य परिष्कृत तथा अलङ्कारिक होता था। ये रामचरित मानस के अनुपम विद्वान थे और साथ ही श्री हिन्दी-साहित्य समिति के अनन्य भक्त भी। आपकी बहुमुखी प्रतिभा साहित्य के अनेक अंगों की पूर्ति में पूर्ण रूप से सफल हुई है। आपने अनेक ग्रन्थों की रचना की है, जिनमें शान्ति माह, पाञ्चाली पुकार तथा रम्भा शुक सम्वाद विशेष ओजस्वी एवम् हृदय ग्राही छन्दों में लिखे गये हैं। इनकी रचनाओं के उदाहरण प्रस्तुत किये जाते हैं।

पाञ्चाली पुकार से (छप्पय)

मम भक्तों की लाज, कहा किसके कब नापी।
अघ घट अपना पूर्ण किया करते हैं पापी।
जो मेरा हो चुका लाज की फिर क्या चिन्ता।
इस रहस्य को जान तजो सारी दुश्चिन्ता।
सब संशय मन से दो हटा, देखो जो कुछ हो रहा।
इसे मिथ्या जानो इसे गूढ़ ज्ञान तुमको कहा॥

केवट सम्वाद से (मत्त गयन्द सवैया)

नाव चढ़ाय चल्यौ हरषाय, ससाद लियौ पतवार उठाई।
गावत राग सुप्रेम भरयौ, छवि छाक छक्यौ न उमंग समाई।
मांगन देव सो बारहि बार अपार विभौ यह पाय बनाई।
सेवत नाव रहो इहि भांति, रहै असवार सदा रघुराई।
छाह करें घन शीतल मन्द सुगन्ध समीर बहै सुखदाई।
रंग उमंग भरी अवलोकन सो श्रीपति पाद पखारन धाई।
कठिन नैन किय मिथि मोनन रूप पियूष पियै न अघाई।
धन्य हिये धर ते पद-पंकज आजु भई जिनसों प्रगटाई॥

शान्ति-पथ-पथिक से (रोला)

लखि अशान्ति के चक्र चढ़ा यह निरख चराया।
द्वन्द दंड कर धारि नचाती इसको माया।
देख जना विलोक रहा माया पति क्रीड़ा।
शान्त एक रस मे हुए स्वच नहिं ब्रीड़ा।

तब यह शुद्ध विचार तुरत ही मनमें आया।
शाखा में वह अंश और अंशी में गाया।
फिर रसाल की डार आज फल क्यों वर फूला।
इनन ही से छोड़ अविद्या भागी तूला॥

मतत्रय से

कर्मोपासन ज्ञान मार्ग योगरु पशुपति मत।
वरुणादि जो मार्ग सभी है निज निज थल रत।
रुचि विभिन्नता करहिं भिन्न गुरुमुख दरसावत।
सबहिं ज्ञान में मिलहिं सबहिं पद परम दिखावत।
जो जिहि रुचि अनुकूल हो सो पथ ताको श्रेष्ठ है।
न तु सब सालिग्राम है ना कोउ लघु ना जेष्ठ है॥

सर सरिता नद नारि कूप अगणित जल साधन।
सरल चल क कुटिल अशुचि हो या अति पावन।
जल निधि जल को अधिष्ठान श्रुति सतत गायो।
सो तासों ही निकस ताहि में आत समायो।
त्यों जग अरु जग मतनको अधिष्ठान भगवान हैं।
सब तिहि तक पहुँचात है गुरुमुख मत महान है॥

श्री राधिका नख शिख से पद तल वर्णन (सवैया)

छीन कर छबि सो छविकी छवि छीन छपा करकी छपिया है।
जाप करें जिनको निशि वासर कोटिन ही इनके जपिया है।
चाह भरे नित चाहि जिन्हें पग तीन त्रिलोकन के नपिया है
कीरति नन्दिनी के पग की थपिया कवि कीरति की थपिया है।

नख वर्णन

हा जु कहीं न लखात कहूं अरु ना जो कहो वड लागे कलंक है।
बेदहु भेद न पाय सकें नहिं शास्त्र हु छान छुटे मन शंक है।
भू नभ लौ बिन टेक सदा तन छेक रहै दुविधा न निशंक है।
ब्रह्म समान अराधिका सी यह राधिका की वर सूक्षम लंक है॥

निल वर्णन

क जल जात के पात सुहान पराग छक्यो अलि बठ्यो ललाम है।
क बर हाटक पीठ निमक निवास कियो यह सालिगराम है।
क सत औ रज के त्रिगुणी करिव तम चिह्न यहै अभिराम है।
क प्रति रोम नली के उम प्रगट्यो निल रूप वही घनश्याम है॥

क भर चोप चली चित म वर पक्ज प चढि क अलि सैनी।
पीय पियूष कियौ शशि प चढि लोर रही अहिनी अलसौनी।
चार कलिंद सुता की कियौ जन क अघ ओघन जूहन छनी।
दनी महा मुद मगल की वृषभान लली की कियौ वर बैनी॥

१४६—सावलप्रसाद चतुर्वेदी—आपका जन्म आश्विन शुक्ला ५ सवत् १९६१ वि० को ग्राम अमोर्रा (भरतपुर) म प० अजयराम चतुर्वेदी क यहा हुआ। एक प्रतिभाशाली कवि हाने के साथ २ आप निस्वाथ जन सवक एवम् लब्धप्रतिष्ठित नेता भी हैं। ये राष्ट्रीय आन्दोलना म दजनो वार जेल जा चुके है और भरतपुर राज्य के आन्दोलन म वर्छे और भाले तक सहे है। महिला शिक्षा प्रसार म आपकी बडी अभिरुचि है। आजकल आप महिला विद्यापीठ भुसावर के अवैतनिक मत्री है। काव्य के प्रति अनुराग तो आपम बचपन से ही पाया जाता है किन्तु काव्य सृजन की प्रेरणा सन् १९३६ स अकुरित हुई जब आप देश स्वातन्त्र्य के लिए कारागृह की कठोर प्राचीरो म बन्दी थे। चतुर्वेदीजी एक कुशल ओजस्वी एवम् प्रतिभाशाली वक्ता भी हैं। गद्य और पद्य दोनो पर आपका समान अधिकार है। आपने अनेक पुस्तक लिखी है जिनमे स (१) रण बाकुरा सूरजमल, (२) कृष्ण श्याम गायन और (३) समाज के शिकार मुद्रित हा चुकी है। आप बडे ही सरस भावुक और निपुण कवि हैं। इनकी कविता ओजपूर्ण और ममस्पर्शी होती है। इहान अपनी रचनाओ म 'श्याम' उपनाम अकित किया है। आपकी कविता के कतिपय उदाहरण उद्धृत किये जाते है—

॥ जन श्रुति ॥

जब कि बात दुनियाँ म फली खटकी सबकी आँखो म
प्रेम कहानी कवि जन गाते अब क्या डरना लाखो म।
अब क्यो आँख चुराते प्रियतम। किया प्रेम फिर डरना क्या
प्रेम पथ के पथिका का है प्रश्न मरन जीवन का क्या।
पागल दुनियाँ कुछ भी कहले करल अपनी मन मानी
लेकिन कवि वर सदा लिखेंगे प्रेम-कहानी रस मानी।
लज्जा लगर ताड डाल दी नया अब भव सागर म
कर म वल्ली आशा की विश्वास महा नट नागर म।
या तो पार लगगा वेडा या विलीन हो जायगे,
एकी चित्त निरोध वृत्ती हो शान्ति इसी म पायेंगे।

जीवन की रक्षा केवल जीवन देकर की हो जाती,
अपनापन खोये बिन मांगी वस्तु कभी ना मिल पाती ॥

॥ अभिलाषा ॥

प्रिय प्राणों का पक्षी मेरा छोड़ स्वर्ग सम यह पंजर
उड़ जावेगा महा शून्य में तुम न बहाना दृग-निर्झर ।
निज नयनों की अश्रु मुक्ता भरि को कर हृदय-देश में बन्द
महा नीलिमा में प्रिय ! मुझको उड़ जाने देना स्वच्छन्द ।
ले विषाद की सघन कालिमा कोई न आवे मेरे पास,
सुन न सकूँ मैं करुण गान ध्वनि हिय में होकर व्यथित उदास ।
तुम केवल बस तुम रहना प्रिय वीणा में कहना कुछ तान
निज कर-कोर स्पर्श से पुलकित करती रहना मेरा गान ॥

॥ कवि से अपील ॥

हम सोते हैं टकराती विप्लव की लहरें दीवारों में
हे कवि जाग्रत करदो हमको अपने नारों की मारों में ॥
अब निर्झर के कलरव अलिकुल के मर मर नादों के बदले ।
बल वीरों की हुँकार सुनाओ दानवता का दिल दहले ॥
जब से यह भूषण हीन हुआ भारत तब से तकदीर फिरी
इस महावीर के हाथों से स्वतन्त्रता ही नामनी गिरी ॥

पांचाल वही बंगाल वही पर गत गौरव का मान नहीं ।
है पाटलीपुत्र महान वही पर चन्द्र गुप्त की शान नहीं ॥
मद्रास वही मैसूर वहां पर वह टीपू सुलतान नहीं ।
है राजस्थान वही लेकिन अब रजपूती अभिमान नहीं ॥
गायक अतीत की गाथाओं को गादो जीवन ज्योति जगे ।
मुरदों का मन भी मस्त बने, औ प्राणों की ममता दूर भगे ॥

श्रीराम कृष्ण के युक्त प्रान्त को निज मर्यादा सूझ पड़े ।
बुन्देल खण्ड आल्हा ऊदल का जीवन रण में जूझ पड़े ॥
गुजरात हो उठे सजग उछाले निज असि धारा का पानी ।
महिलाओं में से निकल पड़ें कितनी झांसी की रानी ॥
हे युग निर्माता तुम अपनी वाणी में भरदो रोष भरा ।
हत्या में शोषण आग भगे मानवता का अनुराग भरा ॥

१४७—कुम्भनलाल 'कुलशेखर'—आपका जन्म भरतपुर निवासी प० कन्हैयालाल के यहां भाद्रपद कृष्ण ८ सम्वत् १९६१ का हुआ था। इनका उपनाम कुलशेखर है और इसी नाम से भरतपुर में विख्यात हैं। कवि कुलशेखर कवि मुरली मनोहर के प्रिय शिष्यों में से हैं जिनकी प्रेरणा से सं० १९८१ से आप काव्य सृजन करने लगे। आपने ८ पुस्तकों की रचना की है जिनके नाम इस प्रकार हैं—(१) शृंगार सरोज (२) वीर विलास (३) विनय शतक (४) अमृत ध्वनि-चालीसा (५) पाकिस्तान विध्वंसक चालीसा (६) बसन्त व होली शतक (७) प्रद्युम्न कहानी और (८) पिंगलसार प्रकाश, इन रचनाओं के पढ़ने से ज्ञात होता है कि आपका भाव और भाषा दोनों पर समान अधिकार है। इनके वर्णनों में सजीवता और शैली में रोचकता पाई जाती है। वैसे तो आपने अनेक विषयों पर सुन्दर रचनाएं की हैं परन्तु वीर और शृंगार दो रसों पर आपकी कविताएं बहुत सुन्दर बन पड़ी हैं और उन्हीं के कारण आपकी ख्याति फैली हुई है। आपकी भाषा परिष्कृत परिमार्जित व्यवस्थित और भावापयुक्त है। निस्सन्देह कवि कुलशेखर एक अभ्यस्त और निपुण कवि हैं। आपकी कविता के उदाहरण देखिए—

बांसुरी (सवैया)

पगड़ी सिर मोहन कुण्डल श्रौन रह्यौ पटुका कटि गाँसुरिया।
हरि चन्दन भाल दृगंजन, नित राजत गोधन पासुरिया।
कुलशेखर माल सरोजन की लटकै उर पै मृदु हाँसुरिया।
नट नागरिया गुन आगरिया, अधरा चढ़ पीवत बाँसुरिया॥

वर्णी

अति भोर उठी अलसान तिया
नव चन्द्र मुखी मुख धोय रही।
रसनायक भायक के बिछुरे,
मनमें बहु चिंतित होय रही।
लट छूट परी कुच ऊपर सो
कुलशेखर की मति जोय रही।
शिव के शिर मानहु प्रेम पगी
मुख पाय सु व्यालिनि सोय रही॥

बसन्त (कुण्डलिया)

कामिन कामिनी देख कें आयौ निरख बसंत।
बस न चलै मो है अली जान कहाँ बसन्त।

जाने कहाँ बसन्त अन्त विरमाय कौन।
मैं बैठी मन मार रहै कोकिल नहिं मौन।
'कवि कुल शेखर' कहैं सखी वह है गुनवती।
जा घर कर अनद पिया कस बमन बसती॥

वर्षा बहार

उमडि उमडि चहुँ दिसा जल भर भर
जल धर फिरत घिरत छिति वन वन।
लहर लहर लहरत झुक झुक द्रुम
पवन चलत तन लगत सावन मन।
'कवि कुल शेखर चमक लखि चहकत
कुसुम कलिन चटकन मन धन धन।
झहर झहर बद बद झर लगवत
दनन दनन दन तडित तडक घन॥

॥ कंस बध ॥

नटवर हलधर वीर बर महाबली समरत्थ।
कुल शेषर कसहि हनन हल मूसल लिय हत्थ।
हस्थद्धर शुभ चक्र वक्र पर कान्ति झलक्कत।
टिट्ट पग्ग सिर बक्क भृकुटिहि हुव हलक्कत।
युगलभ्रातहि भभय भ्रातहि उर क्रुद्धदर।
तीरस्सम चल बीरग्गन लखि कुद्यौ नटवर॥

॥ नरसिंह अवतार ॥

हरन कष्ट निज भक्त को दुष्टद्दलन समग्र।
कुल शेषर कढि खम्भ त गज्जत तज्जत अग्र।
भग्गप्पग धरि जिह्न तपक्कत भज्जक्कर गहि।
कट्टत दन्तन फट्टत श्रन्त पटक्कत पुनि महि।
टिड्ढ भ्रकुट्टहि तक्क अरिज्जन कम्पत्थर थर।
ततत्ताक चिक्कार असुर मार्यो जय नर हर॥

जवाहरसिंह का युद्ध कौशल (छप्पय)

गगन धुधरित धूम धाम बहु धरा धसक्के।
धीर तजे रन धीर बीर सुन शब्द समक्के।
भुजत कोप कृपानु भानु जिमि ग्रीषम को है।
त्यं विफरो नर नाह जवाहर नाहर सो है।

'कवि कुल शेखर' रण मत्तहू दुहूकर में तरवार है।
नृप महाकाल बन कर रह्यो वार वार पर वार है॥

॥ दिल्ली विजय ॥

प्रबल प्रतापी सूरज सूजा को सपूत सिंह
लूट लई जान राजधानी हिन्द भर की।
कर की कृपान ते छिनाय लीन छत्र जिन
भार हू गुमान प्रथा पालो वीर वर की।
कहै 'कुल शेखर' समस्त शत्रु सन घिरी,
ठाड़ी चहुँ ओर जट्ट सेना वा ववर की।
कान्हू माहि दिल्ली मिल त्योंही घेर दिल्ली दई,
हल्ला एक ही में भागी बादशाही मर की॥

होत जो न प्रणवीर प्रबल प्रताप सिंह,
मान में गुमानी कौ गुमान कौन हरतो।
हिन्दुन के रूपहीन चोटा कहूँ पाते नहीं
यवन शिवाजी जो न शत्रुन सौं अरतो।
कहै 'कुल शेखर' समस्त हिन्द वासी लोग
यवन कहाते और शिवाजी हौन परतो।
उद्धत प्रचण्ड बल खण्डन के मान खण्डन
होतो ना जवाहर तो और कौन करतो॥

१८८—छोटलाल ब्रह्मभट्ट—आपका जन्म भरतपुर निवासी गुन्नीलाल के यहा भाद्र पद कृष्णा ११ संवत् १९६२ का हुआ। आपकी काव्य रुचि जाग्रत करने में श्री हिन्दी साहित्य समिति भरतपुर का बहुत बड़ा हाथ है। द्वितीय विश्व युद्ध से पूर्व होने वाले कवि सम्मेलनों से आपको काव्य सृजन की प्रेरणा मिली। आपका कविता काल सं० १९९० में आरम्भ होता है। इनकी कविता में भाव के साथ प्रवाह का अच्छा सामञ्जस्य पाया जाता है।

भैरव स्तुति (कवित्त)

मन्दिर रुण्ड मुण्ड खण्ड सुत चंडिका कौ
राजत ब्रह्माण्ड पै प्रचण्ड भर पूरिया।
रुण्ड-मुण्ड खण्ड सा मनेच्छ-दल दल दर,
मार के घमंड गर्व गंजन गम्भरिया।

'छोटे कवि' सेवक को भारत अनाज पाय
धीरज धरायवे को धावत जर्म्हरिया ।
बापुरा विकट बरदायक बदुकनाथ
चमकत गुवार मीस भूरी लटूरिया ॥

हनुमत प्रतिज्ञा

स्वामी धीर धारो उर काहू घबरावत हो
ओषधि के लेन को छलांग मार जाउँगो ।
बूटी की कहा है बात धरा सों उखार भट्ट
द्रोनागिरि लाय पद्द पास में गिराऊँगो ।
आना सिर धारूँ औ उबारूँ प्रान लक्ष्मण के,
'छोटे कवि' आऊँ वेगि देर ना लगाऊँगो ।
सत्य मुख भाखूँ काम एतो जो न करूँ नाथ
तो मैं मात अंजनी को सुत ना कहाऊँगो ॥

क्रुद्धित हो लक माहि कूद हों निसंक है के
पाजी घननाद संग युद्ध को मचाऊँगो ।
झाड़ गो घमंड तन फार कर डारो खंड,
प्रबल प्रचंड दंड मारके नसाऊँगो ।
'छोटे कवि' झपट झड़ाक दस-कंधर के
दस सीस बीसों भुजा तारके गिराऊँगो ।
सत्य मुख भाखूँ काम एतो जो न करूँ नाथ
तो मैं मात अंजनी को सुत ना कहाऊँगो ॥

नीयत पै मावित के नीयत बिसार देउ,
छाड़ देउ दूसरा की चीज अपनावनी ।
आठों याम नित्य ही ख्याल रहो दीनन पै,
काहू समय काहू को न त्रास दिखरावनी ।
'छोटे कवि' कहे मुख भाखो ना विष के वैन,
सबहों सों बात कहो हिय हरषावनी ।
तजके गुमान ध्यान लाओ परमेश्वर सों
मानुष की देही ये न बार २ पावनी ॥

१४६—प्रभुदयाल "दयालु"—कविवर दयालु का जन्म फाल्गुण कृष्णा १ सम्वत् १९६३ वि० को भरतपुर निवासी पं० रामचन्द्र के यहां हुआ था । श्री

हिन्दी साहित्य समिति भरतपुर के विभिन्न कवि सम्मेलनो तथा अन्याय संस्थाओं के साहित्यिक समारोहो से आपको काव्य सृजन की प्रेरणा मिली, जिसके फल स्वरूप आप सरस भावुक और निपुण कवि हो गए। आपकी कविता बडी सरल तथा हृदयस्पर्शनी होती है। इनकी भाषा मधुर और प्रसाद पूर्ण है और कल्पना विषय के अनुकूल और सुन्दर कोटि की है। मातृभाषा हिन्दी की निश्छल सेवा करना ही आपके जीवन का ध्येय है। आजकल आप श्री हिन्दी साहित्य समिति के पुस्तकालयाध्यक्ष के पद का भार सम्हाल हुए हैं। प्राचीन कवियो के जीवन वृत की खोज मे आपका सराहनीय योग प्राप्त हुआ। आपकी कतिपय सरस रचनाए निम्नलिखित है —

अखियाँ (सवैया)

सित कंज सी चारु विलोकन ते विधि के मन सृष्टि उपायी करे।
हरि के मन प्रेम पियूष सो पोप, न्यालु सुनीति जिवायी करे।
ललिके करतूत कराल बनी हरके मन भार नसायी करे।
त्रिगुणी त्रय रंग रगी अखियां त्रय देव की रूप लसायी करे॥

रस राम विलास मे मोरनीसी, नच चाहक-चित्त चुरायी करे।
लडती अडती गति सूरमी ह्वै मृदु चित्त में ये गढ जायी करे।
बहु भाव भरी बहु रूपिनी सी नटती नटनीसी लखायी करे।
करुणा की भिखारिनि ये अखियां पाषाण हिय पिघरायो करे॥

बसन्त वर्णन (कवित्त)

विविधि विटप नव पल्लव प्रसून युत
सनिके सो सीस दावी रिंग औ रिंगत की।
त्रिविधि समीर तीर छांडत मनोज वीर
कहर वियोगिन वानी वान हो हँत की।
कोकिला न कूक ये वनन वंदूक वहु
कमल पराग नहीं गम है य अंतकी।
रावरी वियोगिन तन गाने या जनन मा
जीवन वा आई अन वाहनी वसन्त की॥

ब्रज रसवार की

बीसवी सदी मे नृपति श्री कृष्णसिंह,
ह्वै के प्रतापी राजी राज जे मे धारे की। —

बाढकी कराल डाढ अजको गहन लगी
बिललानी प्रजा ज्यो अमन-गण मारको ।
भनत 'दयालु' ता समय भूप कृष्ण भये,
स्वय बढाई बहु धाम बल अपार को ।
व्रज कौ बचायो दुख दारिद बहायो सब,
याद य रहैगी ग्रान व्रज रखवार की ॥

भक्ति परक (सवैया)

ननन ते न लखे भगवान न वनन ते गुन गान की गायौ ।
कानन ते न सुनी हरि कीरति पायन सो जनि तीरथ धायो ।
देखन ते न भयौ हिय रूप, न हाथन ते दीवौहु सुहायौ ।
आवत जात बराबर है जग देह धरे कौ कहा फल पायौ ॥

प्रताप की कृपाण-शानि (कवित्त)

खुलते ही खोल खलवली मची खलक बीच
भप पलक दल बर झलक आँख करकी ।
विद्युत प्रभासी भासी खासी वर पानिप सो
चल चचला सी माल गूधक ही हरकी ।
भनत 'दयालु' सुनी कालकी सहोदरा सो
बरिन को स्वग दा सगनी समर की ।
कहा बर प्रताप तेरी बर्छी विजय रूपणी सी
नीकी पतवारसी ही नौका युद्ध-सरकी ॥

१५०—राधारमण शर्मा "मोहन" —आपका जन्म माघ कृष्णा ३ सम्वत् १९६६ को प० श्यामलाल वाशिष्ठ के यहा हुआ । आपके पिता को कविता से बडा प्रेम था । वे समय समय पर सुन्दर रचनाए किया करते थे । अत आपको काव्य प्रेम पतृक विरासत मे मिला । सच तो यह है कि काव्य रचना की प्रेरणा आपको सम्वत् १९९४ से श्री हिन्दी साहित्य समिति के कवि सम्मेलनो से मिली । आपने किसी ग्रन्थ की रचना तो नहीं की है, किन्तु शृङ्गार रस के फुटकर कवित्त और सवये लिखे हैं । आपका सवया कहने का ढग इतना सरस है कि श्रोताओ का सुनने की इच्छा बनी ही रहती है । आपकी भाषा शुद्ध व्रज भाषा है अलङ्कारो के स्वाभाविक प्रयोग ने रचनाओ को और भी अधिक चमत्कृत कर दिया है । आपकी सरस रचनाएँ अनेक बार कवि सम्मेलनो म प्रथम पुरस्कार से

पुरस्कृत हो चुकी हैं। आपकी जीविका का मुख्य साधन वद्यक है। इनकी रचनाओं के कतिपय उदाहरण प्रस्तुत किये जाते हैं —

गणेश-वन्दना (कवित्त)

गाव तो गावें कौन गुन गन गजानन के
आनन हजार हू थकित भये सेस के।
दस क विदस के सुरस को समावे सब
प्रथम मनावें गम तनय महस के।
माहन पर है वर भेदन अनक भाति
सवसा वढ है सुख करन हमेस के
नान के गर्ने है रिद्धि सिद्धिन सर्ने है सर
चित्तमें चढ़े है चारु चरन गनेस के॥

शारदा-वन्दना

मनिन अमल मध्य पाण्डु पुण्डरीकन प,
राजत सयानी मानी आदि शक्ति माया है।
चारु भुज चारु जाम परम नगीना बीना
पुस्तक श्री माला चौथे अभय सुहाया है।
ब्रह्मा की सुता है और कविन विधाता विश्व,
प्रेम युत ध्याया जासु आसु फल पाया है।
'माहन सुकवि उर अजिर विराजो आय
तर गुण-गान का हुलास हिय छाया है॥

सुषमा मयी अहीरनी सवया

सुचि नूपुर मञ्जु निनादन सा दुख दुदन व्यूह विदीरनी तू।
मृदु-हास हुलास विलास भरा, गुन जोवन रूप जखीरनी तू।
कवि माहन' के मन क बन की, निरद्वन्द विहारिनि कीरनी तू।
जग नायक चरो बनाय लियो अरी वाहरी वाह अहीरनी तू॥

श्री राधिका महिमा

सरसावनी सुक्ख समूहन की दुख द्वन्दन व्यूहन चूरना तू।
हरसावनी माहन क मन की, जनकी सब इच्छन पूरना तू।
'कवि माहन रूप सुधा मद सो मन मारन को सर भूरनी तू।
जगनायक की अधिनायक है घनश्याम की मत्त मयूरनी तू॥

शिव रूप माधुरी (कवित्त)

सोभित है भाल प हिमाचल त्रिपुड सम,
स्वेत हिम-आभा माना चन्द्र चटकारी है।

यात घृत दूध दही वा विधि निकार जय
यही मोच भागे मनि गई ग्राज मारी है ।
कहे जाय लोगन सा दूध को न बात करो
गावर कर भागे यात भम हम प्यारी है ॥
तारी जाय घरते लाग तागे ? हमी कर,
वेचन म याके एक ग्राफन यह भारी है ।
भारी घर वारी को उगहनी मिन है 'जय
भस का बिचारी दत रोज राज गारी है ।
जान ना ग्रनारी दिन द्वक म हमारे यहाँ
इघन कटाल हाय ग्राँखिन ग्रगारी है ।
यासा कहा यासा नक गुस्सा कम खच करो,
गावर कर भारा यामो भम हम प्यारी है ।

भगडी की ग्रभिलाषा

मरी तपस्या पर प्रसन्न जो हुए हो नाथ !,
दीज वरदान खूब मौज म छनी रहे ।
शक्ति हू शरीर म ग्रपार हाय दीन बधु !
थारा इमरतीहू की ग्राग ही घरी रहे ।
भूख दिन दूनी ग्रौर रात चोगुनी ही हाय
पुग्रा प पुग्रन की लगी पूरी झरी रहे ।
एनी ग्रभिलाष मरी पूरी करो दीनानाथ,
ग्राइसे मकारा म रबडी हू भरी रहे ॥

भोजन प्रतियोगिता– विजयी

होड करी लाला न खान की हमारे साथ
बठ गय खोलक मिठाई के पिटारे ह ॥
गरम इमरती कलाकन्द सुफेनी वादि,
चमचम रसगुल्ला खीर मोहन निकारे है ।
मठरी मलाई मेवावाटा ग्रौ मक्खन बडे
दहावडे बडे बडे व्यजन हू रचारे है ।
विजया भवानी की कृपासा सब चाट गये
टूहूँ भाति लाला हाड हारे बिचारे हैं ॥

लालाजी के पट म हवनी का निर्माण

कीचड सी गाढी भाग गारे की जु काम कर
चवनी बनावन की ईंट करी मात है ।

कर कर चिनाई भीत ऊंची भी बनाई जय'
मोक की पटावो द पूरी करी छात है।
सरस इमरती क झरोखे चहुँ ओर दिये,
जाली लगावन हेतु पुष्प और घात है।
भगडी महाराज नक मनमें विचार करो
पट में तुम्हारे ये हवेनी चिनी जात है॥

गीत

कौन अपना है पराया कौन है ?
आजका युग पाप ता छल स भरा वह घृणित अचार से कव कव डरा।
अब दुहाई न्याय री है बचना साधु जीवन हाय रे ! सपना बना।
चरितमा मानव विचारा मौन है ॥ कौन अपना
नित्य परिवतन यहां का खेल है, नियति का उसमे अनोखा मेल है।
विवशता यद्यपि, तथापि विवेक है और दृढता का सहारा एक है॥
भर रहा दम मेर जीता धौन है ॥ कौन अपना
स्वप्न का आलोक चिर होता नहीं गत हुआ फिर प्राप्त क्या होता कहीं।
सृजन चिर आलोक करना धम है, चिर साधक का यही ता कम है॥
साधना की एक आशा मौन है ॥ कौन अपना
दूर चलना है बड़ी मंजिल कड़ी, राह मे कटर बनी माया अड़ी।
है न जल विश्राम भोजन हर घड़ी, शीत वर्षा घाम की सिर पर झड़ी॥
तदपि राही वीर ! वीर अनिकल गौन है ॥ कौन अपना

१७३—चम्पालाल 'मजुल'—आपका जन्म लगभग १६११ ई० मे भरतपुर के एक ब्राह्मण परिवार म हुआ। सयोगवश शशव मे ही इन्हें विद्यावला के केन्द्र छत्रपुर जाने का सुयोग मिल गया। छत्रपुर के तत्कालीन नरेश श्री विश्वनाथसिंह जू देव के उदार आश्रय म रहकर इन्होंने शिक्षा प्राप्त की। वसे तो साहित्य क प्रति इनकी शैशव से ही अभिरुचि थी किंतु प० श्यामबिहारी मिश्र (दीवान), प० शुकदेवबिहारी मिश्र (दीवान), प० हरिप्रसाद (वियोगी हरि), प्रसिद्ध आलोचक लाला भगवानदीन तथा बाबू गुलाबराय एम० ए० आदि साहित्य मनीषियो का सम्पर्क पाकर वह साहित्यिक अभिरुचि अधिक बलवती हो गई। आपने तीन ग्रथो की रचना की है जिनके नाम इस प्रकार हैं—(१) काव्येन्दु (२) अन्योक्ति माधुरी तथा (३) मजुल शतक। इन पुस्तकों के अतिरिक्त शृङ्गार वीर तथा भक्ति के सकडो सरस सवय और कवित्त हैं। (१) काव्येन्दु—नायिका भेद का ग्रन्थ है। इसे देखकर सन् १६२० म खजुराहो

नामक ऐतिहासिक स्थल पर एक बंगाली बहुत विद्वत् मंडल के सभापति श्री १०८ गोस्वामी दामोदरलाल पद्मनाभाचार्य ने इनको कवि-शेखर की उपाधि प्रदान की। इसी अवसर पर छत्रपुर नरेश ने स्वर्ण पदक देकर इन्हें सम्मानित भी किया। (२) मंजुल शतक — एक सौ समस्याओं पर विविध विषयों के १२७ सरस दोहों का एक संग्रह है। इसमें समस्या पूर्ति की चरम साधना स्पृहणीय है। इस पर स्वाध्याय सदन सातन से स्वामी योग ने सम्पादक श्रीमान् वागभवाचार्य द्वारा आपको १२५) का पुरस्कार मिला है। (३) अन्योक्ति माधुरी — इसमें २०० कुण्डलियों का संग्रह पुष्पों तथा अन्य वस्तुओं पर अन्योक्तियों के रूप में हुआ है। इसकी प्रत्येक अन्योक्ति चुटीली और प्रभावोत्पादक है। कवि की काव्य साधना का प्रौढ़ रूप इसमें पूर्णतया परिलक्षित होता है। मोटर की, बंसी, ट्राम तथा ट्रक आदि अनेक आधुनिक वस्तुओं की अन्योक्तियों द्वारा कवि इसमें अपने विनोदी स्वभाव का पूर्णरूपेण परिचय देता है।

कविवर मंजुल एक रससिद्ध कवि हैं। आपकी शृङ्गारिक रचनाएं अनुपम तल्लीनता लिये हुए हैं। अनुप्रासों की स्वाभाविक छटा विशेष चमत्कारिक है। आपके सवैया के कहने का सरस ढंग श्रोताओं पर अपनी अमिट छाप छोड़ जाता है। मुक्तक कविता में जो स्वाभाविकता और सौन्दर्य होना चाहिये वह मंजुल कवि के दोहों में परम उत्कर्ष को पहुँच चुका है। इनके दोहों को पढ़ने से हृदय कलिका थोड़ी देर के लिये खिले बिना नहीं रहती और मुख से सहसा वाह वाह निकल पड़ती है। इनकी भाषा सशक्त और भावानुकूल है। कल्पना की समाहार शक्ति के साथ साथ आपकी भाषा में समास शक्ति भी पाई जाती है, जिस कारण इनके मुक्तक बहुत ही सुन्दर एवं सफल बन पड़े हैं। कहीं कहीं तो वे रस के छोटे छींटे से प्रतीत होते हैं। कविवर मंजुल का ब्रज भाषा और खड़ी बोली दोनों पर समान अधिकार है। इनकी भाषा में [illegible] कहीं भी शिथिलाई नहीं पड़ती। ये वास्तव में एक उत्कृष्ट कवि हैं। इनकी सरस रचनाओं के उदाहरण लीजिए —

कार्य हेतु [illegible] नव यौवना लक्षण (दोहा)
यौवन आगम निज वदन जान परत है जाय।
ताहि जान नव यौवना कहि मंजुल कविराय॥
यथा उदाहरण (सवैया)
दृग [illegible] रंजन मुख [illegible] घूँघट ओट लुकान लगी।
कुच नूतन कंचुकि माँहि कसे, विहँसि मन मोद बढ़ान लगी।
'कवि मंजुल' चाव भरे गर्वे, रति बात सुने अनखान लगी।
लरकाई के संग विदाय तथा दिन द्वै कहि ते मुसकान लगी॥

यथा उदाहरण (दोहा)

चालें की चरचा चलत, चली लली सकुचाय।
अलि आटक मुनि मुनि अमित आनद उर न समाय ॥

कुलटा लक्षण

बहु पुरुषन सो हित करै कामवती जो वाम।
तासों कुलटा कहत हैं मंजुल कवि मति धाम ॥

यथा उदाहरण (सवैया)

मदमत्त गयन्द की गति सो हरवे हरवे पग धारिये ना।
विचकाय कै आतुरी आनन सों, पट घूँघट को निरवारिये ना।
कवि मंजुल भौंह सरासन सों, दृग तीच्छन तीर निकारिये ना।
चित चोरकें चन्द्रमुखी हँसकै, अवि नाक बटोहिन मारिये ना ॥

यथा उदाहरण (दोहा)

चितवत चहुँ दिशि चलतमग घूँघट पट निरवार।
नगर छैल नागन हन नारिनि मन गर मार ॥

मंजुल सतक में प्रेम वर्णन

ऊधौ! काउ प्रेम सुन, इत जोग की बात।
प्रेम प्रभा सो ज्ञान तम, छिन छिन में छिन जात ॥
हटक है मान न यह मेरौ मन मृग-जात।
नेह बधिक मृदु गान सुनि, छिन छिन में छिन जात ॥
हरि छवि निधि लहरन परत चलत नेह की बात।
लगर लाज जहाज को, छिन छिन में छिन जात ॥
हिय विहग कुल कान के उपवन उड़ नहिं पात।
नेह बाज की झपट सों, छिन छिन में छिन जात ॥

रूप वर्णन

झाँकि झाँकि खिरकी तरुनि फिरकी लौं फिर जात।
मनहुँ तड़ित घनसों निकसि छिन छिन में छिन जात ॥
मन पट कैसो अछिन रहै लोक बेद की रात।
तिय सुखमा सरि सलिल सों छिन छिन में छिन जात ॥

नेत्र वर्णन

दृग दोउ चितचोरी करत, पर कुच पकर जात।
चोरन ढिग बस साहु सुख छिन छिन में छिन जात ॥
नैन भेदिया चपल चल, उर पुर पैठत जात।
गूढ़ भेद मन नृपति को छिन छिन में छिन जात ॥

नन नक्ब जन उर सादन भेदन दुरि न्नि रात।
धीर धरम धन धरन की छिन छिन म छिन जात॥

वेसर वर्णन

वेसर अधरा दुलि करत रसधारी न्नि रात।
तउ अधरा रस सजन मा छिन छिन म छिन जात॥
उर बिधाय नित मुक्त ह पर उर बिध बिध जात।
वेसर सग लह सुजन गुन छिन छिन म छिन जात॥

विविध

अभिनव उकसौहे उरज उघरि कर उतपात।
या सो कचुलि मिसि मुक्ति छिन छिन म छिन जात॥
कटि गुरुता इमि कुचन सा, बर दाम चोरी जात।
मनहुँ ठगन सो कृपन धन छिन छिन म छिन जात॥
पायजेब पायन परसि पाय जेब इतरात।
प धुनि गुन बिपरीत सा छिन छिन म छिन जात॥
झलकत जोबन मलक तन निनुना भाजी जात।
जिमि सुराज लहि लोक दुख छिन छिन म छिन जात॥
बुध जन ढिग नाम मदिरा मन न ठिक ठहरात
जिमि सुकबिन सो मूढ नृप छिन छिन म छिन जात॥
जा कृपा न नेंकहु कर बहु कृपनि कहात।
रिपु मुख दुति वा दुति मिलत छिन छिन मे छिन जात॥
मेरो तेरी करत ही ह आयो परभात।
हरि भजबे की बावरे! छिन छिन म छिन जात॥

अन्योक्ति माधुरी (कुडलिया)

रे चातक चपल मन याही नह निकेत।
जहाँ सदा विहरत रहै, घन दामिनी समेत॥
घन दामिनी समेत सतत रस-प्रभा पसार।
स्वाँति नखत क बिना, स्वाति घट अविरल धार।
'मञ्जुल जीवन जग पाय जीवन जिहि नेरे।
मान सिखावन मार चपल चल चातक एरे॥
यह भार की टकसी नहिं अनुगामिन कार।
रे पथी! कमे कर, यामा मजिल पार॥
यामा मजिल पार करन की वया हठ ठान।
ठौर ठौर प ठहर नय पथी उर आन।

वह 'कवि मञ्जुल" चल न इत कछु गुन वार की।
विन धन कर न प्रात टक्यो यह भार की॥
जयो वज कमायव ग्रर वनिक वा देम।
रहै न टोट की जहा रचन हू परवेम।
रचक हू परवेम पाय सत सोगन माही।
वचहू माल ग्रमोन माल जेतो ता पाही।
मञ्जुन विभव वढाय मनन मांचो सुख पया।
वहुरि न ग्रावागमन हाय, मनऊँ इमि जया॥
र चन्दन। तगे वहा ग्रान्ट करें किगत।
न्न सन्ग सठ दुमह दुख काट काट तुम गात।
काट काट तुम गान, वेच कौडिन म ग्राव।
काठ काठ मन एक भेद कछु ममझु न पाव।
वह कवि मजुन रह न, निन घिरि घेरि विपति घन।
दखि न्निन की फेर ग्ररे चुप रह र चन्दन॥
ग्रावत पानम ही वढयो, गुलावाम ता वस।
रे छलिया छन रूप धरि छल सुमन ग्रवनम॥
छन सुमन ग्रनतम, प्रमम्मिन रहे न कोई।
ग्रपनी ग्रान न्निवाय ग्रान सवही की खोई।
मजुल वभव हरि हरि, हिय म हरसावत।
ग्ररे। वाल भित जाय, वहुरि मरदागम ग्रावत॥

ग्रभिलापा (मवया)

क्षण एक भी प्रम की साधना में, न वियाग का ग्रतर ग्राता रहै।
चिर सिञ्चित मजुल भावना का तरु फूला फला सरमाता रहै।
शुचि भक्ति स जीवन जाग्रत हा इम जीवन का फल पाता रहै।
मन भृङ्ग मग्न हृदयश्वर के पद पङ्कज प मडराता रहै॥

किसी जन्म म भून न भूलूँ तुम्हे, जन जान दया दरमात रहा।
'कवि मजुन' नह की लोनी लता उर ग्रन्तर म उपजात रहा।
चरणा से वियोग न हा क्षण का इतना उर धीर धरात रहा।
उम पथ की धूल वनाना मुझ जिम पथ स प्रीतम ग्रात रहा॥

१५४—शिवचरणलाल — ग्रापका जन्म १२ जून १९१२ ई० म भरतपुर निवासी प० मुकुन्दराम के यहाँ हुग्रा। ग्राप यहा के प्रमिद्ध कवि कुलशेखर

नन नक्‍व जन उर सदन भेदन दुरि न्नि गात।
धीर धरम धन धरन की छिन छिन म छिन जात॥

वेसर वर्णन

वेसर अधरा दुलि करत रगधारी दिन रात।
तउ अधरा रस मजन मो छिन छिन म छिन जात॥
उर विधाय नित मुक्त ह्व पर उर विध विध जात।
वेसर सग लह सुजन गुन छिन छिन म छिन जात॥

विविध

अभिनव उक्सोहे उरज उधरि कर उतपात।
या सा कचुलि मिसि मुक्ति छिन छिन म छिन जात॥
कटि गुरुता इमि कुचन मा, वर वाम चारी जात।
मनहुँ ठगन सा कृपन धन छिन छिन म छिन जात॥
पायजेब पायन परसि पाय जेब स्तरात।
प धुनि गुन विपरीत सा छिन छिन म छिन जात॥
झलकत जोवन झलक तन शिशुता भाजा जात।
जिमि सुराज लहि लोक दुख छिन छिन म छिन जात॥
बुध जन ढिग बसा इंदिरा नैंन न ठिक ठहरात
जिमि सुकवि सो मूढ नृप छिन छिन म छिन जात॥
जा कृपा न नक्हु कर बह कृपनि कहात।
रिपु मुख दुति वा दुति मिलत छिन छिन म छिन जात॥
मेरी तरी करत ही ह्व आयो परभात।
हरि भजब को बावर! छिन छिन मे छिन जात॥

अन्योक्ति माधुरी (कुडलिया)

रे चातक चपल चल वाही नह निकेत।
जहाँ सदा विहरत रहै, घन दामिनी समेत॥
घन दामिनी समेत सतत रस-प्रभा पसार।
स्वाँति नखत के बिना, स्वाँति घट अविरल ढार।
'मञ्जुल जीवन जग पाय जीवन जिहि नेरे।
मान मिवावन मोर चपल चल चातक एरे॥
यह भारे की टक्सी नहिं अनुगामिन कार।
र पथी! कसे कर, यामा मजिल पार॥
यामा मजिल पार करन की क्या हठ ठान।
ठौर ठौर प ठहर नय पथी उर आन।

कह 'कवि मञ्जुल' चलन इत कछु गुन वार को ।
बिन धन कर न प्रीत टकसी यह मार को ।।
जथा वज्र कषायक, अरु वनिक को देस ।
रहै न टाट को जहाँ रचक हू परवेस ।
रचक हू परवेस पाय सत लोगन माहीं ।
बचहू माल अमोल माल जैनो ता पाहीं ।
मञ्जुल विभव बढ़ाय मनन माचौ सुख पंथा ।
नहिं न आवागमन होय, बनवें इमि जथा ।।
रे चन्दन ! तगो कहा आपन करैं बिगान ।
देत नरा सठ तुमहि दुख काट काट सुख गान ।
काट काट सुख गान, कच कोहिन मैं आवैं ।
काठ काठ सब एक भेद कछु समझु न पावैं ।
कह कवि मञ्जुल रहै न, नित घिरि घरि विपति घन ।
दरि दिनन को फेर धरे चुप रह रे चन्दन ।।
सावन पावस हो करयौ, गुनाग्राम तो वसु ।
रे छलिया छल रूप धरि, छत्र मयन अन्तम ।।

के शिष्य है। आपका उपनाम "महन" है। इनका वृजभाषा पर स्पृहणीय अधिकार है। शृङ्गार रस के कवित्त और सवैया म आपकी भाषा की सजावट अत्यन्त ही सरस एव सुदर होती है। भावो का चित्रण एक गरम सजावना उत्पन्न करता है। शब्दालङ्कारो का प्रयोग तो बडे ही सुदर एवम् चमत्कृत ढग से हुआ है सभी रचनाए अति मधुर एव हृदयस्पर्शी हैं। इनकी रचनाओं म भाषा शाक्य का दोष देखने म नहीं आता। आपकी सरस रचनाओं क कतिपय उदाहरण प्रस्तुत किय जाते ह —

नैन वर्णन (सवैया)

तब ननन नन मनहु कियो अब ननन नन दुरावत हैं।
निस वासर नन रहे टक लाग न नन कहूँ लगि पावत है।
इन ननन चन पर न महेश सु मोहन को अकुलावत हु।
बिलखावत है कलपावत हैं नित आँसुन सो भरि आवत है॥

मद हस तिरछौंही चित चलि चाल गय टन क मुख मार।
खजन गजन सी अखिया लखि छ नन क मन मन मरार।
नूपुर की झनकार कर इतरात महन चली अति भार।
सन चलाय नचावत लव या कामिन क चित कामिन चार॥

शुक्लाभिसारिका (कवित्त)

चाकन चकित चली चादनी म चन्दमुखी
　　चित चित चाग और चोरीसी करत जात।
पायन के रग रगराती रग रग भूमि,
　　अरुनाई अग सुग अबुज दरत जात।
भूपन चमक चारु चादी स चमक चीर,
　　मुरकि 'महन' मन मोहन हरत जात।
हीरन के हार हिय दुरत अमद दुति
　　वारन त मुक्ता हजारन झरत जात॥

कृष्णाभिसारिका

स्याम सरस सारी तमी कचुकी मल्हारी कारी
　　मृग मद लेपन सो अग छवि छुपि जात।
भूपन दमक दुति दाव पट अम्बरो सो,
　　मरकत पात त्यो उलूकन डरत जात।
सौरभ सुगध पाय अवली अलि वृदन की
　　घरत सिमट छाया छत्र सी करत जात।

कीरति कुमरि कार करत मनोरथन
मुक्ति 'महेश' कारे कान्ह सों मिलन जात ॥

माँग वर्णन

बनी पीठ छरत लुरत या नितम्बन प
कंचन मिला प मनु पन्नगी सुहाई है।
मनिन जटित मंजु बेनी या गज भाल,
गहु प टरन चौकी चन्द्रमा लगाई है।
सुकवि महेश नील कंचुकी उरोजन प
सम्पुट मनोज प मनोज छवि छाई है।
पाटिन के बीच माँग सेंदुर यों सोभित है
मानो भानुजा मे धार सारदा सुहाई है ॥

फाग वर्णन

डारगी कमोरी भरि केसर सुरंग रंग
धमक धमार गाय सोर चहुँ पारगी।
पारगी सुपारी सीस भाल म लगाय बेनी
अंजन अंजाय तन चूंदरी सुधारेगी।
धारगी मुकचुकी सम्हार कटि लहंगा कसा
रावरे 'महेश' गुन गौरव बगारेगी।
मारगी गुमान मूठि मेलिक गुलाल लाल
देखत ही लाल तोहि लाल कर डारेगी ॥

वसन्त पंचमी मे नटी का रूपक

फूल फूल कलित दुकूल बहु रंगन के
गुंजरन भौंर त्यों मंजीर झनकन की।
त्रिविध समीर बीन बाँसुरी सितार बाज
हास बल गान कोकिलान किलकन की।
सुकवि 'महेश' चाटी चानक मृदंग रंग
भूम आम बौर सो लचक लोना लंक की।
आनन गुलाब औ सुबास भई सौरभ सो
नाचत नटीला आली पंचमी बसन्त की ॥

१५५—रावजी यदुराजसिंह—आपका जन्म रावराजा रघुनाथसिंह के यहा २९ नवम्बर सन् १९१ ई० को हुआ। आपको काव्य प्रतिभा विरासत रूप म मिली क्यो कि आपके पिता रावराजा रघुनाथसिंह के यहा अनेक कवियो का

आवागमन बना रहता था तथा अनेका कवियों का आपस स्थायी वृत्तिया भी मिलती थी। उनके सत्संग का प्रभाव आपके शिशु हृदय म कवित्व म आविर्भूत हो गया। प्राचीन कविया के काव्य ग्रन्था का इन्होंने गम्भीरतम अध्ययन किया है। उसी के परिणाम स्वरूप इनकी सर्वाधिक रचनाएं ब्रजभाषा प्रधान हैं। आपकी रचनाओं का एक मात्र लक्ष्य श्रीराधाकृष्ण की मधुर लीलाओं का वर्णन है। आपकी शृङ्गार रस सम्बन्धी रचनाएँ अत्यधिक श्रुति मधुर है। कविया के सम्पर्क से पिङ्गल का ज्ञान भी आपको प्रचुर मात्रा म है इसी कारण पिङ्गल की दृष्टि से इनकी रचनाएं दोष मुक्त हैं। इन्होंने अपनी रचनाओं म 'रसिक छैल' उपनाम रक्खा है। आपका ब्रज भाषा तथा खडी बोली दोना पर समान अधिकार है। अनुप्रासा की स्वाभाविक एव सरस छटा श्रोताओं के हृदय पटल पर एक अमिट छाप छोड जाती है। इन्होंने राधाकृष्ण सम्बन्धी अनेका छोटी बडी लीलाएं लिखी हैं इनके अतिरिक्त फुटकर कवित्त और सवैया भी प्रचुर मात्रा मे लिखे हैं। रसास्वादन के लिये आपकी रचनाओं के कतिपय उदाहरण प्रस्तुत किय जाते हैं —

बसन्त-वर्णन (घनाक्षरी)

पीरे आभूषन औ बसन्ती ही बसन नीके
पीरौ ही मृदंग ले बसन्त राग गावरी।
पीरौ सुरंगी रंग कनक पिचकारि डारि,
पीरोही गुलाल उडि अकास बीच छावरी।
'रसिक छैल' पीरी सेज चढिकें पिया प्यारी
पीरी परी मोहि आहि हृदय लगावरी।
काम-ज्वर जार तन तपन बुझाव सखी,
एते हा साज तब बसन्त मन भावरी॥

रूप-वर्णन

चंचल विनोद सा चटाक चित चोर चारु
चन्द्रमुखी चाखी चन्द्रहास सी चलावती।
हेर हर हँसन सु हियरा हिराना हाय
हटक हठीली हाथ होठन हलावती।
रसिक छैल राज रंगीली रली रूप रासि
रीझे रिझवारन का रोकत रलावती।
जगमग जाति जुरी जोवन के जोर जाकी
जग जग वाना जग जरन जलावती॥

लज्जिता—नायिका

मरकी माल बेंनी नन कस उनीदे ग्राज
छत है क्पाल वही लालिमा ग्रधर की।
धरकी है छाती कुच कोर कनी ग्रागी खुली
कांपत हैं गात मदनी छूटी क्यो कर की।
सरकी हरी चूरी फिरें ग्रति यजगनी सी
टारन सिगार मज साजी विन सुघर की।
धरकी न सुधि बुधि रही है रसिक छैल
रात जागी तन मूट गई मरकी॥

ग्रीष्म की ग्रावश्यकता

शीतल पवन चारु चन्दन विजन हार
कठ बीच मुक्त-माल टाटी नय खमकी।
बरफ को पानी पुष्प-सेज सुखदानी ग्रति
नामी हूँ सुजानी करें बात प्रेम जमकी।
रसिक छैल गंधन सुवासित भई गल
ऊंच महल निरप जानि खिली सगिरी।
ग्रतर गुलाब की सिचाव चहुँ ग्रोर चाय,
चारु एत हा साज सुघर नारि भरी रमकी॥

विरहनी व्रजाङ्गना (सवया)

हंहिश कहिया विनती हमरी मन ग्राग जरें विरहाकरम।
कर से इन मह छहै दुनिया मन छल न प्रीत कर परम।
पर मन सूरत वा तुमरी इक नह सहै ग्रपन वरम।
नरम वच प्रेम घटा हम पी नगि ग्रब हम जियम हरम॥

कविकी ग्रभिलाषा

ग्रपना पथ है राही क्षण का, मैं किससे क्या पहचान करूँ?
जिनसे मग कुछ काम नहा, वे काम पूछते हैं मेरा।
जिनका नहिं ग्रपना नाम यहाँ वे नाम पूछते हैं मेरा।
फिर उनका परिचय देकर क्या परिचयका ग्रपमान करूँ?
इस जीवन में हंसते हंसते ग्रात देखे ग्रान वाले।
ग्रब रोना का निष्फल लिये जाते देखे जान वाले।
फिर किस पर ध्वनि में वच निकलूँ किस पर ध्वनि का सम्मान करूँ?

जिस जीवन में साहित्य नहीं उस जीवन में क्या रक्खा है ?
जिस जीवन में कुछ राग नहीं उस जीवन में क्या रक्खा है ?
फिर ऐसे नीरस जीवन पर, मैं क्या मन में अभिमान करूं ?
प्रभु से है विनय यही मेरी, जब अन्त समय मेरा आवे।
कवि वृन्द खड़ा कुछ कहता हो अरु शान्ति चतुर्दिक छा जावे।
हा गुंजित स्वर से छल ये अम्बर, उस में मैं प्रस्थान करूं ॥

१५६-मदनलाल गुप्त 'अग'—आप भरतपुर निवासी लाला कला वरदा बजाज के आत्मज और जाति के अग्रवाल वैश्य हैं। इन्होंने हिन्दी भूषण परीक्षा उत्तीर्ण की है। इनका जन्म भादों सुदी ५ संवत् १९७० को हुआ अतः आपका कविता काल सं० १९८६ से आरम्भ होता है। आप एक कर्मठ व्यक्ति हैं और अपने उत्तरदायित्व को भली प्रकार समझते हैं। समिति के नवीन भवन के निर्माण में आपका स्पृहणीय योग रहा है। इनको बाल्यकाल से ही हिन्दी साहित्य समिति और हिन्दी के प्रति विशेष अनुराग है। गत तीन वर्षों से आप समिति के प्रधान मन्त्री पद पर काम कर रहे हैं और इससे पूर्व उप मन्त्री तथा उप प्रधान पदों पर भी काम कर चुके हैं। आपको कविता के प्रति बड़ी अभिरुचि है। आपकी अनेक सरस रचनाएं समय २ पर साधुसर्वस्व, लोक धर्म, माहेश्वरी हिन्दू पंच, जाटवीर, अग्रवाल और सैनिक आदि पत्र पत्रिकाओं में प्रकाशित होती रही हैं। आपकी रचनाओं के उदाहरण देखिए :—

पत राखन हारो

कुरु राज सभा बिच द्रौपदि को पट खैंच सक्यो न दुशासन हारो।
तज वाहन पायन धाय परो, छिन में गज को सब संकट टारो।
सुरराज डुबाय सक्यो न ब्रज मिस कौतुक छिगुरि पै गिरि धारो।
नन्द नन्दन सो नहिं अग्र ! लख्यो जग दीनन की पत राखन हारो ॥

कृतघ्न मधुकर

परम रम्य आराम जिसे है भ्रमर न तू लाता दिन रैन।
रंग-बिरंग मधुरस भरे पुष्पों पर करता है चैन ॥
सुध बुध खो बैठा है सारी बना फिरे मतवाला सा।
दिखता है छल छिद्र हीन क्या ? सीधा भोला भाला सा ॥
किन्तु न तेरे भावों में है लेश मात्र सच्चाई का।
कौन कौन में चरचा है तेरी कलमषपनाई का ॥

वही वाटिका होगी इक दिन वही सरोवर शीतल नीर ।
किंतु भूलकर भी क्या ? मधुकर फटकोगे तुम उसके तीर ॥
प्यार तभी तक है बस जब तक, मधु मकरंद सहित हैं फूल ।
अरे स्वार्थी ! और कृतघ्नी तेरी इस बुद्धि पर धूल ॥
इतने पर जो तुम्हें बटन देते उन वृक्षों को धन्य ।
पास बिठाने योग्य नहीं है बस्ता तू है नीच जघन्य ॥

१५७—श्रीनिवास ब्रह्मचारी —आपका जन्म दाग (जिला भरतपुर) के प्रतिष्ठित ब्राह्मण कुल में २८ सितम्बर सन् १८१४ को हुआ। अपने पूर्वजों की भांति आयुर्वेद की शिक्षा प्राप्त करके आप सन् १८२५ से अब तक निरंतर जनता की सेवा करते चले आ रहे हैं। सन् १८४१ से इनकी अभिरुचि कविता पढ़ने एवम् लिखने की ओर अग्रसर होने लगी। प्रारंभ से ही आपका झुकाव वीर रस की कविताओं की ओर अधिक रहा है। ब्रह्मचारीजी बड़े सरल और भावुक कवि हैं। इनकी भाषा भावानुकूल मधुर एवम् सरल है। उदाहरण देखिए—

॥ विषमता ॥

यह विषम बेल फूली जगमें प्रति दिन ही फलती जाती है।
दीनों के वक्षस्थल पर ये काँटों का जाल बिछाती है ॥१॥
उन वैभव शाली भवन बनें, रवि पवि कर अधिक सजाये हैं।
मान के कलश शिखर पर धर शशि मण्डल भी शरमाये हैं ॥
स्फटिक शिला के चौक उन, बहु रतन स्यों भर बाये हैं।
है स्वर्ग स्थल इस मृत्यु लोक में जग मग ज्योति जगाये हैं ॥
इनमें रहने वालों को नहिं फिर याद किसी की आती है। यह विषम बेल ॥१॥
इन बनी झोपड़ी छानी भी मिट्टी के ढेलों पर छाई।
एक बड़ी मैली ह्यगन सी, टूटा है इसमें चरपाई ॥
इसमें मिट्टी का लीप जल नहिं मिट अधरा दुखदाई।
इस भूमि लगे मानव का यहां ढक सनी है भाई ॥
युग युग की विषम अवस्था का सच्चा इतिहास बताती है। यह विषम ॥२॥
उनमें भारी हैं कारबार, अरबों खरबों का माल रहे।
मील और गोदामों का धरती पर फैला जाल रहे ॥
उड़ते इनके ही वायुयान, कारों का वारापार रहे।
मानव कहलाने का केवल इनको ही अधिकार रहे ॥
इतना अपार वैभव पाकर जीवन चाणी में जाती है। यह विषम बेल ॥३॥

न म मजदूरी मिल नही खेती बाडा की ग्राम नहीं।
कोई उद्योग नही इनका एक पैसा तक भी पास नहीं॥
प्रति युग म पिसते आये है जीवन की शेष ना श्वास रही।
इतन अस्थी पजर मुख मानव की इनमे वास नही॥
भूखे नगे रहकर मरना इनको ही भाग्य बताती है। यह विषम ॥४॥
एक बनाता भूषण एक लाखो का अन्न बनाना है।
एक बडा है मालदार दूजा कगाल कहाना है॥
एक कमाता हाड पेल कर दूजा बैठा खाता है।
एक पडा नीचे पिसता है एक चढा ही जाता है॥
यह नही होता सहन आज की जनता समता चाहती है॥ यह विषम ॥५॥
करनी करनी जो भी करनी गीता के साथ तुम्हारा है।
ये जुल्म इहान की अनीत कब तक करती रखवारी है
एक दिना नही एक दिना आती सब ही की बारी है।
स्वाहा करती है वासा क जगल को एक चिनगारी है।
तुम स्वयम् दवत जाओगे चाटी पवत की नाती है। यह विषम ॥६॥

१५८—गोपाललाल माहेश्वरी—य जाति के वैश्य और भरतपुर निवासी दुर्गाप्रसाद बोहरे के पुत्र थे। इनका ज म लगभग १९७२ वि० म हुआ था। य बडे ही होनहार कवि थे और छोटी ही अवस्था म इन्होंने साहित्योपाध्याय हिन्दी कोविद साहित्य भूषण हिन्दी गडवाम तथा हिन्दी प्रभाकर आदि कितनी ही परीक्षाए उत्तीर्ण कर ली थी किन्तु दुख है कि केवल २१ वष की अवस्था म स० १९९३ वि० म इनका स्वर्गवास हो गया। भरतपुर को इनसे जो आशाएँ थी वह पूर्ण न हो सकी। आप चन्द्र उपनाम से रचनाएँ करते थे। आपकी कविताओं के दो सग्रह सूक्ति चन्द्रालय तथा सुमन सरोज आपके जीवन काल म ही प्रकाशित हो चुके है। आपका गद्य पद्य दोनो पर ही समान अधिकार था। गद्य की भी कई पुस्तकें मुद्रित हो चुकी है। शेष सग्रह जिसमे "अन्योक्ति पचीसी मन्दध्वनि अलकार चन्द्रालय और हृदय की गूज आदि है नष्ट हो चुकी है। कुछ थोडा सा फुटकर सग्रह हमे प्राप्त हुआ है, किन्तु जो कुछ भी प्राप्त हुआ है वह इन्हे उच्च कोटि का कवि सिद्ध करने को पर्याप्त है। इनकी कविताओ मे सरसता माधुर्य और प्रसाद गुण स्पष्ट दिखाई देते है। कुछ उदाहरण प्रस्तुत है—

सवया

जीवन दानि सुजान महा पग ज य यथोचित हूँ अवगाहौ।
स्वारथ क मिस क परमारथ नाप मिटाय अनन्द उमाहौ।

गावरी भ्राम मयूर कर वक मारग के कुल की जय चाहो।
चन्द्र पपीहा को दोष कहा जु वियोगिन के सिर माढ निबाहो हो।

मकरन्द के नाम मलिन्द गयो सरसीरुह बाग सजीवन की।
छक नाहिं सकयो असमजस में दुविधा परि 'चन्द्र' दशा छन की।
रल टार नहीं पर प्रेम के आँसुन आस बिलास मिल मन की।
करि स्वच्छ मनान लियो मुख मल रहो अनि के मन में मन की।।

रूप अनूप निहारि लख मन वा गनि ओर की ओर फिरेगी।
चन्द्र कलानी कलाधर सी छवि रागि समारन भाव भरेगी।
अञ्चन ओट में चोट करे दृग चचल चारु चुटल घनेरी।
बगहि बूटि गई पखिया अखियाँ मधु की मखिया भई मेरी।।

हिय लाय कै सावरि मूरति को नहिं अ य मन्प बिसारिव हा मैं।
रहि के रूप पकज मारव के मन ओर सु वस्तु न राखिहौ मैं।
छवि नाम गुपाल रमो उर, अतर चन्द्र कहा अभिलाखि हौं मैं।
आन निन नन चारन त मुख चन्द्र सुधारस चाखिहौं मैं।।

कवित्त

छाई दुति आनन अनग की निशान कहा
रूपरा मागी सुघराई त्रिभुवन की।
तारन प्रसून फुलवाई माहि आई बान,
ताकी भई नार लह लतिका द्रुमन की।
कर कामनाइ नहिं मनि बिचलाई जिन
सुरभ लजाई कामनाई पदमन की।
तारन सभार फूल रान अनबेली कहूँ
आगुरी न चुभि जाय पाखुरी सुमन की।।

गज हो न नाथ किंतु अधम अजामिल हो
रसना रुचिर राम नाम राग रागना।
पामर हौं गिद्ध नही जोगी जती सिद्ध नहा,
पापन पहार तें सुबुद्धि मन जागे ना।
जासों जग जीवन है ताहि को बिसारे मन
कलुष कलक पक छाह कहूँ पागना।
दीन हो मनको हो करनिन सो काज तुम्हें
अब गहि नेह नौ कनक अर लाग ना।।

१५६–शिवदत्त शर्मा एम० ए० –आपका जन्म भरतपुर राज्यान्तर्गत नगर कस्बे में एक प्रतिष्ठित ब्राह्मण कुल में ३० जनवरी सन् १९१८ ई० को हुआ। आपने आगरा विश्व विद्यालय से एम० ए० तथा एल० एल० बी० की परीक्षाएं उत्तीर्ण की और इनके पश्चात् साहित्य सम्मेलन प्रयाग से साहित्य रत्न की उपाधि प्राप्त की। आपकी बाल्य काल से ही काव्य के प्रति बड़ी अभिरुचि है। विद्याध्ययन के अनन्तर यह अभिरुचि और भी अधिक बलवती होती चली गई। प्रौढ़ एवम् बाल साहित्य द्वारा तो आपने हिन्दी की सेवा की ही है किन्तु विकास साहित्य की श्री वृद्धि करके आपने अपनी अप्रतिम प्रतिभा का विशेष परिचय दिया है। आपके लेख, समालोचनाएं, कहानियां, गद्यगीत तथा कविताएं सरस्वती, साधना कमला, साहित्य सन्देश और वानर आदि मासिक पत्रों में प्रकाशित होते रहते हैं। आपकी लिखी हुई चार पुस्तकें प्रकाशित भी हो चुकी हैं जिनके नाम इस प्रकार है –(१) बृजेन्द्र वैभव, (२) यमुने (३) जय चम्बल और (४) राजस्थान लहर। शर्माजी गद्य और पद्य दोनों पर समान अधिकार रखते हैं। परिष्कृत एवम् परिमार्जित होने के साथ २ आपकी भाषा सर्वत्र भावानुकूल है। निःसन्देह आप एक कुशल अभ्यस्त एवम् प्रतिभा–सम्पन्न कवि हैं। आपकी रचनाओं के देखने से प्रतीत होता है कि अतीत में आपकी विचार धारा प्रगतिवादी साहित्य की ओर भी प्रवाहित हुई थी। मजदूर नामक कविता आपके इसी दृष्टि कोण की प्रतीक है। आपकी सरस रचनाओं के उदाहरण प्रस्तुत है —

बस एक गीत

बस एक गीत बस एक गीत !
लिख दो कवि भरकर अपना उर।
यह व्यथित व्यथा क्रन्दन आतुर।
जिसमें प्राणों की हार–जीत॥
बस एक गीत बस एक गीत !
खुल जाय ग्रंथियां उलझन की।
बंध जांय परस्पर जन जन की।
भोली भाली भावनानीत॥
बस एक गीत बस एक गीत !
कोई न किसी से द्वेष करे।
विकृत अपना उद्देश्य करे।
होवे पुनीत निज मनोतीत॥
बस एक गीत, बस एक गीत !

बृजभाषा—मंजरी

(१)

उषा सुंदरी ने दियो नव शिशु रवि उपजाय
गाय गीत विहगावली, मुक्ता लता लुटाय

(२)

मधुबाला करि प्रिया ने प्याला धरया भराय
दृगागन थाम्यौ अमिन रवि पिय पिय पिय जाय

(३)

भरत जात आगरन की बरत अनय विध्वस
उतरत आवन अवनि पर सुर गंगा की हस

(४)

मौन भए कैतिक विहग गा मधु मधु संगीत
को सुनिहै अब विटप वर यह पतझर को गीत

(५)

लुटयौ विपिन सिंगार यह छुटयौ वसत विहार
जिन पात पात पर्यौ, अलि कलि के पतभार

(६)

बसन जुटाए छोह त, परची तपनि अटूट
ग्रीपम धुल ललनान की नीही लाजहु लूट

(७)

स्नगावन बाव वलन, काम अनय बहु काद
ग्रीपम ! सूरज समाहु, छिपिहै बदरी गाद

(८)

कम गाऊ और का हौं हारी हरवार
पीनम तरेइ तार म अरुझे तन्त्री तार

(९)

सिसि चाल्यौ ? कर ना कप्यौ 'नाही लिखत निशांक
गयो न टम क्यौं कागद अरी लेखनी डक

(१०)

अत्याचार हिमत को, सको न प्रकृति विलोक
डारयौ परदा कुहर को, छयौ धुआ सो सोक

(११)

का उजियारो ल करू, जोय जरावन हार
अधियारो घनश्याम को, सुरत करावन हार

(१२)

पीर पराई नहिं व अब न जनह बेपीर
नीर देहु हमर हगी प्रय न मन उर पीर

(१३)

तुम अधियारे म दुरे मा प वरि परवास
मोहि बुलावहु व उत, म आवहु प्रिय पास

(१४)

रजनी न रवि का दियो श्याम हलाहल प्याय
रवि नव पर विहगावली विलम्ब विसव विलाय

(१५)

आजा कठ गु जाय जा वीणा स्वर सुग्राम
मया नक हमाय जा मरो मानम हम

हम भारतीय

हम चाहिए नही रग का आज कथाए ।
हम चहिए नही आह का आज व्यथाए ।
हमे चाहिए नही प्रलय की प्रशात पथाए ।
हम चाहिए नही कामिनी दाए बाए ।
हमे चाहिए आज असि विष बुझी जा हो खरी ।
क्रोध रक्त दृग चाहिए नहि चितवन वह मदभरी ॥

(२)

हम शक्ति दो शस्त्रभार हम सिर पर झेलें ।
हम बढ़त ही जाय शत्रु का ओर पछेल ।
तलवारो पर चल और तीरो पर खेल ।
हम समीर से बढ विजय श्री को हम ले ल ।
हम चाहिए स्वण दिन नही रजत की शवरी ।
क्रोध ज्वलित दृग चाहिए, नहि चितवन वह मदभरी ॥

(३)

हम है सिंह सपूत वीरता म व्रतधारी ।
तार तोल कर सके हम हम इतन भारी ।
हम न मांजत रह अस्त्र लख युद्ध तयारी ।
घलाधली म सब प्रथम थी निज गति न्यारी ।
प्रलय नृत्य कारिणि रही थी अपनी असि किन्नरी ।
मोह सकी असि हा हम रक्त रजिता मदभरी ॥

(४)

जागा जागा वीर वग के वगज जागा।
त्म वना कि गनु वह वम–'भागो भागो'।
रण केहरि! हे वीर! जगो मजबूतो! जागा।
जगा मपूता! भारत क वर पूता! जागा।
आज युद्ध का प्रान है, नही शाति निगि सुखकरी।
रक्त सिन्दु द्य भाल पर त्यागो निन्द्रिया मन्भरी॥

(५)

अत्याचारी वग वग पर म टूट जाए।
अनाचारिया की नाथा म भू पट जाए।
त्मी दा हुँकार व्याम-मडल फट जाए।
विजय-पताका उठे धरा अम्बर सट जाए।
रणवका निज दग का दिव गक्ति प्रलयकरी।
तव चूमा तुम चाव म निज असि गाणित-मन्भरी॥

१६०—डा० रागेय राघव—आप स्वामी रगाचाय क आत्मज और ..पुर राज्यान्तगत वर बम्बे क निवासी हैं। वर एक एतिहासिक एवम् दगनीय स्थान है और अपनी नसर्गिक शोभा के लिय प्रसिद्ध ह। आपके पूवज तामिल देश म आकर स्थायी रूप म यहाँ बस गये थे। सण्ट जान्स कालज आगर स एम० ए० परीक्षा उत्तीर्ण करन क अनन्तर आपने सन् १९४९ मे पी-एच० डी० की उपाधि प्राप्त की। शैशव काल स ही आपकी अभिरुचि साहित्य सृजन की ओर रही है। आप एक प्रौढ लखक हैं। इनक अनक नाम तथा ग्रंथ कई प्रांतीय सरकारो द्वारा पुरस्कृत हो चुक हैं। आपकी कुशल लेखनी द्वारा अनक सामाजिक और ऐतिहासिक उपन्यास काव्य रूपक, आलोचना और कहानियाँ आदि उद्भूत हो चुकी हैं किंबहुना आपकी लेखनी स कोई विषय अछूता नहीं रहा। आपकी अनूदित, सम्पादित और मौलिक रचनाओं की सख्या ८० क लगभग है। इनके रूप छाया नामक प्रबन्ध काव्य म प्रसाद की कामायनी का सा आस्वादन मिलता है। आपकी सरस एव कोमलकान्त पदावली का माधुय नीरस मानस को भी आप्लावित कर देता है। पदो की श्रुति मधुर वर्ण मत्री विशेष श्लाघनीय है। पद २ पर अलकारो का स्वाभाविक चमत्कारपूर्ण प्रयोग वर्णनो म चार चाँद लगा देता है। आपकी रूप छाया पुस्तक म एक उदाहरण प्रस्तुत ह —

मुग्न्धिया की पत्रक उमक
पथ मे बिछना थीं निवस गात

थी म्लानीप सी ज्वालनिगा सा
    तृष्णा जलती साभ प्रा
वह गीभ गया अप्सरा स्वपा
    रभा का लावण्य रूप
भाया न उस जग म कुछ भी
    गिव गद भुवन म वहा रूप

भर ग्राह समुज्वल प्राङ्गण म
    वह रहा घूमता विकल प्राग
मलयानिल म स ग्राना था
    रभा तन की ही गध घ्राग
तव सालसा लालसा हो अधार
    वह चला स्राजन उस भूर
रे भूल गया वह सकल विश्व
    सुधि ततु पकड ज्यो गया भूर ॥

रभा सध्या मे चली दव चमत्कृत भूमि
पवन निलाडित लडखडा गिरा ग्राज था भूम।
वह सौदर्य कि ज्वालामुखि की तृष्णा सुन्दर
नील गगन की पृष्ठ भूमि पर स्वर्णिम मनहर।
भुवन मोहिनी रूप माभिनी चली ग्रचानक
सृष्टि का य वा सूक्ष्म रूप वह मधुर कथानक,
स्वा त्रिभुवन ग्रवह स्वाम ल भूमा भूमा
यौवन का वह ग्रपरिमय गाथा ल सूना।
किया रूप निर्माण विधाता न सुख भरने
किन्तु स्वय वह दाह वना ज्वाला सी भरन
पुण्डरीक क साथ उगी दो य ग्र कलिया
स्वर्ण मृणाल भूलत घार भर नव छवियाँ
रक्त कमल थे पुलक रह, पल्लव चलदल थे
भीन श्वत वसन म सुन्दरि ग्रग मचलते
वाला नूपुर एक सृष्टि न गीत भुलाया
मुस्काइ पल एक कि लवन व दन गाया
स्वय काम न भुक चरणा म लाली रग दी
रति न उस लावण्यमयी म लज्जा भर दी।

तब काँपी वह सृष्टि मध्य में सौदामिनि सी
त्रिभुवन चमका दिव्य देह कर चिर मोहिनि सी,
मुस्काई जब दर्शन प्रभा से, ज्योति सिक्त सी
बुद बुद बन गई सृष्टि सत्ता विमुक्त सी।
जिधर नयन चल गये हुआ जड़ जंगम सहसा
पग धरते ही काम हो गया मूर्तिमान अकुला
वाणी हुई अनाथ कि विस्मित सजन भूला
यमन रोका मृत्यु फूल जीवन का फूला।
सिंधु तरंगित हुआ श्याम पर उठते गिरते,
कल युग की व्यथा में ऊर्मिजाल में उठते
अगजग व्यापी गर्व लाग पर तृप्त नहीं था
जैसा रूप था रूप किंतु वह रूप नहीं था।
किंतु रूप वह अक्षर बन हृदय नत शीश
छिपा लगा अपनी सदा मनमें रटनी टीस।

१६१—विश्वबन्धु शास्त्री—आपका जन्म २५ अप्रैल सन् १९२८ को अलीगढ़ जिले के उमरावता नामक ग्राम में हुआ। आपके पिता का नाम श्री चुन्नीलाल आर्य था। इन्होंने श्री विरजानन्द साधु आश्रम अलीगढ़ गुरुकुल विश्व विद्यालय वृन्दावन तथा वाराणसी विश्व विद्यालय में शिक्षा प्राप्त की। शास्त्री परीक्षा उत्तीर्ण करने के अनन्तर इन्होंने पंजाब और भरतपुर के कई विद्यालयों में आचार्य पद पर कार्य किया। सन् १९४९ में आप भरतपुर पधारे और तब से अब तक यहीं पर निवास कर रहे हैं। आपने लगभग २०० रचनाएँ सृजन की हैं जो सभी सामाजिक अथवा राष्ट्रीय विषयों पर हैं। आर्य समाज के सिद्धान्तों के अनुयायी होने के कारण आप विभिन्न प्रान्तों में आर्य समाज का प्रचार करते रहते हैं। शास्त्रीजी उच्च कोटि के कवि, वक्ता एवम् दार्शनिक हैं। आपके तर्क युक्त ओजस्वी भाषण बड़े ही मार्मिक एवम् अतीव प्रभावोत्पादक होते हैं। अभ्यस्त और निपुण कवि होने के कारण आपका भाव और भाषा दोनों पर समान अधिकार है। आपकी सरस रचनाओं के उदाहरण लीजिए —

॥ मैं तू और वह ॥

मैं अधिक पास वह अधिक दूर, दोनों तू में ही भासमान।
मैं अनागत का रूप और वह भूतकाल, तू वर्तमान।
तू के युग में सत्ता मैं वह तू में हम दोनों भासमान।
है सृष्टि पूर्व मैं और अनश्वर सत्य नश्वर तू का विधान।

मैं का स्तर, इन्द्रिय से अगम्य वह का स्वरूप गुणायमान।
तू के घेरे में आ दोनों दोनों ही हो जाते प्रमाण।
मैं बन जाता 'तू' 'तू वह' तब वह मनगम्य है 'यह रूप'।
वह बन जाता तू, तू मैं तब, मैं सूक्ष्म भूत वह का स्वरूप।
मैं वह में वह मैं में आकर दोनों हो जाते साम्यप्राण।
है अनिर्वाच्य सर्वोच्च गान।

निशानी

दिवाली मनाने चले हो, सुखी गीत गाने चले हो।
घरों को सजाने चले हो, सुधा घर बसाने चले हो॥
नहीं ध्यान तुमको किसी का
नहीं ज्ञान तुमको किसी का।
नहीं मान तुमको किसी का
नहीं भान तुमको किसी का।
दिवाली मनाने चले हो सुखी गीत गाने चले हो।
घरों को सजाने चले हो सुधा घर बसाने चले हो॥
गगन छत्र जिनका निशानी
तनी चाँदनी तारे वाली।
दिशाएँ चतुष्कोण जिनकी
शयन-सेज है भूमि खाली।
उन्हें यह दिखाने चले हो उन्हें यह सिखाने चले हो।
उन्हें लक्ष्य करके हँसी का अहा! मुस्कराने चले हो॥
न तन ढक सकें ये बिचारे
न मन रख सकें ये दुलारे।
न इनकी कोई शेष इच्छा
स्व इच्छा से स्वयमेव हारे।
उन्हें तुम सताने चले हो उन्हें तुम चिढ़ाने चले हो।
बढ़ाने को दुरा दर्द उनका उन्हें तुम रुलाने चले हो॥
तड़पते हैं बच्चे ठिठुर कर
काट देते हैं दिन तो सिकुड़कर।
भूख से पीठ में पेट सटकर
हो गये एक, दोनों सिमटकर।
तुम उन्हें तड़पड़ाते चले हो, तुम उन्हें फाड़ खाने चले हो।
सिसकती मनुजता का सचमुच घात कर आज ढाने चले हो॥

नहीं क्या चिरन्तन के शिशु ये
न शूकर या कूकर से पशु ये।
न सौहार्द्र इनसे तुम्हारा—
भक्ति में वह सके नाहिं अश्रु ये।
धन दिये पर बहाने चले हो, घर में लक्ष्मी बुलाने चले हो।
लक्ष्मि स्वामी श्रमिक को न जाना व्यर्थ में जगमगाने चले हो॥

चमक है तुम्हारे धर्म पर,
चमक है तुम्हारे ज़रा पर।
चमकते हैं चेहरे तुम्हारे
चमक नारि के जेवरों पर॥
क्रूरता को मनाने चले हो क्रूरता को भगाने चले हो।
हड्डियाँ ऋषि दधीची की देखो आज तुम आजमाने चले हो॥

जान कर आंख मूंदो न भाई
गा रही क्रान्ति, रुको न आई।
दिया की नई रागनी में—
न दे तल में धरा दिखाई।
अन्तरात्मा सताने चले हो, धर्म ढांचा मिटाने चले हो।
नेह भर मृत्तिका दीपकों में नेह दिल से भुलाने चले हो॥
दिवाली मनाने चले हो सुखी गीत गाने चले हो।
धर्म को मजाने चले हो सुधा घर बसाने चले हो॥

१६२—तुलसीराम चतुर्वेदी—आपका जन्म धनाग्न कृष्णा २ सम्वत् १९८७ को भरतपुर में हुआ। यहीं के प्रसिद्ध कवि जयशंकर चतुर्वेदी के आप कनिष्ट भ्राता हैं। १९४३ में स्थानीय कालेज से एफ० ए० परीक्षा उत्तीर्ण करने के पश्चात् आप दिल्ली चल गये और वहां अर्जन और अध्ययन दोनो साथ साथ करने लगे। प्रारम्भ में आपने रिजर्व बैंक में और तत्पश्चात् राशनिंग विभाग में काम किया। इसी बीच आपने पंजाब विश्वविद्यालय से क्रमशः प्रभाकर एवं बी० ए० की परीक्षा उत्तीर्ण की। इन्हीं दिनों आप पत्रकारिता के क्षेत्र में आगये। सन् १९५२ में हिन्दी एम० ए० की परीक्षा उत्तीर्ण करते हुए आपने दिल्ली विश्वविद्यालय से दैनिक नई दिल्ली में काम करते हुए आपने दिल्ली विश्वविद्यालय से दैनिक पत्र 'जनसत्ता' प्रारम्भ हुआ और आप उसके सम्पादकीय विभाग में चले गये। छात्र जीवन में ही साहित्यिकों के सम्पर्क के कारण साहित्य की ओर आपकी

भरतपुर में हुआ। बाल्य काल से ही इनकी काव्य सृजन के प्रति विशेष रुचि थी। ये बड़े प्रतिभा सम्पन्न और होनहार कवि थे, किन्तु कराल काल ने इन्हें अल्पायु में ही ग्रस लिया। इनकी सरस रचना प्रस्तुत है—

समस्या सुजान की

कांपत कम्त काल क्रूर दुष्ट कुजन का।
कौशल निराय रण रंगा कर मान की।
काट काट रुंडन को मुंडन उडाय नभ।
भीत भय भाज अरि चिंता कर जानकी।
दखकर कौतुक ले जुगिन समाज संग।
आई रण चण्डी प्यासी शत्रु रक्त पान की।
थर थर कांपी जाहि लखि के पठान सेन।
काल जीभ तुल्य खड्ग ऐसा हो सुजान का॥

कवित्त

काऊ तो रहे हे मस्त पढन लिखन माहि,
कोऊ निज गृहस्थ के काज में ग्रस्यो रहे।
जात है बगीची कोऊ होत ही प्रभात नित्य,
कोऊ निज देवन की पूजा में धस्यो रहे।
काऊ नर उठत ही चाय दूध पान कर
बिस्कुट मलाई कोउ खान में फस्यो रहे।
मेरे जान सब श्रेष्ठ वही है विश्व माहिं,
जाके उर भंग युत मादक बस्या रहे॥

जन्म भूमि

भारत मेरी जन्म भूमि है मैं इसका उत्थान करूंगा।
विस्मृति सागर में विलुप्त गौरव का फिर निर्माण करूंगा।
मैं हूँ प्रचंड सी अग्नि शिखा दुश्मन स्वाहा करने वाली।
दानवता के उच्छेदन हित जग मुझको ही कहता काली।
मैं शंकर का वह क्रोधानल जन जिसको लख आमित होते।
मैं परशु राम का परशु ज्वल जिससे नरपति दासित होते।
अपना प्रलयंकर विभूति से रिपु समूह का मान हरूंगा।
हुआ अंत हा राष्ट्र हिता का स्वार्थ पूर्ति का फाग मचा है।
पाशवता की मूर्ति बन कर मानवता का स्वांग रचा है।
मिट्टी की सन्तान किन्तु स्वानों का सा व्यवहार लिया है।

गोटी के कतिपय टुकड़ों पर देश द्रोह स्वीकार किया है।
मृतवत् सिंहों में फिर से नव जीवन का संचार करूँगा।
काम उपासक बन शस्त्र-पूजक जो कभी कहाते थे।
अपने अतुल पराक्रम से जो शत्रु हृदय दहलाते थे।
डूब रहे निज वासनाओं के परिपूरण में वीर यहाँ हैं।
नहीं जानते पराधीन को यह विलास अधिकार कहाँ है।
प्रणय केलि रत प्रेमी मन को प्रलय राग से आज भरूँगा।
मैंने सीखा है शैशव में ... हिता पर जल मरना।
पराधीन माँ की वेदी पर अपने को स्वाहा करना।
हैं गुलाम मैं मुझे आज से ताप शान्ति की चाह नहीं है।
माँ रोती है मौन रहूँ मैं क्या पूजा का धर्म यही है।
वीणा के सोये तारों में फिर से मैं झंकार भरूँगा।
गीता का वह कर्म योग मुझको कर्मण्य बनायेगा।
असुर विनाशक राम रूप मुझको प्रकाश दिखलायेगा।
राणा और शिवा की गाथा असिम शक्ति देगी तन में।
गुरुओं का बलिदान भरेगा अमर ज्योति मेरे मन में।
संचय कर इस विकट शक्ति को बन्दी जन स्वाधीन करूँगा।
आओ रण का हुआ आज आह्वान अरे वीरो आओ।
आओ माँ की है पुकार इसका चिर उपकार चुकाओ।
स्वातन्त्र्य दीप पर क्षुद्र कीट सम स्वाहा करना निज तन को।
दासताओं की शृंखलाओं से मुक्त करो बन्दी जन को।
मुक्ति दिलाकर जननी को जगती में गौरव मान करूँगा।

१९८—सम्पूर्णदत्त मिश्र एम० ए०—आपका जन्म सम्वत् १९८४ में पं० गोपाललाल मिश्र के यहाँ भरतपुर में हुआ। होनहार बिरवान के होत चीकने पात वाली कहावत के अनुसार आप बाल्यकाल से ही कुशाग्रबुद्धि हैं। कुछ विशिष्ट मंत्रों के जप से तथा भगवती त्रिपुर सुन्दरी की उपासना से आप में कवित्व शक्ति जागी। फलस्वरूप आपने संस्कृत में काव्य रचना आरम्भ कर दी।

२५ वर्ष की आयु में आपने ऋतूल्लास नाम का एक संस्कृत काव्य लिखा। इसको पढ़ते समय अनेक स्थलों पर महाकवि कालिदास के मिठास की स्मृति हो आती है। सन् १९५९ ई० में उत्तर प्रदेश सरकार ने संस्कृत के लिये सारे देश से जिन बारह ग्रन्थकारों को पुरस्कृत किया उनमें राजस्थान से आपको 'ऋतूल्लास' के लिये पुरस्कार मिला। श्रीमदनन्ताम्भवाचार्य ने 'ऋतूल्लास में

प्रसन्न होकर आपको 'कवि पुण्डरीकम्' पदवी से पुरस्कृत किया। ३१ वर्ष की आयु में आपने संस्कृत में 'सूक्तिपञ्चामृतम्' नाम का एक दूसरा काव्य लिखा। आप संस्कृत और अंग्रेजी दोनों के एम० ए० हैं। आप इंगलिश में भी कविताएँ लिखते हैं। इस समय आप वसंडी गाँव में इंगलिश के वायवाहक सीनियर टीचर हैं। आपके संस्कृत विषयक भाषण और संस्कृत गीत ऑल इण्डिया रेडियो जयपुर, से १९५३ ई० से प्रसारित होते आ रहे हैं। व्रज भाषा और खड़ी बोली दोनों पर आपका समान अधिकार है। अपने सुललित सुमधुर कंठ से आप कविता सुनाने का ऐसा समा बाँध देते हैं कि किसी का मन तनिक भी ऊबन नहीं पाता। आपकी भाषा शैली बहुत ही रोचक सरल तथा प्रसाद गुण पूर्ण है भाषा विषयानुकूल परिवर्तित होती जाती है। दार्शनिक भावों के गहन एवं गंभीर विषय की अभिव्यक्ति गंभीर भाषा में ही हुई है। आपकी रचनाओं के कुछ उदाहरण निम्नांकित हैं —

सवैया

सुचिता के अलीक नगारन की सुनि के कब लौं सचु पाइय जू ?
कथनी करनी की असंगति सौं कब लौं पुनि ना उकताइय जू ?
इन कंतव की करतूतन पै कब लौं नहिं कोप जनाइय जू ?
दुरनीति पर इन मीतन सौं कब लौं निज नेह निभाइय जू ?

बहु देखि चुके नहिं संस कछू अब तौ तुरत जगि जाइय जू।
इनकी मति कीरति की बतिया मति ना चितऊ पतियाइय जू।
कहि देउ न खोलि के एकु दिना मन में कछु संक न लाइय जू।
हम तौ तुम सों न निभायँगे जू तुम हू हम सों न निभाइय जू॥

परिवार के पेट में पाहन दै पुनि बंचिक ह्वै पढ़ि जाइये जू।
गुन मान गुरू जन के उर में बरु केतिक हू कढ़ि जाइय जू।
नहिं जौ लौं तिन्हैं अधिकारिन के पदपंकज में गढ़ि जाइय जू।
नहिं याद की आस बिसास कछू कहुँ का बिरचे पै निभाइये जू॥

निज हानि घनेरी उठाइकै हौं समुझी गति लोगन की बतियान में।
मुख तैं कछु और बघारि रहे कछु औरहि धारि रहे छतियान में।
पुनि स्वाद के धाव पै धाके सरासर सार सरयौ सिगरे दुखियान में।
मिस याव के धाव करे मुखिया ये परेस बस रिस की अखियान में॥

दावत ये जो बड़े रँ गुना गनिका सोग वास करे बगियान में।
शोषत ये जो बड़ेरे धनी धन की धर प्यार रहो छतियान में।

दीखत ये जो दिलद्री दुखी दबते रहि स्वारथ की कखियान में।
पापी पराजय रास कर वस तापम की रिस की अखियान मे॥

परिणाम

जब रात घूमने जाना मैं, जब रात घुमाने जाता मैं।

(१)

शारद हिम कर की आभा मे, कोठी को जगती पाता मैं।
कुछ कम्पित सी पुष्पित वल्ली चुप चाप सहारा लिये हुए।
शशि का प्रमाद पा जान को, निज न तु करा को किये हुए।
जब लेनी थी अगड़ाई मो मैं खड़ा हो गया छाया म।
ना जान क्या क्या साच गया उस मादकता की माया मे।
पर छाडा नहा निवास नहीं, ग्रव, नोड चुका हूँ नाता मैं।

(२)

अच्छा ता ला फिर सुन ही ला, मैं उस छोड आगे बढना।
भावा के सुखद सरोवर म जो भर कर उतराता चढता।
यह मान घमड कर धीमे से, काना म कहती चुप रहना।
मैं जो कुछ तुम्हे सिखाती हूँ, उसको सब मे मत कह देना।
उस प्रकृति नटी की भङ्गी पर, वालो क्या भेंट चढना मैं?

(३)

चादनी पटक दी चन्दा न पत्तो न गोदी म ले ली।
क्या बुरा किया बचारा ने जो रच पच कर सिर पर झेली।
पर वह्न का सताप कहा रहने का एक उज्ज्वल म।
मैं नारी हूँ ये काल हैं अङ्कित कर चली धरा तल म।
तब कितना की विधि लखा पर, बहते आँसू पी जाता मैं।
नर के एकान्त समयन म नारी का गाली देने का।
मरा कोई वक्तव्य नहीं ना मैं इसम रस लेन का।
पर पड़ा क नीचे पड क्या चादनी नही दिखलाती है।
उन्नत पुरुषा की भी कम नारी सीमा बन जाती है।
बस ऐसे प्राकृत–दर्शन से कभी नही घबराता मैं।

(४)

माना पत्ते काले न सही, पर काला से क्या कुछ कम है।
इतना तो मान सकोगे ही वे नहीं चन्द्रिका के सम हैं।
जब हम कालाग्रो क सम्मुख, लावण्य चकित रह जाते हैं।
क्या दोष कौमुदी का पत्ते काली छाया दिखलाते हैं।
ऐसे मर्मो की सगति मे कुछ मार समझ मुसकाता मैं।

(८)

हारा सा बैठ अँधेरे में वेला की कुञ्जों के नीचे।
मैं सोचा करता लीन मैं मानस के तार तनिक खींचे।
यौवन माधुर्य, मनोहरता, युग युग पथ न चले जाते।
उद्यान चाँदनी सुन्दरिया नित नय पुरान हो जाते।
इस वैयक्तिक नश्वरता पर बस मौन मौन रह जाता मैं।

१६५—राधाकृष्ण गुप्त 'कृष्ण' — आपका जन्म आश्विन शुक्ला ३ सम्वत् १६८५ वि० में लाला मदनलाल के यहाँ भरतपुर में हुआ। भरतपुर हाई स्कूल से मैट्रिक परीक्षा उत्तीर्ण करने के अनन्तर आप कवि भूषण प० नन्दकुमार के शिष्य हो गए। आपकी काव्य रचना का आरम्भ विभिन्न कवि सम्मेलनों की समस्या पूर्ति से हुआ। इन्होंने केवल रस परिचय नाम का एक (छन्दोबद्ध) ग्रन्थ लिखा है, जिसमें रसाङ्गों की पूर्ण व्याख्या की गई है। इसके अतिरिक्त आपकी अनेक रचनाएं कवित्त तथा सवैया के रूप में सर्व साधारण के मनोरंजन की सामग्री बनी हुई हैं। इन्होंने अपनी रचनाओं में शुद्ध ब्रजभाषा का प्रयोग किया है। वर्तमान खड़ी बोली में भी आपकी अनेकों रचनाएं हैं। इनकी भाषा शैली की एक मुख्य विशेषता यह है कि इनकी प्रत्येक रचना भाषा शाब्दिक दोष से मुक्त है। आपकी सरस रचनाओं के कतिपय उदाहरण प्रस्तुत किये जा रहे हैं—

गणपति वन्दना (छप्पय)

जै मोदक प्रिय चन्द्र भाल जै मंगल दायक।
जै गणपति गण ईश गौरि नन्दन सब लायक।
वक्र तुंड जै जै त्रिनेत्र शुचि एक दंत जय।
लम्बोदर गज बदन सन्त रिधि सिद्ध कन्त जय।
जै आदि देव कवि कृष्ण कह खण्ड परसु मुख चन्द जय।
जै जनन सकल संकट हरन भुवन भरन आनन्द जय॥

भक्त की अभिलाषा (कवित्त)

वृन्दावन वीथिन में बाँसुरी बजान कहूँ
द्वारे नन्दराय नन्द गाम मिल जायगे।
बरसाने भूप वृषभानु के सुभौन कंता,
मथुरा के गोकुल सुधाम मिल जायगे।
'कृष्ण' कवि कालिन्दी कूल के कदम्ब तर
लता लता ललिन ललाम मिल जायगे।

ब्रज धाम धाम की परिक्रमा दियें जा प्यारे
काहू चक्कर में श्यामा श्याम मिल जायंगे ॥

रसना को भगवद् भजन की प्रेरणा (सवैया)

उड़ि जाय हू जानें न जानें कबै, तनते यह यह प्रान घड़ी भरके।
कवि कृष्ण जु कीरति पुन्यन की सु करी न करी करनी करके।
पुनि जन्म जरूर मिले न मिले, महि पै विधि के वस में परके।
दिन द्वै जग के रस री रसना! रट ना रट नाम हरी हर के ॥

प्रिय के प्रति उलाहना

सुख भाग लिखे न कवा इनके, असुवा दिन रैन भरके भरे रहैं।
कवि कृष्ण जू कल्पना के कल-सिन्धु में अंग तरंग तरके तरे रहैं।
सब चारु हीन वियोग के चित्र विचित्र विचार अरेके अरे रहैं।
प्रिय लाल मिलो मिलिवो है कहा हिय के अभिलाष भरके भरे रहैं ॥

नेत्र वर्णन (कवित्त)

नीलता नलिन की न छवि की न आर औ
चंचलता चपला की चारु चारु ढारे हैं।
मंजुल तर कंज की मन मृदु मादकता
पद प्रेम सागर सकेलि सज सवारे हैं।
'कृष्ण' कवि कृपान पै कटारी कर सान कोर,
बार के त्रिवेनी में निरत निरधार हैं।
प्यार भर सुधाकर धुनि मन के समान भर
विधि ने बनाये युग नैन मतवारे हैं ॥

चन्द्र

चन्द्र! तज तुमको तृषित चकोर
लखा कब तकना परकी ओर।
परखता तेरी किन्तु निहार
सदा रखा चुगना अंगार।
व्यथित होना तो इससे दूर,
रहा तू अपने मद में चूर।
यही कारण है अहा मयंक
लगा यह अविचल तुम में कलंक ॥

१६६—रमेशचन्द्र चतुर्वेदी—आपका जन्म कुम्हेर तहसील के अन्तर्गत ग्राम सौंतरक में श्री नवनीतलाल चतुर्वेदी के यहाँ श्रावण कृष्णा३ सम्वत् १६८६

मे हुआ। आपको शशव से ही सगीत मय वातावरण मिला था यथापि आपके पितामह प० नवलकिशोर भगवद् भक्त सत्सगी तथा गायन वादन कला म अत्यधिक दक्ष थे। इस वातावरण का कवि के हृदय पर एसा प्रभाव पडा कि साहित्य एवम् सगीत के प्रति उनके हृदय म अगाध अभिरुचि उत्पन्न हो गई। सर्व प्रथम आपकी रचनाओ का श्री गणेश ब्रज भाषा म होना है परन्तु युग के प्रवाह मे प्रवाहित होकर आप खडी बोली म कविता करने लगे। अध्यापक होने के कारण आप सरल कि तु स्वाभिमानी कवि ह। कवि हृदय होने के नाते आप निर्भीक भी उच्च कोटि के ह। कविताओ का विषय वर्णन इतना स्वाभाविक है कि सत्य साकार हो उठता ह। आप राष्ट्रीय विचार धारा के गीतो के लिये अधिक विख्यात् है उदाहरण देखिए —

बसन्त

(१)

गान को गा दू गा गायन नूतन बसन्त आवाहन म।
कैसे उल्लास भरूँ लकिन मैं अपने निधन जन मन म।
पीली चादर को ओढ प्रिये ! आ पहुँचा ह मधु मय बसन्त।
पर उनके हृदयो से पूछो जिनके विदेश मे बसे कन्त।
काश्मीर स आई थी, चिट्ठी, फाग को आऊगा।
पर हाय आज भी आ न सका, अब बस मु ह दिखलाऊ गा।
कितनी बुद बुद होती होगी उस ललना जन के मन म।
कैसे उल्लास भरूँ लकिन मैं अपने निधन जन मन म।

(२)

जब आ पहुँचे ऋतु राज स्वय सरसो क्यो पीला रग हुआ।
किसके वियोग म बतला दे प्रयसि ! यह तेरा रग हुआ।
ओ आम्र मजरी ! बतला द तू इतना क्यो इठलाती ह ?
क्या झूम झूम कर मुझको भी प्रियतम की याद दिलाती ह।
कोयल के स्वर क्यो गू ज रहे है, दूर वहा निर्जन बन म।
कैसे उल्लास भरूँ लेकिन, मै अपने निधन जन मन म।

(३)

जो सारी दुनिया म सरसो को कर लाते मधु मय बसन्त।
उन दुखियार कृषको के दुख, को आज नही है शान्ति अन्त।
नगे भूखे मानव तन ने जब सहन किया भीषण हिमन्त।
उन कृषको की झोपडिया म बारह महिने रहता बसन्त।
है बसान्त भी उनके मन म जो आज सुखी ह जीवन म।
मैं उल्लास भरूँ ? लकिन मैं अपने निधन जन मन मै।

(४)

कैसे मनती विजया दशमी कैसे मनाता रक्षा बन्धन ?
कैसा होता वैभव विलास कैसा होता सुख मय जीवन ?
हम भूल चुके हैं दीवाली हम भूल चुके हैं अब वसन्त।
रसिकों की आहों से जलकर आने वाली होली अनन्त।
जो आग लगा करती भीषण शोषक शासक के मन मन में।
कैसे उल्लास मनाऊँ ? लेकिन मैं अपने निर्धन जन मन में।

अध्यापक

यह करुण कहानी है उसकी जो अध्यापक कहलाता है।

(१)

हैं फटी पनैयाँ पावों में, मैली सी पहने धोती है।
है अचकन फटा सा कुरता खिचड़ी सी पहन टोपी है।
माथे पर आटा दाल बँधा, जनु विश्व व्यथा का भार लिए।
मर मर के भी जो इस जग में जीने का ही अधिकार लिए।
पचास मील गाँव से दूर और वेतन भी मिलता पचास।
वह चला जा रहा मस्तानी लेता लम्बे लम्बे उसास।
रिमझिम रिमझिम बरसात लगी टूटा छाता पग फिसल गया।
घाटू के संग गिर पड़ा पट्टू और आटा सारा बिखर गया।
क्या बीती अध्यापक पर, यह बहुत दिन दहलाता है।
यह करुण कहानी है उसकी, जो अध्यापक कहलाता है।

(२)

बन गए आज शिक्षा-मन्त्री, समाज कह उठा वाह वाह।
सम्मान युक्त रहता आता धन-वैभव का अविरल प्रवाह।
पर भिक्षु मँगे अध्यापक को, क्या कर जग देता धन्यवाद।
क्या कर हो उसका अभिवादन क्या कर हो इसका साधुवाद।
यह शिक्षक तो बिल्कुल असभ्य यह पागल भूखा लगता है।
जग कहे क्या पर प्राण भान नव स्वर आ भिक्षु मँगता है।
देखा शिक्षक का उर टटोल कितने अरमान लपेटे हैं।
जग को अपना सब कुछ देकर इसने अभिशाप समेटे हैं।
इससे पढ़कर मैं आई ई अब हम पर हुकम चलाता है।
यह करुण-कहानी है उसकी जो अध्यापक कहलाता है।

(३)

सुनी है रिश्वत राज पुलिस, डाक्टर का मोटा स्टाल है।
रेलवे के टी॰ टी॰ गार्ड सभी रिश्वत का पक्का स्थान है।

महकमे माल के चपरासी भी, राज रुपय घर लाते हैं।
दुनियाँ तो यहाँ तक कहती है, मन्त्री भी रिश्वत खाते हैं।
पर हाय भिखारी–अध्यापक, जब रुडा चौथ मनाते हैं।
शिक्षा विभाग के अधिकारी तब कभी आँख दिखाते हैं ?
यदि दीन दुखी अध्यापक का, जनता श्रद्धा से कर दान।
उस पर भी है प्रति वर्ष कड़ा यह कैसा है उलटा विधान।
जिन्दगी मौत के झूले में अध्यापक दिवस बिताता है।
यह करुण-कहानी है उसकी जो अध्यापक कहलाता है।

(४)

यदि शिक्षक अपनी दुख गाथा, अधिकारी तक पहुँचाते हैं।
तो बदले में उन दुखिया से अप शब्द कह दिये जाते हैं।
छः छः महिने में दे वेतन, फिर भी अहसान जताते हैं।
दुनिया के ठुकराये शिक्षक तब मन मसोस रह जाते हैं।
यह निष्क्रिय सरकारी ढाँचा एक दिन अवश्य ही टूटेगा।
इस असंतोष का पुञ्ज कभी विप्लव बन करके फूटेगा।
अरे स्वार्थ की मूर्ति शासको जड़ तुम्हारी हिलती है।
जब मने तुम्हारी दीवाली तब यहाँ होलियाँ जलती हैं।
सोचो समझो अपने मन में अध्यापक से कुछ नाता है।
यह करुण-कहानी है उसकी जो अध्यापक कहलाता है ?

१६७–छुट्टनलाल सेवक —आपका जन्म अगहन वदी ६ संवत् १९८७ वि० को हुआ। आप आशुकवि कुलशेखर के शिष्यों में से हैं। प्राकृतिक उपमानों से युक्त रूपकों द्वारा आप कविता में एक मधुर भाव क्रम उपस्थित कर देते हैं। आपकी भाषा प्राचीन परिपाटी की टकसाली ब्रज भाषा है किन्तु किसी किसी स्थल पर खड़ी बोली की झलक भी देखने को मिलती है। आपकी रचनाओं में से कतिपय छन्द उदाहरणार्थ प्रस्तुत किये जाते हैं —

बसन्त और गणेश का रूपक (कवित्त)

पीरे पीरे फूलन को माथे पै मुकुट राजै
          लाल लाल फूलन के कुण्डल सुहाये हैं।
सेत सेत फूलन के ऊपर चमर छत्र
          सेत ही सु फूलन के दन्त दरसाये हैं।
फूलन के हार गले 'सेवक' सम्हारत हैं
          सुमन बसन्ती वस्त्र भूषन बनाये हैं।

कोकिल कपोत कीर विरद सुनावत हैं
आज रितुराज रन राज बन आये हैं ॥

वसन्त पंचमी में नटी का रूपक

फूल बसन्तिन की चुंदरी
करि घाघरि फूल गुलाबन माई।
भूषन पीतहिं फूलन कर
सुहावत नाचत मोर सहाई।
भौंर मृदंग बजावत हैं
मिल कोकिल कीरन तान लगाई।
सेवक आज नटी सब सी
यह आज बसन्त की पंचमी आई ॥

शरद यामिनी में कृष्ण रास का वर्णन

मधुर सुरन कान्ह बांसुरी बजाइ सुनि
ब्रज बनितान वृन्द कानन सिधारे हैं।
फरस बिछे हैं स्वच्छ चांदनी के ठौर ठौर
वीणा भेरि साथ तहां बाजत नगारे हैं।
सेवक सम्हारन है काज सब दौर दौर
दाय दाय गोपी बीच आप रूप धारे हैं।
शारद निशा में रचि रास तहां मेरे श्याम
आनन्द मगन भये तन मतवारे हैं ॥

भगवान राम के रूप का वर्णन

हीरन जटित सोहै माथे पै मुकुट मंजु,
आनन की आब कोटि काम हू लजाई है।
एक कर धनु दूजो अभय प्रदान करै
पीठ को तूनीर सदा भक्तन सहाई है।
सिंहासन राजे राम साथ सिय मातजी के,
नख सिख सिंगार सब सुघर सुहाई है।
सेवक सुख दाता औ त्राता भव-सागर के
मेरे मन ऐसो प्रभु मूरत समाई है ॥

१६८—गोपालप्रसाद 'मुद्गल'—आपका जन्म २ जुलाई सन् १९२१ को भरतपुर जिलान्तर्गत डीग कस्बे में पं० रघुनाथप्रसाद के यहाँ हुआ। अपने पिता के अनुरूप आप भी सरल स्वभाव और परिश्रमशील हैं। डीग हाई स्कूल में

हाई स्कूल परीक्षा उत्तीर्ण करने के अनन्तर आप शरणार्थी बालकों को शिक्षा देने के लिये प्राथमिकशाला छत्ता (डीग) में अध्यापक नियुक्त हुए। तभी से अध्यापन कार्य कर रहे हैं और साथ में विद्याध्ययन भी। हिन्दी की एम० ए० परीक्षा तथा बी० ऐड की ट्रेनिंग करने के पश्चात् आपको वैर की उच्चतर माध्यमिक शाला में वरिष्ठ अध्यापक के रूप में नियुक्त किया गया है।

मुद्गलजी को बचपन से ही काव्य के प्रति विशेष अभिरुचि है। आपकी सर्व प्रथम कविता 'भारत भू का भव्य पताका प्रमुदित होकर लहराए' १५ अगस्त सन् १९४७ को लिखी गई। इस कविता की प्रशंसा से कवि हृदय को प्रोत्साहन मिला और वे सुन्दर रचनाएं करने लगे। यद्यपि मुख्यतया आप शृंगार रस के ही कवि माने जाते हैं किन्तु आजकल सामाजिक समस्याओं को लेकर भी आप लिखने लगे हैं। आपकी रचनाएं बहुत सरल सरस और प्रभावोत्पादक होती हैं। कविताओं के अतिरिक्त आपने कई नाटक भी लिखे हैं जिनमें 'प्रायश्चित' 'दहेज' तथा 'निर्दोष' अत्यन्त महत्वपूर्ण हैं। कवि और नाटककार होने के साथ २ आप निबन्ध और कहानी लेखक भी हैं। ब्रज भाषा और खड़ी बोली दोनों पर ही आपका समान अधिकार है। आपकी कविताओं के उदाहरण देखिए —

कवित्त

आवरी अनन्द तेरे अंगना के माहिं आज
　　तोहू तो है संग सखि काहू को न भावरी।
भावरी मोहे तेरा सोच सखि छांड़िये अब
　　चातक सी ह्वै के रट काहे कूं लगावरी।
गावरी सवेरे ही सवेरे काग मुंडेरी पै
　　काहे कर ऊंची अजमाल उड़ि जावरी।
जावरी न आली साँचो सगुन है प्रभाती को
　　धीर धर आली आन हारो आज आवरी॥

सवैया

आवरी अनंग अंग अंगन के माहिं जब
　　पिय बिन संग सखि काहू को न भावरी।
भावरी एकन्त नहिं सूझे कोऊ पन्थ अन्त
　　कन्त ढिंग मेरो मन दौरि २ जावरी।
जावरी न लव तू तो बातन बनावे बड़ी
　　आज कल कहिके मोहे काहे कलपावेरी।

पावैरी न जीते माय सखि समभाऊ तोय
जा वे औधि वीत आनहारा नाँहि आवरी ॥

गीत

धन जाश्रा विरहन मत जारो रे।
डर मारो घर नाय धरवारो रे ॥

(१)

काहे घिर र आत मेरा जिया घबरात
पिय बिन दिन रात नन नीर बरसात
ताप तू हू डरपात बन कारा रे। धन जाश्रा ॥१॥
कजरारे कर शार मत कानन तू फार
कहूँ तोते कर जोर नक मानो कही मार
जाश्रा दश जह पियारी का पियारो रे। धन जाश्रो ॥२॥
तेरी बुदियन मार माङ्ग हुई दुसवार
तापै शीतल बयार और बीजुरी प्रहार
अब तुम्ही कहो कस हो गुजारा रे। धन जाश्रा ॥३॥
इक सी म ताप गात दूजे मदन सतात
तीज रैन डस ग्यात चौथ तूहूँ घुमडात
जान इकली बिरहन मन मारा रे। धन जाश्रो ॥४॥
धन पिय ढिग जाश्रा डार बूद समभाश्रा
पिय विरहन बुलाश्रा काहू विधि द श्राश्रा
सग लाश्रा गुण गाऊ मैं निहारो रे। धन जाश्रा ॥५॥

कवि त

गा कवि युग के गीत पुरातन फिर गा लना।
गाश्रा श्रवनि के गीत गगन के फिर गा लेना।
जब मानवता की रक्षा को चपला भी खड्ग बुलाती है।
तब क्या स्वर लहरी तान श्रौर पायल झनकार भाती हैं।
अब सुरा सुन्दरी पानें को शृंगारी छन्द न भाते है।
क्योंकि हाली के गीत दिवाली का नहीं गाय जाते हैं।
अब हीरा पन्ना शाल दुशाला मिलम गलीचा के मत गा।
अब गा मानव के गीत मदन के फिर गा लेना।
गा कवि युग के गीत पुरातन फिर गा लना।
गाश्रा श्रवनि के गीत श्रमन के फिर गा लना ॥१॥

कनेडी की विजय पर

ढलते सूरज को कौन झुकाता है माथा
प्रात सूरज का सभी सलाम करते हैं
लाख नयन चुम्बन करते उस व्याकुल को
जब सहम के वह टालो की आती है।
पर उड़ जाने पर रंग गुलाबी गालों का
कोई भी नजर न उस पर चंवर डुलाती है।
गिरते हुआ को कौन स्वागत करता है
उठती रेखा की सभी गवाही देते हैं।
ढलते सूरज ॥१॥

१६६—गोपेन्द्र शरण शर्मा —इनका जन्म भरतपुर (राजस्थान) में एक सूर्यद्विज परिवार में आषाढ शुक्ला २ (रथ यात्रा) सम्वत् १९८६ विक्रमी को हुआ। इनके पिता प० गोपाल शरण शर्मा पेंशनर हैं तथा भरतपुर के एक प्रसिद्ध कवि एवं शायर हैं। ये सन् १९५३ ई० में महाराजा श्री जया कालेज भरतपुर से बी० ए० की परीक्षा पास करने के उपरान्त अध्यापक के पद पर नियुक्त हुए। अब ये एम० ए० बी० एड हैं तथा हिन्दी के सीनियर टीचर हैं।

अपने पिता के कवि एवं शायर होने के कारण उनके सत्संग से इनके अन्दर बाल्य काल से ही साहित्य प्रेम और विशेष कर कविता का अंकुर प्रस्फुटित होने लगा। विद्यार्थी जीवन में अनुकूल वातावरण मिलने के कारण उसका पोषण होता रहा। फलस्वरूप ८ वीं कक्षा से ही कुछ कुछ लिखना प्रारम्भ कर दिया। वातावरण के अनुरूप अधिकांश फुटकर कविताएं खड़ी बोली में ही लिखीं, यद्यपि समस्या पूर्ति के संबंध में यदा-कदा ब्रज भाषा में भी कतिपय कविताओं की रचना की। कवि होने के साथ साथ आप एक कुशल वक्ता एवं लेखक भी हैं। उदाहरण देखिए —

अब चांद अपना हो रहा है।

चाँद चौकीदार ने सूरज बुलाया व्योम में जब,
कुपित होकर के कुमुदिनी सो गई दे पत्र घूँघट।
निशा की नीरव घड़ी में रश्मि कर से उठा कर फिर,
कर लिया मुख सामने आये हृदय में भाव घिर-घिर।
कुमुदिनी का क्रोध सारा शीघ्र सपना हो रहा है
लहर का संकेत है-अब चाँद अपना हो रहा है।
झूमता था जब हृदय की गगन का मुख नील जाना

उदधि ने निज अंक का वानक दिया कर्तव्य माना ।
पर अमा की निशा का शिशु का छिपाया व्योम न जब
जलधि उर होकर मशक्ति धडकन फिर-फिर लगा तब
पूर्णिमा का इन्दु का जब मुसकराना हो रहा है
ऊर्मि कर उठने मचल अब चाँद अपना हो रहा है ।
प्रेम की पीडा ममभने का-जलन का जानने का
धधकते उर स विरह की वह विकलता मानने का ।
चाँद म नकर चकोरी जब लगी अंगार चुगने
शुभ्र शीतल सी उष्ण की लो गई तब श्याम करने ।
विहंसते निमल निशाकर का निकलना हो रहा है
तब चकोरी ने कहा अब चाद अपना हो रहा है ।
नर की बातें निराली चन्द्र आकर्षित हुआ है
तन धरा पर मन गगन का मौत बन पुलकित हुआ है ।
बुद्धिवादी मानवा की चिन्तना विज्ञान स मिल
सरसता को सावनी सी गुञ्जना के साथ हिल-मिल ।
चल पड़ी उडकर गगन का शब्द कितना हो रहा है
हम हुए उमक कहा अब चाद अपना हो रहा है ।
ठीक है तुम चाँद का अपना बना कर ही रहोगे,
प्राप्त करने मे उसे जो यातना होगी, सहोगे ।
पर धरा पर तुम कलंकी को वही लेकर न आना,
ज्योत्स्ना आई स्वय तुम कालिमा को ले न आना ।
देखना ध्यान वहा जिनसे चमकना हो रहा है
स्वच्छ मन करके दिवाला-चाद अपना हो रहा है ॥

विकास

अज्ञान निशा हो दूर जागरण जाग पडा
स्वतन्त्र्य सूर्य प्रकटित स्वदेश उठ हुआ खडा
दासत्व शृंखला शिथिल, सुरभ नि श्वास जगे
जगमगी भूमि भारत, मनाक मज शोक भग
अविनिराम नियम निज बन चेतना जाग उठी
लो । प्रजातन्त्र प्रत्यक्ष वेदना भाग उठी
हिमगिरि के निर्झर झर-झर कर हो मुक्त भर
बह उठीं नदी इठला इठला उन्माद भर
धन धान्य सजग हो उठा-उठा श्रम मानव का

विकसित स्वदेश प्रत्युष घुटा दम दानव का
निस्साधनता हो दूर जुटे उठ नव साधन
बन गये श्रमिक कृषकों के मन्दन आराधन
वह प्रकृति नटी अपना यौवन उन्माद लिये
खुल पड़ी देश के लिये मधुर मधुमाद लिये
श्रमिकों के कन्धे हल, कल पाकर किलकार उठे
अंगड़ाई फसल, भू के अंकुर उठ गये
उच्छृङ्खलता नदियों की रोका बाधा ने
सिंचन अनुकूल किया विद्युत् दी बाधा ने
विद्युत् कण द्रुत गति लिये चल विद्युत् स्तम्भ
उन गाँवों का निशा अंधकार जो ये पहन
ग्रामों की कुटियाँ अब भवनों में बदल उठीं
डाबर की सड़क धूसर पथ पर विमल उठी
तमसो मा ज्योतिर्गमयो का सन्देश लिये
शिक्षक स्वदेश के अपना सद् उपदेश लिये
चल पड़े चेतना ग्राम ग्राम को देने को
भोली जनता से क्या विकास है ? कहने को
जो सोये हो भारत वासी अब तो जागो
अरविन्द समान खिलो—उठलो आलस त्यागो

१७०—रामबाबू वर्मा—इनका जन्म कार्तिक शुक्ला ५ संवत् १९८६ वि० को भरतपुर में श्री शिवचरनलाल स्वर्णकार के यहाँ हुआ। ये अधिक पढ़े लिखे तो नहीं हैं, किन्तु कवियों के सम्पर्क में रहने से कविता की ओर रुचि हो गई। इनके काव्य गुरु श्री कुम्भनलाल कुल श्रेष्ठ हैं। आपकी रचनाओं में भाषा और रस का धारावाहिक प्रवाह मिलता है। ये रघुराय उपनाम से कविता करते हैं। इनकी रचना के कुछ उदाहरण प्रस्तुत हैं—

मानवता

अब क्षीर नीर की भांति सभी भाई मिल मेल करो मन में।
फिर गठ्ठ सूत बांधो सब का मन मुक्ता बिखर बन २ में।
उर अन्तर के कपाट खोलो सब पाप पुंज का क्षार करो।
निज द्वेष भाव का भेद त्याग सब समता का व्यवहार करो।
रघुराय सभा सामर्थवान बन जन समाज कल्याण करो।
तुम मानव हो मानव नाते मानवता का निर्माण करो॥

कवित्त

चूमत रहत सिंधु कंज मंजु चरनन
　　　को सुकीर्ति गान गगन बुलन्दी है।
हृदय विशाल औ उदार दुग्ध धार सदा
　　　नव सुख देती नित्य गंग औ कलिन्दी है।
रघुराय जेते और मनुज दनुज देव,
　　　सब सो सकल सृष्टि करत कविन्दी है।
हिमगिरि सम न शीश मुकुट विराजत है
　　　भारत मा भाल पर बिन्दी मम हिन्दी है॥

सवैया

मानुषता जन के मन हो जनता सब मानि सुशील लखावै।
शान्ति सदा उर धाम करै सब के मन माहिं अपार निभावै।
द्वेष न हो जग में रघुराय न चिंतित हो नहिं कोइ दुख्यावै।
होय सुराज्य सबै पूरि पूरा सब दिन स्वर्न को यह आवै॥

घनाक्षरी

मान मरयादा मेंड़ टूट जाता रामबिन गुरु बिन गूढ़ ज्ञान भूमि कौन भरतो।
सिंधु के मथया देव दानव विकल होते शंभु जो न होते विष पान कौन करतो।
बूड़ जाते ब्रज के पुरंदर प्रकोप सम कान्ह जो न होते भूमि भार कौन हरतो।
रघुराय सृष्टि के समूह सब नष्ट होते शेष जो न होते तो धरा को कौन धरतो॥

सवैया

सुर बन्द पुनीत सुहाग बनी सजनी सब साज सजे सरसी।
हिय हार हजारन हीरन के हथ फूलन हेम छटा बरसी।
रघुराय ललाट लसै बिंदिया दमकै दुति दामिनि सी दरसी।
रति रम्भहु रूप लजात वधू विकसी परिपूरण कला धरसी।

तुम मानव हो मानव नाते मानवता का निर्माण करो।
सोने का समय व्यतीत हुआ मैं आज जगाने आया हूँ।
मा के लालों की हिम्मत की यहाँ व्यथा सुनाने आया हूँ॥
सीधे सच्चों का काम कहाँ जहाँ दगा फरेबी छाई हो।
लूटा खासी गुंडे बाजी सब के मन माँहि समाई हो॥
मानव मानव का रक्त चूसना पाप शोषन का बाद करो।
तुम मानव हो मानव नाते मानवता का निर्माण करो॥

जो कभी स्वर्ग थी भारत भू वह आज नरक दिखलाती है ।
सोने चांदी के टुकडो पर यहाँ इज्जत बेची जाती है ।।
ऊँची मीनार एक ओर नहि झोपड़ियाँ रहने को है ।
अम्बर गम्बर सम एक ओर नहिं वस्त्र गोत सहने को हैं ।।
मानव के निर्मल जीवन पर मत दानवता के वार करो ।
तुम मानव हो मानव नाते मानवता का निर्माण करो ।।
माया के वशीभूत होकर क्या दीन जनो को रुला रहे ।
दया धर्म की आड लगा क्या स्वर्ण-मरघट को जला रहे ।।
स्वामी के नाते सेवक पर तुम नाना जुल्म ढहाओ ना ।
अपना अस्तित्व जमाने को मनमाना कर्म कराओ ना ।।
रक्षक के नाते भक्षक बन जन जन से मत खिलवाड करो ।
तुम मानव हो मानव नाते मानवता का निर्माण करो ।।

१७१—हरिश्चन्द्र 'हरीश' —नरण पीढ़ी के उदीयमान कवि हरीश का जन्म नगला कल्यानपुर के प० ईशवरीप्रसाद के यहा कार्तिक कृष्णा १ सम्वत् १९८९ में हुआ । प्राथमिक शिक्षा (हिन्दी उर्दू, सगीत) स्वर्गीय पडित वीर नारायण के देख रेख में घर ही पर हुई । पडित जी ग्रामीण जिकडी भजन आदि बनाया करते थे अत सन् ४५ से आपको भी जिकडी भजन बनाने का चसका लग गया । कौलेज जीवन में आपकी काव्य प्रतिभा का संस्कार और निखर उठा । अनेक कवि सम्मेलनो में भाग लेकर आपकी ख्याति को एक विशेष सम्मान की प्राप्ति हुई । आपने एम० ए० तथा साहित्य रत्न की परीक्षा उत्तीर्ण करके शिक्षा विभाग मे नौकरी कर ली थी किन्तु खेद की बात है कि आप भगवती सरस्वती की सरस रचनाओ के सुरभित सुमनो से समुचित अर्चना करने से पहले ही ससार से प्रयाण कर गए । स्थानीय कवि समाज को आपका अभाव सदैव ही खटकता रहेगा ।

आपने सर्व प्रथम ब्रज भाषा मे रचना आरम्भ की किन्तु युग के प्रवाह के साथ खड़ी बोली में भी रचना करने लगे । आप कवित्त और सवैया भी बनाते थे जिनका बड़े सरस एवं प्रभावोत्पादक ढग से सुनाते थे । आपकी रचनाओ मे कला पक्ष और भाव पक्ष दोनो का निर्वाह बडे ही आकर्षक ढग से हुआ है । जीवन के पिछले प्रहर में आप महाकवि निराला के परम भक्त हो गये थे और उन्ही की रचना शैली अपनाली थी । आपकी रचनाओ में दार्शनिक गाम्भीर्य के साथ २ सरलता भी प्रचुर मात्रा में विद्यमान है और प्रसाद गुण का सर्वत्र प्राधान्य परिलक्षित होता है । इनके प्रेम पीडा की कसक पाषाणो को भी कसका देती थी —

प्राण ! तुम आओ
आ गया नीम म बौर प्राण ! तुम आओ।
टहनी टहनी के अधरा पर,
है मुसकाहट छाई।
सोये सोये पान पान ने
ली उठकर अगडाई।
हुई भर यौवन का झूमर, महक उठी पुरवाई।
झूम भौरा के मौर प्राण ! तुम आओ।
अवा-जमुनी म पहनी,
चिकनी असमानी सारी।
और पठ म उसके
कालिख न भरनी किलकारी।
ला पलाश जल गया, न बुझ पायेगी यह चिनगारी।
बरसें रस-मधु क दौर प्राण ! तुम आओ।
आज नहा कर नभ गगा मे,
निखर गई तारागण।
मद मन्द मुसकान
नील अचल म बिखरी जाए।
जिन्ह लूटन चला पवन पर पाव नही पड पाए।
सूनी है मन की ठौर प्राण ! तुम आओ।
उधर छाकर की खुशबू म,
आग जग हुआ जाता।
पर जान क्या उमस
मगर मनवा डरा जाता।
बडे भाग से अरी बावरी आज महूरत आया।
हो जाय न या ही भोर प्राण ! तुम आओ।

बरसात

बादल हुए कि ओर ही रगत बदल गई।
उठा था गार मार का
बल्ली को चूमन।
पुर वाई आई नीम की-
बाहा मे झूमन।
राहो सेता के दाह को
सहलाने लगा आह।

बादल घिर कि और ही रगत बदल गई।
दा बूद क्या पडा,
म अमृत म नहा गया।
गन गन खडा रहा
न इधर ही उधर गया।
किरणो म रहा बन्ज गया,
घटा का घूघट उठा।
वहान का मर साथ व मारुत मचल गई।
बादल हुए कि और ही रगत बदल गई।
दादुर उछल पडे–
कि हम गान भी ता दा।
भीगुर मचल पडे–
कि हम जान भी ता दो।
अकुर भी क्या फूट
मिट्टी के अरमा निकल पडे।
दो ही दिना म सृष्टि की सूरत बदल गइ।
बादल हुए कि और ही रगत बदल गई।
तरु तरु ने पात पात म
पाया नया जीवन।
निखरे धरा के गात धुल
छाया नया जीवन।
जागा किसान श्रमका–
नव उल्लास जग उठा।
हर खेत की हर बयार की किस्मत बदल गई।
बादल हुए कि और ही रगत बदल गई।

प्रकाश क नता

जब हम कर चन्दा सायगा
जब हम कर सूरज जागगा।
आखिर वह दिन कब आयगा
वाला प्रकाश क नताओ।
जब मधुर जीत क गीत–,
दिशाय गायगी दिल खोलकर।

कलियां के घूंघट उठा
डालियां देखेंगी हिल डोलकर।
उड झूम झूम कर भंवर,
बजायेंगे वीणा नव रस भरी।
सुन कोयलिया की तान–
हिय का कन–कन भर भर आयेगा।
आखिर वह दिन कब आयेगा ?
बोलो मधु ऋतु की लतिकाओ।
बादल बरसा कर प्यार
बुझायेंगे जब धरती की तपन।
बोलेंगे पपिया मोर–
नयन हरयावल मे होंगे मगन।
ऐटम के शीतल प्राण
खिलायेंगे खुशबू का गोद मे।
सौ शरदा तक विस्तार–
मोद के जीवन का हो जायेगा।
आखिर वह दिन कब आयेगा ?
बोलो सावन की सरिताओ।
हिम कर न बढा पायेगा,
सरसो की मागी की ओर जब।
दिन कर न सहा जायेगा
तिनको के रतनो का चार जब।
फसलें अम्बर की ओर,
न फलायेंगी अपने हाथ जब।
तूफानो के आगे—,
फूलो का माथ नही झुक पायेगा।
आखिर वह दिन कब आयेगा ?
बोलो जन भाग्य विधाताओ ?

रुबाइयाँ

भृङ्ग का गुंजन कली पर जा अडा है।
शलभ का क्रन्दन शिखा पर जा चढा है।
कौन अपने प्राण को छोडे अकेला।
यह गगन इस भूमि को घेरे खडा है।

क्या बड़ी बल्ली या जो छू स्वर्ग या।
आंधियाँ पर बिजलियाँ देतीं गिरा।
है बड़ी वह दूब, जो मिट्टी प रह।
उवे, उजडे मनरा वर दी हरा।

क्या दखता है वायन है कानी,
तू उसके सुर की लहर का दम।
क्या देखता है, सागर है खारे
तू उसके मानी की धार का नम।

क्या देखता है है जन पानी
है दल खाली है भाग माली।

हो आँख तो त इस आदमी क आदमियत न दुलार की दम।
दुख विषमता का भग, सुख म पग दुनियाँ।
कम म अपने लगे–उत्साह से दुनियाँ।
भर चुकी लय खूब, वीणा वादिनी तू अब–
एक सुर ऐसा उठा जिससे जगे दुनियाँ।

१७२–दीनदयाल गोयल 'सुधाकर'–आपका जन्म भरतपुर म एक माध्यमिक स्थिति के परिवार मे पहली जनवरी सन् १९३३ का हुआ। आपके पिता का नाम किशनलाल गोयल है। तेरहवी कक्षा पास कर आप अध्यापक हो गये और उसी अध्यापन काय म आपन एम० ए० परीक्षा उत्तीर्ण की। आप इस समय 'राजकीय बहुउद्देशीय उच्चतर माध्यमिक विद्यालय भरतपुर' म अध्यापक के पद पर काय कर रहे हैं। आपको बचपन से ही अन्ताक्षरी एवम् व्यंग्यात्मक काव्य से अधिक रुचि है। आपकी भाषा सरल सरस और मधुर है। उदाहरण देखिए—

समस्या– निर्माण करो

हे इस युग क भगवान हमारा भी तो कुछ उपकार करो।
दो दिला नौकरी लडके को, कुछ थोडा सा एहसान करो॥
हम बहुत दूर स आये हैं तुम से सब कुछ आशा लेकर।
तुम बहुत गरीबनिवाज प्रभो, निर्भर असवारा क ऊपर॥
केवल इतना ही नहीं प्रभो दो चार चिट्ठियाँ लाये है।
तुम निकट हमारे सबधी, हम पता लगा यह लाये है॥

मेरी चाची की भुआ की लड़की की जो दौरानी है।
उसके भी कुटुम्ब की लड़की तुम्हरे कुटुम्ब में व्याही है॥
नाते में जीजा लगते हो, कुछ साले का तो ख्याल करो।
गर कोई खाली जगह नहीं, दो चार नई निर्माण करो॥

शंका—एक दिन मस्तिष्क में यह बात आई
क्या नारी ने न चोटी हैं लटकाई ?
समाधान—हिन्दुओं का देश भारत वर्ष है।
सिर पे चोटी रखना ही हमारा धर्म है।
चोटी हमारी जान थी ईमान थी।
विश्व न्योछावर कर यह हिन्दुओं की आन थी॥
लेकिन—अंगरेजी फैशन का हम पर था भूत सवार हुआ।
चोटी मिलवाई वालों में सब आन बान का काम हुआ।
लेकिन भारत की नारी यह सब सह सकती थी।
चोटी का अपमान भला कब कर सकती थी॥
इसी लिये उसने प्रतिभा रखने का नर की।
अपनी संतति में यह रीति चलाई।
और नारि ने दो चोटी है या लटकाई॥
एक नर की एक अपनी ?

अमर प्रीति
प्रीति अमर बन गई शमा की और शलभ की

चला उसासें संदेशा देने प्रियतम का।
चली बदलिया निशि की व्याकुलता कहने को॥
किसी वियोगिन की आंखों से अश्रु टपकते।
आशा प्लावित नभ बरसन को थे कहते॥
बरसी बदली रोके न पाया व्यथा हृदय की।
धार एक बन गई अश्रु की और अश्रु का॥
व्यथा अमर बन गई अश्रु की और हृदय की।
प्रीति अमर बन गई अश्रु की और हृदय की॥

अरे दूर हो शलभ निकट नहिं आना मेरे।
मिल कर मुझमें प्राण जलाना अपने मेरे॥

तुम चकोर की तरह देखते रहो चाँद को।
रजनी की ही तरह निभाते रहा प्रीति का॥
पर परवाना धाया चाह लिये मिलने की।
मिलन राख बन गई प्रेम की और प्रीति की॥
राख अमर बन गई शमा की ओर गजब की
प्रीति अमर बन गई, शमा की ओर गजब की॥

१७३–गौरीशंकर 'मयंक' –'मयंक' नाम से संबोधित श्री गौरीशंकर का जन्म भरतपुर के एक निर्धन ब्राह्मण परिवार में १४ जून, १९३४ ई० को हुआ। महान् आर्थिक संकट से अविराम संघर्ष करते हुये आपने भरतपुर के महारानी श्रीजया कालेज से बी० कॉम परीक्षा उत्तीर्ण की। आपकी बाल्यावस्था से ही काव्य सृजन की रुचि है। आपकी भाषा व शैली सुगम सरस प्रवाहमयी एवं हृदयाकर्षक है। आप करुण एवं हास्य रस के जाने माने कवि हैं। उदाहरण देखिए —

हिन्दी

हिंदी–भाषा हिंद राष्ट्र की,
नई नवेला दुलहन है
करो सुमंगल आरती॥
अँगरेजी उर्दू सौत है।
कहती इसका रंग काला है॥
भारत के घर का काम।
कभी नहीं इससे चलने वाला है॥
गूँगी सी अक्षावत भावा का।
मुखर नहीं कर सकती है॥
लंगडी सी, रालिट युग गति के।
भी साथ नहीं चल सकती है॥
कोई नहीं समझ सकता।
अंतर में भरी क्लिष्टता॥
फिर भी सौत हमें डसने को।
नागिन सी फुफकारती॥

— गणतंत्र दिवस —

जनता का शासन, जनता के लिये कि जनता द्वारा।
जब जाता जहां चलाया, जाना गणतंत्र पुकारा॥

छत्तीस जनवरी जिसको, इसने गण शासन पाया।
भारत के कवियों द्वारा युग युग जायगा गाया॥
आजादी की वेदी पर अगणित बलिदान हुए जब।
इसने स्वतन्त्रता पाई इसको गणतन्त्र मिला तब॥
उस दिन से सभी जन हैं हम अपने भाग्य विधाता।
सुख दुख उन्नति अवनति के हम खुद ही उत्तरदाता॥
गणतन्त्र दिवस

अनान अणिमा में रह शादित्र सभी पहिचान।
व्यक्तिगत स्वार्थ में उच्च हम राष्ट्र हिता का मान॥
उपजाय अन्न अधिक हम औद्योगिक वस्तु बनाय।
अन्य का मान विदेशी हो। क्या प्रति वर्ष मगाय॥
व्यक्तिगत क्रिया अनुशासित जब राष्ट्र हित में होगा।
बस होगी तभी स्वर्णिम नव आजादी की भोगी॥
दल के दल दल में बचकर अब बात बड़ महतारी।
तो क्षेत्र में हन न जाय, ये विकट समस्या भारी॥
यदि जाति धर्म गुट बनी मापाया भेद सुनाद।
अरु विजयी विश्व तिरंगा, जन गन मन में लहराए॥
तो सत्य अहिंसा सेवा में शान्ति शीघ्र आयगी।
नेहरू की चिर अभिलाषा भी पूरी हो जायगी॥
विकास की एक कल्पना

असमानता चाहे धन में दुनिया को रोना रुलाना।
श्री दुनिया चाह रहा है निज साम्यवाद फैलाना॥
व्यापारी चाह रहे हैं इन दोनों को टकराना।
बिना युद्ध के कैसे हो आवेगा नाद बजाना॥
ना जाने कभी किधर में थाकै गरद बन जाय।
और उस दिन ही यह दुनिया भव सागर में तर जाय॥

१७/—शान्तिस्वरूप त्रिवेदी एम० ए०—आपका जन्म पं० नत्थीलाल त्रिवेदी के यहाँ सं० १९९३ में हुआ। आप कवि और लेखक दोनों एक साथ हैं। आपके पिता नत्थीलाल स्वयं कवि हैं अतः आपको काव्य-कला के प्रति अभिरुचि विरासत के रूप में प्राप्त हुई। आ हिन्दी साहित्य समिति एवम् स्थानीय कालेज द्वारा आयोजित कवि सम्मेलनों में आपकी काव्य सृजन शक्ति अधिक पुष्पित एवं पल्लवित हुई। आपका दर्शनीय व्यक्तित्व एवम् कविता कहने का ढंग

अत्यधिक प्रभावोत्पादक है। आपने कोई ग्रंथ तो नहीं लिखा, किन्तु फुटकर रचनाएं बहुत की हैं। आपकी समग्र रचनाएं गद्य जाती हैं। नवीन शैली में प्रेमपरक रचनाएं अधिक श्रुति-मधुर हैं। गगन-ध्वनी में दार्शनिक गाम्भीर्य का अभाव होते हुए भी आपकी रचनाएं मरस हैं। आपका भू-दान पर लिखा हुआ निबंध राजस्थान सरकार द्वारा पुरस्कृत हो चुका है। दो रचनाएं उदाहरण रूप में प्रस्तुत हैं —

प्रेम गीत

मन प्यार मेरा ठुकराया।

तुमने मन में प्यार बसा कर फिर क्यों उसे भुलाया
मधुर बना जीवन बना का नयनों में अमृत छलकाया
जीवन में सुधा बहा कर अब विष क्यों बरसाया॥ मन०
मेरे जीवन की उलझन मय ये बनी गई मधुशाला
अधरों में भरा हुआ है तेरे आसव का प्याला
तुम बनकर साकीवाला दीवाना मुझे बनाया॥ मन०
तेरे सपनों में आकर अपने गीतों को गाऊं
तुम थिरक थिरक कर नाचो मैं मन की ताल बजाऊं
मैं साज बना हूं तेरा तुम रागिनी बन जाओ॥ मन०

क्यूं जग को गीत सुनाऊं ?

अपने अंतर की ज्वाला को अवसादों की मधुहाला को
जग से लेन खुशियां माल वाले क्यूं उनकी भेंट चढ़ाऊं॥ क्यूं०
अवसाद भरे अपने तो हैं है अपनी आहों की गहराई
फिर दो क्षण को बन मस्त अरे क्यूं जग की भाषा में इठलाऊं॥ क्यूं
पथ दर्शाना मेरे ये पत्ते हैं ये कायर थाती है
इन की यामिनी का मधु न मैं जीवन में यूं चढ़ाऊं॥ क्यूं०
क्यूं बंधन है जग के पीछे, तेरा जीवन है अनमोल,
ये साथ दो चार घड़ी हैं जिन पर तू भरमाया
माया के निष्ठुर भावों ने मन का दीप बुझाया,
आहुति स्वर प्रेम रूप को अनंग के पट खोल॥ क्यूं०
गान अधरों ने जीवन में अंधकार फैलाया
ज्योति अंतर्धान हो गई भाई मन की छाया
विषम साधना हुई न पूरी, रही हितार डोर॥ क्यूं०

१०५—कमलेश जैन —कमलेश जी का जन्म भरतपुर के एक सम्भ्रान्त

जन परिवार में २१ अप्रैल सन् १९४० को हुआ। आपके पिता श्री प्यारेलाल गुप्ता स्थानीय गवर्नमेंट जज के यहाँ पेशकार हैं। मैट्रिक परीक्षा के अनन्तर आपने विशारद और शास्त्री परीक्षाएँ उत्तीर्ण की हैं। इसलिए आप प्रतिभा सम्पन्न कवयित्री हैं। इनके कविता पाठ का ढंग बहुत सुन्दर है। आपकी रचनाओं पर कई बार पुरस्कार भी मिले हैं। उदाहरण देखिए —

सत्कार करो सत्कार करो

जब अनावृष्टि हो जाती हो, आशा किसान की जाती हो।
सूना नभ भी हो जाता हो, गल गल सा जाती हो।
तब प्रीति सहित मानव का—
सम्मान हृदय से प्यार करो ॥ सत्कार०
जब धू धू करती दोपहरी, जब रात बना निद्रा गहरी।
तब जगता है किसान प्रहरी, सहता सुन सुन आशा सिहरी।
तब श्रमिक खून पसीने का—
कुछ तो मन में आभार करो ॥
मिल, निश दिन जो कि चलाता हो, जो हर सम्भव सरसाता हो।
सब पथ पर फिर बिछाता हो, मिल मालिक मौज मनाता हो।
शिशु-सम उस दुखिया का नित
इस भव का जब जन प्यार करो।
जग का भोला शिशु सा आगम जाता सा मन भारी वाणी।
शान में प्राण प्रतिष्ठा की, यह शान रूप या नारानी।
जब वह भूखा जो जाता तब
उसका थोड़ा सा उपकार करो ॥
यह धरती सबका अपना है, यह सब जन्मों पर अपना है।
यह सबका सब कुछ करती है फिर क्या सन्तति दुख भरती है?
राहों पर पड़ा ठिठुरता जो-
कुछ इसका भी उपकार करो ॥
अपनी आहें खा जाते हो, अपने शोणित को पीते हो।
जो दुःख हृदय का सीते हो, भग्न-भग्न भी जीते हो।
इस व्यथित श्रमित शोषित जन के—
श्रम-कण में निज अधिकार करो।
श्रम का फल श्रमिक नहीं पाते, कुछ लोग उन्हें खाये जाते,
फिर भी गंवार ही कहलाते मानवता प्राप्त रहे सकुचाते।

ये है त्यौहार ये अमिय साथ
इनको प्राणों से प्यार करो ॥

१७६—मोतीलाल अरोड़ा —आपका जन्म भरतपुर के एक प्रतिष्ठित खत्री परिवार में सं० १९७२ वि० को हुआ। आप यहाँ के प्रसिद्ध व्यापारी लाला रामस्वरूप बजाज के आत्मज हैं। आप आगरा कालेज के एफ० एस सी० के तक विद्यार्थी रहे हैं। इनको बचपन से ही हिन्दी और हिन्दी साहित्य समिति में विशेष प्रेम है। समिति के नवीन भवन निर्माण में आपने अनिर्वचनीय सहयोग दिया है। आप गत तीन वर्ष से समिति के उपप्रधान पद पर कार्य कर रहे हैं। विनोदी एवम् सरस स्वभाव के होने के कारण आपकी कविताएं हास्य रस प्रधान होती हैं। आप 'पत्नीवाद' के अनुयायी हैं और अपनी मधुर रचनाओं द्वारा उसका प्रचार भी करते रहते हैं। 'मंगलानन्द' उपनाम से इन्होंने 'पत्नी स्तोत्र' नामक पुस्तक लिखी है। आपकी सरस रचना के उदाहरण प्रस्तुत हैं —

गृह वासी भागी मिट जाय वन वासी भरा फिर घर होगा।
मनको सुख शान्ति मिल जाय तो गम होगा न फिकर होगा ॥
खुद कामी में जी लग जाय फिर कभी न दर्दे सर होगा।
जब देवीजी ही खुश होगी तब किस शान्ति का डर होगा ॥

इस नगर पिता का कहना है भ्रष्टाचारी वह नर होगा।
जो पत्नी भक्ती में विमुख है राष्ट्र का क्या हित कर होगा ॥
गाना प्रेमी भी कहते हैं यह गीता का उपदेश सुना।
जो पत्नी की सेवा करता है उस क्या न भक्त निष्काम गिना ॥

पत्नी भक्ती का स्मरी नित्य घर २ प्रचार करना होगा।
पत्नीव्रत का अवलम्बन कर अपना सुधार करना होगा ॥
समाज में फैला हुआ पाप उसका निकार हरना होगा।
जो उन्नत राष्ट्र बनाना है निर्माण चरित्र करना होगा ॥

पत्नी भक्ति के साधन में क्या चीज नहीं नर पा सकता।
कितना यह सुलभ उपाय मिला जो घर को स्वर्ग बना सकता ॥
जो ऐसा सुगम तरीका भी ना अमल में अपने ला सकता।
वह मूर्ख नहीं तो फिर क्या गृह लक्ष्मी जो न मना सकता ॥

१७७—बृजेन्द्रविहारी —आपका जन्म १३ अगस्त सन् १९३९ को भरतपुर निवासी पं० घनश्यामलाल के यहाँ हुआ। आपने स्थानीय कालेज से बी० ए० परीक्षा उत्तीर्ण की है। हिन्दी साहित्य समिति के कवि सम्मेलनों में भाग लेने के परिणाम स्वरूप आप सुन्दर रचनाएँ लिखने लगे हैं। आप प्रगतिशील कवि और सफल गीतकार हैं। आपकी रचनाएं सरस और प्रभावोत्पादक होती हैं। उदाहरण देखिए —

चीन के नाम

(१)

हर द्वार पर हाहाकार मचाना क्या
मान सी मिट्टी म जहर मिलाना क्या
अरमानों आंचल म धूल सजाना क्या

(२)

मेरा तेरा मानवता का नाता है
क्या आगी रंगकर उसको भड़काता है
अरे जिन्दगी का क्या मान घटाना है

(३)

अगर इसी स्वर म तुम गाये जाओगे
हर घर को शमशान बनाये जाओगे
फूलों पर अंगार बिछाये जाओगे

(४)

गीतों के हरवान बनेंगे गालियां
जो लूटी साजन घर जाती लालियां
पुछती गई अगर माथे की लालियां

(५)

तो धरती का हर बेटा तन जायगा
ऊंचा अम्बर धरती म गढ़ जायगा
हर सारा मोती एटम बन जायगा

(६)

इसीलिये मन छेड़ो हमनी फुलवाड़ी
साजन से घर को जाती व्याकुल नाड़ी
मत खींचो तुम रेखायें तिरछी आड़ी

(७)

आज यहाँ हिन्दी चीनी भाई भाई
पचशील के नेताओ के हमराही
मानवता के हामी आ चाद पन नाई

(८)

मन माखो बगिया आगन उगा जाग
धरती पर कुसुम कमान उगा नाग
निजत आग्न की गमगान उगा आग

(९)

निखन पर हर वार की आवाज है
मेरी मा के प्यार की आवाज है
मुझको नहरू से वट पर नाज है

(१०)

हर पठार पहमीरा कगार बयारा है
नफा की हर बस्ती दिल्ली प्यारी है
हम भाई भाई मॉ एक हमारी है

(११)

ज्वार बाजर का दुलहिन सी वनिया को
घू घट से मुसकानी कोमल कलिया को
सत्य अहिंसा से सुरभित इन गलियो को

(१२)

भारत लाहु लुहान नही होने देगा
मरघट का सामान नही होन देगा
धरती ईमान नही होने देगा

(१३)

बचन यथा ज्वाला मुखी बनाओ ना
तिस्ता की लहरो मे ज्वार उठाओ ना
दुनिया मे बारूदी जाल बिछाओ ना

(१४)

अभी मैन मे कभी दरारें बाकी हैं
अंधियार की बन्द किवारें बाकी है
धरती पनभार बहार बाकी है

(१५)

मत छेड़ो चुपचाप हिमालय रहने दो
बहता हुआ कारवां पथ पर बहने दो
तुम्हें बुद्ध का बेटा घर घर कहने दो

(१६)

मगर उठा तूफान दबाना मुश्किल है
हर दिल में अंगार बुझाना मुश्किल है
धरती का शृंगार बचाना मुश्किल है

(१७)

मन भाता तुम मगर द्वार जगा लाग
चीनी मिट्टी पर त्योहार मना लाग
अपनी मा के घावा का महत्ता लाग

(१८)

मेरी तेरी मा का धड़कन एक है
घुटती सासा का उत्पाडन एक है
माथा की चादर की चिलमन एक है

(१९)

मुन ना नही साम की कीमत घट जाए
दुनिया की किस्मत सीमा में बन जाए
नाम्री वाहा में मौन सिमट जाए

(२०)

मुझे ख्याल है कुछ मिटूंगे मागा का
मेरे तेरे बीच पुरान धागा का
दो युद्धा में घायली निर्मय भागा का

(२१)

कमीनिय तेरे घर भेज रहा पाती
लुट न जाए जिसमें मानवता की थाती
जल न जाए धरती की दूब भरी छाती

कवि नामावलि (अकारादिक्रम)

शुद्धि-पत्र

खेद है, प्रूफ की यथोचित व्यवस्था न होने के कारण प्रस्तुत पुस्तक में अनेक अशुद्धियां रह गई हैं। निम्नांकित भूलें अधिक भ्रमोत्पादक हैं, पाठक कृपया सुधारें —

पृष्ठ	पंक्ति	अशुद्ध	शुद्ध
७	७५	वर्णन	वर्णन
३	२६	प्रकृष्ट	उत्कृष्ट
८	१	कविदन	कविंदन
१४	२६	'जयमनश्वमेध'	जमिनाश्वमेध
१८	१५	मस	सम
	२८	ठिग	ढिग
१९	३	सू आनद	सु आनद
	७	तत्तिरीत	ततरीय
२२	७३	वाभन	वामन
२३	१३	ये	थे
२८	५	कविताए	कविताए
३०	८	रुचि	रुचि
३१	१८	रुपया	रुपया
३२	१५	बिव	शिव
	२५	कृतृत्व	कर्तृत्व
३३	२०	नामका	नायिका
३४	७	रही	नहीं
	२१	परे	परें
३६	३०	कवि	कवियन
३८	२६	सूरजभल्लसुत	सूरमल्ल सुत
४७	१०	कछु	कछु
६०	३	फिर गिन	फिरगिन
७३	३	अधिका	अधिक
७४	८	छन्द	छन्द
७६	६	सूत्र तगन सगन तगन	सूत्र तगन मगन नगन
७६	२५	उदाहरण	उदाहरण

७६	३२	प॰	प॰न
७७	६	गाइ	गाई
७८	२६	दुरि	दुरि
८३	१४	भूःलो	भूल्यो
६७	१८	प्रभाकर	प्रभा भर
११४	३०	तहू	तह
११५	७	अतिशय	अतिशय
११५	७	अमराव	अमरत्व
११५	१०	वधे	वध
११६	२५	प	प
११८	६	वन	वान
१३८	११	नीत	नील
१३६	२८	तीछन	तीछन
१५०	६	तायरी	ता घरी
१६२	४	पृष्ट	पृष्ठ
१७५	२८	उद्यो	उदयो
१८६	१३	किसके	किसके
१८६	१८	इद मिथ्या	इद मित्थम्
१६६	७	जाउगो	जाऊगो
२०४	११	अ योक्तया	अयोक्तियो
२०४	२३	शोकम	शाक्य
२११	१७	चाय	चाए
२११	१८	चाए	(निकालिये)
२१५	२	निबाहो हो	निबाहो
२२४	२६	निष्प्रारा	निष्प्रारा
२२४	३०	अलिगन	आलिगन
२२४	३१	शशन	शशव
२३४	१७	हालिया	हालिया
२३४	३०	दत	द न
२३६	२६	स्वतन्त्र्य	स्वातन्त्र्य
२४८	१५	हिंरी	हिन्दी